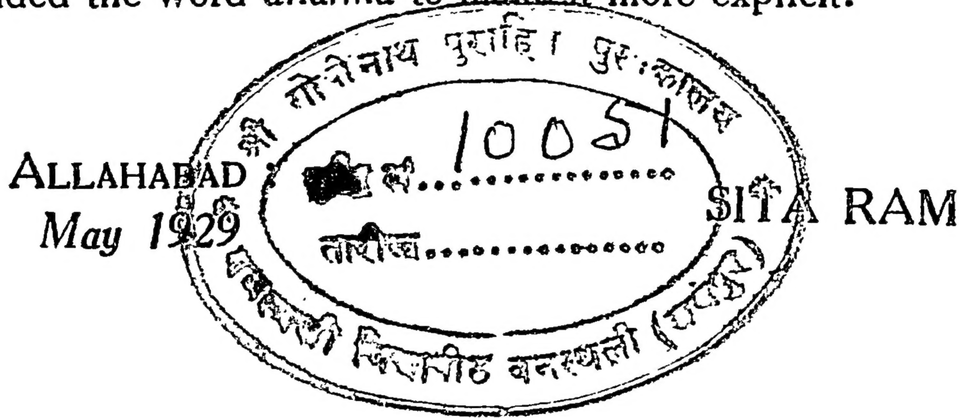
# TRANSLATOR'S PREFACE

The special features of this translation are—

(1) An attempt has been made to oust the spirit of paraphrase and to write the book in simple Hindi.

(2) Poetical extracts have been freely rendered into Hindi verse.

(3) Hindi equivalents of English words are based on highest authorities, *e.g.*, the English word *church* finds its equivalent in the word *sangha* of Buddhist records. I have added the word *dharma* to make it more explicit.




ALLAHABAD
*May 1929*

SITA RAM

# सूचीपत्र ।

अध्याय पृष्ठ

अध्याय पृष्ठ

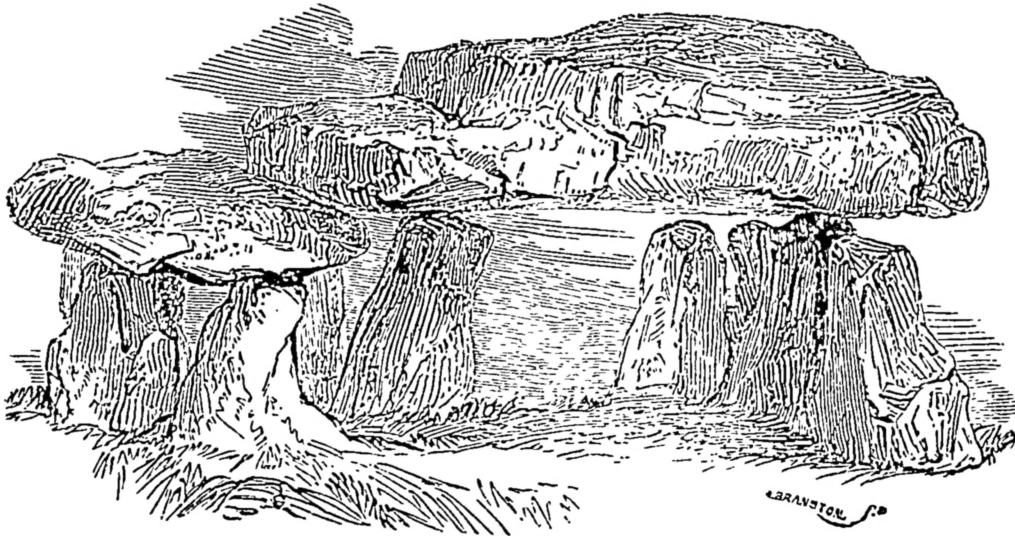
## ॥ इंग्लिस्तान की कहानी ॥

### पहिला युग ।

### ॥ अध्याय १ ॥

### * ब्रिटन और रोमन *

१।—ब्रिटन—जिस टापू में अंगरेज़ लोग रहते हैं उसे दो हज़ार बरस पहिले ब्रिटेन कहते थे और वहां के रहनेवाले ब्रिटन कहलाते थे। वह लोग लिखना पढ़ना न जानते थे इससे उन्होंने कोई किताब नहीं लिखी जिससे हमको उनका ज्ञान होता। जब यहां ऐसे लोग आये जो लिख सकते थे तभी से उनका इतिहास मिलता है। परन्तु उनमें से कुछ लोगों की समाधियों में कुछ मिट्टी के बरतन और कुछ ऐसी वस्तु मिली हैं जिन्हें वे काम में



क्रामलेक।

लाते थे। कहीं कहीं भारी भारी पत्थरों की सिलें खड़ी करके ऊपर एक सिल से पाट दी गई हैं; इनको क्रामलेक कहते हैं और

इन्हीं में बड़े आदमी गाड़े जाते थे। इस पर मिट्टी पड़ी थी परन्तु मिट्टी हटा दी गई है। किसी किसी जगह बड़ी बड़ी सिलों के घेरे बने हुए हैं। इनके ऊपर सिलें धरी हैं जिससे फाटक सा बन गया है। इनमें से एक घेरा सालिस्बरी के मैदान में स्टोन-हेञ्ज में है। कदाचित ये मंदिर हों। देश बहुधा बंजर



स्टोन हेञ्ज।

पड़ा था और वन था। लोग ढोर डंगर पालते, वनों में जानवरों का शिकार करते, कहीं कहीं जव की खेती करते और मिट्टी के बरतन और टोकरे बनाते थे। कार्नवाल में खानों से रांगा निकलता था और यूरप महाद्वीप के सौदागरों के हाथ बेचा जाता था।

२।—ब्रिटेन पर रोमवालों का अधिकार—सबसे पहिले यहां एक यूनानी आया। उसने जो कुछ देखा उसका ब्योरा लिखा। उसके कुछ दिन पीछे रोमी आये। इटली देश का रोमनगर रोमियों का प्रधान नगर था। इन लोगों ने यूरप का बहुत बड़ा हिस्सा, और एशिया और अफ्रिका के भी कुछ खण्ड जीत लिये। ईसा से पचपन बरस पहिले जूलियस सीज़र नाम के एक बहुत बड़े रोमी सेनापति ने दो बार ब्रिटेनपर चढ़ाई की। उसके बाद वह सारी रोमी सेना का नायक और रोमियों

तथा उनके जीते हुए सारे देशों का शासक बन गया। उसके सौ बरस पीछे जिसको आज से अठारह सौ बरस से कुछ अधिक हुए एक और रोमी सम्राट ने जिसका नाम क्लाडियस था ब्रिटेन में एक सेना भेजी और थोड़ेही दिनों में रोमीयों ने फोर्थ के मुहाने से क्लाइड के मुहाने तक का सारा दक्षिणी ब्रिटेन जीत लिया।

३।—ब्रिटेन में रोमी शासन—रोमियों के आने से पहिले ब्रिटनलोग छोटे छोटे जत्थों में बंटे हुए थे। हर एक जत्थे का एक राजा था और सब आपस में लड़ा करते थे जैसा कि अफ्रिकावाले आजकल भी किया करते हैं। रोमवाले जिन लोगों को जीतते थे उन्हें न मार डालते न देश से निकाल देते थे। बिजित जातियों के साथ उनका वही बरताव था जैसा आज हिन्दुस्तानियों के साथ अंगरेज़ों का है। रोमियों ने अच्छी सड़कें बनाईं, नगर बसाये और लोगों को मेलजोल के साथ रहने को बाध्य किया। आजकल जहां कहीं ऐसा नाम मिले जिसमें स्ट्रीट (सड़क) या इसीका कोई रूप हो जैसे चेस्टरले-स्ट्रीट, स्ट्रेटन या स्ट्रैटफ़र्ड वहां हम समझ जाते हैं कि पहिले रोमी छावनी थी। रोमी इमारतें बनाने में बड़े प्रवीण थे और उनके बनाये कोटों के खंड़हर अबभी कहीं कहीं मिलते हैं। नगरों की गलियों में भीड़ लगी रहती थी। धनी लोग गांवों में सुखसे रहने के लिये बगीचे बनाते थे। नाज की खेती बहुत होती थी। कार्नवाल में रांगा तो निकलता ही था सीसा और लोहा भी खानोंसे निकलने लगा। ईसाई धर्म-प्रचारक पहुंच गये और बहुतेरे निवासी ईसाई हो गये। किसी किसी प्रान्त में लैटिन भाषा बोली जाती थी परन्तु विजित लोग बहुधा आपस में अपनीही बोली में बातचीत करते थे। सच तो यों है कि रोमियों ने न्याय से राज किया। व्यापार को उत्साह दिया

और अपने राज में क्या ब्रिटेन में क्या महाद्वीप में, अच्छे क़ानून बनाये जिनसे सबको अपने स्वत्व पर पूरा अधिकार रहे। यह बातें तब ऐसेही हो सकती थीं जैसे आजकल हिन्दुस्तान में सम्भव हैं क्योंकि रोमीयों के राजमें सुख शान्ति थी। साम्राज्य के सिवानों पर सेना रहती थी जिससे क्रूर जर्मन लोग देश में घुस कर लूटमार न कर सकें। परन्तु रोमी सीमा के भीतर किसी जातिवाले दूसरी जातिवालों से लड़भिड़ नहीं सकते थे।

४।—रोमियों का ब्रिटेन से चला जाना—ब्रिटेन में रोमी राज्य तीन सौ पचास बरस तक रहा। रोमियों पर उनके बैरियों ने चढ़ाई कर दी और उन्हें अपना ही देश बचाने के लिये अपनी सेना को यहां से बुला लेना पड़ा और ब्रिटन लोग अपने ही आसरे रह गये। उनके अभाग से रोमियों ने उनको लड़ना सिखाया न था। उनके बाप दादे इतने दिनों तक शान्ति से रहे थे कि वे बैरी को रोकना जानते ही न थे। रोमियों के हटतेही उन पर स्काट और पिक्ट नामकी दो क्रूर जंगली जातियों ने धावा कर दिया। उन दिनों स्काट लोग ऐरलैण्ड में रहा करते थे परन्तु उनमें से बहुतेरे समुद्र पार करके उत्तर ब्रिटेन के उस भाग में बस गये जिसे आजकल आर्गाइल शायर कहते हैं और उन्हीं के आने से इस टापू के उत्तरी भाग का नाम स्काटलैण्ड पड़ गया। पिक्टलोग स्काट के आने से पहिले क्लाइड और फ़ोर्थ के मुहानों के उत्तर रहते थे। स्काट और पिक्ट दोनों ने ब्रिटेन में आकर लूटमार मचा दी। ब्रिटन लोगों की रक्षा सदा रोमन सेना किया करती थी। इससे जब ब्रिटन अपना बचाव आप न कर सके तो उन्होंने रोमी सेनापति को अपनी सेना लौटा लाने के लिये लिखा। सेनापति आन गया और स्काट और पिक्ट दोनों को मार भगा कर अपने देशको लौट गया और फिर न आया। परिणाम यह हुआ कि

स्काट और पिक्ट फिर देश में घुस पड़े। जो जाति अपनी रक्षा आप नहीं कर सकती उस पर कोई दया नहीं करता।

## ॥ अध्याय २ ॥

### * अंगरेज़ों का अधिकार *

१।—अंगरेज़ों का आना—ब्रिटन लोग वही भाषा बोलते थे जो कुछ कुछ वेल्सवासी जो उन्हीं की सन्तान हैं अबतक




अंगरेज़ों की पहिली बस्ती।

बोलते हैं। स्काटों और पिक्टों की बोली भी उससे मिलती जुलती थी। परन्तु उत्तर सागर के उस पार एल्ब नदी के मुहाने की दोनों ओर एक जाति बसी थी जो इनसे भिन्न थी। वह लोग ऐंग्ल, सैक्सन और जूट कहलाते थे। यह जर्मन भाषा बोलते थे परन्तु वह जर्मन पूरी पूरी ऐसी न थी जैसी कि आजकल जर्मनी में बोली जाती है। इसको लो (होन) जर्मन कहते हैं और यह डच भाषा के समान थी। ऐंग्ल, सैक्सन और जूट स्काट और पिक्ट की भांति क्रूर थे। इनके पास छोटी छोटी नावें थी और ये मल्लाही के काम में बड़े साहसी थे। यह लोग समुद्र पार करके आग लगाते, लूट मार करते हुए पिक्टों और स्काटों की भांति देश में आये। ई० ४४९ में कुछ जूट लोग थैनेट टापू में उतरे। कहाजाता है कि हेञ्जस्ट और हार्सा इनके सेनानायक थे। कुछ और सरदार हथियारबन्द लोगों को साथ लिये टापू के और हिस्सों में उतरे। यह लोग रोमियों की भांति ब्रिटन लोगों पर शान्ति से राज करने नहीं आये थे। इन्हों ने बहुत से ब्रिटन मारडाले या देश से निकाल दिये और उनकी धरती आपस में बांट ली। यह लोग नगरों में रहना न चाहते थे क्योंकि इनका गांवों में रहने का स्वभाव था। इस कारण इन्हों ने नगर यातो जला दिये या उजाड़ डाले। जो नगर बचे थे वेभी बिगड़ते गये जबतक कि नये आनेवालों ने नगरों में रहना और व्यापार करना नहीं सीखा।

२।—<u>पेवेनसी के पास एक रोमी नगर की दशा</u>—हेस्टिंग्स (Hastings) और ईस्टबुर्न (Eastbourne) के बीच में ससेक्स (Sussex) के समुद्रतट पर नगरों के साथ बरताव का एक विचित्र उदाहरण मिलता है। यहां वह स्थान देखा जाता है जहां पहिले ऐण्डरैडा (Anderida) नाम एक समृद्ध रोमी नगर बसा हुआ था। वहां अब तक रोमी कोट

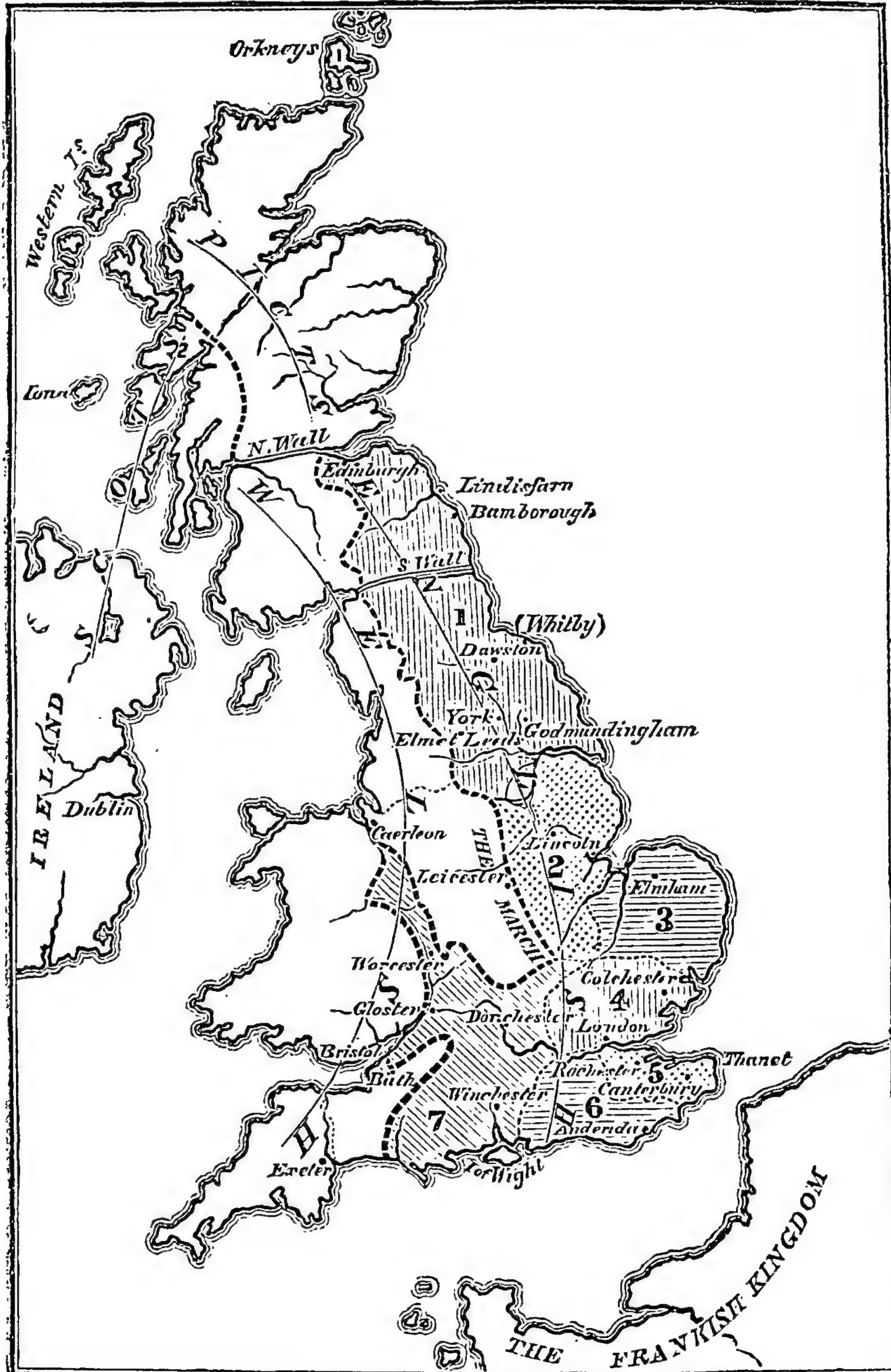
खड़ा है। यह कोट ऐसे मसाले का बना है जिसे रोमी ही बनाना जानते थे और जो उन पत्थरों से भी कड़ा है जिनको जोड़ कर कोट बना था। कोटके भीतर एक चौरस हरा खेत है। इसके एक कोने को छोड़ कर कहीं इमारत का चिह्न नहीं है। यह एक गढ़ी के खंडहर हैं जो रोमियों के समय के बहुत पीछे बनी थी। सैक्सन बिजेता कोट को गिरा न सका, भीतर के मकान उसने गिरा दिये। उसे बाहर रहना अच्छा लगता था। नगर के पुराने फाटकों के सामने दो छोटे छोटे गाँव हैं जिनके नामही से विदित होता है कि किस भाषा के हैं और उन में कौन लोग आकर बसे थे। पश्चिम में वेस्ट हैम (West Ham) है जिसका अर्थ पश्चिमी घर है। यहां कोई सैक्सन बसा था जिस का नाम हम नहीं जानते। पूर्व में पेवेन्सी (Pevensey) है जिसका अर्थ है प्युफ्न (Peofn) का टापू और इस में सन्देह नहीं कि प्युफ्न महाशय एक सैक्सन बिजेता यहां रहे थे।

३।—ब्रिटेन का धीरे धीरे जीता जाना—इन सैक्सनों, जूटों और एंग्लों ने एकाइक सारे टापू पर अधिकार नहीं किया। रोमियों के आने से पहिले ब्रिटेन लोगों की भांति यह लोग भी एक जाति के न थे। एक एक जत्था अलग अलग रहता था। अब तक इस देश के अनेक ज़िले इन्हीं जत्थों के नाम से प्रसिद्ध हैं, जैसे पूर्व सैक्सन ईसेक्स में रहते थे, मध्य के मिडल सेक्स में और दक्षिण के ससेक्स में। पहिले विजय में कुछ विशेष कठिनाई न पड़ी। इंग्लैण्ड के दक्षिण-पूर्व के प्रान्त को और प्रान्तों की अपेक्षा रोमियों ने अधिक सभ्य बना दिया था। महाद्वीप के निकट होने से यह प्रान्त धनी भी होगया था और जो लोग यहां रहते थे वे समुद्र पार के देशों से व्यापार करते थे। पश्चिमी पहाड़ी के रहनेवालों की अपेक्षा ये युद्ध करने में भी अभ्यस्त न थे इसी से इनका जीता जाना सुगम था। दक्षिण में चार छोटें छोटे राज्य बन

गये थे, एक केराट ( Kent ) में जहां अब उसी नामका ज़िला है दूसरा ससेक्स में जिसमें आजकल ससेक्स और सरे के ज़िले हैं, तीसरा इसेक्स में जिसमें आजकलके इसेक्स और मिडल सेक्स हैं और चौथा ईस्ट ऐंग्लिया, जिसमें नार्फ़ाक सफ़क और कैम्ब्रिज के ज़िले हैं। उत्तर और पश्चिम में सामना कुछ विकट था इस लिये विजेताओं को बैरी पर विशेष बल से आक्रमण करने के लिये अपनी छोटी छोटी जत्थाओं का संगठन करना पड़ा। तीन बड़े राज्य यह थे १ नार्थम्बरलैण्ड (Northumberland) अर्थात् हम्बर नदी के उत्तर का देश जो क्लाइड तक फैला हुआ था, २ मर्शिया ( Mercia ), देश के बीच का प्रान्त, और ३ वेसेक्स ( Wessex ) अर्थात् पश्चिमी सैक्सन देश जो ससेक्स के पश्चिम था। ये तीनो ब्रिटन लोगों से लड़ते रहे। एक सौ अट्ठाईस बरस निरंतर झगड़ा करके ये लोग अपने राज्य की सीमा पीनाइन ( Pennines ) पर्वत तक बढ़ा लेगये और वहां से दक्षिण पूर्व बेडफ़ोर्ड ( Bedford ) के पास एक जगह तक। यहां से यह सीमा टेढ़ी होकर इक्स ( Exe ) नदी के मुहाने और पोर्टलैण्ड ( Portland ) के बीचोबीच में होकर इंगलिश चैनल ( English Channel ) से मिलगई। फिर कई बरस झगड़ा करने पर यह सीमा पीनइन पहाड़ी से मेराडीप पहाड़ी होकर इंगलिश चैनल पहुंची। कम्बरलैण्ड, लंकाशायर, डिवन और कार्नवाल बहुत पीछे इनके हाथ लगे। वेल्स सैकड़ों बरस तक स्वतंत्र रहा। पिछले और पश्चिमी प्रान्तों को जीतने में जो लड़ाइयां हुईं उनमें इतने ब्रिटन नहीं मरे जितने पूर्वी युद्धों में नष्ट हुए थे।

४।—अंगरेज़ जाति और उसके राजा—बाहर से आनेवाले ऐंग्लि या इंग्लिश कहलाते थे। कभी कभी इन्हें ऐंग्लो-सैक्सन अर्थात् ऐंगल और सैक्सन भी कहते थे।

देश का नाम भी इंग्लैण्ड अर्थात एंग्लों का देश पड़ गया। एक एक जत्थे का राजा अलग था परन्तु राजा अपनी मनमानी नहीं




ई० ५७७ में इंग्लिस्तान।

कर सकता था। जत्थे स्वतन्त्र लोगों की सभा कर के यह निश्चय करते कि युद्ध करना चाहिये या नहीं। राजा मर जाता तो उस के कुल में से नया राजा चुन लिया जाता था। बाप के मरने पर बड़े बेटे का राज का अधिकारी होना कोई जानता न था। राजा लड़ाई में सेनानायक होता और स्वतंत्रों की सभा का सभापति भी बनता। राजा का बड़ा बेटा बालक होता या कायर होता या रोगी होने या और किसी कारण से राज करने के योग्य न समझा जाता तो सभा उसे छोड़ देती और उसके चचा या भाई को राजा बना देती।

९।—अपराधियों के साथ बरताव—जनता की इन सभाओं में जिस किसी ने कोई अपराध किया होता उसकी सुनाई होती थी। आजकल की भांति जज नहीं थे। कोई किसी को मार डालता तो उसको दंड देना उसके नातेदारों का काम था; और किसी से कुछ प्रयोजन नहीं। अंगरेज़ों के आने से कुछ ही पहिले यह रीति थी कि जो मनुष्य मारा जाता था उसी के सगे नातेदार का धर्म था कि मारनेवाले को मार डाले। यही रीति यहूदियों में भी जिनमें सब से क़रीब का नातेदार "लोहू का बदला लेने वाला" कहलाता था। उसके उपरान्त घातक के नातेदार उसका बध करना अपना धर्म मानते जिसने मारनेवाले को मारा। यह परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी चली और एक कुल का कोई न कोई दूसरे कुल के किसी न किसी के मारने की ताक में रहता। अन्त को लोग इस हत्या प्रतिहत्या से घबरा गये और यह रीति निकली कि जब किसी का बध किया जाता तो घातक उसके नातेदारों के पास आकर छुटकारा पाने के लिये कुछ धन देता। वह लोग इस धन को सभा में लाते और घातक और बध किये हुये मनुष्य के नातेदारों में मेल हो जाता। चोर पकड़ा जाता तो उसे भी इसी रीति से धन देना पड़ता था।

६।—अंगरेज़ों का धर्म—इस प्रबन्ध के संभव होने का यही कारण था कि अंगरेज़ उन दिनों मनुष्य बध को बुरा न समझते थे। यह लोग सद्धर्म-हीन थे और उनका धर्म उन्हें यह सिखाता था कि बली और वीर होना दयालु होने से अच्छा है। उनके देवता उनसे प्रसन्न तभी होगें जब वे निठुर और प्रबल रहेंगे और युद्ध में मर जायँगे तो उन्हें स्वर्ग में सुख मिलेगा। उनका विश्वास था कि मरे वीर स्वर्ग में भी दिन रात विनोद के लिये झगड़ा किया करते हैं।

७।—दोष-निवृत्ति (Compurgation) और शपथ (Ordeal)—उन दिनों और बातों में भी अपराधियों के दण्ड देने की रीति हमारी रीतियों से भिन्न थी। आजकल की भांति तब न जज थे न वकील, जो ऐसे अपराधी की जांच कर सकते जिसको किसी ने अपराध करते देखा न था। जब किसी पर बध या चोरी का अभियोग चलाया जाता तो उससे कहते थे कि कुछ भले मानस ले आओ जो सौगन्द खाकर कहैं कि तुम निर्दोष हो। इसको दोषनिवृत्ति कहते थे क्योंकि लोग इसको मिल कर दोषहीन सिद्ध करते थे। अपराधी को ऐसे लोग न मिलते तो उसके पास एक और उपाय भी था। यह उपाय शपथ (Ordeal) था जिसे ईश्वर का न्याय समझते थे। हल के फाल लाल करके उन पर आंखों में पट्टी बांधकर नंगे पावँ चलना या खौलते पानी में हाथ डालना "शपथ" कहलाता था। अपराधी का पांवँ फालों पर न पड़े या तीन दिन तक हाथ में फफोले न पड़ें तो उसे निर्दोष कहते थे। इस रीति में विरला ही कोई बचता होगा परन्तु शपथ वेही लोग करते थे जिन्हें उनके निर्दोष होने की सौगन्द खानेको भलेमानस न मिलते। ऐसे लोग बुरे माने जाते थे क्योंकि उनके पड़ोसियों का उन पर विश्वास न था। इस कारण किसी को आश्चर्य न होता था जब सारे शपथ करनेवाले सफल न होते थे।

## ॥ अध्याय ३ ॥

### * इंग्लिस्तान का ईसाई धर्म ग्रहन करना *

१।—<u>पोप का इंग्लिस्तान को एक धर्मदूत भेजना</u>—रोमी सिपाहियों के ब्रिटेन छोड़ने के थोड़े ही दिन पीछे, यूरप के पश्चिम में रोमी साम्राज्य का अन्त हो गया और उसकी जगह पर अनेक जर्मन जातियाँ उसको जीत कर देश की शासक बन गईं परन्तु ये विजेता ब्रिटेन के जीतनेवाले अंगरेज़ों



पोप ग्रेगरी और अंगरेज़ी दास।

की भांति धर्महीन न थे। रोम के प्रधान बिशप का इन पर बड़ा अधिकार था। उसको सब बड़ा मानते थे और उसे पोप कहते थे, जिसका अर्थ है ईसाईयों का पिता। अंगरेज़ों के ब्रिटेन में

आने से डेढ़ सौ बरस पीछे ग्रेगरी (Gregory) नामका एक पोप हुआ। उसके पोप होने के बहुत दिन पहिले उसने रोम की दासहाट में नार्थम्बरलैण्ड के सुन्दर बालक देखे और उसने पूछा कि ये किस जाति के हैं और जब उसे यह बताया गया कि ये (Angle) ऐंजिल हैं तो वह बोल उठा कि "ऐंगिल नहीं ऐंजिल (फ़िरश्ते देवता)" हैं, फिर पोप ने पूछा इनका राजा कौन है? जो सौदागर उन्हें बेंच रहा था उसने कहा कि इनका राजा इला है। ग्रेगरी ने उत्तर दिया कि इला के राज में अलेलुजा (Allelujah) * गाया जायगा। कई बरस पीछे जब ग्रेगरी पोप हो गया, उसे उन बालकों की सुध न भूली और उसने अंगरेज़ों को ईसाई बनाने के लिये अगस्टीन को भेजा।

२।—<u>कैण्टरबरी में अगस्टीन</u>—५९७ ई० में अपने प्रेमधर्म का प्रचार करने के लिये अगस्टीन थैनेट (Thanet) टापू में उतरा जहाँ १४८ बरस पहले क्रूर जूट लोग लूटमार करने उतरे थे। कुछ पादरी साथ लिये यह केण्ट के राजा के नगर में चला गया, जहां अब कैण्टरबरी बसा है और जहां एक बहुत ऊँचा गिरजाघर है। राजा एथिलबर्ट ने समुद्र पार की एक ईसाई स्त्री के साथ बिवाह किया था और उसने आज्ञा दे दी कि हमारी प्रजा को अपने धर्म का उपदेश करो। कुछ दिन पीछे राजा, और केण्ट के रहनेवाले ईसाई हो गये। कैण्टरबरी से ईसाई धर्म इंग्लिस्तान के दक्षिण प्रान्तों में फैला। अगस्टीन यहां का पहला (Archbishop) लाट पादरी हुआ और इसी कारण कैण्टरबरी का लाट पादरी जहां धर्महीन अंगरेज़ों को सबसे पहिले ईसाई धर्म का उपदेश दिया गया था सारे दक्षिण इंग्लिस्तान का लाटपादरी अब तक माना जाता है।

* यह इबरानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है ईश्वर को धन्यवाद।

३।—उत्तर प्रान्त का ईसाई होना—इंग्लिस्तान के दक्षिण प्रान्त को रोम के भेजे हुए एक पादरी ने ईसाई बनाया। उत्तर-प्रान्त-वालों ने आयोना से भेजे हुए एक धर्मप्रचारक से ईसाई मत सीखा। आयोना स्काटलैण्ड के पश्चिम एक छोटा सा टापू है जिस में कुछ ऐरलैण्ड के रहनेवाले ईसाई बस गये थे और वह लोग अपने धर्म का प्रचार करना चाहते थे। आयोना से एक पादरी जिसका नाम ऐडेन था, आकर नार्थम्बरलैण्ड के समुद्र तट के निकट (Holy Island) पवित्र टापू में बस गया और वहां से बहुत से धर्म प्रचारक भेजे। रोम के आये और आयोना के आये पादरियों ने एक ही बात सिखायी। इन्हों ने लोगों को दया और सभ्यता का उपदेश दिया; ईसा की पूजा सिखायी और अनेक देवताओं के बदले उनको प्रेममार्ग की शिक्षा दी। लोगों ने उनकी बातें मानीं और यह समझा कि सदा लड़ते भिड़ते रहने के बदले क्षमाशील और नम्र होना अच्छा है। जहां कहीं लोगों ने लड़ना भिड़ना नहीं छोड़ा वहां कम से कम इतना तो सीख लिया कि जो लोग मार के बदले दूसरे को नहीं मारते, रोगी और कङ्गालों पर दया करते हैं उनका आदर करना चाहिये। एक राजा ने अपने राज के बड़े बड़े लोगों को इकट्ठा करके पूछा कि तुम ईसाई होना चाहते हो? एक सरदार ने उत्तर दिया कि मनुष्य का जीवन ऐसा है जैसा जाड़े के दिनों में अँगेठी के पास एक कोठे में कोई भोजन कर रहा हो, बाहर पानी बरस रहा हो और एक चिड़िया उस कमरे में घुस आये। चिड़िया एक द्वार से घुसे, अँगेठी के प्रकाश में गर्मी में थोड़ी देर ठहरे और फिर उड़कर जाड़े के अन्धकार में लुप्त हो जाय। ऐसे ही हम लोगों का जीवन है हम यह नहीं जानते कि इसके पहिले क्या था और पीछे क्या होगा। अगर इस नई शिक्षा से हमको इन बातों का ज्ञान हो सके तो हमको यही धर्म ग्रहण करना चाहिये।

४।—Monk वानप्रस्थ—नई धर्मशिक्षा को लोग धीरे धीरे मानने लगे परन्तु ईसा मसीह की प्रार्थना करना सीखने से साधारण जनता का स्वभाव न बदला। गिरजाघर जाना और प्रार्थना पढ़ डालना कुछ कठिन काम नहीं है परन्तु बैबिल में जो आचरण की शिक्षा दी गई है उसके अनुसार रहना कठिन है। बहुतेरे अंगरेज़ों की पहिले की भांति लड़ाई दंगा करने की रुचि बनी रही। परन्तु कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने चरित्र सुधारने का कठिन उद्योग किया। बदला लेने के बदले क्षमा करना और निरन्तर लड़ाई करने से शान्त रहना उचित जाना। इस काम में जिन लोगों ने सबसे कठिन उद्योग किया उन्होंने देखा कि उनके चारों ओर जो लोग बसे थे उनके बीच में रहकर उस काम में उनको सफलता नहीं हो सकती। इसलिये वे सब मिल कर मठों में रहने लगे। इन मठों में रहनेवाले मंक (वानप्रस्थ, भिक्षुक) कहलाते थे और स्त्रियां नन् (भिक्षुणी) कही जाती थीं। यह लोग बड़े दुःख से जीवन व्यतीत करते, जितना परमावश्यक था उससे अधिक भोजन न करते और अपने नित्य के भोजन उपार्जन के लिये परिश्रम करते और निरन्तर भजन किया करतेथे। इंग्लिस्तान में अबतक इन मठों के खंडहर देखे जाते हैं और लोग कहा करते हैं कि इन वानप्रस्थोंने अपने रहने के लिये बहुत अच्छे स्थान चुने थे। बात यह है, इन लोगों को इस बात की पर्वाह नहीं थी कि ये स्थान अच्छे हैं या बुरे। उनका अभिप्राय इतना ही था कि जहां और लोग रहते हैं, वहां के स्थान प्रलोभनों से पूर्ण हैं। वे बस्ती से दूर चले जाते जहां उनको पीने को पानी की धारा, जलाने की लकड़ी और कुछ उपजाऊ धरती होती जिसमें खाने का अन्न बो सकते थे। आजकल जो लोग छुट्टी के दिनों में हरी घास और नाज के खेत, पेड़ और नदियां देखने जाते हैं, उन्हें बहुत अच्छे लगते

है परन्तु उन दिनों जो लोग यहां रहते थे उन्हें ऐसे प्रान्त में पेट भर अन्न मिलने के लिये कठिन परिश्रम करना पड़ता था।

## ॥ अध्याय ४ ॥

### * इंग्लिस्तान का संघटन *

१।—एग्बर्ट का काल—वानप्रस्थों के उपदेश बहुत कम लोगों ने माने। कारण यह था कि सारे देश में गड़बड़ी मची थी और मारकाट की धूम थी। राजा सदा आपस में लड़ा करते थे, कभी एक बढ़ जाता कभी दूसरा। अन्त को पच्छिली सैक्सनों के राजा एग्बर्ट ने औरों को दबा लिया। एग्बर्ट सारे इंग्लिस्तान का राजा न था जैसे कि आजकल सम्राट जार्ज पंचम हैं। कई छोटे छोटे राज अपना शासन आप करते थे। परन्तु सब एग्बर्ट को मानते थे और उन्हों ने प्रतिज्ञा की कि न एग्बर्ट से लड़ेंगे और न आपस में युद्ध करेंगे।

२।—डेन लोगों का आना—इतना ही रहता तो एग्बर्ट के मरते ही सब फिर अलग हो जाते। परन्तु एग्बर्ट के जीतेजी एक नया वैरी उठ खड़ा हुआ। एक जाति के लोग जिसे इंग्लिस्तान में डेन और यूरप महाद्वीप में नार्थमेन (उत्तर के रहने वाले) या नार्मन (Norman) कहते थे, डेनमार्क और नार्वे से आये। यह लोग वैसेही थे जैसे कि अंगरेज़ों के पुरखे थे जो साढ़े तीन सौ बरस पहिले थैनेट में उतरे थे। यह लोग हलकी नावों में समुद्र पार कर के नदियों के मुहानों पर पहुंचते और आग लगा कर लूट मार करके भाग जाते थे। उनका पकड़ना कठिन था। मठों पर विशेष कर उनकी दृष्टि रहती क्योंकि वह जानते थे कि धन वहीं धरा है। वानप्रस्थ तो पहिले निर्धन ही थे परन्तु जो लोग उनकी पूजा करते थे वे उनके धर्मसंघों के लिये भेट पूजा

लाया करते थे और आजकल इन मठों में चांदी के पात्र और चांदी के क्रूश रक्खे थे और इनकी पुस्तकों की जिल्दों में रत्न जड़े थे। डेन यह भी जानते थे कि मठवाले लड़ते नहीं, और उन्हों ने वानप्रस्थों को भेड़ बकरी की भांति काट डाला, मठों में आग लगा दी और जो कुछ उन में मूल्यवान वस्तु मिली सब उठा लेगए। यह उपद्रव इतना बढ़ा कि यूरप महाद्वीप में ईश्वर प्रार्थना में कहीं कहीं एक प्रार्थना यह भी जोड़ दी गई:—

"नार्थमेन के कोप से ईश्वर हमारी रक्षा करै।"

३।—डेनों के साथ युद्ध—एग्बर्ट और उसके पीछे उसके बेटे और पोते परपोतों ने इन जल-डाकुवों के उपद्रव की रोक थाम करने का भरसक उद्योग किया, कभी जीते कभी हारे। परन्तु डाकू बढ़तेही रहे और कुछ दिनों में उन्हों ने लूट मारकर के भागने पर सन्तोष न किया और झुंड के झुंड आकर देश में बसने लगे जैसे कि अंगरेज़ पहिले आकर बस गये थे। उस समय ऐसा जान पड़ता था कि इन्ही की जीत रहेगी और सारा इंग्लिस्तान इनके हाथों में आजायगा।

४।—अलफ्रेड महान के राज्य का पहिला बरस—अन्त को अपने बड़े भाई के मरने पर एग्बर्ट के पोतों में सब से छोटा परन्तु सब से उदार अलफ्रेड राजा निर्वाचित किया गया। उसके भाई ने एक लड़का छोड़ा था जो आजकल का सा समय होता तो वही राजा होता। परन्तु एक वीर की आवश्यकता थी और बच्चे भतीजे की जगह वीर चचा का चुना जाना उचित था। अलफ्रेड डेनों से हार कर अथेलनी (Athelney) में छिप रहा जो उस समय समर्सेट ज़िले के जलमग्न प्रान्त में एक टापू था और अब सूखा है। कुछ काल बीतने पर अलफ्रेड ने अपने सजाती इकट्ठा करके डेनों को परास्त किया और उन्हें चिपेनहैम (Chippenham) की सन्धि करने और बप्तीस्मा




चिपेनहैम की सन्धि से बँटा हुआ इंग्लिस्तान।

लेने को बाध्य किया। इस सन्धि को कभी कभी भूल से वेडमोर (Wedmore) की सन्धि कहते हैं।

५।—डेनों का अलफ्रेड के आधीन हो जाना—८७८ ई० में चिपेनहैम की सन्धि के अनुसार रीडिंग (Reading) के पास टेम्स नदी से रिबल (Ribble) तक एक सीमा बना कर इंग्लिस्तान दो भाग करदिये गये। इस रेखा के पश्चिम और टेम्स नदी के दक्षिण का देश अंगरेज़ों के हाथ में रहा। शेष डेनों का होगया। डेनों ने अपने भाग की सारी अच्छी धरती आप लेली और अधिकार भी अपना रक्खा परन्तु अंगरेज़ों को नहीं मारा। आजकल भी जिन नगरों के नाम के अन्त में by (बी) हो उन्हें डेनों की बस्ती समझना चाहिये जैसे ग्रिम्सबी (Grimsby) या कर्कबी (Kirkby)। बी डेनी भाषा में बस्ती को कहते हैं और ग्रिम्सबी का अर्थ है ग्रिम की बस्ती, कर्कबी का अर्थ है कर्क (गिरजा) के पास की बस्ती। ८८६ ई० में लंदन और उसके चारो ओर के ज़िले भी अलफ्रेड को मिल गये।

६।—अलफ्रेड का शासन—अलफ्रेड की दशा उसके दादा की दशा से बुरी थी। डेनों ने उसको अपना अधिराज मान लिया परन्तु उसके शासन को नहीं मानते थे। वास्तव में उसके शासन में इंग्लिस्तान का एक भागही था। तौभी यह भाग उसके लिये पूरे से अच्छा था। उसके अधिकृत भाग में पुराने तीन राज वेसेक्स, ससेक्स और केण्ट, एसेक्स का एक छोटा सा हिस्सा और मर्शिया का आधा था। वह साधारण ही राजा होता तौभी ये प्रान्त डेनों के डरके मारे इसके आधीन रहते। परन्तु अलफ्रेड का सा बड़ा राजा कोई बिरला ही हुआ होगा। जो लोग मनुष्यों का चरित्र नहीं जानते वह उसीको बड़ा कहते हैं जो कोई बड़ा काम करै। जो जानते हैं उनके बिचार में वेही बड़े और बहुत अच्छे होते हैं जो केवल बड़ा कामही नहीं करते बरन् यह समझते

हैं कि क्या नहीं कर सकते और जो काम हो नहीं सकते यद्यपि देखने में सुगम जान पड़ते हैं उनमें हाथ नहीं लगाते। अलफ़्रेड ऐसाही था। उसने समझ लिया कि उत्तरमें डेनों को परास्त करना संभव नहीं; इससे उसने अपनेही देश की रक्षा करने पर संतोष किया। उस ने समुद्रपथ से डेनों का आक्रमण रोकने के लिये जंगी जहाज़ोंका एक बेड़ा बनाया। परन्तु उसने इससे बढ़कर काम किया; उसने इस बातका प्रयत्न किया कि लोगों की दशा सुधर जाय और विद्वान हो जायँ। अपने आपको वानप्रस्थों की तरह संयम से रक्खा; भेद इतना ही था कि उसने संसार को नहीं छोड़ा; संसार में रहकर लोगोंका कल्याण किया। किसी और राजा ने इस सिद्धान्त की सत्यता अपने चरित्र से नहीं दिखाई कि तुम में जो सबसे बढ़कर होना चाहता है उसे सबका सेवक बनना चाहिये। अलफ़्रेड दुर्बल था और उसके अनेक रोग थे परन्तु उसने देशहित करने में विश्राम न किया। उसने अपने पुरखोंके अच्छे से अच्छे क़ानून इकट्ठा करके कुछ अपनी ओर से मिलाये और अपनी प्रजा से कहा कि इनके अनुसार आचरण करो। उसने अच्छेसे अच्छे और बुद्धिमानसे बुद्धिमान लोगों को अपना मित्र बनाया और उनको औरों को शिक्षा देनेके लिये नियुक्त किया। विद्या से और पुस्तकों से उसको प्रेम केवल इस लिये न था कि आप ज्ञानी बनै बरन् उसकी प्रजाका ज्ञान बढ़े। जिन पुस्तकों को उसने समझा कि उसकी प्रजा को पढ़ना चाहिये उनका उसने अपनी भाषा में अनुवाद किया और जो अच्छी बात उसने उन पुस्तकोंमें न देखी उसे अनुवाद में बढ़ा दिया; और मरने के पीछे देश में पहिले से अच्छे क़ानून, अच्छी शिक्षा और अच्छा आचार व्यवहार छोड़ गया।

७।—<u>डेनों का आधीन होना</u>—दक्षिण के अंगरेज़ों ने यह दिखा दिया कि अच्छे और बुद्धिमान लोग क्रूर अनपढ़ देशों की

अपेक्षा अपनी रक्षा आप करने में अधिक बली होते हैं। रोमियों के समय में ब्रिटन लोग औरों के भरोसे रहते थे इसी से निर्बल थे। अलफ्रेड के पीछे जो राजा हुए, उसका बेटा एडवर्ड उसके तीन पोते अथेलस्टन (Athelstan) एडमण्ड (Edmund) और एडरेड (Edred) उसके परपोते एडवी (Edwy) और एडगर (Edgar) धीरे धीरे दृढ़ता के साथ विजय पाते हुए सारे उत्तर इंग्लिस्तान को अपने आधीन करने में सफल हुए जिन प्रान्तों को अलफ्रेड ने अपने बस करना असम्भव समझा था। चिपेनहैम की संधि के छिहत्तर बरस पीछे ९५४ ई० में इंग्लिस्तान फिर मिलकर एक देश हो गया और एग्बर्ट से बढ़कर अंगरेज़ी राजा सारे देश का शासन करने लगा। अंगरेज़ और डेन दोनों एकही राजा की प्रजा हो गये।

## ॥ अध्याय ५ ॥

### * अंगरेज़ और डेन राजा *

१।—एडगर और डन्स्टन—कुछ दिनों तक नये सङ्घटित इंग्लिस्तान में शान्ति रही। एडगर अपने भाई एडवी के थोड़े दिनों के शासन के पीछे राजा हुआ; उसे इतिहास में शान्तिकारक कहते हैं। कहा जाता है कि डी नदी पर आठ राजाओं ने उसकी नाव चलायी। परन्तु जो उसके नाम से वास्तव में देश का शासन करता था, उसका नाम आर्कबिशप डन्स्टन था। वह पहला मनुष्य था जो लड़नेवाला न होकर भी देश का शासक रहा। उसका काम बुद्धि से सिद्ध हुआ न कि तलवार से। डन्स्टन को इंग्लिस्तान सङ्घटित रखना और डेनों और अगरेज़ों को आपस में लड़ने से रोकना था। यह काम बहुत कठिन होता जो डेन और अंगरेज़ों में इतना भेद होता जितना अगरेजों और फ्रान्सवालों में है।



डी नदी में राजा एडगर।

परन्तु ये दोनों बहुत कुछ मिलते जुलते थे और यद्यपि दोनों की भाषायें एक न थीं परन्तु इतनी भिन्न भी न थीं कि थोड़े अभ्यास से एक दूसरे की बात न समझ लेता। अंगरेज़ों की अपेक्षा डेन कम सभ्य थे और उजड्ड थे। परन्तु वह भी ईसाई हो चुके थे और जैसे अंगरेज़ों ने ईसाई मत के अनुकूल रहना सहना सीखा था वैसे ही वे भी रहना सहना सीख सकते थे।

२।—डनस्टन और डेन—डेनों और अंगरेज़ों को शान्ति के साथ इकट्ठा रखने के उद्योग में डनस्टन ने ऐसी भूल नहीं की जो बहुधा ऐसे अवसर पर लोग किया करते हैं। बहुतों की यह इच्छा होती है कि जो लोग उनके समान ज्ञान नहीं रखते या वैसे अच्छे नहीं होते उनकी उन्नति करें। परन्तु उनको सफलता इस कारण नहीं होती कि वह चाहते हैं कि ठीक ठीक जैसे उनके विचार हैं वैसे ही औरों के भी हो जायँ, और और लोग भी वैसेही ठीक ठीक काम किया करें। डनस्टन ने इस बात

का उद्योग न किया कि डेन ठीक ठीक अंगरेज़ों के समान हो जायँ। उसने यह इच्छा प्रकट की कि डेन अपने आचार व्यवहार का प्रतिपालन करें और अंगरेज़ अपने अपने।

३।—डनस्टन ने शिक्षकों को बुलाया—डनस्टन ने शक्ति और सोहावनी वस्तुओं से प्रेम करना सिखा कर लोगों को मिलाना चाहा। वह आप भी पुस्तक, संगीत और कला से बड़ा प्रेम रखता था और शिक्षा को उत्साहित करता था। बहुत दिनों की लड़ाई में अंगरेज़ लोग वह भी भूल गये थे जो उनके बाप दादे जानते थे। डनस्टन ने बाहर से शिक्षक बुलवाये और शिक्षा देने के योग्य जब कभी कोई उसको मिल जाता तो बहुत प्रसन्न होता था। उसने शिक्षकों और वानप्रस्थ दोनों को उत्साहित किया। उन दिनों के वानप्रस्थ ऐसे आलसी न थे जैसे कि बहुतेरे कुछ दिन पीछे हो गये। बीड (Bede) जिसने बहुत दिन हुए अपने देश का इतिहास लिखा था वह भी वानप्रस्थ ही था। जिन लोगों ने क्रानिकल इतिहास लिखा था जिस में हमारे पूर्वपुरुषों के चरित्र का विचित्र वर्णन उन्हीं की बोली में है, वे भी वानप्रस्थ ही थे।

४।—एथेलरेड उपनाम डांवाँडोल—एडगर और डनस्टन के मरनेपर इंग्लिस्तान के बुरे दिन आ गये। एडवर्ड जो एडगर के पीछे राजा हुआ मार डाला गया। उसके बाद एथेलरेड सिंहासन पर बैठा। उसका उपनाम डांवाँडोल था क्योंकि उसको कोई मंत्र देनेवाला नहीं था। डेनमार्क और नार्वे से और बहुत से डेन इंग्लिस्तान को लूटने और जीतने के लिये आगये। कहीं कहीं कुछ उनका सामना किया गया। परन्तु राजाने सामना करनेवालों की कोई सहायता न की। वह यही समझता था कि डेनों को बहुतसा धन दे दिया जाय तो वे अपने घर लौट जायँगे। डेन चले गये, परन्तु फिर आये और लौट जाने के लिये और धन मांगने लगे।

५।—एलफ़िया (Elfheah) उपनाम शहीद—इंग्लिस्तान में इस समय बड़े बड़े वीर थे। उनमें कैंटरबरी का आर्कबिशप एलफ़िया सब से बड़ा वीर था। उसे डेनों ने बांध लिया और जहां सब मिलकर भोजन कर रहे थे वहीं बैठा कर उस से धन मांगा। एलफ़िया ने उत्तर दिया कि मैं धन नहीं दे सकता क्योंकि धन मुझको उन्हीं इलाक़ों के निर्धन किसानों से लेना पड़ेगा जो आर्कबिशप के पद से उसको मिले हैं। इसपर डेन बहुत बिगड़े और उसे गायकी हड्डियोंसे मारने लगे। परन्तु एलफ़िया ने न माना और अन्त को डेनों ने उसे हड्डियों से मार डाला। अंगरेज़ी धर्म्मसंघ ने उसे सन्त और शहीद माना जिसने अपने धर्मके लिये अपने प्राण दिये। उसके बहुत पीछे उसके एक उत्तराधिकारी सन्त एनसेल्म (Anselm) से पूछा गया कि जो अपने धर्मके लिये प्राण न दे वह भी शहीद हो सकता है? उसने उत्तर दिया, हां, जो सत्यके लिये प्राण देता है वह भी अपने धर्म के लिये प्राण दे रहा है।

६।—डेनों की जीत—एलफ़िया ऐसे वीर या और लोग जो लड़कर मर गये डेनों को भगा नहीं सकते थे जब तक कि एथेलरेड से बढ़ कर उनको राजा न मिलता। इन दिनों डेन सारे इंग्लिस्तान को आधीन करना चाहते थे। उनका राजा स्वेगड बड़ा योद्धा था और उसके मरने पर उसका बेटा न्यूट (Cnut) अपने बापके समान योद्धा हुआ। एथेलरेड मर गया और उसका उत्तराधिकारी वीर और वली राजा एडमगड आयरन-साइडस (लौहांग) हुआ। उसने न्यूट के साथ ऐसी कड़ी लड़ाई लड़ी कि डेन राजा को अंगरेज़ी राजा के साथ सन्धि करके इंग्लिस्तान बांट लेना पड़ा। थोड़े दिन पीछे एडमगड मर गया या मार डाला गया और न्यूट सारे देश का राजा हो गया।

७।—न्यूट का शासन—न्यूट का शासन एडगर ही का सा था। वह डेन था। परन्तु उसने अंगरेज़ों को आज्ञा दी कि अपने ही क़ानूनों पर चलें। उस ने देश में बड़ी दृढ़ता के साथ शान्ति रक्खी और उपद्रव बन्द किये। यद्यपि वह आप न पादरी था और न मंक (वानप्रस्थ) परन्तु उसने डनूस्टन की भांति इनका आदर किया। एकबार वह जलमग्न प्रान्त में नाव पर जा रहा था जहां अब चराई की धरती और अच्छे खेत बन गये हैं, उसने इलाई ( Ely ) के वानप्रस्थों को भजन गाते सुना। उसने मांझी से कहा कि नाव किनारे लगा दो जिस से हम भी भजन सुनें। एकबार वह रोम की यात्रा करने को गया जहां ईसा के धर्मदूत पीटर और पाल की समाधियां है, जिनको सारा पश्चिमी यूरप पूजता है। उसकी जवानी के निष्ठुर लड़ाई के दिन बीतते ही उसने सौम्यता और धार्मिकता सीखी। रोम से उसने अपनी प्रजा को एक पत्र भेजा जिस में लिखा था मैंने ईश्वर से प्रतिज्ञा की है कि मैं सारे कामों में सदाचार-वृत्ति रक्खूंगा, अपने देश और अपनी प्रजा पर न्याय से और धर्म से शासन करूँगा और सब के साथ न्याय करूँगा। आज तक हठ से अथवा जवानी के भ्रम से कोई अनीति की हो तो मैं ईश्वर की सहायता से पूरा प्रायश्चित करूँगा।

८।—न्यूट के बेटे—न्यूट के बेटे जो उसके उत्तराधिकारी हुए अपने बाप के समान न थे। वे हठी उजड्ड थे और उनके मरने पर अंगरेज़ों और डेनों ने मिलकर एथेलरेड के बेटे एडवर्ड को बाहर से बुला कर राजा बनाया। एडवर्ड का उपनाम कनफ़ेसर (गुरु के आगे अपने पाप स्वीकार करने वाला) था। यह उपनाम ईसाई धर्मसंघ के बड़े धार्मिकों को दिया जाता था यद्यपि वे एडवर्ड की भांति बुद्धिमान न भी हों।

## ॥ अध्याय ६ ॥

### * इंग्लिस्तान पर नार्मन लोगों का अधिकार *

१।—फ्रान्स में नार्मन—एडवर्ड का पालन-पोषण लड़कपन में उसके नानिहाल नार्मण्डी में हुआ था। कई बरस पहिले नार्मन लोगों ने, जिस नाम से यूरप महाद्वीप में डेन प्रसिद्ध थे, सीन नदी के दोनों तट पर फ्रांस देश के प्रान्तों पर अपना अधिकार जमा लिया था जैसे कि इंग्लिस्तान के उत्तर को डेन दबा बैठे थे। एक सन्धि भी हुई थी जिस से विपेनहैमकी सन्धि की भांति उन्हें अपने दबाये देश को अपने पास रखने का अधिकार था। उनका सरदार रोलो ( Rollo ) नार्मन लोगों का ड्यूक ( राजा ) हो गया। दो तीन पीढ़ियां बीतने पर नार्मन लोगों ने फ्रान्स की भाषा सीख ली और फ्रान्स-वालों की तरह रहने लगे। परन्तु नार्मन लोग फ्रान्स के राजा के आधीन न हुए जैसे डेन अंगरेजों के आधीन थे। फ्रान्स का राजा निर्बल था और नार्मण्डी ( Normandy ) को न जीत सका तौभी नार्मन ड्यूक उसको अपना अधिराज मानता रहा। जब कोई ड्यूक मरजाता तो उसका उत्तराधिकारी अपने को फ्रान्स के राजा का सेवक कहता था, और घुटनों के बल बैठकर अपने दोनों हाथ फ्रान्स-राज के हाथों के बीच में रखकर कसम खाता था कि हम सदा फ्रान्स-राज के अनुरक्त भक्त बने रहेंगे। यह सब कुछ होने पर भी ड्यूक स्वतन्त्र शासक था और जब उसका जी चाहता तो फ्रान्स राजा की आज्ञा मानता।

२।—अंगरेज़ और नार्मन—नार्मण्डी में कुछ सरदार या सामन्त थे जो ड्यूक की ओर से ज़िमींदारी पाये हुए थे जैसे कि कहने को ड्यूक फ्रान्स-राज का ज़िमींदार था। यह



नार्मन सरदार।

लोग उसके भक्त अनुरक्त रहने की कसम खाते और उसका अभिवंदन करते थे। यह लोग सरदार ( Knight ) कहलाते और घोड़ों पर चढ़ कर लड़ते थे। इनको घोड़े की सवारी का इतना अभ्यास था कि एकबार कुछ सरदार इंग्लिस्तान को आये और डोवर के रहनेवालों से लड़ बैठे तो घोड़ों पर चढ़ कर उनके घरोंपर धावा बोल दिया और घरोंमें घुसकर उन्हें मारने चले। यह बात विचित्र है और सुननेवाले हँसैंगे। परन्तु यह लोग बड़े समझदार थे, इनके पादरी बड़े बुद्धिमान थे, और अंगरेज़ों की अपेक्षा पढ़ने लिखने और कला कौशल में इनका जी लगता था। अंगरेज़ पैदल लड़ते थे और केवल लड़ाई के मैदान तक जाने के लिये घोड़े की सवारी करते, और वहां पहुंच कर उतर जाते थे।

नार्मन सरदार और नार्मन पादरी बड़े समझदार थे और अंगरेज़ों के साथ जो बड़े धनी न थे नार्मण्डी के रहने-वालों की अपेक्षा, बहुत अच्छा बर्त्ताव करते थे। नार्मन सरदार अपनी ज़िमींदारी के किसानों के साथ जो चाहता सो करता था। यही किसान उसका खेत बोते और काटते थे और सरदार अपनेही इजलास में उनको मनमाना दण्ड दे सकता था। इंग्लिस्तान के किसानों की दशा ऐसी न थी जैसी की अलफ्रेड के राज में रही। बहुतेरों में इतनी भी स्वतंत्रा न रही थी कि अपनी धरती के स्वामी रहते और जो बोते उसे आप अपने लिये काटते और किसी की मज़दूरी न करते। ये लोग सर्फ़ (Serf) अर्थात बेगारी होगए थे। इनको खेती करने के लिये कुछ धरती तभी दी जाती थी जब यह लोग अपने ज़िमींदार का काम करते, उसका हल चलाते, खेत बोते और काटते। उस धरती के अतिरिक्त इन्हें और मज़दूरी न दी जाती थी परन्तु इनपर कोई अपराध लगाया जाता तो इनको अधिकार था कि दोषनिवृत्ति (Compurgation) के लिये कुछ भले मानुस बुलाते। यह भले मानुस इन्हें निरदोष जानते तो क़सम खा लेते थे और किसान दण्ड से बच जाते थे। इसरीति से किसान ज़मींदारों के अत्याचार से बचे रहते और इंग्लिस्तान का निर्धन किसान नार्मण्डी के किसानों की अपेक्षा अन्याय से बचा रहता था।

३।—एडवर्ड कनफ़ेसर का नार्मन लोगों पर अनुग्रह—डन्स्टन कि भांति एडवर्ड भी अपनी अंगरेज़ी प्रजा को नार्मन लोगों के गुण सिखाने का उद्योग करता तो देश का भला हो जाता। यह तो दूर रहा वह अंगरेज़ी जाति और अंगरेज़ी आचार-व्यवहार से घृणा करता था। वह यह भी न चाहता था कि अंगरेज़ उसके पास रहें। उसने नार्मन बुला बुला कर उनको ऊंचे पद दिये। एक नार्मन को कैण्टरबरी का लाट पादरी बनाया। वह अंगरेज़ी

छोड़ कर फ्रान्स की बोली बोलता था इससे अंगरेज़ बहुतही असन्तुष्ट हुए। एक बड़ा बली सरदार पश्चिमी सैक्सनों का अर्ल जो राजा की आधीनता में उनका शासक था और जिसका नाम गाडविन था उनका मुखिया बना परन्तु मर्शिया और नार्थम्बरलैण्ड के अर्ल उससे बुरा मानते थे और गाडविन देश से निकाल दिया गया। गाडविन कुछ दिन पीछे लौट आया और उसने नार्मन लोगों को भगा दिया।

४।—<u>एडवर्ड के अन्तिम दिन</u>—गाडविन के मरने पर उसका बेटा हैरल्ड पश्चिमी सैक्सनों का अर्ल हुआ और राजा के नाम से इंग्लिस्तान का शासन करता रहा और एडवर्ड बेचारे को बिना नार्मनों ही के रहना पड़ा। इसको सबसे बड़ी चिन्ता वेस्टमिन्स्टर अर्थात वेस्टमिन्स्टर अबे के बड़े गिरजाघर बनवाने की थी। परन्तु जो गिरजा आजकल है उससे यह भिन्न था। इसमें रोमियों के सिखाये गोल मेहराब थे। नोकीले मेहराब पीछे से बनने लगे हैं। परन्तु एडवर्ड के जीते जी इसकी प्रतिष्ठा न होसकी। मरने पर वह अपने बनवाये गिरजा में गाड़ा गया।

५।—<u>अंगरेज़ों का राजा हैरल्ड (Harold)</u>—एडवर्ड ने न बेटा छोड़ा न भाई जो उसके पीछे राजा होता। उसके भाई का पोता एडगर निरा लड़का ही था और इंग्लिस्तान के राज को लड़का न सम्हाल सकता। हैरल्ड राजघराने का न था तौभी सरदारों ने उसे राजा बनाया। हैरल्ड राजा न भी होता तो उसके सामने कड़ी समस्या थी। मर्शिया और नार्थम्बरलैण्ड के अर्ल उससे ईर्षा रखते थे और उत्तर के रहने-वाले दक्षिणी की सहायता कैसे करते। इंग्लिस्तान बहुत दिनों एक राजा के शासन में था परन्तु आजकल की भांति लोगों के मन मिले न थे। यार्क के रहनेवालों को इक्सिटर (Exeter) या

सौथैम्पटनवालों के कुशल क्षेम से उपेक्षा थी। समुद्र पार बड़े बड़े जोखम थे। नार्वे का राजा हैरल्ड हार्डराडा (Harold Hardrada) उत्तरी इंग्लिस्तान पर चढ़ाई करने की धमकी दे रहा था और नार्मन लोगों का ड्यूक (राजा) विलियम जो एक शिक्षित और लड़ाका जाति का सबसे योग्य और सबसे बड़ा योद्धा था दक्खिन इंग्लिस्तान पर ताक लगाये था। राजा न्युट की भांति हैरल्ड हार्डराडा भी बहुतसी धरती और बहुत से धन का लोभी था परन्तु विलियम पूरा अंगरेज़ी राजा होने का दावा करता था। उसका दावा उचित न था परन्तु ऐसी दलीलें इकट्ठी करके जिसमें एक भी काम की नहीं थी उसने यह दिखाना चाहा कि उसका दावा सच्चा है।

६।—नार्मनों की चढ़ाई—हैरल्ड को कड़ी लड़ाई का सामना था। उसने सुना कि हैरल्ड हार्डराडा यार्क ज़िले में उतरा है। उसने तुरन्त उत्तर को कूच कर दिया और यार्क के पास स्टैमफोर्ड ब्रिज (Stamford Bridge) के मैदान में हैरल्ड हार्डराडा को हराकर मार डाला। उसी समर-भूमि ही में उस को यह समाचार मिला कि विलियम भी पेवेन्सी के पास उतरा है और वह दक्खिन की ओर चला। इंग्लिस्तान में एकता होती तो विलियम को नीचा देखना पड़ता परन्तु इंग्लिस्तान के उत्तर और मध्य भाग के रहने-वालों ने हैरल्ड का साथ न दिया। उस के भाई गुर्थ ने उसे यह सुझाया कि पेवेन्सी और लंदन के बीच का देश उजाड़ दिया जाय जिससे विलियम की सेना भूखों मर जाय। हैरल्डने उत्तर दिया कि हम अंगरेज़ी देश का एक चिप्पा भी न उजाड़ैंगे और हेस्टिंग्स से दूर उत्तर सेनलैक (Senlac) में एक खरिया की पहाड़ी पर वह जमकर खड़ा हो गया।

७।—सेनलैक की लड़ाई—सेनलैक की लड़ाई जिसे कभी कभी हेस्टिंग्स की लड़ाई भी कहते हैं उन लड़ाइयों में थी

जिनका जीतना केवल वीरता से असंभव था। हैरल्ड के अंगरेज़ वीरता में विलियम के नार्मनों से कम न थे। परन्तु अंगरेज़ों ने जैसा उनका पीछे भी बहुधा यही विचार रहा है, यह विचारा कि जैसा उनके पुरखे करते आये हैं वैसा ही करना चाहिये। लड़ने की पुरानी रीति यह थी कि सब लोग अपनी अपनी ढाल आगे किये हुये सटे खड़े रहैं। इस अवसर पर उनको एक लाभ यह था कि वह लोग एक लंबी पहाड़ी के ऊपर खड़े थे और बैरी उनके नीचे बढ़ा आता था। विलियम की सेना के अच्छे सिपाही घोड़ों पर सवार थे और सवारों के लिये पहाड़ी पर चढ़ना कठिन था। सवारों के अतिरिक्त विलियम के पास पैदल सिपाही भी थे जिनमें से बहुतेरे तीर धनुष लिये हुए थे। विलियम की सेनाने हल्ला करके पहाड़ी पर अधिकार करना चाहा परन्तु पीछे हटा दी गई। नार्मन फिर बढ़े और जो उनमें चतुर थे उन्होंने भागने का बहाना किया। कुछ भोले भाले अंगरेज़ समझे कि लड़ाई सर होगई और आनन्द में फूले नीचे को झपटे। नार्मन चट पट



सेनलेक की लड़ाई।

लौट पड़े और उन्हें खदेड़ते हुए पहाड़ी के ऊपर पहुंच गये। अंगरेज़ यहां घंटों तक उनका सामना कर सकते थे परन्तु जीतना कठिन था। धीरे धीरे दृढ़ता के साथ नार्मन सवार पहाड़ की चोटी तक उनको पछाड़ते और खेती से घास की भांति काटते हुए पहाड़ी को लोथों से बिछा दिया। हैरल्ड और उसके चुने हुए साथी बेर तक लड़ते रहे। अन्तको विलियमने अपने धनुषधारियों को आज्ञा दी कि ऊपर बान मारो। उनका एक बान हैरल्ड की आंखमें लगा। अंगरेज़ी राजा पछाड़ खाकर गिर पड़ा और नार्मनों की जय होगई।

८।—इंग्लिस्तान का विजित होना—सारे इंग्लिस्तान के जीतने में साढ़े तीन बरस लगे। सेनलैक की हार से अंगरेज़ों की आंखें न खुलीं और विलियम से लड़ने के लिये एक न हुए। कभी पश्चिम विलियम से भिड़ा कभी उत्तर। एक एक प्रान्त अलग अलग लड़ा और अलग अलग हार गया।

## ॥ अध्याय ७ ॥

### * विजेता और उसके बेटे *

विलियम प्रथम, १०६६; विलियम द्वितीय, १०८७;
हेनरी प्रथम, ११००।

१।—विलियम विजेता—इतिहास में विलियम विजेता के उपनाम से प्रसिद्ध है परन्तु उन दिनों इस शब्द का अर्थ यह नहीं था जो आजकल है। आजकल विजेता से लोग समझते हैं कि जीतनेवाले ने लड़ाई में जय पाकर के राज पाया है। परन्तु उनदिनों विजेता से वह मनुष्य समझा जाता था जिसे कोई ऐसी वस्तु मिल जाय जो उसके पास न थी चाहे वह उसके लिये लड़े या न लड़े। विलियम ने इंग्लिस्तान के राज

पर दावा किया और यह बहाना किया कि अनेक कारणों से हम इसके अधिकारी हैं। सेनलैक की लड़ाई के पीछे बड़े बड़े सरदारों ने उसे राजा मान लिया यद्यपि उसका डर इतना था कि न मानते तो क्या करते। वह अपने को न्याय से एडवर्ड और अलफ्रेड की भांति इंग्लिस्तान का राजा कहने लगा। वह उन लोगों में से था जो शान्ति और अच्छे शासन के प्रेमी होते हैं, जब कभी दोनों उनके प्रयोजनों के प्रतिकूल नहीं पड़ते। वह नहीं चाहता था कि कोई उसकी रोक टोक करे। उसके समकालीन एक अंगरेज़ ने लिखा है कि जो उसके काम में अड़चन डालता उस से वह बड़ी कठोरता करता था। वह इतना क्रूर और रूखा था कि उसकी इच्छा के प्रतिकूल कोई कुछ कर नहीं सकता था। जो सामन्त उसकी आज्ञा के विरुद्ध कोई काम करते, बन्दी कर लिये जाते थे। बिशप लोगों से उसने उनकी ज़िम्मीदारी छीन ली। कालिजों से उनका अधिकार ले लिया। उसने अपने भाई को भी नहीं छोड़ा। वह देश में प्रधान मनुष्य माना जाता था, परन्तु उसे भी राजा ने बन्दीघर में डाल दिया। जिस किसी को अपना धन और अपना जीवन-प्राण प्यारा था उसे राजा की इच्छा के अनुसार काम करना आवश्यक था।

२।—<u>इंग्लिस्तान में नार्मन लोगों का ज़िम्मीदारी पाना</u>—विलियम जब कभी बड़ा अत्याचार करता तो यह दिखलाने का प्रयत्न करता था कि हमने बहुत ठीक किया। सेनलैक की पहाड़ी पर जिन क्रूर घोड़सवारों ने उसके साथ धावा मारा था, उनकी इच्छा केवल यही न थी कि राजा हमसे प्रसन्न हों। वह इंग्लिस्तान में बड़े आदमी बनना चाहते थे; बड़े बड़े हरे भरे खेत लेना चाहते और बड़े बड़े महलों में रहना चाहते थे। विलियम के पास उनके लिये यह वस्तु न होती तो उसके विरोधी बन जाते इसलिये उसने उनकी इच्छा के

अनुसार काम किया और वरज़ोरी छीन लेने को क़ानून का प्रति-पालन करना बना कर दिखाया। उसने यह कहा कि एडवर्ड के मरने पर हम न्याय से राजा हैं। इस कारण जो अंगरेज़ सेनलैक में या और कहीं अपने राजा के विरूद्ध लड़े हैं, वे राजद्रोही हैं और उनकी ज़िमीदारी ज़ब्त कर ली जायगी। इस रीति से उसको बहुत सी ज़िमीदारियां मिल गई और यह सब ज़िमीदारियां उसने अपने नार्मन साथियों को देदीं। थोड़ेही दिनों में सारी बड़ी बड़ी ज़िमीदारियां नार्मन लोगों के हाथ आगई। अंगरेज़ों के पास छोटे छोटे इलाक़े रह गये या बड़े बड़े नार्मन ज़िमीदारों के आश्रित हो गये।

३।—अंगरेज़ और नार्मन दोनों विलियम के सहायक—इस रीति से विलियम ने जो चाहा सो किया। नार्मन ज़िमीदार उसके अधीन यह समझ कर रहे कि उनका सेना-नायक राजा न होता तो अंगरेज़ उनको निकाल देते और विचित्रता यह भी है कि अंगरेज़ वीर अपने जी से उसके आधीन बने रहे। जिस नार्मन को वह बुरा मानते थे वह राजा न था वरन् ज़िमीदार था जो हथीयार-बन्द सिपाहियों को रखकर उनके बीच में रहता था और उनको सताया करता था। इसका परिणाम यह होता है कि लोग अंगरेज़ी राजा पसन्द करते किन्तु इसके प्रतिकूल उन्हे एक नार्मन राजा की आवश्यकता थी जो नार्मन अत्याचारियों को दवा रखता। अपनी आज्ञा मानने को वाध्य करने के लिये विलियम के पास और भी उपाय थे। उसने यह प्रवन्ध किया कि सबसे धनी नार्मन ज़िमीदार के पास भी एक ज़िले में इतनी ज़िमीदारी न रहे जिसे वह अपनी विखरी हुई ज़िमीदारी के रहनेवाले योद्धाओं को सुगमता से इकट्ठा न कर सके। नगरों में उसने क़िले वनवाये जिनके खड़हर अवभी कहीं कहीं देखे जाते हैं। इनमें उसने अपने सिपाही भर दिये। लंदन नगर को न्स

में रखने के लिए जो क़िला उसने बनवाया वह अबतक टावर के नाम से प्रसिद्ध है। उसने बड़े बड़े ज़िमीदारों को इस शर्त पर ज़िमीदारी दी कि आवश्यकता पड़ने पर उसके लिये आप युद्ध करें और लड़नेवाले सिपाही साथ लावें। जो लोग इस रीति से ज़िमीदारी पाये हुए थे, उसके सामने घुटनों के बल बैठते और उसका अभविन्दन करते थे, जिसका अभिप्राय यह था कि उसकी आधीनता मान रहे हैं। बड़े बड़े सरदार भी योद्धाओं की समुचित संख्या लाने के लिये कुछ कुछ धरती उन लोगों को दिया करते थे जो इसी भांति 'उनका आदर करते थे। विलियम को यह डर लगा था कि जिन लोगोंने सरदारों का अभिवन्दन किया है वे सरदारोंके भक्त अनुरक्त होंगे, उसके नहीं और अवसर पड़ने पर अपने सरदारों की ओर से उससे लड़ेंगे। इस विचार से उसने सब लोगों को जिनको उसने ज़िमीदारी दी थी या जिन्हों ने ज़िमीदारों से धरती पाई थी, सालिसबरी में बुलाकर बड़ी सभा की और उनसे राजा के भक्त अनुरक्त रखने की क़सम खिलाई। यह लोग विद्रोह करते तो राजद्रोही होने से दण्ड पाते। यदि वह अपने भक्त अनुरक्त होने की उनसे क़सम न लेता तो वह कह सकते थे कि हम अपने सरदारों की ओर सेराजा से भी लड़ सकते हैं।

४।—विलियम की निष्ठुरता—विलियम ने अपनी शक्ति दृढ़ रखने के लिये इससे भी बढ़कर बुरे काम किये। उस को यह डर लगा कि स्काट और डेन मिलकर इंग्लिस्तान के उत्तर प्रान्त पर चढ़ाई न करदें। इस लिये उसने अपने और उनके बीच में एक ओट बनाना निश्चय किया और बड़ी निर्दयता से यार्क प्रान्त की हरी भरी तरेटी को उजाड़ दिया जिसके बीच में आजकल नार्थ ईस्टर्न रेलवे लहलहाते खेतों के बीच में एक ओर जलमग्न और दूसरी ओर समतल बनों में होती हुई जातीहै।

सारे घर जला दिये गये और खेत उजाड़ दिये गये। रहने-वाले या तो मर गये या अन्न के लिये उन्हें दास बनना पड़ा। यह लिखा है कि उनमें से कुछ लोगों ने इन बुरे दिनों में अन्न के लिये पशुओं की भांति अपना गला झुकाया जिसका अभिप्राय यह है कि भूखों मरने से बचने के लिये यह लोग दास बन गये।

५।—नया वन (New Forest)—विलियम का उत्तर प्रान्त को उजाड़ना इतना लोगों को याद नहीं है जितना दक्षिण प्रान्तों का। उसने वैरी से अपनी रक्षा करने के लिये उत्तर प्रान्त नष्ट कर दिया परन्तु नया वन उसने अपने विनोद के लिये उजाड़ा। अपने सजातियों की भांति इसे भी शिकार का बड़ा शौक़ था। उसके विषय में कहा जाता है कि वह हिरनों को इतना चाहता था मानो उनका बाप था। उसकी आज्ञा बिना जो अहेर करते उनको कड़ा दण्ड दिया जाता था। जो कोई कभी नये वन (New Forest) के पास रहा है वह जानता ही होगा कि वहां की धरती कितनी पतली है और उसमें कभी पूरी खेती न हुई होगी। यहां विलियम ने उपजाऊ स्थानों में, जो घर बने थे या नाजके खेत थे उनको नष्ट कर दिया। परन्तु इससे भी जिन लोगोंको उसने बेघरबार-का कर दिया वह उसको कोसतेही रहे।

६।—डोम्सडे बुक—मनुष्य पर बुरा करने के लिये दोष लगता ही है परन्तु कभी कभी भला करने के लिये भी उस पर दोष लगता है। हम लोग डोम्सडे बुक को उसकी ख्याति का बहुत बड़ा प्रमाण मानते हैं। डोम्स डे का अर्थ सौ वर्ष पीछे एक लेखक ने किया था, "क़यामत का दिन" क्योंकि झगड़ा निपटाने के लिये यह एक पुस्तक प्रमाण मानी जाती थी। इस पुस्तक में इंग्लिस्तान की सारी धरती की खतियौनी थी; ज़िमीदारों के नाम थे और जो कर उन्हें राजा को देना था वह

भी लिखा हुआ था। हम लोग जानते हैं कि ऐसी पुस्तक कितनी उपयोगी होती है। इससे राजा हर एक से राजकर का उचित अंश मांग सकता था, उससे अधिक नहीं। परन्तु उस समय भी जैसा कि बहुधा उसके पीछे भी होता रहा, लोग यह चाहते हैं कि कुछ भी देना न पड़े। लोग कहते थे कि एक गट्ठा धरती एक बैल या गाय या सुअर न छुटा था जिस के करने में राजा को लाज न आई उसके हकने में हमलोगों को लाज आती है। परन्तु इससे भी बढ़ कर बुरी बुरी बातें कही गई। राजा और मुखिया लोग सोने और चांदी से इतना प्रेम करते थे कि उन्हें इस बात का विचार न था कि किन पापों से उनके पास आता है। धन आना ही चाहिए। पर इतनी निठुराई होने पर भी राजा विलियम न्याय करना चाहता था, जब कभी उसकी युक्तियों के प्रतिकूल न पड़े। वह चोरों और घातकों को कड़ा दण्ड दिया करता था। लोग कहते हैं कि उसके राज में देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक सोना लादे हुए लोग बेखटके जा सकते थे।

७।—विलियम रूफ़स (William Rufus)— विजेता का लड़का विलियम द्वितीय उपनाम रूफ़स या लाल राजा, अपने पिता के समान योग्य था। उसने ऐसा कोई काम नहीं उठाया जिसमें इसको सफलता न हुई। उसने विघ्न पड़ने पर कोई काम न छोड़ा और अपनी शक्ति भर उस विघ्न को दूर करने का उद्योग किया। एक बार नार्मण्डी में विद्रोह दबाने के लिये वह चैनेल पार करना चाहता था। समुद्र-तट पर पहुंचा तो बड़ी आंधी चल रही थी। माझियों ने ऐसे दुर्दिन में नाव चलाना स्वीकार न किया। रूफ़स ने कहा तुमने कभी यह भी सुना

है कि कोई राजा डूबा। उसने उन्हें नाव चलाने को बाध्य किया। कुशल से पार उतर गया और अपने वैरियों को परास्त किया। परन्तु उसमें अपने बाप की योग्यता होने पर भी उसकी न्याय-प्रियता न थी। वह बड़ा ही दुष्ट था। परन्तु ऐसे मनुष्य की भी अंगरेज़ों ने सहायता की जिससे वह अपने सिंहासन पर स्थिर रहे। उसके बड़े भाई राबर्ट को नार्मंडी का राज मिला था। इंग्लिस्तान के नार्मन चाहते थे कि वही इंग्लिस्तान का भी राजा हो। वह लोग जानते थे कि राबर्ट कोमल-चित्त और अस्थिर-सङ्कल्प है और उसके राज में जो चाहेंगे सो करेंगे। परन्तु अंगरेज़ लोग इसके विरूद्ध थे कि नार्मन लोगों को मनमानी करने का अवसर मिले। नार्मन लोग अंगरेज़ों को सताना चाहते थे। इस कारण हजारों अंगरेज़ विलियम के पक्षपाती हो गये और नार्मन झुंझलाते हुए उसकी आधीनता में रह गये।

८।—विलियम रूफ़स और एनसेल्म—कुछ दिन पीछे विलियम एक ऐसे मनुष्य से लड़ बैठा जो ऐसाही सौम्य था, जितना कि वह दुष्ट था। विजेता ने बड़े और छोटे गिरिजाघरों में नार्मन पादरी भर दिये थे परन्तु इस बात का विचार रक्खा था कि जो बुद्धिमानी के लिये प्रसिद्ध नहो उसको यह पद न मिले। परन्तु लाल राजा ने नौकर रखने के अधिकार को रुपया कमाने का ढंग समझा, और यह रीति निकाली कि जब कभी कोई बिशप या अबट मर जाय तो उसके स्थान पर कोई दूसरा मुक़र्रर न किया जाय और इस उपाय से जो आमदनी आती वह उसके पास जाती। एक बार वह बहुत बीमार हो गया; इस दशा में उसकी अन्तरात्मा

ने उसको सुझा दिया कि तुमने पाप किया है। जो लोग उसके पास खड़े थे उन्हों ने उससे प्रार्थना की कि कैण्टरबरी का लाट पादरी एनसेल्म (Anselm) बनाया जाय। ऐनसेल्म औस्ता का रहनेवाला था और नार्मण्डी के एक मठ में अधिकारी था। वह बड़ा विद्वान था और उस समय उसके समान दूसरा संयमी साधु न था। वह आर्कबिशप बनना न चाहता था क्यों कि वह जानता था कि राजा के पास रह कर उसके विषय में सच्ची बात न कह सकेगा। उसने कहा कि इंग्लिस्तान का हल सीधा नहीं चल सकता जो तुम इस में उजड्ड बैल के साथ एक सीधी बूढ़ी भेड़ जोत दोगे परन्तु उसकी बात किसी ने नहीं मानी। वह पकड़ कर राजा के बिस्तर के पास लाया गया और बरजोरी से उसके हाथ में बिशप के अधिकार का चिह्न क्रोज़ियर (Crozier) पकड़ा दिया गया। ऐनसेल्म ने सच कहा था, राजा अच्छा हो गया; परन्तु धर्म के विचार भूल गिया। एनसेल्म जो उचित होता वही कहता और करता रहा और अन्त को उसे राज छोड़ देना पड़ा।

९।—विलियम का अन्त एकाएक हो गया—एक दिन नये वन (New Forest) में उसका शरीर एक तीर से बिधा हुआ मिला। वालटर टिरल (Walter Tyrrell) नामके एक मनुष्य पर सन्देह हुआ, परन्तु किसी ने देखा न था। यह सम्भव जान पड़ता है कि नया बन बनते समय जो लोग बेघरबार के कर दिये गये थे उन्हीं में से किसी ने विलियम का बध किया।



हेनरी प्रथम।

१०।—हेनरी प्रथम—विजेता का सबसे छोटा लड़का हेनरी प्रथम रूफ़स का उत्तराधिकारी चुना गया। उसने एक अंगरेज़ राजकुमारी के साथ अपना विवाह किया जो एडमंड आयरन-साइडस (लौहांग) की परपोती थी। इस सम्बन्ध से इंग्लिस्तान के राजा विजेता की सन्तान तो थे ही अलफ़्रेड और एग्बर्ट के वंश के भी हो गये। विलियम की भांति हेनरी भी एनसेलम से लड़ बैठा परन्तु कुछ दिन पीछे दोनों में मेल हो गया। हेनरी ने भी ज़िमीदारों को बड़ी नार्मन कठोरता से दबाया परन्तु उसकी अंगरेज़ी प्रजा भी उसको चाहती न थी। उसके राज में बड़ी कड़ाई थी और कर बहुत लगा था। तौभी अंगरेज़ नार्मन ज़िमीदारों के अत्याचार से घबड़ाते थे, कड़े राजा से नहीं। अंगरेज़ उसको "न्याय का सिंह" कहते थे और पैंतीस बरस तक अनुरक्ति के साथ उसकी सेवा की। उन्हीं की सहायता से उसने अपने भाई राबर्ट



हेनरी प्रथम के समय का जंगी नागरिक और पादरियों का पहनावा।

को परास्त कर दिया। उससे नार्मण्डी छीन ली और उसे जीवन भर के लिये कार्डिफ़ (Cardiff) की गढ़ी में बन्द कर दिया।

## ॥ अध्याय ८ ॥

### * स्टीफेन के राज की अराजकता और हेनरी द्वितीय का शान्ति स्थापन करना *

स्टीफ़ेन ११३५; हेनरी द्वितीय ११५४।

१।—राजा स्टीफ़ेन (Stephen)—हेनरी के मरने पर अंगरेज़ों ने जाना कि हेनरी की कठोरता ने उन्हें किस संकट से

बचाया था। हेनरी का बेटा विलियम नार्मण्डी से इंग्लिस्तान आते हुए रास्ते में डूब गया। बड़े बड़े ज़िमीदारों ने उसकी बेटी मैटिल्डा को उसके जीते जी उसकी उत्तराधिकारिणी मान लेना स्वीकार कर लिया था परन्तु उसके पीछे मुकर गये और उसके भतीजे स्टीफ़ेन को राजा बनाया। स्टीफ़ेन को कुछ लोग अनधिकारी कहते हैं परन्तु वह अनधिकारी न था। इंग्लिस्तान में उन दिनों कोई ऐसा नियम न था कि पिछले राजा के बड़े बेटेही को राज दिया जाय। देश के बड़े बड़े लोग सदा राजघराने में से किसी को राजा चुना करते थे। आज तक कोई रानी सिंहासन पर न बैठी थी और जब राजा लड़ाई के मैदान में जाया करता था तो बहुतेरे यह चाहते होंगे कि स्त्री रानी न हो। स्टीफ़ेन हेनरी का सबसे निकट का सगोत्र था। वह उदार और नेकनियत था परन्तु अपने तीन पूर्वजों की भांति शक्तिशाली न था और सरदारों को शान्त न रख सका। यह दशा देख कर मैटिल्डा इंग्लिस्तान में पहुंची और राज की दावा-दार हुई। कुछ सरदार उसकी ओर से लड़े कुछ स्टीफ़ेन की। सच तो यह था किसी को दोनों में से किसी के साथ विशेष अनुरक्ति न थी। वह लोग इतना ही समझते थे कि जब दो दावादार राज के लिये लड़ते रहेंगे तो वह लोग अपनी मनमानी कर सकेंगे।

२।—<u>सरदारों का अत्याचार</u>—परन्तु उनकी मनमानी चालों से अंगरेज़ी प्रजा का सर्वनाश हुआ जाता था। उन्हों ने बड़ी दृढ़ गढ़ियां बनवाईं और उनमें हथियार-बन्द सिपाही भर दिये। इन में से वह लोग लूट मार करते ऐसे ही निकला करते थे जैसे जंगली जानवर अपनी मांद से निकलते हैं। वह आपस में कट्टर विरोध से लड़ते और हरे भरे सुन्दर देश को लूट कर और आग लगा कर चौपट कर देते थे।

अच्छे से अच्छे उपजाऊ प्रान्तोंमें रोटियों का सहारा न रह जाता था। जो कुछ धन माल मिलता, उठा ले जाते; घरों में आग लगाते, नगरों को लूटते; किसी पर धन छिपाने का सन्देह होता तो उसे अपनी गढ़ी में पकड़ लेजाते और उसकी सांसत करते जिसमें अपना धन बतादे। मनुष्यों को उलटा लटका कर मुंह में दुर्गन्ध धुआं भरते। कोई अँगूठों में रस्सी बांध कर लटकाये जाते किसी को फांसी दी जाती और पावों में भारी भारी कवच बांध दिये जाते थे। गंठीली रस्सी से खोपड़ी बांध कर इतने जोर से ऐंठते कि भेजा निकल पड़ता। कोई कोठरियों में बन्द कर दिये जाते जिनमें सांप बिच्छू रेंगा करते थे। कोई छोटे छोटे सन्दूकों में बन्द किये जाते जिनमें नोकीले पत्थर पड़े रहते और उनमें मनुष्य इतने जोर से कसे जाते थे कि उनके हाथ पाँव टूट जायँ। किसी किसी गढ़ी में एक भयानक वस्तु होती थी जिसे रैशनटीज (Rachentege) कहते थे जिसे दो तीन मनुष्य कठिनाई से उठा सकते। इसकी बनावट ऐसी थी कि वह एक भारी लकड़ी में बांध दी जाती थी। इसमें एक पैना चक्र ऐसा रहता था जो मनुष्य के गले को घेर ले। इसको पहना देने से न वह लेट सकता था न सो सकता था। हज़ारों मनुष्य भूखों मार डाले गये। इन अभागों का कोई बचानेवाला न था। स्टीफ़ेन और मैटिल्डा अपनेही झगड़ों से छुट्टी न पाते थे जो अपनी प्रजा के साथ न्याय करते। प्रजा ने ईश्वर की दुहाई दी पर उसने भी न सुनी। लोग खुल्लम खुल्ला कहते थे कि ईसा और उसके हवारी सब सो रहे हैं।

३।—<u>हेनरी द्वितीय ने शान्ति स्थापित की</u>—अन्तको दशा बदली। ११८६ ई० में १६ बरस राज करके—इसे राज नहीं कहना चाहिये—स्टीफ़ेन मर गया और मैटिल्डा का लड़का हेनरी द्वितीय राजा हुआ। अपने नाना हेनरी प्रथम की भांति वह भी बड़ा

कड़ा शासक था। नरमी और दया करना उसे आता ही न था। वह समझता था कि प्रजा उससे सन्तुष्ट तभी होगी जब वह क्रूर अत्याचारियों का दमन कर दे क्योंकि यह लोग राजा और प्रजा दोनों के बैरी थे। उसने तुरन्त इनकी गढ़ियों को गिराने का प्रबन्ध किया। इतनी ही से शान्ति स्थापित होगई क्योंकि जब सरदारों के पास लूट का धन रखने और लोगों को पकड़ कर बन्द करने को कोई सुदृढ़ स्थान न रह गया तो उन्हें अपने पड़ोसियों को सताने का साहस भी न रहा।

४।—<u>हेनरी के जंगीसुधार</u>—इसके करने पर उसने ऐसा प्रयत्न किया जिससे ऐसा उपद्रव फिर होही न सके। उन दिनों ऐसी सेना नहीं थी जैसी अब है जिस में ऐसे लोग होते हैं जिन्हों ने सिपाही बनने के लिये बरसों से अपना घरबार छोड़ दिया है। लड़नेवाली सेना में कुछ बड़े बड़े ज़िमींदार थे जिन्हें राजा के लिये घोड़े पर चढ़कर लड़ने को ज़िमीदारी मिली थी और कुछ छोटी जायदादवाले थे जिनके लिये उपद्रव मचने या किसी बाहरवाले बैरी के चढ़ाई करने पर अपने घरों से निकल कर अपने घरों की रक्षा करना आवश्यक था। हेनरी चाहता था कि बड़े बड़े ज़िमींदारों का बल घट जाय और उनसे कहने लगा कि तुम हमको रुपया दो तो हम तुम्हें युद्ध के काम से बरी कर दें। सरदार भी राजा के लिये लड़ाई लड़ने से छुटकारा पाने को बहुत प्रसन्न थे और राजा को धन देने के लिये तैयार हो गये। इस उपाय से उन का लड़ने का अभ्यास घटता गया और राजा को जो उनसे डर था वह भी जाता रहा। इधर तो उनका बल घटा उधर हेनरी ने कुछ लोगों को थोड़ी धरती दे कर उनको हथियार बांधने का उत्साह दिया जिससे वह लोग अपनी रक्षा करने के लिये तैयार रहें।

५।—अदालती सुधार—हेनरी ने और भी सुधार किये; क़ानून अनेक प्रकार से ठीक किये। उसका नाना जजों को देश में घूम घूम कर न्याय करने के लिये भेजा करता था जैसा कि आजकल दौरे में जज लोग जाया करते हैं। हेनरी द्वितीय ने आज्ञा दी कि जज कई बार जायें और लोगों से पूँछ पूँछ कर इस बात की जांच करें कि धरती के झगड़ों में सच्चा मालिक कौन है और किसने मनुष्य मारे या डाके डाले हैं। लोगों को क़सम खाकर सच कहना पड़ता था। कुछ दिन बाद यह देखा गया कि यह लोग आप ही न जानते थे कि सच्ची बात क्या है और औरों से पूछना चाहते थे। इससे हेनरी के पीछे यह रीति प्रचलित हुई कि जब तक और लोगों की गवाही न सुनलें उन्हें जिस बात को आप सच समझते हैं उसे भी कहना अनुचित है। इस रीत से क्रम से आजकल की जूरी ( Jury ) बन गई अर्थात लोगों की एक पंचायत या सभा जो अदालत में गवाही सुनकर निश्चय करे कि सच्ची बात क्या है और उसे कहदे। इसको फ़ैसला ( Verdict ) कहते हैं जिसका अर्थ है "सच्ची बात"। हेनरी के समय में यह लोग बिना गवाही सुनेही अपने व्यक्तिगत ज्ञान से अपना निश्चय बता दिया करते थे।

६।—अंगरेज़ों और नार्मनों का मेल—हेनरी ने ये सब सुधार किये। परन्तु देश में एक और बात हो रही थी जिस में हेनरी को हाथ लगाना न पड़ा। अब अंगरेज़ों और नार्मनों में भेद कम होने लगा। जब हेनरी सिंहासन पर बैठा तो नार्मन बिजय को ८८ बरस बीत चुके थे और इस बीच में नार्मनों और अंगरेज़ों के विवाह सम्बन्ध हुए। हेनरी के समय में ऊंची श्रेणी के लोग फ़रांसीसी भाषा बोलते थे और नीची श्रेणीवाले जो सब के सब अंगरेज़ थे अंगरेज़ी में बात चीत करते थे।

परन्तु ऊंची श्रेणी में यह कोई न कह सकता था कि हम शुद्ध नार्मन हैं क्योंकि उसकी मां या दादी अंगरेज़ जाति की थी।

७।—हेनरी द्वितीय और पादरी—बहुत सी बातों में हेनरी को सफलता हुई परन्तु एक बात में वह कृतकार्य न हुआ। उन दिनों पादरी लोग यह समझते थे कि पादरी अपराध करे तो राजा की अदालत उसकी जांच नहीं कर सकती। उसकी जांच करने के लिये धर्मसंघ की एक विशेष अदालत बनाई जाय। परन्तु धर्मसंघ की अदालतें किसी को प्राणदण्ड की आज्ञा नहीं दे सकती थीं। इससे पादरी जो किसी को मारडाले तो उसका पद छीन लिया जाता था और वह किसी मठ में बन्द कर दिया जाता था। और कोई वही अपराध करै तो राजा की अदालत में उसकी जांच की जाती और उसे फांसी दी जाती। सौभाग्य से आजकल पादरी के लिये मनुष्यवध एक अनोखी बात है। आजकल पादरी लोग धर्म के कामों में लगे रहते हैं। उन दिनों जो हाथ पावँ चला कर या सिपाही बनकर अपनी रोटी कमाना न चाहता था वह पादरी बन जाता था। पादरी ही बहुधा लिखना पढ़ना जानते थे। इस कारण बहुतेरे ऐसे भी पादरी बनते जो हाथों के बदले मस्तिष्क से काम करना चाहते थे। आजकल की भांति उन दिनों भी बहुतेरे औरों को धोखा देने में अपनी बुद्धि से काम लेते, बहुतेरे आलसी औरों के मत्थे भोजन करने में अपनी चतुराई जानते। इन कारणों से हेनरी द्वितीय के समय में बहुत से दुष्ट और आलसी पादरी थे। हेनरी द्वितीय ने आग्रह से कहा कि ऐसे लोग अपराध करैं तो हमारी अदालतों में उनकी जांच हो।

८।—हेनरी द्वितीय का बेकेट ( Becket ) को कैण्टरबरी का आर्कबिशप बनाना—टामस बेकेट हेनरी का दीवान ( Chancellor ) था और उसका काम था कि राजा की

ओर से पत्रव्यवहार करै और राजकाज देखै। बेकेट बड़ा रंगीला उड़ाऊ मनुष्य था और हेनरी जो चाहता उसके करने में तत्पर रहता था। हेनरी ने उसे कैण्टरबरी का आर्कबिशप बनाया तो यह समझा कि बेकेट की सहायता से पादरी लोग सरकारी अदालतों में मुक़द्दमा चलाना मान जायँगे।

६।—हेनरी द्वितीय और बेकेट से अनबन—परन्तु आर्कबिशप होते ही बेकेट राजा के प्रतिकूल हो गया। वह सादी चाल से रहने लगा और अपना उड़ाऊ स्वभाव छोड़ दिया। बेकेट का स्वभाव ही ऐसा था कि झगड़ा करना उसे अच्छा लगता था क्यों कि उसे युक्तियां बहुत आती थीं। हेनरी ने यह बात मानली की जब कभी कोई पादरी अपराध करै तो उसकी जांच पहिले धर्मसंघ करै परन्तु जब उसका पद छीन लिया जाय तो साधारण प्रजा की भांति अदालती काररवाई करने के लिये सरकारी जजों के हवाले कर दिया जाय। बेकेट ने उत्तर दिया कि एकही अपराध के लिये किसी को दो बार दण्ड नहीं दिया जा सकता और पद छीन लेनाही बहुत बड़ा दण्ड है; उसको दूसरा दण्ड न मिलना चाहिये। बेकेट यह भी कह सकता था कि कभी कभी जज लोग न्याय न करैंगे। अगले दिनों में जजों को इस बात की परवाह न थी कि न्याय हो या अन्याय। हेनरी आप भी जब बिगड़ जाता था तो यह न देखता था कि उसके हाथों से न्याय होरहा है या अन्याय। एक व्यर्थ दोष लगाकर हेनरी ने बेकेट पर अपने इजलास से कड़ा जुर्माना किया। वास्तव में पादरियों को यह डर था कि राजा की अदालतों को पादरियों के अपराध की जांच का अधिकार मिल गया तो डाकुओं और घातकों की जांच तो होहीगी निरपराध भी धन खींचने के लिये फांसे जायँगे। हेनरी शान्ति-प्रिय था परन्तु क्रुद्ध होने पर बड़ा निष्ठुर हो जाता था, जब कभी

ऐसा समाचार सुनता जिसे वह सुनना न चाहता था तो धरती पर लोट जाता और क्रोध के आवेश में अपने दांतों से पयाल और नरकुल काटता जो उन दिनों दरी क़ालीन के बदले बिछे रहते थे। यह बातें सच हैं परन्तु यह भी सच है कि बेकेट भी झगड़ालू और उत्साही था और ऐन्सेल्म की भांति केवल धर्म का पक्षपाती सौम्य साधु न था।

१०।—बेकेट का वध—पहिले तो हेनरी की जीत रही। बेकेट ने उसकी आज्ञा न मानी और देश छोड़ कर चला गया। कई बरस पीछे दोनों में मेल हो गया और बेकेट फिर कैन्टरबरी में अपने पद पर लौट आया। परन्तु फिर बेकेट ने राजा को रुष्ट कर दिया। हेनरी के क्रोध की आग भड़क उठी और वह बोला, "क्या कोई ऐसा नहीं है जो इस दुष्ट पादरी से हमें छुटकारा दे।" चार सरदार तुरन्त उठ खड़े हुये और कैन्टरबरी पहुंचे। बेकेट को देखतेही उन्हों ने उसे गालियां दीं जिनका उत्तर भी वैसा ही मिला। सरदार हथियार लाने बाहर चले गये। बेकेट के मित्रों ने उससे कहा कि गिरजा में जाकर छिप रहो परन्तु बेकेट नहीं डरा। जब हथियारबन्द सरदार आने लगे तो उसने अपने साथियों को केवाड़ तक बन्द करने न दिया और बोला, "ईश्वर के मन्दिर में आने में किसी को रोक टोक न होनी चाहिये।" उसके बहुतेरे साथी भाग कर छिप रहे पर सरदारों के झपट कर घुस आने पर भी वह धीर गभीर बना रहा। एक सरदार ने कहा, "वह राजद्रोही कहां है?" बेकेट ने कहा, "यहां ईश्वर का एक पुजारी है, राजद्रोही कोई नहीं।" एक सरदार ने उसे गिरजा के बाहर घसीट कर लाना चाहा। बेकेट ने उसे धरती पर पटक दिया और दूसरे से कहा कि "तुझे धिक्कार है; तूने हमारी अनुरक्ति की शपथ की है अब उसके प्रतिकूल कर रहा है।" क्रोधी सरदार ने अपनी तलवार

से उसे मार डाला। बेकेट के एक भक्त सेवक ने वार रोकने के लिये अपनी बांह बढ़ा दी परन्तु बांह कट गई। घातक भी वहां से तभी हटे जब उन को निश्चय हो गया कि बेकेट मर गया। हेनरी के लिये इस से बढ़ कर और क्या बुराई हो सकती थी। न्याय और क़ानून की मर्यादा रखनेवाला संसार के सामने घातक बन गया। बड़े सरदारों को राजा की इस चूक से विद्रोह करने का अवसर मिल गया और वह लोग समझे कि राजा के इस काम से जो लोग असन्तुष्ट हैं उन सरदारों का साथ देंगे। हेनरी भी समझ गया कि लोगों को दिखा देना चाहिये कि हमें भी इसके लिये बड़ा शोक है। संभव है कि कुछ क्रोधियों की भांति उसको सचमुच पछतावा हुआ हो। वह कैराटरबरी पहुंचा, बेकेट की समाधि के आगे घुटनों के बल बैठ गया और वानप्रस्थों से कहने लगा कि इस अपराध के लिये हमारे कोड़े मारो। उसका पछतावा, झूठा रहा हो या सच्चा, अपना काम कर गया और लोग सन्तुष्ट हो गये। लोग न चाहते थे कि बड़े बड़े सरदार उनपर शासन करें और उन्हें स्टीफ़ेन के बुरे दिनों की विपत्ति फिर झेलनी पड़े। हेनरी की सेनाओं की सर्वत्र जय हुई और वह फिर इंग्लिस्तान पर बिना रोक टोक शासन करने लगा। परन्तु पादरियों के उपर जो उसके दावे थे उन्हें बहुत कुछ छोड़ना पड़ा। बेकेट में साधूपने की कोई बात न थी परन्तु उसको लोग सन्त और "शहीद" मानने लगे। कई पीढ़ी तक लोग कैराटरबरी की यात्रा करते और समाधि पर ईश्वर-प्रार्थना करते थे। उसकी समाधि के पास जो स्त्री पुरुष घुटनों के बल जाते थे उनके चिह्न पक्के फ़र्श पर अब तक बने हैं।

११।—<u>हेनरी के अधिकृत परदेशी प्रान्त</u>—समुद्र पार हेनरी का राज इंग्लिस्तान से भी लंबा चौड़ा था। उसने




आंजु वंश के राजाओं का राज।

ऐरलैण्ड के एक भाग को जीत लिया और उसी के समय से अंगरेज़ राजा ऐरलैण्ड को अपने राज का एक अंश मानते हैं यद्यपि सारा ऐरलैण्ड चार सौ बरस पीछे एलिज़बेथ (Elizabeth) के समय में जीता गया। इसके अतिरिक्त हेनरी कुछ अपने मा बाप से पाकर, कुछ विवाह के कारण, इंग्लिश चैनल से पिरनीस पर्वत तक सारे पश्चिमी फ्रान्स का स्वामी था। उसके बाप से उसको फ्रान्स का आंजु (Anjou) सूबा मिला था। इसी से उसके बाप को उसको और उसके बेटों को आंजिवी राजा कहते हैं। उसके बेटे उसके बस के न थे; बड़े बड़े समय समय पर विद्रोह करते रहे और इसी से वह सबसे छोटे बेटे जान (John) का बड़ा विश्वास करता था। अन्त को फ्रान्स के राजा से लड़ाई छिड़ गई। सन्धि होने पर उसने पूछा "हमारी प्रजा में से किस किसने फ्रान्स राज का साथ देने की प्रतिज्ञा की थी।" उसे नामों की सूची दिखाई गई तो पहिला नाम जान का था। इस भेद खुलने से उसके हृदय पर बड़ी चोट लगी। वह थोड़े ही दिनों में बीमार होकर मर गया और मरते समय उसके अन्तिम बचन यह थे, "हारे राजा पर धिक्कार है"। उसके पीछे उसका बेटा रिचर्ड सिंहासन पर बैठा।

## ॥ अध्याय ९ ॥

### हेनरी द्वितीय के बेटे और बड़ी सनद (Great Charter)

रिचर्ड प्रथम, ११८९; जान, ११९९।

१।—धर्म की लड़ाई—रिचर्ड प्रथम नाम-मात्र को अंगरेज़ों का राजा था। वह अपने शासन-काल भर में केवल दो बार इंग्लिस्तान आया और आने का प्रयोजन यही था कि जितना धन मिल सके ले ले। अपने राज्य के आरम्भ ही में वह धर्म की लड़ाई करने चला गया। इन लड़ाइयों का आरम्भ रूफ़स

के समय से हुआ था। ईसाई लोग बहुत दिनों से जरूसेलम जाते थे और उन स्थानों के दर्शन करते थे जहां ईसा-मसीह का जन्म हुआ था, जहां उनको सूली दी गई थी और जहां उनकी समाधि है। रूफ़स के समय से पहिले ही से अरब लोग जरूसेलम का शासन करते थे और सब जातियों को बिना छेड़छाड़ किये आने जाने देते थे। इसके बाद जरूसेलम को तुर्कों ने जीत लिया जो एशिया के मध्य से आये थे। उन दिनों कुस्तुनतुनिया में तुर्कों का राज न था। अरबों की अपेक्षा तुर्क बड़े क्रूर थे और उन्हों ने अन्य जातियों को सताया। एक मनुष्य जिसका नाम पीटर योगी था, यूरप भर में घूमता फिरा और ईसाइयों से कहता था कि तुम जरूसेलम को तुर्कों से छीन लो। तुर्क और अरब दोनों मुसलमान थे और महम्मद के सिखाये हुए धर्म को मानते थे। पोप ने भी अपनी अनुमति दे दी और पश्चिमी यूरप से हज़ारों मनुष्य पवित्र भूमि ( Holy Land ) को जीतने को उठ खड़े हुए। इस उद्योग को क्रूसेड कहते थे क्योंकि इसके सिपाही क्रौस (क्रूश) पहने रहते थे जिस से ईसा के योद्धा समझे जायँ। बहुतेरे रास्ते में मार डाले गये या भूखों मर गये, परन्तु कुछ हथियारबन्द सरदारों ने जाकर जरूसेलम को जीत लिया। इन लोगों में निष्ठुरता और वीरता का विचित्र समावेश था। जरूसेलम विजय करने पर वहां के रहने वाले बड़ी निष्ठुरता से मार डाले गये। सयाने स्त्री पुरुष निरपराध मारे ही गये, परन्तु बच्चे भी उठा उठा कर दीवारों पर पटके गये। क्रूसेड करनेवालों ने जरूसेलम में ईसाई राज स्थापित किया और अपने एक साथी गौडफ़्रे बुइलां ( Godfrey Bouillon) को इसका पहिला राजा बनाया। उसने राज किया परन्तु मुकुट नहीं पहना। वह कहता था कि जब हमारे त्राता ईसा-मसीह ने कांटों का मुकुट पहना तो हम सोने का

मुकुट कैसे पहन सकते हैं ।

२।—रिचर्ड प्रथम का क्रूसेड को जाना—जरूसेलम का ईसाई राज हेनरी द्वितीय के शासन के अन्त तक रहा । उसके बाद उसे फिर मुसलमानों ने ले लिया । इससे पहिले क्रूसेडों में बहुत कम अंगरेज़ गये थे । इस बार रिचर्ड ने जरूसेलम ज़ीतना निश्चय कर लिया । वह बहुत अच्छा वीर था । साहस के कामों में उसका जी लगता था और विनोद और चहल पहल के लिये लड़ना पसन्द करता था परन्तु वह झगड़ालू था । वह चाहता था कि हम सबसे बढ़ कर काम करें और लोग भी कहें कि इन्होंने सबसे बढ़ कर काम किया । इस स्वभाव के लोगों को सफलता नहीं होती । पवित्र भूमि में पहुंचने से पहिले वह फ़्रान्स के राजा से लड़ बैठा । वहां पहुंचने पर आस्ट्रिया के दूत से बिगड़ गया । उसने बड़ी वीरता दिखाई और मुसलमान शासक सलाहदीन ने भी उसका लोहा माना परन्तु और देशवालों ने उसका साथ न दिया । वह जरूसेलम लेने में सफल न हुआ । कहा जाता है कि एक बार उस नगर तक पहुंच गया था । परन्तु उसने कुछ गर्व से और कुछ शोक से अपना मुंह फेर लिया और कहा जिस स्थान पर सुलेमान ज़ेरूबाबेल (Solomon, Zerubabel) और हेरड (Herod) के मंदिर थे वहां हम मसजिदें देखना नहीं चाहते । जो हम इस पवित्र नगर को लेने को समर्थ नहीं हैं तो हम इसको देखने के भी योग्य नहीं हैं ।

३ ।—रिचर्ड प्रथम का घर लौटना—जरूसेलम में उसके किये कुछ न हो सका और वह घर को लौटा । उसने आस्ट्रिया में होकर लौटने का प्रयत्न किया परन्तु वह पहचान लिया गया और आस्ट्रिया के राजा ने उसे पकड़ कर सम्राट् हेनरी षष्ठ को सौंप दिया । यह सम्राट् जर्मनी और अधिकांश इटली का शासक था और उसने रिचर्ड को बन्दीघर में रक्खा जहां से उसकी मां

और उसके मित्रों ने बहुत सा धन देकर उसे छुड़ा लिया। इसके बाद रिचर्ड जबतक जिया, फ्रान्स में लड़ता रहा और अन्त को क़िले की दीवार के ऊपर से एक योद्धा ने उसे तीर मार कर गिरा दिया। रिचर्ड के मरने से पहिले ही गढ़ ले लिया गया था और उसने यह आज्ञा दी कि तीर मारनेवाले का बध न किया जाय। वीरता के अतिरिक्त उसमें उदारता भी थी जिससे वह बहुत दिनों तक "कोर्डी लायन" या सिंहस्वभाव के नामसे प्रसिद्ध रहा। परन्तु उसने कभी अपनी प्रजा को सुखी करने का विचार नहीं किया और इंग्लिस्तान उसका उपकार नहीं मान सकता था।

४।—<u>जान के हाथ से नार्मण्डी का निकल जाना</u>—११६६ ई० में रिचर्ड का छोटा भाई जान राजा बनाया गया। रिचर्ड का एक और भाई जौफ़्रे नाम का भी था जो जान से बड़ा था और रिचर्ड के सामने ही मर चुका था। उसने एक लड़का आर्थर छोड़ा। परन्तु आर्थर को लोगों ने राज करने के योग्य न माना। जान सिंहासन का अधिकारी ऐसे ही हुआ जैसे उसके पहिले अलफ्रेड और स्टीफ़ेन हुए थे और कुछ लोगों का कहना कि वह अनधिकारी था, भ्रम मात्र है। जान भी रूफ़स की भांति दुष्ट, स्वार्थी और लुटेरा था; वह न ईश्वर से डरा न किसी मनुष्य को कुछ समझा। नीचता और क्रूरता दोनों बातें उसके स्वभाव में थीं। राज के आरम्भ में उसे यह डर लगा कि आर्थर सयाना होने पर उसे निकाल न दे और आर्थर लुप्त हो गया। किसी ने न जाना कि आर्थर कैसे मार डाला गया। कोई कहता था कि जान ने उसे अपने हाथों डुबो दिया। परन्तु इसके सच होने का कोई प्रमाण नहीं है। जान इंग्लिस्तान के राजा होने के अतिरिक्त नार्मण्डी का ड्यूक भी था। उसके अधिराज फ्रान्स के राजा ने उसे मनुष्य-वध के अपराध की जवाबदेही के लिये पैरिस बुलाया। जान नहीं गया तब फ्रान्सराज ने उसकी ज़िमींदारी ज़ब्त कर ली।

अंगरेज़ी चैनल और लुआर नदी के बीच का प्रान्त जो जान को उसके पिता से मिला था, उसके हाथ से निकल गया और उसके पास लुआर के दक्षिण की वही धरती बची जो उसने अपनी मां से पायी थी।

५।—इंग्लिस्तान में जान का अत्याचार—इंग्लिस्तान में जान ने भारी भारी कर लगाकर और धनियों को लूट कर धन खींचना चाहा और यह धन उसने अपने सुख-भोग में उड़ाया। लोग कहते हैं कि उसने एक धनी यहूदी से बहुत सा धन मांगा और जब उसने न दिया तो उसे बन्दीघर में डाल दिया। इस यहूदी का नित्य एक दांत तोड़ा गया जबतक उस से मांगा धन न मिला। धनी सरदारों के साथ भी ऐसाही बर्ताव किया जाता था। स्टीफ़िन के राज में बड़े बड़े ज़िमीदार प्रजा को सताते थे। इसी से प्रजा ने हेनरी द्वितीय का साथ दिया और उसे इतना बली कर दिया कि वह बड़े ज़िमीदारों को राह पर ला सके। जान ने छोटे बड़े सब को सताया और सब उसके विरूद्ध एक हो गये। इसके अत्याचार को रोकने के लिये सब तैयार थे परन्तु विद्रोह करने में कुछ देर हुई। जान बाहर से बहुत से सिपाही लाया जो युद्ध करना सीखे हुए थे। वह लोग जान से धन पाने पर जो कुछ भला बुरा वह कहता था उसे कर डालते थे।

६।—जान और कैण्टरबरी के पादरी—जान यह समझता था कि हमारी कोई रोक टोक नहीं कर सकता। कैण्टरबरी के वानप्रस्थों को आर्कबिशप निर्वाचित करने का अधिकार था परन्तु अबतक उन लोगों ने उसी को चुना था जिसे राजा चाहता था। इससे इस विषय में उन्हें कुछ करना न पड़ता था। जान के समय में जब आर्कबिशप मर गया तो उसने आज्ञा दी कि उसका ख़जांची नारविच का बिशप आर्कबिशप बनाया जाय परन्तु उन लोगों ने अपने ही में से रेजिनल्ड ( Reginald )

नामी एक पादरी को निर्वाचित किया और उसे सहायता के लिये पोप के पास भेजा। उससे यह भी कह दिया कि जब तक रोम न पहुंच जाओ, किसी से कुछ मत कहना। रेजिनल्ड को अपने निर्वाचित होने का घमण्ड हो गया और समुद्र पार होते ही वह डींग मारने लगा। जान बहुत बिगड़ा और उसने वानप्रस्थों को बाध्य किया कि नारविच के विशप को आर्कबिशप मान लें। रेजिनल्ड के निर्वाचित होने बाद बात आई गई हो गई।

७।—रोम में स्टीफ़िन लैंगटन का आर्कबिशप चुना जाना—रेजिनल्ड रोम पहुंचा तो उसे सबसे बड़े पोप इन्नोसेण्ट तृतीय के सामने जाना पड़ा। इन्नोसेण्ट को यह विश्वास था कि संसार का कल्याण इसी में होगा जो बिशप लोगों के मुक़र्रर करने में राजाओं और सरदारों का कोई हस्तक्षेप न रहे और जब कभी यह लोग आपस में लड़ें तो पोप से झगड़े का निपटारा करने के लिये प्रार्थना करें और आपस में युद्ध न करने के लिये बाध्य हों। इन्नोसेण्ट ने इस विचार से ख़ज़ांची को आर्कबिशप बनाना स्वीकार न किया और उसने यह भी जाना कि रेजिनल्ड नासमझ है और अच्छा आर्कबिशप न होगा। रेजिनल्ड के साथ जो वानप्रस्थ रोम में आये थे उन से पोप ने कहा कि तुम एक साधु स्वभाव और विद्वान् अंगरेज़ स्टीफ़िन लैंगटन को आर्कबिशप मानो। वानप्रस्थों ने वही किया और रेजिनल्ड निरास होकर चला आया।

८।—इंग्लिस्तान में इन्टरडिक्ट—जान वानप्रस्थों से रुष्ट तो था ही, पोप की आज्ञा सुनकर आगबगूला हो गया। उसने स्टीफ़िन लैंगटन को इंग्लिस्तान में आने न दिया और पादरियों को लूट लिया। इन्नोसेण्ट ने इंग्लिस्तान को इन्टरडिक्ट में कर दिया। इसका अभिप्राय यह है कि उसने पादरियों को आज्ञा दी कि गिरजाघरों में साधारण जनता के साथ पूजा प्रार्थना न की जाय,

पवित्र समागम रोक दिया जाय, मुर्दों के गाड़ने के समय प्रार्थना न हो और बप्तीसमा भी घरों में किया जाय। गिरजाघर में पूजा प्रार्थना के लिये जाने से रोका जाना जनता को बहुत बुरा लगा। उनको ऐसा जान पड़ा मानो उनके लिये स्वर्ग का द्वार बन्द कर दिया गया। जान के कान पर जूँ न रेंगी। उसने बड़े आनन्द से उन पादरियों की धरती और उनका धन ज़ब्त कर लिया जिन्होंने पोप की आज्ञा से गिरजाघर बन्द किये थे।

९।—जान का धर्मसंघ के बाहर निकाला जाना—इस पर इन्नोसेण्ट ने राजा को धर्मसंघ के बाहर कर दिया और उसे ( Holy Communion ) पवित्र समागम में सब के साथ भोजन करने का अधिकार न रहा। जब कोई मनुष्य धर्मसंघ के बाहर कर दिया जाता था तो धार्मिक इसाई उससे अलग रहते थे। जान को इसकी भी कुछ परवाह न हुई और उसने पादरियों के साथ और भी निष्ठुरता की। तब पोप ने फ़ान्स के राजा फ़िलिप द्वितीय से कहा कि इंग्लिस्तान पर आक्रमण करके धर्मच्युत जान को सिंहासन से उतार दो। फ़िलिप पोप का बड़ा आज्ञाकारी न था परन्तु जब उसने देखा कि इस आज्ञा के मानने में हम को इंग्लिस्तान का भी राज्य मिल जाता है तो इस आज्ञा का प्रतिपालन करना उसने उचित समझा। जान का भाड़े के सिपाहियों को छोड़ कर कोई विश्वासपात्र न था। सारे अंगरेज़ फ़िलिप के साथ हो जाते। जान ने यह देखा तो इन्नोसेण्ट को मना लेना निश्चय किया। उसने पोप के प्रतिनिधि पैंडलफ़ ( Pandulph ) के चरनों पर अपना मुकुट रख दिया और प्रतिज्ञा की कि आज से हम पोप के आधीन रहेंगे और हर साल इस आधीनता का प्रमाणचिह्न उनको कुछ धन दिया करेंगे। उसने लैंगटन का आर्कबिशप होना भी स्वीकार कर लिया।

१०।—सरदारों की मांग—फ़िलिप निरास हो गया और

इंग्लिस्तान की चढ़ाई का उसे अवसर न मिला। अंगरेज़ी सरदार भी निरास हुए। वह लोग केवल इतना ही नहीं चाहते थे कि पादरी लोग बचे रहैं, वरन् हर एक मनुष्य पादरी हो या न हो, धनी हो या कंगाल हो, न्याय की रक्षा में सुचित्त रहे। आर्कबिशप स्टीफ़ेन लैंगटन इंग्लिस्तान पहुंचा तो उसने उदारता से यह देखा कि जनता से मेल करना पोप की रक्षा में रह कर सन्तुष्ट रहने से अच्छा है। सरदारोंने सेना इकट्ठी की और आर्कबिशप ने उन मांगों की एक सूची बनाई जिनके पूरा करने के लिये राजा से कहा गया। इस अवसर पर राजा के साथ उसके भाड़े के सिपाही न थे। अपनी इच्छा के प्रतिकूल झुंझलाते हुए टेम्स नदी में स्टेन्स के पास रनीमीड टापू में उसने, जो कुछ मांगा गया था सब देने की कसम खाई।

२१।—मैगना कार्टा—राजा ने १२१५ ई० में जिन मांगों के देने की प्रतिज्ञा कीथी उन्हें अंगरेज़ी में ग्रेट चार्टर (बड़ी सनद) और लैटिन में मैगना कार्टा कहते हैं। इनके अनुसार कुछ विशेष अवसरों को छोड़ कर राजा को अपने ज़िमीदारों से कर लगाकर धन मांगने का अधिकार न रह गया। ज़िमीदार लोग आप चाहें तो उसे कुछ दे दें। अंगरेज़ों के जान और माल के साथ भी मन मानी करने का उसको अधिकार न रहा। उससे यह प्रतिज्ञा कराई गई कि कोई स्वतंत्र मनुष्य न पकड़ा जायगा, न क़ैद किया जायगा, न उसका धन छीना जायगा, न क़ानून की रक्षा से बाहर किया जायगा, न उसकी हानि की जायगी, और न राजा किसी के प्रतिकूल कुछ करेंगे न किसीपर कोई हुकुम भेजेंगे। जो कुछ किया जायगा वह उसके बराबरवाले सरदारों के न्याययुक्त फ़ैसले से या देश के क़ानून से। इस बड़ी सनद में और भी अनेक बड़ी उपयोगी बातें थीं परन्तु ये ही दो बातें सबकी आधार थीं। इंग्लिस्तान का राजा और अंगरेज़ों की अपेक्षा

इतना बड़ा न रह गया कि जितना धन चाहे उनसे ले ले या जब उसका जी चाहे उनको क़ैद करे या और कोई दण्ड दे। वह उनका धन तभी ले सकता था जब वे राजकाज के लिये दें और उनको दण्ड भी तभी दे सकता था जबकि उनके देशी भाई उनका अपराधी होना सिद्ध कर दें। इन्हीं दो सिद्धान्तों पर पीछे लोगों ने बड़े बड़े क़ानून बनाये थे परन्तु यही सनद सबकी जड़ है। पहिले सिद्धान्त अर्थात राजा अपनी इच्छा के अनुसार धन नहीं ले सकता, राजा को अपनी प्रजा की सम्पत्ति लेने के लिये बाध्य करता रहा क्यों कि प्रजा न चाहती तो उसे धन न देती। इसी रीति से धीरे धीरे देश का शासन जनता की इच्छा के अनुसार होने लगा, न कि राजा की। दूसरा सिद्धान्त कि राजा जिसे चाहे कोई दण्ड नहीं दे सकता, अब यहां तक पहुंच गया है कि हमारा शासन क़ानून करता है कोई व्यक्ति विशेष नहीं।

१२।—जान के राज की अन्तिम आपत्तियां—ऐसे सिद्धान्त स्थापित कर देना सुगम है परन्तु इनके अनुसार चलना कठिन है। जान की इच्छा न थी कि हम अपनी प्रजा से दबे रहैं। वह अवसर पाकर हट गया। उसने अपने भाड़े के सिपाही इकट्ठे किये और जिन सरदारों ने उससे विरोध किया था उनको निकाल दिया। उनलोगों ने परदेश से सहायता मांगी। जैसे आवश्यकता पड़ने पर राजा ने पोप को अपना सहायक बनाया था वैसे ही प्रजा ने फ़ान्स राजा के बेटे लूई को राज करने के लिये बुला लिया। लूई एक बड़ी सेना लेकर इंग्लिस्तान में उतरा। पोप ने जान का साथ दिया। उसका भी स्वभाव कुछ ऐसे लोगों का सा था जो अच्छी बात को अपने ही हाथों करना चाहते हैं। ऐसा जान पड़ता था कि युद्ध में जान और पोप दोनों की हार हो जायगी। जान ज्यों ही वाश के रेते पर पहुंचा, ज्वार भाटा उसका सारा असबाव बहा ले गया जिस में बहुत सा धन भी था। निरास

होकर वह बीमार पड़ा और १२१६ की शरद में न्युआर्क स्थान में उसकी मृत्यु हो गई।

## ॥ अध्याय १० ॥

### * हेनरी तृतीय और सरदारों की लड़ाई *

### हेनरी तृतीय १२१६।

१।—अंगरेज़ों ने हेनरी तृतीय को राजा बनाया—तुम्हें सुन कर आश्चर्य होगा कि इंग्लिस्तान में राज करने को एक फ्रान्सीसी बुलाया जाय। आजकल यह विचार है कि देश के शासन करने-वाले वहीं के पैदा हों और वहीं की बोली बोलें परन्तु उन दिनों लोग इस सिद्धान्त के पक्के न थे। इस में सन्देह नहीं कि उन दिनों भी आजकल की भांति साधारण अंगरेज़ अंगरेज़ी बोलते थे। परन्तु सरदार और बड़े आदमी फ्रान्सीसी बोलते थे और पादरी लोग अपने पूजापाठ में लैटिन का प्रयोग करते और लैटिन ही लिखते पढ़ते और कभी कभी लैटिन बोलते थे। परन्तु नार्मण्डी निकल जाने पर अंगरेज़ भी कोई भी भाषा बोलते अपने को अंगरेज़ समझने लगे। जो लोग कुछ थोड़े से जान के पक्षपाती थे उन्होंने उसके बेटे हेनरी के सिर पर मुकुट रख दिया। उसके विरोधियों ने भी कुछ दिन पीछे हेनरी को राजा मान लिया। लूई का कोई सहायक न रहा और वह निरास होकर फ्रान्स को लौट गया।

२।—हेनरी का सिंहासन पर बैठना—हेनरी तृतीय केवल नौ बरस का बालक था। यह पहिला अवसर था जब एक बालक इंग्लिस्तान का राजा हुआ। उसके कोई सयाना चचा या चचेरा भाई होता तो वह कभी इंग्लिस्तान का राजा न हो सकता। कोई

न होने से अंगरेज़ लोगों ने सयाने फ्रान्सीसी को छोड़कर बालक अंगरेज़ को राजा बनाया। उसके बचपन में एक उदार सरदार विलियम मार्शल (William Marshall) जो पेमब्रोक



विलियम मार्शल अर्ल पेम्ब्रोक।

(Pembroke) का अर्ल था जबतक जिया इंग्लिस्तान का शासन करता रहा। बड़ी सनद देश का क़ानून समझी गई परन्तु उसका वह अंश छोड़ दिया गया जिस में राजा को अपने ज़िमीदारों पर बिना उनकी अनुमति के कर लगाने का अधिकार न था।

३।—हेनरी के चित्त की सरलता—सयाना होने पर हेनरी



राजा हेनरी तृतीय।

बड़ा निकम्मा निकला। वह अपने पिता की भांति निठुर और उग्र न था परन्तु निर्बल और नीच था। उसने कितने वादे किये परन्तु एक भी पूरा न किया। धन ख़र्च करने में उदार था परन्तु बहुधा व्यर्थ धन फेंका करता था। उसने सब से अच्छा काम यही किया कि वेस्टमिन्स्टर अबे को फिर से बनाया जैसा कि कुछ कुछ अबतक है। हेनरी द्वितीय के समय से गिरजा-घरों और और इमारतों में विजेता और उसके बेटे के समय की गोल डाटों के बदले नुकीली डाटें बनने लगी थीं। इस बड़े गिरजा के बनाने में हेनरी का काम बहुतही अच्छा रहा।

परन्तु यह बात इसकी समझ में न आई कि इंग्लिस्तान के कल्याण के लिये भी उसे कुछ करना चाहिये। उसका स्वभाव बहुत कुछ एडवर्ड कनफ़ेसर से मिलता जुलता था और उसी की भांति वह भी अंगरेज़ों की अपेक्षा परदेशियों को बहुत मानता था। इन में से परदेशियों के दो समूहों पर उसने विशेष अनुग्रह किया। पहिला समूह उसके नानिहालवाले पवाटू (Poitou) से आये थे जो लुआर नदी के दक्षिण फ्रान्स के पश्चिम में है। दूसरा मेडिटेरेनियन के समुद्रतट पर रोन नदी के पूर्व प्रोवांस (Provence) प्रान्त का था। हेनरी जो कुछ दे सकता था, गढ़ियां, धरती, रियासतें, बिशप के पदों तक इन्हें देता रहा। अंगरेज़ लोग, पादरी क्या गृहस्थ, ऐसे शासन को बहुत बुरा मानने लगे जिसमें सारी अच्छी अच्छी वस्तु परदेशियों को मिलें और उन्हें कुत्तों के टुकड़े बच रहें।

४।—हेनरी का पोप के पास रुपया भेजना—थोड़ेही दिनों में एक और उपद्रव उठ खड़ा हुआ। इन्नोसेण्ट तृतीय के पीछे पोप इटली की लड़ाइयों में पड़ गये और यह प्रसिद्ध किया कि हम ईसाई धर्म के लिये लड़ रहे हैं। हेनरी को उनकी बातों पर विश्वास हो गया और उसने उन्हें इंग्लिस्तान में अपने कर्मचारी भेज कर पादरियों पर कर लगाने कि अनुमति देदी। उनलोगों के इतना धन न मिला जिससे सन्तुष्ट हो जाते इस लिये हेनरी ने पादरी और गृहस्थ दोनों पर कर लगाके बहुत सा रुपया रोम को भेज दिया।

५।—पार्लामेण्ट के बल की बृद्धि—इन करों के लगाने के लिये हेनरी को एक ऐसे समाज की अनुमति लेनी पड़ी जिसे इन-दिनों लोग पार्लामेण्ट कहने लगे थे। जबसे अंगरेज़ इस टापू में आये तभी से यह समाज अनेक नामों से प्रसिद्ध थी और इसमें अनेक प्रकार के सभ्य होते थे। हेनरी के शासन के आरम्भ में

यह कुछ कुछ आजकल के हौस अव लार्डस (House of Lords) अर्थात सरदार-सभा से मिलता जुलता था। हौस अव कामन्स (House of Commons) अर्थात साधारण-जन-सभा न थी। इसमें बड़े बड़े ज़िमीदार होते थे जो बैरन (Baron) कहलाते थे और बिशप और मुख्य मुख्य मठों के अधिकारी (Abbot) रहते थे। यद्यपि पार्लामेण्ट से निरन्तर रुपया मांगा गया और कभी कभी मिलता भी था परन्तु राजा परदेशियों में इस धन को लुटाता था इस से असन्तोष बढ़ता गया।

६।—<u>सैमन डी मण्टफ़ोर्ट ( Simon de Montfort )</u>—अन्त को इंग्लिस्तान के पादरियों और सरदारों को एक मुखिया मिलही गया। इसमें विचित्रता यह थी कि यह जनम का परदेशी था। सैमन डी मण्टफ़ोर्ट लीस्टर (Leicester) का अर्ल था और उसने राजा की बहिन ब्याह ली थी। वह अपने समय का बड़ा वीर योद्धा था और प्रतिष्ठा और सच्चरित्रता में अद्वितीय था। उसे साधारणलोग धर्मात्मा सर सैमन (Sir Simon the Righteous) कहते थे। १२५८ ई० में आक्सफ़र्ड के स्थान पर उसकी अध्यक्षता में पार्लामेण्ट की एक बैठक हुई जिसमें सरदार हथियार बांध कर आये थे। अनेक प्रस्ताव से जिन्हें आक्सफ़र्ड के प्रस्ताव (Provisions of Oxford) कहते हैं, राजशासन राजा के हाथों से निकाल लिया गया और अनेक सभाओं को सौंप दिया गया। परन्तु यह प्रबंध बहुत दिनों तक न चला। सभाओं में बैरन (सरदार) अपनी मनमानी करते थे और छोटे छोटे ज़िमीदारों को बड़ों से न्याय की आशा न रही। अर्ल सैमन का बस चलता तो न्याय करता परन्तु सरदार उसके बस के न थे। सरदारों की नासमझी से उनलोगों से भी प्रजा ऐसी रुष्ट हो गई जैसी कि उनसे पहिले राजा से थी और हेनरी को फिर अपना पुराना अधिकार मिल गया।

७।—लिविस (Lewes) की लड़ाई और अर्ल सैमन का शासन—कुछ दिनों तक हलचल और गड़बड़ रहा और यह न जान पड़ा कि बड़ा कौन है। सरदार कुछ तो राजा से बुरा मानते थे और कुछ सैमन से। तौभी सैमन की शक्ति बढ़ती जाती थी। कई बरस पहिले ऐसे लोग जो अपनी धरती के स्वामी थे चाहै वह धरती बड़ी हो या छोटी, यह अधिकार पा गये थे कि उनकी ओर से बोलने और जो उनको चाहिये उसके मांगने के लिये पार्लामेण्ट में अपने चुने सदस्य भेज सकैं। यह लोग भेजनेवालों के प्रतिनिधि कहलाते थे। इन भूमिस्वामियों के प्रतिनिधि कुछ ऐसेही थे जैसे आजकल के कौण्टियों (Counties -ज़िलों) के सदस्य होते हैं। नगर भी व्यापार में समृद्ध होते जाते थे और अपना प्रबंध आप करते थे। सारे नगर और विशेष करके सब से बड़ा नगर लन्दन सैमन का पक्षपाती हो गया। १२६४ ई० में सैमन ने अपने साथी इकट्ठा करके ससेक्स में लिविस (Lewes) के मैदान में राजा को परास्त कर दिया। राजा बंदी कर लिया गया और उसके बेटे एडवर्ड ने भी थोड़ी बेर पीछे आत्मसमर्पण कर दिया। अर्ल सैमन ने बरस दिन से कुछ उपर इंग्लिस्तान का शासन किया। उसने सबसे पहिले नगरों को पार्लामेण्ट में अपना अपना प्रतिनिधि भेजने का निमंत्रण दिया। उस की यह इच्छा थी कि बड़े बड़े ज़िमीदार, पादरी, छोटे ज़िमीदार, नगरों के रहनेवाले, सब लोग जो कुछ कहना चाहैं पार्लामेण्ट में कहैं। उस समय के एक राष्ट्रीय कवि ने लिखा है कि राज की समाज से पूछा जाता और यह जानने का प्रयत्न किया जाता कि सारी अंगरेज़ी जाति के क्या विचार हैं। यही बात हमलोग आजकल कर रहे हैं। जब कभी चुनाव होता है तो जाति पार्लामेण्ट में जाने को ऐसे मनुष्य चुनती है जो जाति के मन की बात वहां कहैं। इसके पीछे जो

लोग राज का प्रबंध करते हैं उनका काम है कि उसके अनुसार अपना कर्त्तव्य करें ।

८ ।—इवेशाम (Evesham) की लड़ाई और सैमन की मृत्यु—अर्ल सैमन का संकल्प था कि शासन अच्छा रहै परन्तु सरदारों की ईर्षा पर उसका बस न चला । राजा का बड़ा बेटा एडवर्ड उमर में कम था परन्तु बड़ा बुद्धिमान था । वह इस ईर्षा की वृद्धि को देखता रहा और क़ैद से निकल भागना निश्चय करके एक दिन अपने रखवारों से बोला कि चलो विनोद के लिये घुड़-दौड़ करें । जब उनके घोड़े थक गये तो वह नये घोड़े पर चढ़ कर भाग खड़ा हुआ । कितने सरदार उसके झंडे के तले आगये । अर्ल सैमन उन दिनों इवेशाम में था । उसने गिरजा के मीनार से राजकुमार को आते देखा और जो थोड़े से भक्त अनुरक्त उसके साथ थे उनसे बोला, "तुमलोग सब ईश्वर का स्मरण करो और अपनी अपनी आत्मायें उसको सौंप दो । तुम्हारे शरीर अब राजकुमार के हाथ में हैं" । सैमन की छोटीसी सेना पछाड़ दी गई । उसका बध कर के उसका शरीर घृणित रीति से काट डाला गया । थोड़ी ही बेर में और भी विघ्नबाधायें नष्ट कर दी गईं । राजा को फिर अधिकार मिल गया और १२७२ ई० तक जब वह मरा किसी का साहस न हुआ कि सिर उठाता ।

## ॥ अध्याय ११ ॥

### * एडवर्ड प्रथम, १२७२ *

१ ।—इंग्लिस्तान में एडवर्ड प्रथम का शासन—हेनरी के बेटे एडवर्ड का स्वभाव उसके पिता से निपट भिन्न था । उसने उदारता और चतुराई से वही काम करना चाहा जिसे अर्ल सैमन ने उठाया



राजा एडवर्ड प्रथम।

था। उसने इंग्लिस्तान की भूमि पर अधिकार के पदोंसे अंगरेज़ों को, परदेशियों को लाने के लिये, हटने न दिया। उसने ऐसी कोई प्रतिज्ञा न की जिसे वह तोड़ना चाहता था और अच्छे से अच्छे बुद्धिमान मंत्री जो उसको मिल सके उसनेअपने साथ रक्खे। मंत्रियों के बुद्धिमान होने पर भी उसने सब काम उन्हीं पर न छोड़ा। उसने अर्ल सैमन की भांति इस बात का विचार रक्खा कि जो बात सर्व साधारण की भलाई के लिये हो उसमें सब से सलाह ली जाय। बहुत दिनों तक उसने ऐसी पार्लामेण्ट न बुलाई जिस में सब तरह के मनुष्य होते परन्तु उसने उन्हीं लोगों को निमंत्रित किया जो उसे उन विशेष बातों में सलाह दे सकते थे जिसमें वह उनसे सलाह लेना चाहता था। इस रीति से उसने बड़े बड़े क़ानून बनाये। उसने बिना उनलोगों की बातें सुने

हुए जिन से किसी विशेष क़ानून का सम्बन्ध था, ऐसा कोई क़ानून चलाया ही नहीं। उसके शासन में इंग्लिस्तान की ऐसी समृद्धि हुई जैसी पहिले कभी हुई न थी। एडवर्ड ने शान्ति रक्खी और उसके शासन में सरदारों ने स्वतंत्र किसानों या नागरिकों को सताने अथवा राजा का शासन न मानने का साहस न किया।

२।—वेल्स का विजय—राजा एडवर्ड को अपनी प्रजा का शान्ति से रहना और क़ानून की मर्यादा मानना बहुत अच्छा लगता था। वह यह समझता था कि जो लोग उसके शासन में नहीं हैं उनका कल्याण इसी में है कि उसके शासन में लाये जायं। अंगरेज़ों को इस देश में आने के समय सौलवे फ़र्थ ( Solway Firth ) के दक्षिण जितने ब्रिटन थे उन में केवल नार्थवेल्सवाले स्वतंत्र बचे थे और अपने हीराजा के शासन में रहते थे, यद्यपि यह राजा लोग इंग्लिस्तान के राजा को बड़ा मानते थे। एडवर्ड ने निश्चय किया कि बड़ाई मात्र से काम न चलेगा, पूरा अधिकार होना चाहिये। दो राजाओं ने इसका प्रतिरोध किया। एडवर्ड ने इनको हरा दिया और स्नोडन के पहाड़ी प्रान्त को अंगरेज़ी राज में मिलालिया। उसने अपने बच्चे को वेल्सवालों के पास भेजा और कहा कि इसी को अपना ( Prince ) राजा मान लो। उसी दिन से अंगरेज़ी राजाओं के बड़े बेटे वेल्स के प्रिन्स कहलाते हैं।

३।—स्काटलैण्ड में एडवर्ड का हस्तक्षेप—वेल्स छोटा देश था। उसका जीतना कठिन न था। अपने शासन काल के कुछ दिन बीतने पर उसने एक कठिन कार्य अपने हाथ में लिया। स्काटलैण्ड का राजा अलेकज़ेण्डर तृतीय फ़ाइफ़ के समुद्रतट पर एक टेकरे पर अपने घोड़े से गिर कर मर गया। उसकी बेटी जो नारवे की कुमारी के नाम से प्रसिद्ध थी, उसके सिंहासन पर बैठने के लिये बुलाई गई। परन्तु वह स्काटलैण्ड पहुंचनें से

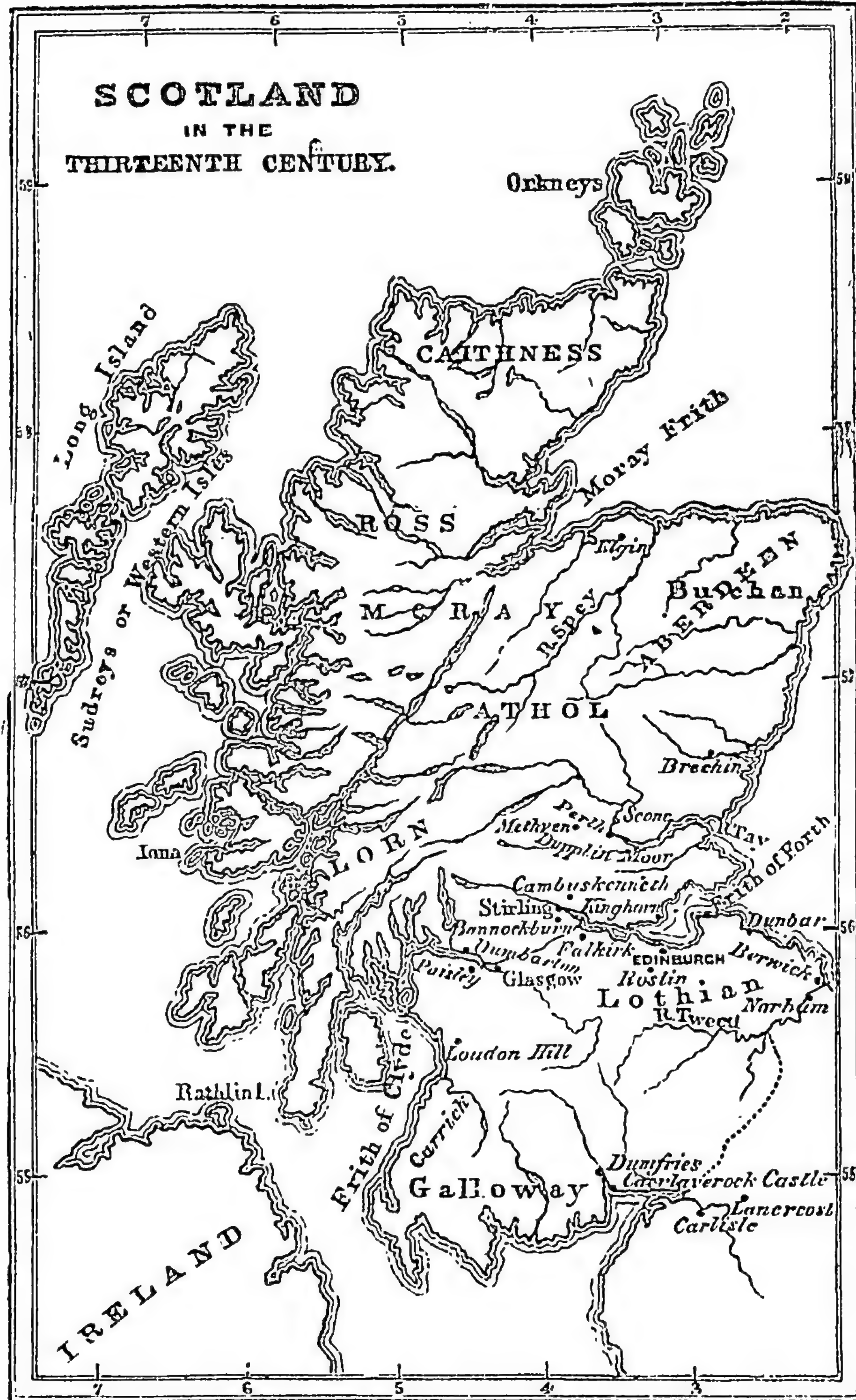



प्लैंटेजनेट राजाओं के अधिकृत इंग्लिस्तान।

पहिले ही मर गई। अब राज के अधिकारी दूरके नातेदार बचे और राज के लिये एक घोर युद्ध की सम्भावना होगई। इससे बचने के लिये स्काटलैण्डवालों ने दावादारों का निपटारा करने के लिये एडवर्ड को बुलाया। मुख्य दावादार जान बेलियल

( John Balliol ) और राबर्ट ब्रूस ( Robert Bruce ) थे। एडवर्ड ने स्काटलैण्ड के मुख्य मुख्य सरदारों को ट्वीड नदी के किनारे नारहम गढ़ी में बुलाया परन्तु अपना फ़ैसला देने से पहिले उसने यह प्रश्न किया, " आप लोग यह बतायें कि आज से स्काटलैण्ड के जो राजा होगें वे इंग्लिस्तान के राजा को अपना अधिराज मानेंगे, उसकी अभिवन्दना करेंगे, उसके जन होने की सौगन्द खायेंगे जैसे जान ने पोप को माना, या नार्मण्डी के ड्यूक फ्रान्सराज के साथ करते थे ? " यह प्रश्न निर्मूल न था। अलफ्रेड के बेटे एडवर्ड के समय में स्काटलैण्डवालों को डेनों का डर लगा था और हमलोगों ने सुना है कि उनके राजा ने एडवर्ड को अपना पिता और स्वामी माना था परन्तु वे कभी आज्ञाकारी पुत्र न बने थे। जब उन्हें इंग्लिस्तान से कुछ पाने की आकांक्षा न रहती या इंग्लिस्तान का राजा निर्बल होता तो स्काटलैण्डवाले न उसका आदर करते न उसका कहना मानते और जब बली रहता तो उसको बड़ा मानने के लिये दवाये जाते थे। सबसे पिछला राजा जिसने अपना दावा स्थिर रक्खा, हेनरी द्वितीय था। रिचर्ड प्रथम ने उसे छोड़ दिया। अब स्काटलैण्डवाले फिर मान गये और एडवर्ड ने वलियल को अलेकज़ेण्डर का सच्चा उत्तराधिकारी माना। वलियल ने एडवर्ड की अभिवन्दना की और स्काटलैण्ड का राजा वना दिया गया।

४।—एडवर्ड का स्काटलैण्ड को आधीन करना—एडवर्ड ज्येष्ठ के समय में स्काटलैण्डवालों ने आधीनता तो स्वीकार करली, आज्ञा मानना अपना धर्म न समझा। परन्तु आजकल का इंग्लिस्तान उन दिनों के इंग्लिस्तान से अधिक शक्तिशाली था और एडवर्ड प्रथम ने अपने प्रभाव का सूचक-चिह्न यह बतलाया कि स्काटलैण्ड अंगरेज़ी अदालतों के आधीन हो जाय। जब स्काटलैण्ड में लोग मुक़द्दमा करते और हार जाते तो एडवर्ड




तेरहवीं शताब्दी में स्काटलैन्ड।

ने इस बात पर आग्रह किया कि वे मुक़द्दमे फिर इंग्लिस्तान

में सुने जायँ। इस पर स्काटलैण्डवाले बहुत बिगड़े और कहने लगे कि हमारा यह अभिप्राय न था। मानने के बदले उन्हों ने बलियल को इंग्लिस्तान से लड़ने के लिये बाध्य किया। एडवर्ड ने इसे राजद्रोह माना और उसके क्रोध की सीमा न रही। वह तुरन्त स्काटलैण्ड पर चढ़ गया और बलियल को परास्त करके उसे सिंहासन से उतार दिया; स्काटलैण्ड को अंगरेज़ी शासकों के हाथ में छोड़ कर उस पत्थर को उठा लाया जो (Scone) स्कोन में रक्खा था और जिसपर बैठ कर स्काटलैण्ड के राजा मुकुट धारण करते थे। यह पत्थर आजकल वेस्टमिन्स्टर अबे (Westminster Abbey) में उस कुर्सी के नीचे रक्खा है जिस पर बैठ कर आजकल ग्रेट ब्रिटेन के राजाओं का राज्याभिषेक होता है। कथा प्रसिद्ध है कि यह वही पत्थर है जिसपर याक़ूब ने अपना सिर रक्खा था जब उसने बीथल (Bethel) में देवदूतों को आकाश से चढ़ते उतरते देखा था। स्काटलोगों ने गर्व से यह भविष्यद्वाणी की कि जहां कहीं यह पत्थर रहेगा, वहां स्काटलैण्ड के राजा राज करेंगे। तीन सौ बरस पीछे उनकी सन्तान ने गर्व से कहा कि यह भविष्यद्वाणी पूरी हो गई और स्काटलैण्ड का राजा इंग्लिस्तान के सिंहासन पर बैठ गया।

५।—विलियम वालेस का विरोध—एडवर्ड स्काटलैण्ड को न्याय से शासन करना चाहता था परन्तु जब कोई जाति यह निश्चय करले कि हमारा शासन होना ही न चाहिये तो न्याय से भी शासन असम्भव है। देश में शान्ति रखने के लिये कुछ अंगरेज़ भेजे गये थे। उनलोगों ने स्काटलैण्डवालों के साथ बुरा बर्ताव किया। किसी अंगरेज़ ने विलियम वालेस नाम के एक स्काट का अपमान किया। उसने अपने मित्रों को इकट्ठा करके अंगरेज़ों पर आक्रमण कर दिया। धीरे धीरे सारा स्काट-

लैण्ड बिगड़ बैठा। वालेस ने एक सेना इकट्ठी की और स्टर्लिंग के पास एक सांकड़े पुल के उत्तर किनारे पर पहुंचा। अंगरेज़ों ने उसकी अवहेलना की और पुल पार करने लगे। जब आधे अंगरेज़ उत्तर गये तो वालेस उन पर चढ़ दौड़ा और उनकी सहायता को उनके साथी न पहुंच सके। वालेस की पूरी जीत हुई। इसने अंगरेज़ों को स्काटलैण्ड से निकाल दिया और सीमा पार करके नौर्थम्बरलैण्ड में अंगरेज़ों के घर लूट लिये और उनमें आग लगा दी। इस पर एडवर्ड भी बिगड़ा और अंगरेज़-लोग भी रुष्ट हो गये। स्काटलैण्डवाले वालेस को सत्य देश-भक्त मानते थे परन्तु इंग्लिस्तान में उसे दुष्ट डाकू समझते थे। एडवर्ड ने स्काटलैण्ड पर चढ़ाई कर दी। वालेस के पास उसका सामना करने को थोड़ी सी पैदल सेना थी और इस सेना को उसने फ़ालकर्क में इकट्ठा किया। उसने उनका एक गोल बनाया जिसमें सिपाही अपने अपने भाले आगे बढ़ाये हुए थे। इस समय में अंगरेज़ों ने लम्बे धनुष का प्रयोग सीख लिया जो हेस्टिंग्स के मैदान में नार्मनवालों के धनुष की अपेक्षा बड़ा भयंकर अस्त्र था। अंगरेज़ों को इस बात का अभिमान था कि उनका गज़ भर का तीर और उनका धनुष संसार में सबसे प्रचण्ड होता है। गांव गांव में छोटे से छोटे ज़िमीदार निशाना लगाना सीखते थे। सौ बरस पीछे ऐसे छोटे ज़िमीदारों का लक्षण एक कवि ने यों लिखा है कि उनके हाथ में बड़ा धनुष था। फ़ालकर्क में अंगरेज़ी बानों ने स्काट सेना में एक सन्धि सी कर दी, उस में अंगरेज़ सवार घुस पड़े और वीर स्काटलोग जहां खड़े थे वहीं लड़ कर मर गये। थोड़े ही दिनों में और जो कुछ विरोध बचा था वह भी दमन कर दिया गया। वालेस के शासन का अन्त हो गया। वह भाग गया और छिपता फिरा, अन्त में कई बरस पीछे वह पकड़ लिया गया। कहा जाता है कि मेनटीथ नाम

के एक स्काट ने उसे छल से पकड़ा दिया। मेनटीथ ने अंगरेज़ी सिपाहियों को, खाने की मेज़ के ऊपर एक डबल रोटी उलट कर सूचना दी थी। बहुत दिनो तक मेनटीथ के नाम के किसी मनुष्य के लिये यह गाली समझी जाती थी जो उसके आगे रोटी उलटी रक्खी जाय। वालेस को लंदन में ले गये और विद्रोही मान कर टावरहिल में उसको निष्ठुरता से फांसी दी गई। आजकल अंगरेज़ और स्काटलैण्डवाले दोनों मिल कर उसका आदर करते हैं जो अपनी जन्मभूमि के लिये वीरता से लड़ा था। एडवर्ड ने स्काटलैण्ड को इंग्लिस्तान में मिला लिया और यह आज्ञा दी कि अंगरेज़ी पार्लामेण्ट में स्काटलोग भी अपने प्रतिनिधि भेजें।

६।—सनदों का फिर से प्रामाणित करना—स्काटलैण्ड के साथ झगड़ों में अंगरेज़ी पार्लामेण्ट वैसी ही बन गई जैसी कि आजतक है। १२९५ में पहिली पूरी पार्लामेण्ट की बैठक हुई। उसी समय या उससे कुछ ही दिन पीछे पार्लामेण्ट की दो सभाएं बन गयीं। सरदारों बिशपों और अबटों की (House of Lords) हाउस आफ़ लोर्ड्स, सरदार सभा बनी और ज़िलों और नगरों के चुने हुए लोगों की (House of Commons) साधारण सभा। एडवर्ड ने देखा कि लड़ाइयों के लिये पार्लामेण्ट से रूपया लेना हो तो उसे प्रतिज्ञा करनी पड़ेगी कि विना पार्लामेण्ट की अनुमति के कभी कोई रूपया न लेगा और १२९७ ई० में सनदो के प्रामाणित करने की क़सम खाई और यह प्रतिज्ञा की कि जबतक पार्लामेण्ट न दे, वह कोई कर नहीं लगा सकता। परन्तु पार्लामेण्ट के वशीभूत होने से पादरियों को दबाने की उसकी शक्ति बढ़ गयी। पोप ने यह आज्ञा दी कि पादरीलोग राजाओं को कोई कर न दें क्योंकि राजा भी गृहस्थ ही होते हैं। बेकेट से रुष्ट होने पर हेनरी द्वितीय की भांति एडवर्ड आगबगूला नहीं हो गया परन्तु उसने धीरे से पादरियों को जता दिया कि कर न देंगे

तो उनकी रक्षा भी न की जायगी। परिणाम यह हुआ की पादरी के घर चोरी हो जाती तो सरकारी अदालतों से चोर को दण्ड न दिया जाता और पादरियों को विदित हो गया कि कर देने ही में भलाई है। इसके बाद पादरीलोग अलग रहने के बदले राजा और पार्लामेण्ट से अपनी शिकायतें कहा करते थे। यह सब ने देख लिया कि एडवर्ड न्याय करने का सदा उद्योग करता रहा और इसी से पादरियों को जनता से उतनी सहायता न मिली जितनी हेनरी द्वितीय और बेकेट के समय में पाते थे।

७।—रावर्ट ब्रूस का सिर उठाना—परन्तु स्काटलैण्ड ने यह निश्चय सा कर लिया था कि एडवर्ड का शासन कैसा ही अच्छा क्यों न हो हमको उससे प्रयोजन नहीं। वह अपने देश का प्रबन्ध आप करना चाहते थे और उन्हें एक नायक मिल गया। यह नायक रावर्ट ब्रूस नौरहम के एक दावेदार का पोता था। ब्रूस बड़ा साहसी और वीर था। डमफ्रीज़ के गिरजा घर में उसने कमिन नाम के एक दावादार को छुरी मार दी और झट पट निकल कर कहने लगा, "हमें निश्चय नहीं है कि हमने लाल कमिन को मारा है"। उसके एक साथी ने उत्तर दिया कि "हम इसे निश्चित किये देते हैं" और गिरजा में जाकर उसने कमिन को मार डाला। इस अधर्म से एडवर्ड के क्रोध की आग भड़क उठी। उसके स्काटलैण्ड पहुंचने तक ब्रूस को स्कोन (Scone) में राज तिलक कर दिया गया था यद्यपि वह प्रसिद्ध पत्थर वहां न था। एडवर्ड की सेना ने देश को अपने आधीन कर लिया। उसकी आज्ञा से बूकन की काउन्टेस जिसने ब्रूस के सिर पर मुकुट रक्खा था चिड़िया की भांति पिंजड़े में बन्द कर के बेरिक (Berwick) के ऊंचे कोट पर रख दी गई। स्काटसेना की सर्वत्र हार हुई। स्काटलैण्ड के मुखिये मार डाले गये। १३०७ ई० में ब्रूस का वध कर के इस काम को पूरा करने के लिये राजा ने आप प्रस्थान

किया। भला हो या बुरा उसका काम पूरा हो गया और अंगरेज़ी राजाओं में सब से उदार राजा कारलाइल नगर के पास बरा अपान सैण्ड्स ( Burgh-upon-Sands ) स्थान में मर गया। इंग्लिस्तांन में वह बड़ा बुद्धिमान और दृढ़ शासक था और सब के साथ न्याय करने का प्रयत्न करता था। उसने स्काटलैण्ड के साथ कुछ कड़ाई की और वहां के निवासी बहुत दिनों तक उसे लोहू का प्यासा अत्याचारी कहते थे, परन्तु स्काटलैण्ड के साथ उसका जो बर्ताव रहा उसमें भी उसके विचार अच्छे ही थे।

## ॥ अध्याय १२ ॥

### * एडवर्ड द्वितीय, १३०७: एडवर्ड तृतीय, १३२७। *

१।—एडवर्ड द्वितीय और राबर्ट ब्रूस (Robert Bruce)—
हमारे इतिहास में भले राजा भी हुए हैं और बुरे भी, केवल एडवर्ड द्वितीय ऐसा हुआ जिसने राजा का काम करने का प्रयत्न भी न किया। उसका हसी विनोद, भोग विलास में जी लगता और वह राजकाज की ओर ध्यान न देता। जब उसे इंग्लिस्तान का शासन करना उचित था, वह एक अयोग्य मुंहलगे पियर्स गवेस्टन ( Piers Gaveston ) के साथ हंसी दिल्लगी करता। कुछ दिनों तक उसके योग्य पिता के सिखाये अंगरेज़ी सिपाही स्काटलैण्ड को दबाये रहे और घटना पर घटना होती रही। ब्रूस एक पहाड़ी मवास से दूसरे पहाड़ी मवास को भागता फिरा। जब अवसर पाता तो अंगरेजों पर टूट पड़ता परन्तु क्षणमात्र की जय के बाद फिर भगा दिया जाता। यही दशा बहुत दिनों तक रही। कथा प्रसिद्ध है कि एक दिन वह निपट निरास होकर लेटा हुआ तारे गिन रहा था। उसने देखा कि मकड़ी छः बार एक दीवार पर ताना तानने



राजा एडवर्ड द्वितीय।

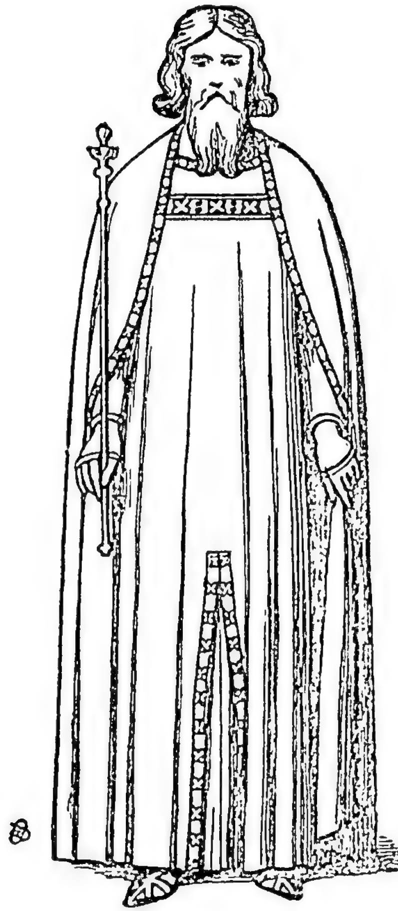
को उछली और छहों वार उस का काम न बना। सातवीं वार ताना दीवार में चिपक गया। उसे देख कर ब्रूस ने एक वार और भी प्रयत्न करने की ठान ली और उसको सफलता हुई। एडवर्ड की मूढ़ता से इंग्लिस्तान निर्बल हो गया था। अंगरेज़ सरदार राजा से बिगड़ गये थे और जब वह लोग आपस में लड़ते थे तो स्काटलैण्ड में ब्रूस से कौन बोलता। गढ़ी पर गढ़ी उसके हाथ लगी और स्काटलैण्ड के कोटबद्ध नगरों में एक स्टर्लिंग (Stirling) अंगरेज़ों के हाथ में रह गया।

२।—<u>बैनकबर्न (Bannockburn)</u>—जब यह नौबत पहुंची

तो एडवर्ड से भी चुप न रहा गया और १३१४ ई० में वह स्टर्लिंग के रक्षकों की सहायता के लिये एक बड़ी सेना लेकर स्काटलैण्ड पहुंचा। बैनकबर्न नगर के पास दोनों का संगर हुआ। ब्रूस वीर तो था ही बड़ा चालाक भी था। युद्धकला में चतुर उस योद्धा ने अपनी सेना के आगे गढ़े खोदे थे और उनमें पैनी कीलें गाड़ कर उन पर कमचियां बिछा कर घास से ढांक दिया था। अभिमानी अंगरेज़ी सरदारों के घोड़े उन पर दौड़े तो गढ़ों में गिर पड़े। सारी अंगरेज़ीसेना घबरा उठी। स्काटलैण्डवाले अपने देश के लिये जी तोड़ कर लड़े। एकाएक पहाड़ी के ऊपर कुछ सेवक दिखायी दिये। अंगरेज़ों ने समझा कि दूसरी सेना आ गई। एडवर्ड और भड़कीले सरदारों के पांव उखड़ गये और सब भाग खड़े हुए। उस दिन से इंग्लिस्तान और स्काटलैण्ड में अनेक लड़ाइयां हुई परन्तु स्काटलैण्ड को कभी हारने का जोखिम उठाना न पड़ा।

३।—एडवर्ड द्वितीय के राज का अन्त—एडवर्ड द्वितीय और कई बरस तक सिंहासन पर रहा परन्तु उससे किसी का भला न हुआ। उसकी रानी तक उसके विरुद्ध हो गई, उसके बैरियों से मिल गई और सर्वसम्मति से उसे उतार कर उसके बड़े बेटे एडवर्ड तृतीय को राजा बनाया। इसके थोड़ेही दिन पीछे बर्कली (Berkeley) की गढ़ी में एडवर्ड द्वितीय बड़ी निठुराई से मार डाला गया।

४।—सौ बरस की लड़ाई के कारण—एडवर्ड तृतीय के राज में फ्रान्स के साथ लड़ाई छिड़ी जिसे सौ बरस की लड़ाई कहते हैं। यह बात नहीं है कि लोग निरन्तर सौ बरस तक लड़ते ही रहे परन्तु लड़ाई बहुत कम बन्द रही सोभी कुछ ही साल के लिये और यही दशा सौ बरस तक रही। इस लड़ाई का आरम्भ दो कारणों से हुआ। पहिला कारण यह था कि इन दिनों



राजा एडवर्ड तृतीय।

भी इंग्लिस्तान के राजा के अधिकार में वोर्डो के पास गैस्कनी (Gascony) नाम प्रान्त था और फ्रान्सराज ऐसे प्रान्त को अपनाना चाहता था जहां के रहनेवाले फ़ान्सीसी भाषा बोलते थे यद्यपि यह प्रान्त उनके पूर्वजों के आधीन कभी भी न था। दूसरा कारण फ्रान्स राज की लालसा थी कि फ्लैण्डर्स (Flanders) में अपना प्रभुत्व जमादे। फ्लैण्डर्स उस देश का पश्चिमी भाग था जिसे आजकल बेलजियम कहते हैं और उन दिनों इंग्लिस्तान के लिये इसका फ्रान्सराज के आधीन होना बुरा था। इस में गाण्ट (Ghent) और ब्रोजेज़ (Bruges) नाम के बड़े बड़े व्यापारिक नगर थे जहां ऊनी कपड़े बनते थे और उन दिनों सूती

कपड़ा इंग्लिस्तान में कोई जानता भी न था; इस लिये ऊनी कपड़े की बड़ी मांग थी। इस कारण यह नगर तब ऐसे ही थे जैसे हमारे समय में लीडस (Leeds) और मैञ्चेस्टर (Manchester) हैं। इंग्लिस्तान में ऐसा कोई स्थान न था, बड़े शहरों का तो नाम भी न था, देश भी अब से बहुत भिन्न था। बड़े बड़े मैदान खुले पड़े थे जिन में आजकल की आस्ट्रेलिया की भांति भेड़ों के बड़े बड़े गल्ले चरा करते थे और बहुतेरे अंगरेज़ इनके ऊन कतरके फ्लैण्डर्स को कपड़ा बनाने के लिये भेज भेजकर धनी हो गये थे। ऐसे ही आस्ट्रेलिया वाले अब लीडस में ऊनी वस्त्र बनाने के लिये ऊन और अमेरिका और और देशवासी सूती कपड़ा बनाने के लिये मैञ्चेस्टर को रूई भेजते हैं। इस कारण अंगरेज़ों को यह डर था कि फ्रान्सराज इन नगरों को जीत लेगा तो इंग्लिस्तान का व्यापार मारा जायगा।

५।—फ्रान्स पर एडवर्ड का दावा—परन्तु एडवर्ड ने केवल व्यापार के लिये लड़ने पर सन्तोष न किया। उसने कहा कि न्याय से हम ही फ्रान्स के राजा हैं क्यों कि हमारी मां पिछले राजा की बहिन है और फ़िलिप षष्ठ जो राजा बना हुआ है वह चचेरा भाई है। फ्रान्सवाले कहते थे कि हमारे देश में स्त्री को राज का अधिकार नहीं और न कोई माता के अधिकार से राजा हो सकता है। वास्तव में उनकी इच्छा यह थी कि फ्रान्स का रहनेवाला उनपर राज करे न कि इंग्लिस्तान का। बात यह है कि जिस में फ्रान्स का कल्याण था उसी में इंग्लिस्तान का भी था। फ्रान्सवालों को परदेशी के शासन में लाने के लिये हज़ारों के मरने मारने में अंगरेज़ों ही की हानि थी। लड़ाई में विजयी हों और घर में उनकी वाह वाह हो परन्तु अन्त में उन्हें हारनाही पड़ता। युद्ध कभी कभी अनिवार्य धर्म हो जाता है परन्तु ऐसा युद्ध बुरा और सत्यानाशी होता है। फ्लैण्डर्स की स्वतन्त्रा के लिये लड़ने पर

एडवर्ड सन्तोष करता तो सम्भव था कि इस लड़ाई को सन्धि करके रोक देता और इस सन्धि से बहुत दिनों तक शान्ति रहती परन्तु राज के लिये लड़ने में वह ऐसे जंजाल में फंस गया जिसका अन्त तभी हुआ जब अंगरेज़ फ़ान्स से निकाल ही दिये गये।

६।—क्रेसी की लड़ाई और केलै का घेरा—एडवर्ड की पहिली जीत स्लुयी (Sluys) के जलयुद्ध में हुई जिसमें तीस हज़ार फ़ान्सीसी मारे गये या डूब गये। कुछ दिन पीछे इससे बढ़कर एडवर्ड की जय क्रेसी (Crecy) के मैदान में हुई। जैसे कि सेनलाक के समर में अंगरेज़ पैदल फरसे हाथ में लिये नार्मन सवारों से लड़ते रहे वैसे ही क्रेसी की लड़ाई में जो १३४६ ई० में हुई फ़ान्सवाले घोड़ों पर चढ़ कर लड़ते रहे और अंगरेज़ों ने पैदल तीर चलाना सीख लिया था। फ़ान्स की सेना में कुछ जिनोआ (Genoa) वासी धनुषधारी थे परन्तु घुड़सवार फ़ान्सीसी पैदल लड़नेवालों को तुच्छ समझते थे। जिनोआ के धनुषधारियों पर पानी बरसा और उनके चिल्ले भीग कर निकम्मे हो गये। फ़िलिप ने अपने सवारों से कहा कि जिनोआवाले व्यर्थ हैं इनको घोड़ों से कुचल डालो। अंगरेज़ धनुषधारियों ने पानी बन्द होने तक अपने धनुष गिलाफ़ों में बन्द रक्खे। यह लोग स्वतन्त्र थे और इन्हें बल से निशाना लगाने का अभ्यास बहुत दिनों से था। इस निष्ठुर शरवर्षा के आगे भड़कीले चटकीले फ़ान्सीसी सवार न ठहर सके और जब अंगरेज़ी सरदारों ने उन पर धावा कर दिया तो उनकी पूरी हार हो गई। राजा का बड़ा बेटा निपट लड़का ही था, और श्यामकुमार (Black Prince) कहलाता था। उसने भी उस दिन बड़ी बीरता दिखाई। लड़ाई के समय एक बार किसी ने देखा कि वह संकट में पड़ा है और एडवर्ड से कहा कि उसकी सहायता के लिये कुछ सेना भेज दो। एडवर्ड ने उत्तर दिया "न, न, लड़के को सरदारी का चिह्नस्वरूप कांटा अपने

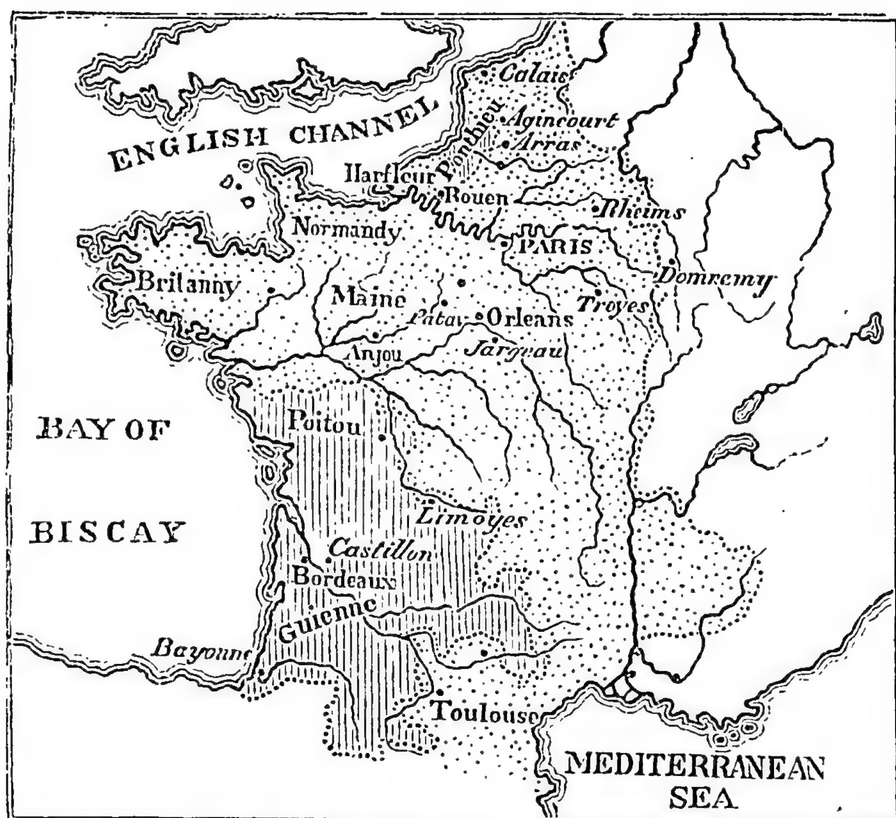
भुजबल से कमाने दो।" सरदारों और नीची श्रेणी के लोगों में कांटे ही से सरदार पहिचाने जाते थे। जो लोग लड़ना सीखते थे वे भी कांटे नहीं लगा सकते थे। क्रेसी की लड़ाई के थोड़े ही दिन बाद एडवर्ड ने कैले (Calais) नगर को घेर लिया और ग्यारह महीने तक घेरे पड़ा रहा। जब नगर निवासी भूखों मरने लगे तो उनके मुखिया दया की भिक्षा मांगने, गले में रस्सी डाले हुए निकले जिस का अभिप्राय यह था कि हमलोग फांसी लटकने को तैयार हैं। राजा एडवर्ड ने दया की परन्तु नगर में से सारे फ्रान्सीसी निकाल दिये गये और उन की जगह अंगरेज़ बसाये गये और दो सौ बरस से अधिक यह नगर अंगरेज़ी बना रहा।

७।—पूईटिये (Poitiers) की लड़ा—क्रेसी की लड़ाई के दस बरस पीछे श्यामकुमार ने पूईटिये के समर में एक और विजय पाई। फ़िलिप षष्ठ मर चुका था और उसका बेटा जान फ्रान्स का राजा था। जान ने अपने सरदारों को आज्ञा दी कि एक गली में धावा मार दो जिसके सिरे पर श्यामकुमार की एक छोटी सी सेना खड़ी थी पर वह न जानता था कि झाड़ियों में अंगरेज़ी धनुषधारी भी खड़े हैं। जब बाणों की वर्षा होने लगी तो घोड़े तले ऊपर गिरने लगे और गली सकड़ी होने से भाग भी न सके। एक ही छन में अभिमानी फ्रान्सीसी सेना में गड़बड़ी मच गई। श्यामकुमार के धावे से उसकी पूरी विजय हो गई और राजा जान बन्दी कर लिया गया।

८।—शौर्य (Chivalry)—सरदार का काम था कि वीरता से युद्ध करै। उसका यह भी धर्म था कि युद्ध की समाप्ति पर सरदारों और भले मानसों के साथ दया और भलमनसाहत का बर्ताव करै। शौर्य (Chivalry) का अर्थ है "सरदार के योग्य

कर्म" और आजकल भी इस शब्द का प्रयोग ऐसे अवसर पर किया जाता है जब बली अपने बल से निर्बल और विशेष करके स्त्रियों की सहायता और उनकी रक्षा करता है। युद्ध समाप्त होने पर श्यामकुमार, जान को अपने डेरे में लाया और जो खाना उसके लिये मेज़ पर सजा रक्खा था उसी के आगे बिठा दिया और उसकी कुर्सी के पीछे सेवक की भांति खड़ा रहा। उन लड़ाई झगड़े के दिनों में ऐसे ही आचरण सुनने से चित्त प्रसन्न होता है। परन्तु सब के साथ बराबर ऐसी भलमनसाहत नहीं दिखाई जाती

भांति खड़ा रहा। उन लड़ाई झगड़े के दिनों में ऐसे ही आचरण सुनने से चित्त प्रसन्न होता है। परन्तु सब



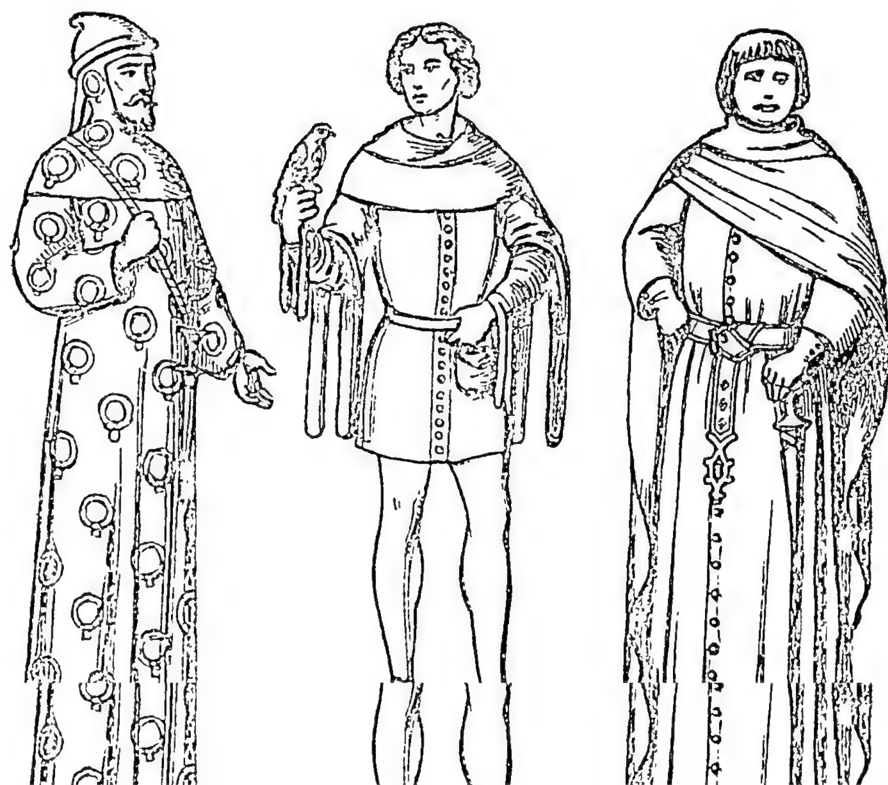

फ़ान्स देश।
जिस प्रान्त में बुंदे दिये हैं वह फ़ान्सराज के अधिकार में था और जिस पर रेखायें खींची हैं वह इंग्लिस्तान के राजा के अधिकार में रहा।

रहा है। एडवर्ड ने फ्रान्स के साथ सन्धि करली। यह सन्धि "ब्रिटैनी की सन्धि" कहलाती है। इस से फ्रान्स का बहुत बड़ा अंश एडवर्ड के पास रह गया और फ्रान्स बहुत सा धन देने को वाध्य किया गया।

१०।—मज़दूर—चोरी करने से किसी का भला नहीं होता। अंगरेज़ों को लूट के धन से धनी होने की बान पड़ गई थी और जो धन विना कठिन परिश्रम के आता है बहुधा बड़ी सुगमता से उड़ भी जाता है। सन्धि होते ही फ्रान्सवालों को लूटने का काम भी बन्द हो गया परन्तु इस से अंगरेज़ों की व्यर्थ धन ख़र्च करके टीमटाम से रहने की आदतें न गईं। शान्ति और मितव्ययता

के साथ रहने के बदले अंगरेज़ों ने अपने पड़ोसियों से जो धन मिल सका उसी को खींचने लगे। इस से एक प्रकार के लोगों की बड़ी हानि हुई। बहुत दिनों से इंग्लिस्तान में धरती की जुताई मज़दूरी देकर मज़दूरों से नहीं कराई जाती थी बरन् सर्फ़ों (Serf) के द्वारा होती थी। इन सर्फ़ों के अपने अपने घर होते और बोने जोतने को धरती मिली रहती थी। पहिले इनकी दशा बुरी न थी। देश में रुपया बहुत न होने से सर्फ़लोग अपनी धरती का लगान मज़दूरी करके चुकाते थे और रुपया देने के बदले कुछ दिनों तक अपने ज़िमीदार की मज़दूरी किया करते थे। परन्तु कुछ दिनों से मज़दूरी के बदले नगद देने लगे थे। अब यह देखा गया कि फ्रान्स से लौटे ज़िमीदार अपने सर्फ़ों से, जितना पहिले काम लिया करते थे उस से अधिक काम लेने लगे और उनलोगों को भी काम करना पड़ा जिन्हों ने बहुत दिनों से मज़दूरी की न थी। एडवर्ड के समय में बहुत से ऐसे भी मज़दूर थे जो आजकल की भांति नगद मज़दूरी के लिये काम करते थे। इनके साथ भी कड़ाई की गई और थोड़ी मज़दूरी देकर यह लोग कठिन परिश्रम करने को वाध्य किये गये।

११।—काली मरी (Black Death)—उधर तो सर्फ़ और मज़दूर रो रहे थे इधर इंग्लिस्तान में एक भयंकर रोग फैल गया। इसको काली मरी कहते थे और इसने जितने प्राण लिये उतने आजतक और किसी प्लेग ने नहीं। हम ठीक ठीक नहीं बता सकते कि कितने मनुष्य मरे परन्तु कुछ लोग अनुमान करते हैं कि आधी जनता नष्ट हो गई। परन्तु जो सर्फ़ और मज़दूर बच गये उनकी कुछ आशायें बढ़ गई। इसमें सन्देह नहीं कि धनी और दरिद्र दोनों मरे परन्तु धरती तो ज्यों की त्यों बनी रही। धरती का काम जितना पहिले था उतनाही रह गया। उतने ही खेत काटने को थे और उतनी ही भेड़ बाल कतरने को



आदम ने जब धरती खोदी
हौआ ने जब काता सूत ।
कौन भले मानस थे जग में
बड़े बाप के जन्मे पूत ॥

और सर्फ़ और मज़दूर सब कुछ करने पर उतारू हो गये ।

१२।—<u>एडवर्ड तृतीय के अन्तिम दिन</u>—परन्तु केवल मज़दूर ही असन्तुष्ट न थे। फ्रान्स से फिर लड़ाई छिड़ गई और अंगरेज़ों के अच्छे अच्छे मुखिया मर गये थे। एडवर्ड तृतीय भी बुढ़ापे में विक्षिप्त हो गया और न लड़ने के काम का रहा न शासन के। श्यामकुमार का स्वास्थ्य बिगड़ गया था। नया फ्रान्सीसी राजा चार्ल्स पंचम बड़ा समझदार और आगमसोची था। वह बड़ी लड़ाई लड़ना न चाहता था। धीरे धीरे फ्रान्स में अंगरेज़ों के जो प्रान्त थे सब निकल गये। अब अंगरेज़ी सरदारों ने यह सोचा कि पादरियों को लूटना चाहिये, फ्रान्सवालों को तो लूट सकते नहीं। राजा के तीसरे बेटे जान ने (जो फ्लैण्डर्स के गाण्ट में पैदा हुआ था और गाण्ट का जान कहलाता था) यह चिल्लाकर कह दिया कि पादरियों को इंग्लिस्तान में कुछ अधिकार न होना चाहिये और उनको सारे सरकारी उहदों से निकालने लगा। आजकल यह कुछ विचित्र लगैगा कि सारे सरकारी उहदे पादरियों के पास हों, एक पादरी कोषाध्यक्ष (Lord Treasurer) हो और राजधन का अधिकारी हो, दूसरा न्यायाधीश (Lord Chancellor) हो और मुक़द्मे फ़ैसल करे। परन्तु उन दिनों में बुद्धि से काम लेने के लिये देश में कुछ पढ़े लिखे ज्ञानी पादरी ही होते थे और अंगरेज़ लोग यह जानते थे कि इन कामों को ज्ञानी विद्वान ही कर सकते हैं। श्यामकुमार दुबले पतले रोगी की दशा में पार्लमेण्ट में आया और उसने अपने भाई का प्रतिवाद किया। उन दिनों की पार्लमेण्ट "सौम्य" (Good)

कहलाती थी। उसने राजा और प्रजा को धोखा देकर धन लेनेवाले गाण्ट के कुछ मित्रों को निकाल दिया और पादरियों को फिर अपने अपने पदों पर कर दिया। परन्तु श्यामकुमार बहुत दिन न जिया जो और कुछ करता। उसके मरने पर गाण्ट ने फिर अपनी मनमानी की। थोड़े दिन पीछे एडवर्ड तृतीय की भी मृत्यु हो गई। उसके शासन काल के आरम्भ की विजयों का पता न रहा और जो अंगरेज़ फ्रान्सवालों को लूटने चले थे अब आपस ही में लूट मचाने लगे। युद्ध की कीर्त्ति जब आत्मरक्षा या बलियों से निर्बल की रक्षा से न हो तो उन्हीं सेबों की भांति होगी जो मुर्दार समुद्र ( Dead Sea ) के तट पर होते थे; देखने में अच्छे लगते थे परन्तु महीने भर में राख होजाते थे *।

## ॥ अध्याय १३ ॥

### * रिचर्ड द्वितीय, १३११ *

१।—किसानों का सिर उठाना—रिचर्ड द्वितीय के राज में और भी उपद्रव मचा। रिचर्ड श्यामकुमार का बेटा था और यद्यपि वह दस बरस का बालक था, यह आशा की जाती थी कि सयाना होने पर वह भी अपने बाप की भांति होजायगा। उसके बालकपन में उसके चाचाओंने और विशेष करके गाण्ट के ( John of Gaunt ) जान ने राजशासन किया। लड़ाई चली जाती थी परन्तु हर साल कुछ न कुछ फ्रांसीसी नगर निकलते
उसके बालकपन में उसके चाचाओंने और विशेष करके गाण्ट के



राजा रिचर्ड द्वितीय और उसका दरबार।

था कि धनी हमें सता रहे हैं। अब उनकी विपत्ति और भी बढ़ गई। कराधिकारियों का काम बड़ा कठिन होगया। एक कराधिकारी किसी केण्टबासी के घर में घुस गया और उसकी लड़की को छेड़ा। लड़की के बाप ने उसे तुरन्त मार डाला। हज़ारों सर्फ़ बिगड़ बैठे और कहते थे कि नये कर उठा दिये जायं और बिना मज़दूरी पाये कोई अपने ज़िमीदार के लिये काम करने को बाध्य न किया जाय। परन्तु उनकी इन प्रार्थनाओं में न दृढ़ता थी और न शान्ति थी। वह लोग क्रोधी और अनपढ़ थे और उन्होंने वही काम किये जो अनपढ़ और क्रोधी किया करते हैं और उपद्रव मचा दिया; जिन काग़ज़ों पर लिखा था कि किसानों को अपने अपने ज़िमीदारों के लिये क्या क्या काम करने पड़ेंगे, उन काग़ज़ों को फाड़ डाला; जिन वकीलों ने अदालतों में जाकर यह

बहस की कि काम करना किसानों का धर्म है, उनको मार डाला। बहुत से किसान वाट टैलर ( Wat Tyler ) को अपना मुखिया बनाकर लंदन की ओर बढ़े। रिचर्ड १६ ही वर्ष का था परन्तु बड़े साहस के साथ उनसे मिलने को चला और उन से प्रतिज्ञा की कि हम तुम्हारा यह बन्धन छुड़ा देंगे। जिन लोगों ने उसकी बातें सुनीं उनको सन्तोष होगया और अपने घर लौट गये, परन्तु सारी भीड़ को सन्तुष्ट करना कठिन था। एक चिल्लाती हुई भीड़ लंदन की गलियों में घुस पड़ी और कैण्टरबरी के आर्कबिशप को पकड़ कर उसका सिर काट लिया। इसी भांति और भी बड़े बड़े सरदार मारे गये। सारी राजसभा भर में रिचर्ड ही धीर गम्भीर बना रहा। टैलर हज़ारों किसानों के साथ स्मिथफ़ील्ड पर खड़ा रहा। बालक राजा घोड़े पर सवार होकर उसके पास चला गया। वाट टैलर ने उससे कुछ कड़ी बातें कही इस पर लंदन के मेयर वालवर्थ ( Mayor Walworth ) ने उसको मार डाला। उसके मरते ही लोग " बदला, बदला " चिल्लाने लगे। रिचर्ड वीरता से आगे बढ़ा और बोला हम तुम्हारे नायक होंगे। किसानों को राजा से कोई द्रोह न था। रिचर्ड ने फिर प्रतिज्ञा की कि हम तुम्हें बन्धन से छुड़ा देंगे। उन्हें विश्वास हो गया और वे शान्ति से अपने अपने घर लौट गये। परन्तु देश में बलवे होते रहे और ज़िमीदारों ने भी साहस करके किसानों पर आक्रमण कर दिया। इन बेचारों के पास न हथियार थे न नियम था और न वे लड़ना जानते थे। हज़ारों मारे गये। राजा ने जो प्रतिज्ञा की थी उसे वह पूरी भी करना चाहता तो करने न पाता। किसान बिना मज़दूरी के अपने अपने ज़िमीदारों के काम करने के लिये बाध्य किये गये और उनका जीना कठिन हो गया। परन्तु कुछ ही दिन में उनके दिन फिरे। ज़िमीदारों ने जान लिया कि जो काम करना नहीं चाहते उनसे काम कराने में कोई लाभ नहीं

है और बहुतेरे सर्फ़ स्वतंत्र कर दिये गये। इन स्वतंत्र लोगों में जिन्हों ने मज़दूरी के लिये काम किया उनका काम उन सर्फ़ों की अपेक्षा, जो बिना बेतन के करते थे, बहुत अच्छा रहा।

२।—जान विकलिफ़—कुछ दिनों तक ज़िमीदारों की चली क्योंकि उनके बल अधिक था परन्तु उस समय इंग्लिस्तान में एक मनुष्य ऐसा था जो इस बात की शिक्षा देता फिरता था कि बल से बढ़ कर भी एक पदार्थ संसार में है। जान विकलिफ़ एक विद्वान पादरी था। उसने पहिले इंग्लिस्तान में पोप के अधिकारों के विरूद्ध उपदेश दिया। बहुत दिनों से पोप लोग इंग्लिस्तान का कोई भला तो करते न थे, केवल रूपया मांगते थे और इंग्लिस्तान में ईसाई धर्म के पदों पर अपने इटलीवाले मित्रों को स्थापित करते थे। एडवर्ड तृतीय और रिचर्ड द्वितीय के शासन-काल में अंगरेज़ी पार्लामेण्ट ने इसको बन्द करने के लिये क़ानून बनाये। इस विषय में विकलिफ़ ने पोप के विरूद्ध बहस की। इसके बाद उसने पादरियों के धन और बल के विरुद्ध बहस की। वह कहता था कि पादरियों को धर्म का उपदेश करना चाहिये और दीन दुखियों के पास जाना चाहिये; काम न करें तो उन्हें इतना धन लेने का अधिकार नहीं है। विकलिफ़ ने बैबिल (Bible) का अंगरेज़ी में अनुवाद किया और बहुत से उपदेशक जिन्हें वह निर्धन पादरी कहता था, जनता को उपदेश देने के लिये भेजे। अंगरेज़ी का बड़ा कवि चासर (Chaucer) उन्ही दिनों था। लोग विचार करते हैं कि उसने जब "अच्छे पादरी" का वर्णन किया और यह लिखा कि उसने ईसामसीह और उनके धर्मदूतों के सिद्धान्त केवल औरोंही को नहीं सिखाये परन्तु आप पहिले उनके अनुसार आचरण करता था, उस समय विकलिफ़ ही उसके ध्यान में था। कुछ दिन पीछे विकलिफ़ ने उन कुछ सिद्धान्तों का भी प्रतिवाद किया

जो ईसाई धर्म में माने जाते थे। इसमें उसको कुछ साथ देनेवाले भी मिल गये। पहिले वह लोग थे जिन्हों ने उसकी शिक्षा पर विश्वास किया। यह लोग लोलर्ड कहलाते जिसका अर्थ है गाने वाले क्योंकि यहलोग भजन गाया करते थे। फिर उसको कुछ बड़े ज़िमीदार भी मिल गये क्योंकि उन्हें यह सुन कर बड़ा सुख मिलता था कि पादरीलोग काम न करें तो उन्हें कुछ न मिले। विकलिफ़ का अभिप्राय था कि पादरीलोग अपना धर्म निबाहें। बड़े ज़िमीदार यह चाहते थे कि पादरियों का धन लेलें और उनसे अपना काम करने को न कहें। कुछ दिनों तक विकलिफ़ को सफलता होती रही। परन्तु दो बातें उसके प्रतिकूल पड़ीं। उन दिनों छपाई का आविष्कार न हुआ था इससे बैबिल बहुत महंगी बिकती थी। एक एक प्रति नक़ल की जाती थी और निर्धनलोग उसे मोल भी लेते तो पढ़ना न जानते थे। दूसरी बात यह थी कि बड़े ज़िमीदार किसानों के विद्रोह से कुछ डर भी गये थे। उन्हों ने पहिले से यह विचारा कि पादरी अपना काम नहीं करते तो उनका धन ले लेना चाहिये चाहे वह अपना काम करें या न करें। अब ज़िमीदारों ने जाना कि किसान उनसे भी पूछेंगे कि तुम भी अपना धर्म निबाहते हो या नहीं या धन कमाने और सुखभोगही में लगे रहते हो। परिणाम यह हुआ कि उन्हों ने विकलिफ़ की बातों को सुनना छोड़ दिया और उसे आग भड़कानेवाला समझने लगे। वह आक्सफ़ोर्ड में शिक्षा देने न पाया और लटरवर्थ गिरजा में उसे लौटजाना पड़ा जहां वह थोड़े दिन पीछे मर गया।

३।—<u>रिचर्ड द्वितीय और उसके चचा</u>— रिचर्ड द्वितीय के शासन-काल का शेष समय राजा और उसके चचा के झगड़े में बीता। चचा चाहते थे कि हमही राज करें और कुछ सरदार भी उनके पक्षपाती हो गये थे। सयाना होने पर रिचर्ड ने यह

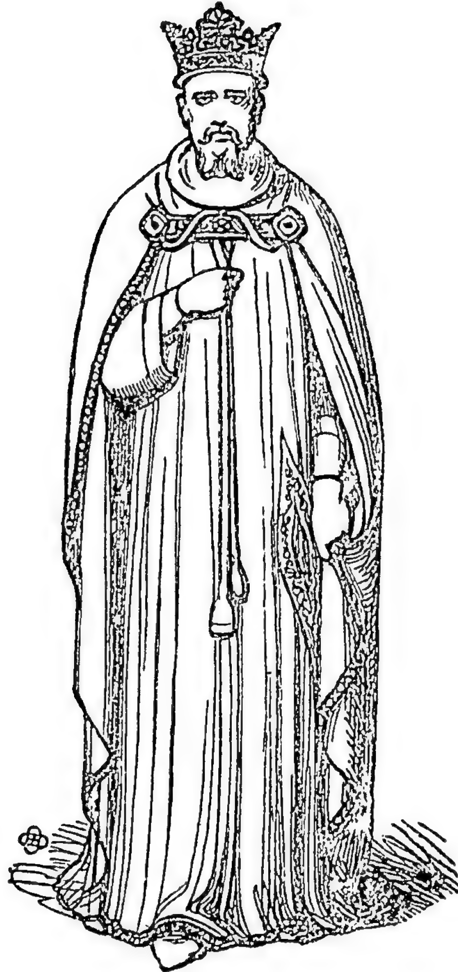
सिद्ध कर दिया कि जैसे वाट टैलर (Wat Tyler) और उसकी भीड़ का सामना करने में उसने वीरता और धीरता दिखाई थी अवसर पड़ने पर वह वैसेही धीर वीर रह सकता है। एक दिन उसने एकायक अपने चचा ड्यूक ग्लासेस्टर (Duke of Gloucester) से कहा, "अब मैं कितना बड़ा हो गया"। ग्लासेस्टर ने उत्तर दिया कि श्रीमान् का बाईसवां साल है। राजा बोला "तबतो मैं इतना बड़ा हो गया कि अपना काम आप सँभालूं"। उसने तुरन्त अपने चचाओं को राजसभा से निकाल दिया परन्तु उसे शासन करना आता न था। वह यह समझता था कि राजा होने से उसको खर्च करने के लिये बहुतसा धन मिल जायगा। परन्तु उसके चचा भी अपनी शक्ति का उचित प्रयोग न जानते थे। एक बार उन्होंने बल कर के शासन अपने हाथ में ले लिया और रिचर्ड के प्रधान मंत्रियों को मार डाला। कभी राजा बली हो जाता और अपने विरोधियों का वध कर डालता। उसने ड्यूक ग्लासेस्टर को मरवा डाला और एक दूसरे सरदार अर्ल अरन्डल को फांसी दिला दी। इन चालों से ऐसा जान पड़ता था कि वह इंग्लिस्तान का पूरा पूरा स्वामी हो गया।

४।—<u>रिचर्ड द्वितीय के राज का अन्त</u>— अन्त को रिचर्ड के शत्रुओं में से दोही सरदार बचे। एक नारफ़ाक का ड्यूक, टामस मोबरे, और दूसरा जान गाण्ट का लड़का हेनरी बालिंगब्रोक (Bolingbroke) जो हेअरफ़ोर्ड का ड्यूक था। राजा ने दोनों का अपराध क्षमा कर दिया था परन्तु जब उसने सुना कि दोनों में अनबन हो गयी तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और उस समय की प्रथा के अनुसार युद्ध करके झगड़े का निर्णय निश्चित हुआ। यह युद्ध कवेन्ट्री में होना निश्चय किया गया परन्तु युद्ध होनेवाला ही था कि राजा ने उसे रोक दिया और दोनों को देश निकाला दे दिया, मोबरे को जन्म भर के लिये और बालिंगब्रोक

को दस बरस के लिये। इन दोनों ने ऐसा कोई अपराध न किया था जो किसी अदालत में इन पर साबित होता। यह काम बड़े अन्याय का समझा गया। थोड़े ही दिन पीछे रिचर्ड ने इससे भी बढ़ कर अन्याय किया। जान गाण्ट मर गया और

किया था जो किसी अदालत में इन पर साबित होता। यह काम

का पहिला राजा था। हेनरी तृतीय के समय से यह रीति चली आई थी कि राजा के मरने पर उसका बड़ा बेटा सिंहासन पर बैठा करता था और जो बड़ा बेटा अपने बाप के जीतेजी मर जाता, जैसे श्यामकुमार मर गया था, तो उसका बड़ा बेटा राजा होता। राजकुल में से किसी योग्य पुरुष को राजा चुनने की प्रथा अब न रह गई थी और अंगरेज़ लोग देश के शासन को राजा का ऐसा धन न समझते थे जैसे उसका घर या उसका



हेनरी चतुर्थ।

खेत हुआ करता है। इसी विचार से उन्होंने एडवर्ड द्वितीय और रिचर्ड द्वितीय को सिंहासन पर से उतार दिया क्योंकि

उनका शासन बुरा था। एडवर्ड द्वितीय उतारा गया था तो उसका बड़ा बेटा सिंहासन पर बैठाया गया। रिचर्ड द्वितीय के कोई लड़का न था परन्तु हेनरी से भी एक नगीच का नातेदार था जो राज का वारिस हो सकता था। यह मार्च का अर्ल रोजर मार्टिमर था जो एडवर्ड तृतीय के जान गाण्ट से भी बड़े बेटे लिवनल ( Lionel ) क्लारेन्स के ड्यूक का पोता था। हेनरी चतुर्थ को इस कारण जन्माधिकार से राज नहीं मिला। उसे पार्लमेण्ट ने राज़ करने की अनुमति दे दी जैसे जान को दी थी। इस लिये अपने पहिले के राजाओं की अपेक्षा उसे पार्लमेण्ट की इच्छा के अनुसार अधिक चलना पड़ा। न करता तो उसे भी कदाचित सिंहासन से उतार देती जैसे रिचर्ड को उसने उतार दिया था। परन्तु कई बातों में वह अच्छा था। रिचर्ड की भांति अब राजा अपनी मनमानी नहीं कर सकता था; न किसी का धन ले सकता था न उसकी धरती, और न बिना अदालती रूबकारी के उसे देशनिकाला दे सकता। परन्तु पार्लमेण्ट में भी मनुष्य ही होते थे, और जैसे एक मनुष्य बुरे काम कर सकता है वैसे ही तीन चार सौ मिलकर भी कर सकते हैं।

२।—<u>विधर्मियों को जलाने का क़ानून</u>—इन दिनों पार्लमेण्ट में बहुधा ऐसे सदस्य थे जिन्हें फिर किसानों के विद्रोह का डर था। ईसाई धर्मसंघ के सिद्धान्तों के प्रतिकूल लोलर्डलोग अब तक शिक्षा देते फिरते थे, और इन सिद्धान्तों के न माननेवाले बहुधा वही लोग थे जो सर्फ़ों को बिना मज़दूरी के ज़िमीदारों का काम करने के बन्धन से मुक्त करना चाहते थे और जितनी उनसे हो सकती थी उतनी ज़िमीदारों की हानि करना चाहते थे। इस लिये धर्म के विरोधियों का दमन करना पार्लमेण्ट ने निश्चय कर लिया। यह विरोधी वह लोग थे जो धर्मसंघ के विश्वास के

भिन्न बातें मानते थे। इसका कुछ तो कारण यह था कि धर्म-विरोधी ज़िमीदारों का धन न छीन लें। इंग्लिस्तान के इतिहास में यह अनोखी बात हुई और धर्मविरोधियों को जीतेजी जला देने का क़ानून बन गया। बिशप और जितने धार्मिक लोग थे उनका विश्वास था कि धर्म में झूठी बातों के माननेवाले को जन्म भर सांसत होनी चाहिये चाहे उसका भ्रम शुद्ध अन्तः करण ही से क्यों न हो। इसलिये वे समझे कि जो लोग औरों को ऐसी बातें सिखाते थे जिनका परिणाम उनके लिये भयंकर है उनको जला देना बड़ा पुण्य है।

३।—हेनरी चतुर्थ के विरुद्ध विद्रोह—हेनरी के राज्य में शान्ति न रही। जिन सरदारों ने सिंहासन पर बैठने में उसकी सहायता की थी वही लोग उसकी आज्ञा न मानते थे और उनको दबाने के लिये तैयार रहना पड़ता था। इनमें से परसी (Percy) कुल से उसे विशेष भय था। इस कुल का मुखिया नार्थम्बर-लैण्ड का अर्ल था और उसकी ज़िमीदारी इंग्लिस्तान और स्काट-लैण्ड के सिवाने पर थी। उसका यह काम था कि अंगरेज़ों को मारने और उनके घर जलाने को कोई स्काट सेना या स्काट डाकू-दल ट्वीड नदी (Tweed) के पार न उतरने दे। इसलिये उसको अपने अधिकार से बहुत से हथियारबन्द रखना आवश्यक था परन्तु यह भी सुगम था कि इन्हें राजा के विरुद्ध भी लगा दे। उसने स्काटलैण्ड के राजा से मेल कर लिया और कुछ स्काटों को और वेल्स के एक बली सरदार ओवेन ग्लैण्डावर (Owen Glen-dower) को साथ लेकर राज विद्रोह कर बैठा परन्तु श्रूज़बरी (Shrewsbury) की लड़ाई में नार्थम्बरलैण्ड हार गया और उसका बेटा हेनरी हाट्सपर (Henry Hotspur) मारा गया। परन्तु इस पर भी हेनरी के दुःखों का अन्त न हुआ। एक बैरी के पीछे दूसरा बैरी उठ खड़ा हुआ और वह दुखी हृदय का

हारा मांदा चौदह बरस राज करके परलोक सिधारा ।



आयरलैन्ड में राजा रिचर्ड द्वितीय हेनरी मनमथ को नैट (सरदार) बना रहा है।

४ ।—मनमथ का (Monmouth) हेनरी, युवराज—हेनरी चतुर्थ के बेटे हेनरी मनमथ को उसके बाप के राजा होने से पहिले ही रिचर्ड द्वितीय ने सरदार (Knight) बना दिया था । वह श्रूज़बरी में बड़ी वीरता से लड़ा । वह बड़ा खेलाड़ी था और उसके विनोद के समय उसके हुरदंगेपन की कहानियां कही जाती हैं। कथा प्रसिद्ध है कि उसने एक बार गैसकोइन (Gascoigne) नामक जज को धमकाया और जज ने उसे जेल भेज दिया । कुछ दिनों तक लोग यह मानते रहे कि राजा होने पर हेनरी ने गैसकोइन की प्रशंसा की यद्यपि उसी के साथ कड़ाई की गई



जज गैस्क्वाइन।

थी। परन्तु पिता के मरने पर उसने गैसकोइन को छुड़ा दिया और जैसा समझा जाता था वैसा उसके आचरण में सन्देह है।

५।—हेनरी पञ्चम की फ्रान्स पर चढ़ाई—नये राजा हेनरी पञ्चम ने एडवर्ड तृतीय का अनुकरण करके अपने को इन बखेड़ों से छुटकारा पाना निश्चय कर लिया। उसने समझा कि फ्रान्स के साथ लड़ाई छिड़ गई तो सरदारलोग उसके विरोधी होने के बदले उसका साथ देंगे और उसने चटपट फ्रान्स के राज का दावा कर दिया। वह एडवर्ड तृतीय का ज्येष्ठ वंशज तो थाही नहीं, जो उसका दावा अदालत में चल सकता। परन्तु संयोग

वस फ्रान्स का राजा चार्लस षष्ठ कुछ विक्षिप्त था और उसके सरदार आपस में लड़ रहे थे इस कारण हेनरी को एडवर्ड तृतीय से बढ़ कर सफलता की सम्भावना थी। और बातों में राजा बहुत ही सुशील और सच्चा था और बड़ा वीर योग्य सेनापति था। उसकी सेना भी बली थी और दावा सच्चा हो या झूठा अंगरेज़ पिछली लड़ाइयों में उनके जीते प्रान्तों से उन्हें निकालने का बदला लेने को जले जा रहे थे।

६।—हार्फ्लुये का घेरा और अज़िनकूर की लड़ाई—

१४१५ ई० में हेनरी दलबल समेत फ्रान्स में उतरा और एक भयंकर अवरोध से हार्फ्लुये को ले लिया। इधर उसकी सेना में बीमारी फैल गई और हज़ारों सिपाही जो वैरी का सामना करने से न डरते थे, काल के कवल हो गये। इसपर भी जो सिपाही बचे थे उन्हीं को साथ लेकर हार्फ्लुये से कैले को कूच करना उसने निश्चय कर लिया। अज़िनकूर पहुंचते ही पचास साठ हज़ार फ्रान्सीसी सेना ने उसकी राह रोकी। उसके साथ केवल नौ हज़ार सिपाही थे। परन्तु वह डरना जानता ही न था। २५ अक्टूबर को सेण्ट क्रिसपिन के त्यौहार के दिन लड़ाई हुई। त्यौहार के रतजग्गे की रात को उसने अपने कटक में किसी को यह कहते सुना कि इंग्लिस्तान में जो लोग कुछ काम नहीं करते उनमें से दो चार हज़ार हमलोगों के साथ होते तो क्या बात थी। इतना सुनते ही राजा बोल उठा "नहीं नहीं हमें एक भी और न चाहिये"। राजा की बातचीत को अंगरेज़ी के प्रसिद्ध नाटककार शेक्सपियर ने जैसा अंगरेज़ी नाटक में लिखा है उसका अनुवाद यों है—

ऐसी बात कहो ना, भाई,
मरैं हमी जो मरना है।

देशी भाई और बुला कर
तुम्हें यहां क्या करना है ॥
इतनी हानि देश की अपने
होनी है तो होने दो ।
जितने हैं हम उतने ही को,
जीवन अपना खोने दो ॥
और कहीं जो लड़कर जीते,
जीतेजी घर जायेंगे ।
जितने ही कम होंगे,
उतनी कीरत बड़ी कमायेंगे ॥
मैं तुमसे यह बिनती करता
चहौ सिपाही और न एक ।
सुजस कमायें इतने हीं हम
सदा रहै यह अपनी टेक ॥
सच कहता हूं, ईश्वर जानै
धन की मुझको चाह नहीं ।
मेरी हानि से लाभ किसै हो
इसकी भी परवाह नहीं ॥
एक लोभ से मैं आया हूं
इसका कुछ परमान नहीं ।
जस का लोभ पाप मानो तो
पापी मेरे समान नहीं ॥
इस संगर में ईश कृपा से
मुझ को जस की आशा है ।
हमहीं इसको मिल कर बांटैं
इस संगर में ईश कृपा से



हमलोगों का हिस्सा उनके
आने से घट जायेगा ॥
क्रिस्पिन नाम संत मोची ने
किया ईसवी-धर्म प्रचार ।
अक्तूबर की पच्चिस तारिख़
उसी संत का है त्यौहार ॥
आज यहां से जीता बच कर
जो अपने घर जायेगा ।
नाम सुनतेही क्रिस्पिन, उसका
रक्त जोश में आयेगा ॥
आज यहां से जीता बचकर
जो बुड्ढा हो जायेगा ।

क्रिस्पिन का दिन आतेही
वह मंगल मोद मनायेगा ॥
रतजग्गे की रात प्रेम से,
वह हित मित्र जिमायेगा ।
"क्रिस्पिन का दिन कल है" कह कर
घावचिह्न दिखलायेगा ॥
भूल जायंहैं बुड्ढे बहुधा
हुई जवानी में जो बात ।
भूल सकैंगे कभी न उस दिन
किये जो विक्रम वैरीघात ॥
राजा हेनरी, बेडफ़ैंर्ड,
ऐक्ज़ीटर टलबट वारिक बीर ।
सालिस्बरी, ग्लासटर आदिक
जितने योद्धा हैं रनधीर ॥
पानगोष्ठी में हम सब का
ले ले नाम सहित सम्मान ।
भर भर प्याले मधुर मद्य के
बारंबार करैंगे पान ॥
यही कथा इंगलैण्ड देश में
बच्चों को सिखलायेंगे,
प्रलय काल तक नाम हमारे
सज्जन नहीं भुलायेंगे ॥
हमी लोग थोड़े से जितने,
रन में रक्त गिरायेंगे ।
ऊंचे नीचे आज हमारे,
सब भाई बन जायेंगे ॥
इंग्लिस्तान देश में इस दम
पड़ा हुए जो सोता है ।

देखो कैसा जनम जनम की
अपनी कीरत खोता है ॥
बचा बीर जो उत्सव के दिन
कल के काम बखानैगा ।
सुन सुन कर उनकी बातों को
ग्लानि बड़ी सो मानैगा ॥
बोलैगा "मैं बड़ा अभागी"
होगा जब क्रिस्पिन त्यौहार ।
"हुआ न मैंभी फ़्रान्स देश में,
मेरे जीवन पर धिक्कार ॥"

दूसरे दिन क्रेसी का युद्ध मानो फिर से हुआ । फ़्रान्सीसी सवार अपने भड़कीले कवच पहने बड़े सजधज से छोटी अंगरेज़ी सेना पर टूट पड़े । पानी बरसा था, घोड़े कीचड़ में फंस गये और आगे न बढ़ सके । उनके ऊपर गज़ गज़ भर लम्बे तीरों की बौछार आ पड़ी और इसी घबड़ाहट में अंगरेज़ी सवारों ने भी धावा मार दिया और उनकी पूरी हार हो गयी । ग्यारह हज़ार फ़्रान्सीसी मारे गये । इनमें फ़्रान्स के बड़े बड़े लोग भी थे ।

७ ।—(Rouen) रूआन का घेरा—थोड़े दिनों के लिये तो ऐसा जान पड़ता था कि अब कुछ करना नहीं है । अंगरेज़ी सेना ने लड़ाई तो जीत ली परन्तु इतनी बड़ी नहीं थी कि फ़्रान्स को अपने बस में रखती । हेनरी इंग्लिस्तान को लौट आया । दो बरस बाद वह फिर फ़्रान्स में पहुंचा और कई नगर उसने फ़्रान्सवालों से छीन लिये । रूआन नगर का अवरोध बहुत दिनों तक रहा । नगर में खाने पीने की वस्तुओं की कमी थी इससे वहांवालों ने बारह हज़ार स्त्री पुरूष और बच्चों को जिन्हों ने भाग कर नगर में शरण ली थी, फाटक बाहर निकाल

दिया। हेनरी ने निठुराई से उनको निकलने न दिया। परिणाम यह हुआ कि हज़ारों आदमी भूखों मर गये। नगर के भीतर भी विपत्ति कम न रही। भूख से व्याकुल हो कर नगरनिवासियों ने आत्मसमर्पण कर दिया और हेनरी के अधिकार में वह नगर भी आ गया जिसके रहनेवाले उससे और उसके साथी अंगरेज़ों से घृणा करते थे।

८।—हेनरी के अन्तिम दिन—परन्तु हेनरी को इसकी पर्वाह न थी। वह बली वीर और निष्ठुर राजा अपनी विजययात्रा में आगे बढ़ता चला और उसने यह न सोंचा कि उसके पाप का परिणाम उसके लिये नहीं हो तो उसकी सन्तान के लिये बुरा होगा। देश जीतना सुगम था। विक्षिप्त फ्रान्सराज न युद्ध के काम का था और न राजशासन के। फ्रान्सीसी सरदार पहिले से भी बढ़ कर आपस में लड़ रहे थे। कुछ दिन पहिले सब से बड़े सरदार ड्यूक बरगण्डी ने, जो फ्रान्सराज का चचेरा भाई था, फ्रान्स राज के भाई ड्यूक आर्लियां (Duke of Orleans) का बध कर डाला। इस पर ड्यूक आर्लियां के मित्रों ने ड्यूक बरगण्डी को भी मार डाला। फ्रान्स का युवराज बड़े सन्तोष के साथ इस अनर्थ को देखता रहा, इसपर नया ड्यूक बरगण्डी अपने पिता के बध का बैर लेने के लिये हेनरी से आ मिला। इस से हेनरी का बल बढ़ गया और थोड़े ही दिन पीछे एक बड़े भारी सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर किये गये जिस के अनुसार चार्ल्स के मरने पर फ्रान्स का राज हेनरी और उसके उत्तराधिकारियों को मिलता और हेनरी ने फ्रान्स की राजकुमारी कथरिन के साथ अपना विवाह कर लिया। बहुत दिन न बीते थे कि हेनरी मर गया और चार्ल्स ने भी परलोकयात्रा की।

९।—फ्रान्स में अंगरेज़ी राज—हेनरी पञ्चम के मरने पर

उसकी विजयविभूति का वारिस एक बच्चा था जो हेनरी षष्ठ के नाम से इंग्लिस्तान का राजा हुआ। इसी बच्चे के सिर पर पेरिस में भी मुकुट रक्खा गया और फ्रान्स के अधिकांश ने उसकी आधीनता स्वीकार कर ली। न करते तो क्या करते। हेनरी षष्ठ का चचा ड्यूक बेडफ़ौर्ड बड़ा वीर और सुयोग्य सरदार था। उसने अपने भतीजे के नाम से उत्तर फ्रान्स का शासन किया। लुआर नदी के दक्षिण चार्ल्स षष्ठ का बेटा चार्ल्स सप्तम राजा माना गया। परन्तु अंगरेज़ नगर पर नगर जीतते जाते थे और बढ़ते बढ़ते आर्लियां को घेर कर बैठ गये। यह नगर ले लिया जाता तो चार्ल्स में फिर से रोक टोक करने की शक्ति न रह जाती। अंगरेज़ों को विश्वास था कि हमलोग जो चाहेंगे कर लेंगे, परन्तु बरजोरी सदा चल नहीं सकती। बरजोरी तो यह समझती है कि सेना आगे बढ़े और धरती लोहू और लोथों से बिछती रहै और जो लोग शान्ति के साथ अपना जीवन व्यतीत करना चाहते हैं उनका सर्वनाश करना परमार्थ है। परन्तु वह समय आ गया था कि ऐसा चाहनेवालों को बदला चुकाना पड़े। हेनरी पञ्चम के समय का इंग्लिस्तान एडवर्ड तृतीय के इंग्लिस्तान की भांति सुशासित था और यूरप की अपेक्षा अंगरेज़ सुखी थे परन्तु इंग्लिस्तान ने अपनी शक्ति का प्रयोग औरों के सताने में किया उनकी सहायता करने में नहीं। परिणाम यह हुआ कि फ्रान्सवाले अंगरेज़ों से बड़ा द्वेष मानने लगे जिससे आपस की फूट भुला कर वे भी मिल गये और अत्याचारी के विरुद्ध उठ खड़े होने के लिये उन्हें एक कहनेवाले की आवश्यकता थी।

१०—<u>जोन डार्क</u>—विचित्र यह है कि जहां से किसी को कभी भ्रम भी न होता वहीं से कहनेवाला निकल आया। लोरेन प्रान्त में डुइर गांव में एक किसान की लड़की जोन डार्क थी जिसको

भूल से अंगरेज़लोग आर्क की जोन कहते हैं। वह बड़ी भोली भाली निपट अनपढ़ थी परन्तु उसके हृदय में बड़ी दया और संवेदना थी। जब उसने अपने चारों ओर अंगरेज़ी सवारों को हरे भरे खेतों को चौपट करते देखा और दुख और संताप के समाचार सुने तो उसका कोमल स्त्री-हृदय फ्रान्स देश के लिये करुणा से पूर्ण हो गया। उसके अन्तःकरण में जो आशा की बातें सुनाई दीं उन्हें वह समझी कि कोई बाहर से कह रहा है। उसने यह समझा कि अपने देश का उद्धार करने के लिये उसे देवदूत प्रेरित कर रहे हैं और कहते हैं कि जबतक आर्लियां नगर अंगरेज़ों से बचाकर और चार्ल्स को राइंस (Rheims) नगर में सिंहासन पर बैठाकर उस पवित्र तैल से उसका अभिषेक न किया जाय जो स्वर्ग से आया हुआ माना जाता था तबतक तू विश्राम न कर। वह बोली कि मैं राजा के पास जाऊंगी चाहे मेरे पांव क्यों न कट जायं। मैं तो सुख से अपने घर रहती, अपनी मा के पास बैठकर चर्खा चलाती परन्तु मैं क्या करूं, मेरे बस की बात नहीं, ईश्वर की आज्ञा है, मुझे जाना पड़ेगा और करना पड़ेगा। उसके बाप और उसके मित्रों ने समझा बुझा कर उसे रोकना चाहा परन्तु उसने न माना। अन्त को उसे एक सरदार मिल गया और उसने राजा के पास ले जाने की प्रतिज्ञा की। जब वह राजा के सामने गई, उसने कहा, "मेरा नाम कुमारी जोन है। ईश्वर ने मुझे तुमसे यह कहने को भेजा है कि रांइस नगर में तुम्हारा राज्याभिषेक होगा और तुम उसी ईश्वर के प्रतिनिधि होगे जो वास्तव में फ्रान्स का राजा है"। चार्ल्स को लौकिक साधनों से जय पाने की कोई आशा न रही थी और

रांइस नगर में तुम्हारा राज्याभिषेक होगा और तुम उसी ईश्वर

ईश्वर की भेजी हुई है और जहां वे किसी दूसरे के साथ न जाते वहां उसके साथ चले और उसी की आज्ञा से अर्लियां नगर के बाहर अंगरेज़ी सेना को चीर कर अर्लियां में विजयपताका फहराते हुए पहुंच गये ।

११ ।—जोन का पकड़ जाना और उसका मरना—उस घड़ी से अंगरेज़ों को फ्रान्स जीतने की आशा न रही । फ्रान्सीसियों के हृदय में फिर उत्साह भर गया और कुमारी के साथ राईंस नगर पहुंचे । वहां उसके सामने चार्ल्स के सिर पर मुकुट रक्खा गया । कुमारी अपना काम कर चुकी थी और बड़े आनन्द से अपने घर लौट जाती परन्तु फ्रान्सीसी सिपाही समझे थे कि उसके न रहने से विजय नहीं हो सकती और उसे समझा बुझा कर रोक लिया । सेनापतियों के हृदय में नीच भाव उत्पन्न हुए । उन्हें यह अच्छा न लगा कि कुमारी की बड़ाई की जाय और उनकी नहीं और उन्हों ने एक लड़ाई में उसका साथ छोड़ दिया और अगरेज़ों ने उसे बन्दी कर लिया । अंगरेज़ों का बर्ताव बहुत बुरा रहा । फ्रान्सीसी उसे महात्मा समझते थे और अंगरेज़ उसे डाइन जानते थे और कहते थे कि इसने शैतान की सहायता से विजय पाई है । अंगरेज़ उसको रूआन ले गये और उसपर धर्मविरोधी होने का दोष लगाया क्योंकि उसने कहा था कि मुझको ईश्वर-वाणी ने प्रेरित किया है । एक फ्रान्सीसी बिशप को प्रधान बना कर एक अदालत बनी जिसने उसे दोषी ठहरा कर जला दिये जाने की आज्ञा दी । परन्तु कुमारी मरते मरते यह कहती रही कि जो वाणियां मैंने सुनी थीं वह ईश्वर की थीं । अग्नि की ज्वाला से घिर जाने पर भी उसके मुहं से ईसा का नाम निकला । एक अंगरेज़ी सिपाही यह चरित्र देख रहा था, डरके मारे कांपने लगा और बोला, "बड़ा अनर्थ हो गया । हमलोगों ने एक महात्मा को जला दिया" ।

१२।—फ्रान्स का अंगरेज़ों के हाथ से निकल जाना—अब अंगरेज़ों को फ्रान्स में रहने की कोई आशा न रही। पहिले तो इनके बैरी फ्रान्सीसी सरदार ही थे अब सारे फ्रान्सवासी इनके विरोधी हो गये। कुमारी एक किसान की बेटी थी और फ्रान्स-वासी उसका दिन रात ध्यान करते हुए सबके सब अंगरेज़ों के विरुद्ध उठ खड़े हुए। वह कहा करती थी कि मुझ को फ्रान्स देश पर करुणा आ रही है। हेनरी पञ्चम के मरने के ३१ बरस पीछे सारे फ्रान्स में एक नगर कैले (Calais) बचा था जो अंगरेज़ी राजा के आधीन था।

१३।—हेनरी षष्ठ की निर्बलता—अंगरेज़ी राजा हेनरी षष्ठ था; उसका स्वभाव सौम्य और धार्मिक था परन्तु उसमें न बल था न बुद्धि थी। वह इंग्लिस्तान ही को न सम्हाल सका, फ्रान्स को



हेनरी षष्ठ के समय के सरदार, उच्चकुल की स्त्री और लड़का।

कैसे बचाता। उसकी प्रजा भी कुछ ऐसे ही थी जैसे अन्याय करनेवाले जो सब का दोष बताते हैं अपना नहीं। राजा ने एक फ्रान्सीसी कुमारी मारगरेट आंजू के साथ अपना विवाह किया था और फ्रान्स के साथ सन्धि कर ली थी। इस से अंगरेज़ उस से असन्तुष्ट थे परन्तु उनके असन्तोष का एक बहुत बड़ा कारण यह था कि हेनरी शासन करना न जानता था और उसने राज-काज ऐसों के हाथ में दे दिया था जो अपने अधिकार से धन कमाना चाहते थे। इनमें एक ड्यूक सफ़क था जिससे लोगों को विशेष द्वेष था। उसके ऊपर विशेष दोष लगाये गये और उसे देशनिकाला दिया गया। जब वह इंग्लिस्तान के बाहर जाने लगा तो उसे लोगों ने जहाज़ पर से खींच कर मार डाला। रिचर्ड द्वितीय के समय की भांति इन दिनों भी केण्ट के रहनेवाले सबसे पहिले बिगड़ गये और जैक केड को अपना मुखिया बना कर लंदन की ओर बढ़े। सौभाग्य वश वाट टैलर के विद्रोह के पीछे अब किसानलोग सर्फ़ न रह गये थे। वे स्वतन्त्र थे और उनको बन्धन की कोई शिकायत न थी। केड लंदन पहुंच गया परन्तु उसके साथी लूटपाट करने लगे और वह भी मार डाला गया।

१४।—<u>गुलाबों की लड़ाई</u>—जो लोग अच्छे शासन के अभिलाषी थे उन्हों ने अब राजा के सगोत्र ड्यूक यार्क का मुंह ताका। यह सरदार एडवर्ड तृतीय के बेटे लिवोनल की सन्तति में था जो राजा के परदादा जान गाण्ट से भी बड़ा था। प्रजा की यह इच्छा हुई कि राजा के अनुग्रहपात्रों के बदले यही शासन करैं। परन्तु कुछ होने न पाया था कि राजा पागल हो गया और पार्लामेण्ट के सरदारों ने ड्यूक यार्क को संरक्षक बना दिया। हेनरी जन्म भर पागल रहता तो ड्यूक यार्क उसके नाम से निरन्तर शासन करता, परन्तु हेनरी कभी कभी सचेत

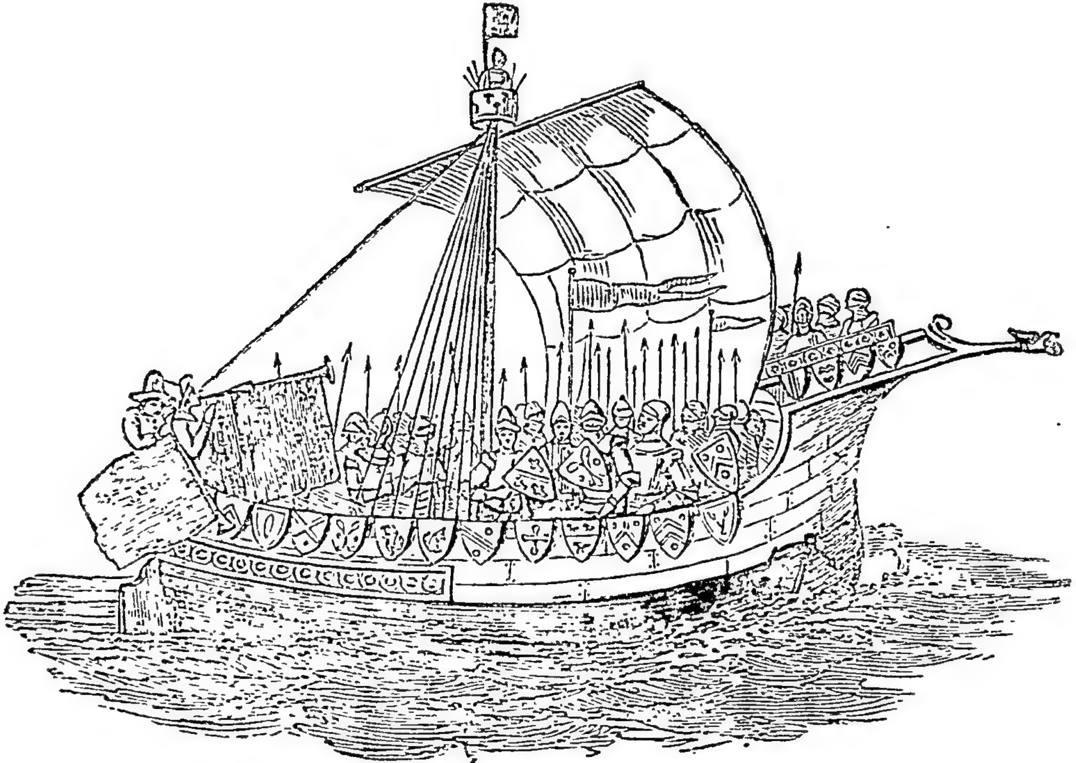
भी हो जाता था तब भी उसकी बुद्धि वैसी ही रहती थी। पहिले जब वह सचेत हुआ तो उसने ड्यूक यार्क को निकलवा दिया। इसपर लड़ाई छिड़ गई जो गुलाबों की लड़ाई के नाम से प्रसिद्ध है क्योंकि लैङ्कैस्टर कुल का राज-चिह्न लाल गुलाब था और यार्क कुल का सफ़ेद। कई लड़ाइयां हुईं इनमें कभी एक कुल की जीत होती कभी दूसरे की। वेकफ़ील्ड की लड़ाई में ड्यूक यार्क की हार हो गई और वह मारा गया। हेनरी की रानी ने उसका सिर कटवा कर और उसपर काग़ज़ का मुकुट रखवा कर यार्क के फाटक पर रखवा दिया। परन्तु हेनरी को बदला लेनेवाला मिल गया। यार्क के बेटे एडवर्ड ने राजपक्षवालों को टउटन के मैदान में परास्त कर दिया और एडवर्ड चतुर्थ के नाम से सिंहासन पर बैठा।

## ॥ अध्याय १५ ॥

### * यार्क-कुल *

एडवर्ड चतुर्थ १४६१; एडवर्ड पञ्चम १४८३; रिचर्ड तृतीय १४८३।

१।—एडवर्ड चतुर्थ और सरदार—एडवर्ड चतुर्थ ने राज के दावा करने में अपना हक़ हेनरी षष्ठ के हक़ से बढ़कर बतलाया। हेनरी षष्ठ का परदादा एडवर्ड तृतीय का छोटा लड़का था और एडवर्ड चतुर्थ उससे बड़े लड़के की सन्तान में था। परन्तु वंश-क्रम के अतिरिक्त उसके पक्ष में और बातें भी थीं। उसमें पहिला गुण तो यह था कि लैङ्कैस्टर-कुल में उसके बराबर कोई वीर योद्धा न था। दूसरी बात यह थी कि बहुत से लोगों को इसकी पर्वाह न थी कि किसी विशेष कुल का राजा हो। वह



पन्द्रहवीं शताब्दी का जहाज़।

यही चाहते थे कि जो राज सम्हाल सकै उसीको राजा होना चाहिये। हम लोगों को देश में शान्ति देखने का ऐसा अभ्यास पड़ गया है कि हम गुलाबों की लड़ाई के दिनों में शान्ति रखने की कठिनाई को समझ नहीं सकते। आजकल ऐसे लोग बहुत कम हैं जो अपना मनवाञ्छित तुरन्त न पाया तो गड़बड़ मचा देते हैं; इस कारण थोड़े से पुलिस के सिपाही हज़ारों की भीड़ को शान्त रख सकते हैं। आजकल सरकारी उर्दी न पहिने हो तो सिपाही के हथियार नहीं बांध सकता और न उसके ऊपर जो अफ़सर हैं उनकी आज्ञा पर चलना पड़ता है। हेनरी षष्ठ के समय में बड़े बड़े सरदारों के साथ बहुत से हथियारबन्द सिपाही रहते थे और अपने मालिक की आज्ञा से सब कुछ करने को तैयार थे। लड़ाई के समय उनको उनके स्वामी उर्दी देते थे जैसे आजकल सिपाहियों को मिलती है। इन पर उनके

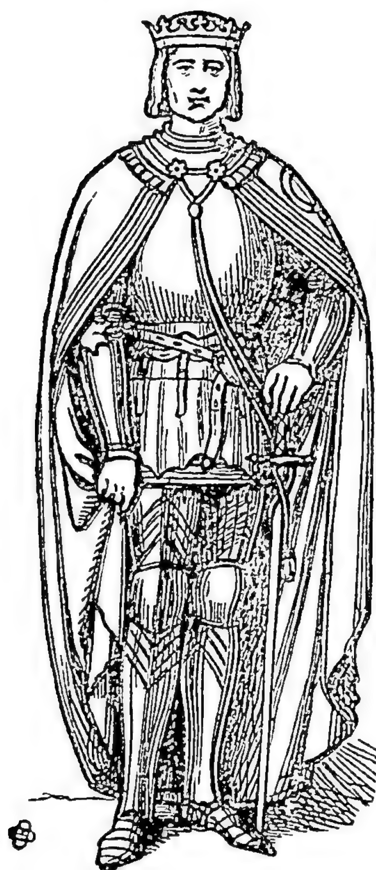
स्वामी का विशेष चिह्न रहता था। ऐसे कपड़े आजकल भी अर्दली और कोचवान पहनते हैं और किसी के नहीं होते। परन्तु उन दिनों भालू और डंडे का चिह्न बने हुए दो तीन हज़ार कोट देख पड़ते थे तो लोग समझ जाते थे कि बड़ा अर्ल वरिक, जिसने सिंहासन पाने में एडवर्ड चतुर्थ की इतनी सहायता की थी कि उसको राजा बनानेवाले की पदवी मिली थी, किसी से लड़ने जा रहा है। जब वहलोग देखते थे कि कुछ सिपाहियों के कोटों पर एक विशेष प्रकार का फंदा बना हुआ है तो वह जान लेते थे कि अर्ल बकिंघम किसी पर चढ़ाई करेगा। प्रत्येक बड़े सरदार के पास एक छोटी सी सेना थी जिसे सदा वह काम में लाने के लिये सुसज्जित रखता था। शान्ति चाहनेवाले लोग इस कारण एक राजा की आकांक्षा करते थे जो इन छोटी सेनायों को दबा रक्खे और उन्हों ने यह बिचारा कि एडवर्ड चतुर्थ जो टाउटन की लड़ाई में विजयी हुआ है, वही उनको दमन कर सकेगा और यह काम हेनरी षष्ठ से न होगा जो बहुधा विक्षिप्त रहता था।

२।—सरदार और मध्यम श्रेणी के लोग—बड़े बड़े ज़िमीदार और सरदार अपनी अपनी सेनायें इधर उधर लिये फिरते और आपस में लड़ते तब भी बुरा था परन्तु निरपराध जनता को दुःख देना सब से बुरा हुआ। जिससे कोई बड़ा ज़िमीदार रुष्ट हो जाता उसे यह निश्चय था कि उस पर घातक छोड़े जायंगे जो उसे पीटेंगे या घायल कर देंगे और जो कहीं जीता बच गया तो अपने को धन्य समझता। बड़ा आदमी यदि किसी दूसरे का घर लेना चाहता तो कुछ सेवक भेज देता। एक उदाहरण यह है—नारफ़ाक ज़िले में जान केस्टन नाम का एक मनुष्य रहता था। एक दिन वह लंदन नगर में था तो उसकी स्त्रीने खिड़की से झांक कर देखा कि एक हज़ार सिपाही कवच पहने बन्दूक़ और धनुष हाथों में लिये खड़े हैं। यह लोग सीढ़ियां और

लम्बी लम्बी बल्लियां लाये जिनके एक सिरे पर हंसिया के आकार का लोहा लगा था। इनसे सिपाही उस घर को गिराना चाहते थे। उनके पास बड़े बड़े तसलों में अंगारे भी थे। मकान न गिरता तो उसे जला देते। पहिले जिस कोठे में स्त्री थी, उसके खम्मे गिराने लगे। उसके बाद घुस कर उस स्त्री को बाहर खींच लाये और सारे दरवाज़े तोड़ कर उस में जो कुछ था उठा ले गये। यहलोग साधारण चोर डाकू न थे; इनको ज़िमीदार ने भेजा था जो अन्याय से उस मकान को लेना चाहता था। कई बरस पीछे इसी कैस्टन के लड़के के साथ भी ऐसाही बर्ताव किया गया। वह कुछ काम से बाहर गया था और उसकी स्त्री नारविच के पास अपने घर में थी। इस बार एक ड्यूक ने मकान पर धावा मारा और अपनी छोटी सेना को जो कुछ वह चाहता था, उसे करने के लिये, भेजा। पहिले तो स्त्री ने कुछ रोक टोक की परन्तु अन्त को ड्यूक के सिपाही घर में घुस गये। इन लोगों ने घर को नष्ट कर दिया और उसमें का लोहा तक उठा ले गये। यह मकान आज तक वैसाही उजड़ा पड़ा है और गुलाबों की लड़ाई के समय में बड़े बड़े सरदार जो उपद्रव करते थे उसका स्मारक-चिह्न है।

३।—<u>न्याय पाने में कठिनाई</u>—विचित्रता यह है कि अदालतें उन दिनों भी वैसेही बैठा करती थी जैसे अब भी बैठती हैं; तौभी ऐसे काम होते थे। जजलोग दौरे की कचहरी करने जाते और पंचायत (जूरी) अपना निर्णय वैसे ही प्रकट करती थी जैसे आज कल करती हैं। हमलोग इसे बहुत अच्छा समझते हैं। जबतक जूरी के बारहों सदस्य एक मत होकर यह न कहैं कि जिस पर कोई अपराध लगाया गया है उसने अपराध किया है, तबतक उसकी सज़ा नहीं की जाती। हम जानते हैं कि बारह आदमी भी कभी कभी ठीक निर्णय नहीं करते परन्तु वे जोकुछ कहते हैं

उसे शुद्ध अन्तःकरण से न्याय समझते हैं। परन्तु गुलाबों की लड़ाई के दिनों में यह लोग शुद्ध अन्तःकरण से सच बोलने का प्रयत्न नहीं करते थे। जूरी में पञ्च वही लोग चुने जाते थे जो पास पड़ोस के बड़े ज़िमीदारों के मित्र या आश्रित रहते थे। बड़े आदमी के किसी मित्र पर मुक़द्दमा चलता तो वह दोषी हो या न हो, उसे निर्दोष कहते। बड़े ज़िमीदार का बैरी उनके सामने आता तो, अपराधी हो या नहो उसे अपराधी कहना पड़ता था। जूरी के पञ्च सच बोलना भी चाहते तो उनको डर लगा रहता था। जो पञ्च किसी बड़े आदमी के विरुद्ध कहता वह घर जाते समय रास्ते में पीटा जाता था।



पन्दरहवीं शताब्दी का सरदार कवच पहिने और गार्टर पद का चोग़ा पहिने।

४।—राजा की बढ़ती शक्ति—इससे एडवर्ड का लोक-प्रिय

होना समझ में आ सकता है। छोटे छोटे ज़िमींदार, किसान, नगरों के दूकानदार सब एक ऐसा राजा चाहते थे जो देश में शान्ति रक्खे। उन्हें इस बात की पर्वाह न थी कि पार्लमेण्ट की बैठक बार बार हो क्योंकि जो सरदार उन्हें उनके घरों में सताते थे वेही पार्लमेण्ट में जो चाहते थे कर सकते थे। इस कारण एडवर्ड चतुर्थ के समय से राजाओं का जितना बल बढ़ा उतना पहिले कभी बहुत दिनों से न था। सौ बरस पहिले एक ग्रंथकार ने एक कथा लिखी है जिससे उन दिनों की जनता के विचार समझ में आ जायंगे। कथा यह है— एक दिन चूहों ने सभा की जिसमें विचारणीय यह था कि कुशल से रहने के लिये बिल्ली को मारने का उपाय सोचा जाय। एक चूहा बोला कि बिल्ली मारने की इच्छा करना बड़ी मूर्खता है। इसमें सन्देह नहीं कि बिल्ली बहुत से चूहे खा जाती है परन्तु घूसों * को भी मारती है। घूस बढ़ जायँगी तो बिल्ली से अधिक चूहे मारेंगी। राजा एडवर्ड चतुर्थ बिल्ली के समान था, सरदार घूस थे और जनता चूहों के समान थी। जनता ने इस विचार से राजा का साथ दिया कि वह सरदारों को दबाये रक्खेगा।

५।—एडवर्ड का सिंहासन से उतार दिया जाना और फिर राजा होना—दस बरस बाद एडवर्ड यह भूल गया कि अपना बल स्थिर रखने के लिये सदा सचेत रहने की आवश्यकता है और उसने अर्ल वारिक को रुष्ट कर दिया जिसकी सहायता से उसे राज मिला था। वारिक सरदारों में सबसे प्रबल था। केनिलवर्थ में उसके बावर्चीख़ाने में सदा एक कड़ाह चढ़ा रहता था जिसमें मांस पका करता था; जिसका जी चाहे अपना कांटा कोंच कर उसमें से मांस निकाल कर ले जाय। इस उपाय से

* Rat इंग्लिस्तान में एक प्रकार का बड़ा चूहा खेतों में रहता है जो घरेलू चूहों को मार डालता है।

जो लोग वारिक का खाना खाते थे उसके लिये लड़ने मरने को तैयार रहते थे। वारिक ने हेनरी षष्ठ को बन्दीघर से निकाल कर राजा बनाया। एडवर्ड देश छोड़ कर भाग गया। रानी मार्गरेट भी अपने विक्षिप्त पति का साथ देने के लिये आगई और एडवर्ड का भाई ड्यूक क्लारेन्स भी वारिक से मिल गया और उसकी बेटी ब्याह ली। परन्तु एडवर्ड चतुर्थ ऐसा न था जो निराश हो जाता। वह एक सेना लेकर फिर इंग्लिस्तान में आया और बारनेट के मैदान में अपने बैरी को परास्त करके फिर सिंहासन पर बैठ गया। क्लारेन्स ने नीचपने से अपना पक्ष छोड़ दिया और भाई से मिल गया। वारिक मारा गया और एडवर्ड ने पश्चिम चल कर ट्यूक्सबरी के मैदान में मार्गरेट को भी परास्त किया। लड़ाई समाप्त होने पर हेनरी और मार्गरेट का लड़का एडवर्ड बड़ी निठुराई से मार डाला गया। इसके थोड़े ही दिन पीछे हेनरी भी टावर में मर गया और इसमें सन्देह नहीं कि वह भी मार ही डाला गया। राजके इस झगड़े में न न्याय का विचार रहा न दया का। लोग कहते थे कि यह सब काम एडवर्ड के छोटे भाई रिचर्ड ने किये और उनका कहना कुछ कुछ ठीक जंचता है।

६।—स्वेच्छादान और छापेखाने—इसके बाद एडवर्ड जबतक जिया उसके शासन में शान्ति रही। कम से कम लड़ाई नहीं हुई। उसने ऐसे काम करने का साहस किया जो उसके पहिले किसी राजा ने नहीं किया था। जब उसे धन की आवश्यकता होती तो पार्लामेण्ट से मांगने के बदले वह धनीलोगों से लिया करता था और उसे वह स्वेच्छादान कहता था क्योंकि यह कहा जाता था कि धनी यह दान बिना दबाव के अपनी इच्छा से दे रहे हैं। वास्तव में राजा का डर इतना था कि न देते तो क्या करते। एक दिन उसने एक मालदार बुढ़िया से दस पौंड

मांगे। बुढ़िया बोली, "आप बड़े सुन्दर हैं आप को वीस पौंड मिलना चाहिये"। उसने तब बुढ़िया का मुंह चूम लिया और वह बोली कि "मैं आपको चालीस पौंड दूंगी"। परन्तु ऐसे प्रसन्न मन से वहुत कम धन दिया गया। लोग बहुत कुछ घुन्नाते रहे परन्तु राजा की आज्ञा के प्रतिकूल किसी ने न किया। लोग समझते थे कि कहीं पुरानी विपत्ति फिर न झेलनी पड़े। इस राज में एक नयी बात हुई जो गुलाबों की लड़ाई की सारी जीत और हार से अधिक उपयोगी थी। यूरप महाद्वीप में छापे की कल का आविष्कार हो चुका था और कैक्सटन उसको इंग्लिस्तान में लाया। उसने वेस्टमिन्स्टर में पहिला छापाखाना खड़ा किया। उसे देख कर राजा और दरबारियों ने बड़ा आश्चर्य किया और उसकी बड़ी प्रशंसा की। लोग उसको ऐसा देखते थे जैसे कोई सुन्दर खिलौने को देखता है। उस समय उनके ध्यान में भी यह बात न आई कि हमलोग एक ऐसी शक्ति की उत्पत्ति देख रहे हैं जो राजा और पार्लमेण्ट दोनों से बढ़ कर हो जायगी।

७।—<u>एडवर्ड चतुर्थ के शासन-काल का अन्त</u>—विजय के समय में भी एडवर्ड पर कुछ न कुछ संकट पड़ते रहे। वह युद्ध में जय पाकर मुकुट का अधिकारी हुआ था। इस से लोग समझने लगे कि लड़ाई में जीत कर जो चाहे सो राजा बन सकता है। उसका भाई क्लारेन्स जो पहिले उसके विरुद्ध वारिक के साथ रहा और फिर वारिक को छोड़ कर एडवर्ड से मिल गया था, यह समझने लगा या उस पर इस बात का सन्देह हुआ कि हम भी राजा हो सकते हैं। वह टावर में क़ैद कर लिया गया और मार डाला गया। यह कोई नहीं कह सकता कि वह कैसे मरा परन्तु पीछे से यह बात प्रसिद्ध हुई कि शराब के बड़े पीपे में डूब मरा। एडवर्ड भी अपने को संसार में

अकेला और निस्सहाय समझने लगा। वह यह जानता था कि बड़े बड़े सरदार उसके विरोधी हैं और अब उसका भाई भी विरोधी हो गया। वह भांति भांति के विनोद कर चुका था और उसने बड़े सुख चैन से अपना जीवन बिताया था। ऐसा जीवन पहिले सुखद जान पड़ता है, पीछे से कड़ुआ हो जाता है। शरीर से शिथिल और चित्त से व्याकुल हो कर वह उदास रहता और इसी दशा में बुढ्ढा न होने पाया था कि उसकी मृत्यु हो गई।

८।—एडवर्ड पञ्चम और ड्यूक ग्लास्टर—एडवर्ड चतुर्थ के मरने पर उसके दो बेटे एडवर्ड और रिचर्ड और कई बेटियां थीं जिनमें एलिज़ाबेथ सब से बड़ी थी। उसकी विधवा स्त्री जिस से कि यह सारे बच्चे थे, एलिज़ाबेथ उड-विल (Woodville) बड़े कुल की न थी। उसके पतिने अपनी स्त्री के भाई बन्धुओं के साथ बहुत कुछ अनुग्रह किया था और इस कारण बड़े सरदारों को ऐसे लोगों का राजा का अनुग्रह-पात्र बनना जिनको वहलोग नीच समझते थे, अच्छा न लगा। एडवर्ड के मरने पर बहुत से ऐसे लोग निकल आये जो न चाहते थे कि रानी और उसके भाईबन्धुओं का कोई अधिकार रहे। इन सरदारों का मुखिया राजा का भाई रिचर्ड ड्यूक ग्लास्टर था। उसका एक कंधा दूसरे से ऊंचा था और बाईं बांह सूख कर सिकुड़ गई थी फिर भी वह अपने भाई की भांति सुन्दर था। वह वीर योद्धा और प्रवीण सेना-नायक था और जिन लोगों के बीच में रहता था वे जबतक कि उसकी हानि नहीं करना चाहते थे, उसे बहुत चाहते थे परन्तु उसकी इच्छा के प्रतिकूल करनेवाले या उसके रोकनेवाले के लिये उसके हृदय में करुणा न थी। उन दिनों निष्ठुरता और बध करने की प्रवृत्ति इतनी बढ़ गई थी कि अपने विरोधियों को मारने में रिचर्ड को इतना भी संकोच न हुआ जितना मक्खियों को मारने में होता है। हमको

तो यह सन्देह होता है कि हेनरी षष्ठ और उसका बेटा एडवर्ड उसी के हाथ से मारे गये और उसीने अपने भाई क्लारेन्स को भी मरवा डाला। जब उसने सुना कि एडवर्ड चतुर्थ मर गया तो पहिली बात जो उसके मन में आई वह यह थी कि राजकुमार अपनी माता और उसके भाईबन्धुओं से अलग कर लिये जायँ। उसने अपने मित्र ड्यूक बकिंघम का साथ दिया और एडवर्ड पञ्चम से लंदन की राह में मिला। उस समय एडवर्ड पञ्चम के साथ उसका मामा लार्ड रिवर्स और उसका सौतेला भाई था। बालक राजा को ग्लास्टर ने अपने साथ ले लिया और उसके दोनों साथियों को बन्दीघर में डाल दिया। उसके थोड़ेही दिन बाद बिना अदालती कार्रवाई के रिचर्ड ने दोनों का बध कर डाला। लंदन पहुंच कर ग्लास्टर संरक्षक बना दिया गया और उसको यह अधिकार मिला कि जबतक उसका भतीजा सयाना न होजाय, वह राज-काज देखै।

९।—ड्यूक ग्लास्टर संरक्षक—रानी बहुत डर गई। उसके साथ उसका दूसरा लड़का रिचर्ड ड्यूक यार्क था और उसको ले कर वेस्टमिन्स्टर के गिरजा घर में भाग गई। इस स्थान में बड़े अपराधी भी शरण ले सकते थे और बिना उनकी इच्छा के कोई उन्हें बाहर न ला सकता था। रिचर्ड का सबसे बड़ा सहायक लार्ड हेस्टिंग्स था; परन्तु उसका भी रिचर्ड की ओर से जी हट गया और रिचर्ड ने उसको भी निपटा देना निश्चय किया। एक दिन संरक्षक सभा में गया और उसने इलाई के बिशप से कहा, "महाशय आपके होलबौर्न के बाग़ में बहुत अच्छे स्ट्राबेरी लगे हैं। हम चाहते हैं कि आप उमदा हलवा बना कर हमलोगों को खिलावें"। पहिले तो ऐसा जान पड़ा कि वह हंसी कर रहा है। इसके पीछे वह बाहर चला गया और फिर जो लौटा तो उसके चेहरे पर बड़ा क्रोध झलक रहा था। उसने पूछा कि जो

लोग हमारे बध का प्रयत्न कर रहे हैं उनको क्या दण्ड मिलना चाहिये। हेस्टिंग्स ने उत्तर दिया कि उनका बध उचित है। इस पर रिचर्ड ने अपनी सूखी बांह खोल दी और कहा "मेरी भावज बड़ी डाइन है। उसके साथी भी वैसे ही हैं। देखो उनलोगों ने अपने जादू टोने से मेरा शरीर सुखा डाला है"। सभ्य लोग जानते थे कि उसकी बांह सदा ऐसे ही थी और उनको बड़ा अचम्भा हुआ परन्तु कोई कुछ बोल न सका। हेस्टिंग्स ने कहा उनलोगों ने अगर ऐसा बुरा काम किया है तो उनको कड़ा दण्ड मिलना चाहिये। रिचर्ड बनावटी क्रोध से चिल्ला उठा, "क्यों जी तुम हमारी बातों में भी अगर मगर लगाते हो। हम तुमसे कह चुके कि उन्होंने किया, तुम विद्रोही हो, हम इसको तुम्हारे शरीर पर सिद्ध कर देंगे"। उसने मेज़ पर अपना हाथ पटक दिया और रिचर्ड के नौकर जो बाहर खड़े थे भीतर घुस आये। रिचर्ड ने क़सम खाई कि जबतक हेस्टिंग्स न मरेगा हम खाना न खायेंगे। इस पर लोग हेस्टिंग्स को बाहर खींच ले गये और एक लकड़ी के कुंदे पर गिरा कर उसका सिर काट लिया।

१०।—रिचर्ड ग्लास्टर का राजा रिचर्ड तृतीय बन जाना—रिचर्ड ने तब रानी से उसका दूसरा लड़का भी ले लिया और वह अपने भाई राजा एडवर्ड के साथ टावर में बन्द किया गया। उन दिनों टावर क़ैदख़ाना न था जैसा कि आजकल हो गया है। टावर एक राज-प्रासाद था जिसमें राजा लोग उसके कोट के भीतर अपने बैरियों से सुरक्षित रहा करते थे। जब उन्हें कोई डर न रहता तब वे वेस्टमिन्स्टर में एक महल में रहते थे। इस महल की जगह अब पार्लामेण्ट के सभामंदिर बने हैं। रिचर्ड ने तब यह बात फैलाई कि लड़कों के बाप ने उनकी मां के साथ ब्याह होने से पहिले एक दूसरी स्त्री के साथ ब्याह करने की प्रतिज्ञा की थी। उन दिनों एक स्त्री के साथ ब्याह की प्रतिज्ञा

करके जो दूसरी को ब्याह लेता उसका दूसरी के साथ का ब्याह अनुचित माना जाता था और लोग कहते थे कि विधिपूर्वक यह ब्याह हुआ ही नहीं। रिचर्ड ने कहा कि एडवर्ड की रानी के साथ उचित विवाह हुआ ही नहीं और उसके बेटे राज के उत्तराधिकारी नहीं हो सकते। उसने पार्लीमेण्ट की एक सभा की जिसमें राजकुमार अनधिकारी ठहराये गये और उनका चचा राजा रिचर्ड तृतीय मान लिया गया।

११।—राजकुमारों का वध—रिचर्ड को जनता ने राजा बनाने की अनुमति उन्हीं कारणों से दी जिनसे एडवर्ड चतुर्थ को दी थी। अंगरेज़ जनता अधिकांश एक ऐसा शासक चाहती थी जो देश में शान्ति रक्खे और वह समझी थी कि जैसे विक्षिप्त हेनरी राज सम्भाल नहीं सकता वैसे लड़का भी राज काज न कर सकेगा। परन्तु यह भी असम्भव था कि लोग ऐसे निठुर दुष्ट का साथ देते। थोड़े ही दिन बीते थे कि रिचर्ड ने ऐसा निष्ठुर काम किया जैसा उसने पहिले कभी न किया था। टावर में बन्द दोनों लड़के लड़के ही थे और शासन करना न जानते थे, इस से उनका कोई डर न था परन्तु रिचर्ड ने सोचा कि जब दोनों सयाने हो जायंगे तो जिस किसी को रिचर्ड से कोई विरोध होगा वह इनसे आ मिलेगा और इनका पक्ष लेगा। यह सोच कर रिचर्ड ने निश्चय किया कि दोनों सयाने ही न होने पायें और लड़कों को मारने का काम उसने सर जान टिरेल को सौंपा। टिरेल ने इस पाप के करने के लिये दो घातक भेजे। दोनों उस कोठे में गये जहां लड़के सो रहे थे और उनका गला घोट कर मार डाला। बहुत दिनों तक किसी ने न जाना कि राजकुमारों की लोथ क्या हुई। दो सौ बरस पीछे एक सीढ़ी के नीचे दो ठटरियां मिलीं जिनकी लम्बाई चौड़ाई से यह अनुमान किया गया कि उन्हीं की उमर के लड़कों की होंगी।

१२।—रिचर्ड की हार और उसकी मौत—रिचर्ड को तुरन्त अपनी निठुराई का फल मिल गया और उसे विदित हो गया कि इस से उसको जो लाभ हुआ उससे कहीं बढ़ कर हानि हो गई। राजा के लिये कुछ सरदारों का बैरी बन जाना तो कोई बात न थी और जब लोगों का चित्त उस से फिर गया तो उसे परास्त करने की आशा भी बढ़ गई। ड्यूक बकिंघम ने राज पाने में उसकी सहायता की थी परन्तु रिचर्ड ने कुछ इनाम देने की प्रतिज्ञा की थी उसको न दिया और वह रुष्ट था। तौभी राजा में इतनी शक्ति थी कि बकिंघम दबा लिया गया और सालिस्बरी में उसको फांसी दी गई। परन्तु उससे भी बढ़ कर बली बैरी उठ खड़ा हुआ। यह बैरी हेनरी ट्यूडर अर्ल रिचमण्ड था। उसकी मां जान गाण्ट की सन्तान में से थी और लैङ्कैस्टर कुल का और कोई भी राज का हक़दार न हो सकता था। उसने समझा कि उसका कोई हक़ हो या न हो, रिचर्ड के बैरी उसका साथ देहींगे। वह उन दिनों फ्रान्स के ब्रिटेनी प्रान्त में रहता था। वहां से चल खड़ा हुआ और थोड़ी सी सेना लेकर वेल्स में उतरा। उसका बाप वेल्स का रहनेवाला था इससे वेल्स-वासियों ने उसका स्वागत किया। एक वेल्स-वासी ने रिचर्ड से क़सम खाई थी कि हेनरी देश में आयेगा तो उसकी देह ही पर उतरेगा। उसका अभिप्राय यही समझा गया कि वह लड़ कर मर जायगा और हेनरी को देश में आने न देगा परन्तु जब हेनरी उसके सामने आया तो वह वेल्स-वंशवाले को रोक न सका और अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिये वह समुद्र तट पर लेट गया और हेनरी उसकी देह पर से चला गया। हेनरी को कुछ काल तक और कोई बाधा न मिली। उसके पास बड़ी सेना न थी परन्तु रिचर्ड की भी वही गति थी। लीस्टर ज़िले के बोसवर्थ स्थान में दोनों की मुठभेर हुई।

रिचर्ड को जय पाने की कोई सम्भावना न थी क्योंकि लड़ाई होते ही लार्ड स्टैनली और उसके सिपाही उसका पक्ष छोड़कर हेनरी से मिल गये और अर्ल नार्थम्बरलैण्ड जो रिचर्ड की ओर से लड़ने आया था खड़ा खड़ा तमाशा देखता रहा। रिचर्ड ने जब जाना कि सब बिगड़ गया तो वह वीरता के साथ अपने बैरियों में पिल पड़ा और लड़ते लड़ते मारा गया। लार्ड स्टैनली के भाई सर विलियम स्टैनली ने उसका टूटाफूटा मुकुट उठाकर हेनरी के सिर पर रख दिया।

## ॥ अध्याय १६ ॥

### * पहिला ट्यूडर राजा *

### ॥ हेनरी सप्तम, १४८५ ॥

१।—हेनरी सप्तम के राज का आरम्भ—नया राजा ऐसा न था जिससे लोग अधिक प्रीति करते। वह मिलनसार न था और लोगों के विनोद में मिलना जुलना उसको आता ही न था परन्तु उसे शासन करना आता था और किसी का बध करके उसने अपनी प्रजा का दिल नहीं दुखाया, विद्रोह जहां कहीं उठ खड़ा होता, उसको दबाने में सदा तत्पर रहता और बहुत सा धन और बहुतेरी तोपें सदा प्रस्तुत रखने में व्यग्र रहता था। कुछ दिनों से लड़ाइयों में तोपों का व्यवहार बढ़ता जाता था। लोग कहते थे कि सबसे पहिले क्रेसी के युद्ध में तोपों का प्रयोग किया गया था। यह बात निश्चित नहीं है, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि इसी समय में सबसे पहिले तोपें काम में लायी गई थीं। हेनरी सप्तम के समय में जो राजा युद्ध करता उसके पास बहुत सी तोपें रहती थीं। इस रीति से सारे यूरप में सामन्तों की

शक्ति बहुत घट गई थी। जब लड़ने की सबसे अच्छी रीति घोड़ों पर सवार होकर थी तो वही लोग अच्छे योद्धा हो सकते थे जिनके पास अच्छे घोड़े और महंगे कवच मोल लेने को धन था। हम यह देख चुके कि क्रेसी और आज़िनकूर के खेत में अंगरेज़ों ने यह सिद्ध कर दिया था कि तीर हवा में घोड़े से तेज़ जा सकता है और जबतक घोड़े का सवार तीर मारनेवाले के पास पहुंच सके, उसको मार सकता है। जिस किसी को तीर चलाने के अभ्यास करने का समय होता, वही अच्छा धनुष-धारी हो सकता था और जैसे राजा को धनुषधारी मिल सकते वैसेही सामान्तों को भी उनके पाने में सुगमता थी। परन्तु तोपें महंगी पड़ती थीं और उनका बनवाना सुगम न था। और जब राजा अपने राज का स्वामी हो गया तो उसको इस बात की चिन्ता रहती थी कि और कोई तोप न रख सके। इस रीति से पहिले की अपेक्षा विद्रोह करना कठिन हो गया।

२।—लैम्बर्ट सिमनल और पर्किन वारबेक—एक प्रकार से हेनरी ने ऐसा प्रबन्ध किया कि यार्क-कुल के हित मित्र उससे विद्रोह न करें। राजा होने के बाद उसने एडवर्ड चतुर्थ की बेटी एलिज़बेथ के साथ विवाह कर लिया; इससे दोनों की सन्तान दोनों कुलों की हो गई। दोनों कुलों के संयोग का चिह्न स्वरूप ट्यूडर राजा ने दोहरा गुलाब अपना राज-लक्षण बनाया। यह गुलाब एक ओर लाल और दूसरी ओर सफ़ेद था। परन्तु बिना युद्ध के सिंहासन पर स्थिर रहने की उसको आशा न थी। उसके शासनकाल में उसको सिंहासन से उतारने के दो प्रयत्न किये गये। एक लैम्बर्ट सिमनल ने किया और दूसरा पर्किन वारबेक ने। सिमनल अर्ल वारिक का बेटा बना जो ड्यूक क्लारेन्स का पुत्र था और ड्यूक क्लारेन्स टावर में मार डाला गया था। वारबेक ने कहा कि हम रिचर्ड ड्यूक यार्क हैं और उन

दोनों राजकुमारों में छोटे हैं जिनका कि बध किया जाना प्रसिद्ध है। परन्तु दोनों परास्त हो गये। सिमूनल बालक था। उसे हेनरी ने अपने बावर्चीखाने में वर्तन मांजने के लिये रक्खा और वारबेक सयाना था, उसने बहुतों को धोखा दिया था इससे वह विशेष कर के अत्याचारी समझा गया और उसका बध किया गया।

३।—हेनरी का सामन्तों को आज्ञाकारी बनाना—हेनरी ने सामन्तों को तोपें रखने न दिया और यह भी आज्ञा दे दी कि अपने नौकरों को उर्दी भी न पहनायें। इस प्रथा से देश की शान्ति बिगड़ती थी, क्योंकि उर्दी पहने लोग अपने स्वामी सामन्तों की ओर से लड़ने को तैयार रहते थे जैसे आजकल के सिपाही राजा की उर्दी पहन कर राजा के लिये लड़ा करते हैं। एडवर्ड चतुर्थ के समय में उर्दी पहनने के विरूद्ध एक क़ानून बना था परन्तु एडवर्ड में इतना बल न था कि क़ानून को बाध्य करता। हेनरी ने क़ानून की मर्यादा रक्खी। एक दिन वह अर्ल अक्सफ़ोर्ड के घर गया। इस सामन्त ने गुलाबों के युद्ध में लैङ्कैस्टर-वालों का साथ दिया था और उनकी ओर से जी तोड़ कर लड़ा था और हेनरी भी लैङ्कैस्टर-पक्ष का था। जब राजा घर से चलने लगा तो अर्ल ने राजा का आदर करने के लिये अपने बहुत से सेवक उर्दी पहना कर खड़े कर दिये। उन्हें देख कर हेनरी ने कहा, "सामन्त जी! आपके आतिथ्य का धन्यबाद है परन्तु हमारा अटर्नी आपसे कुछ कहेगा।" अटर्नी ने अर्ल पर मुक़द्दमा चलाया और अदालत ने उनके ऊपर दस हज़ार पौंड जुर्माना कर दिया। राजा की आवभगत करने के लिये उसको दण्ड देना कुछ अनुचित जान पड़ा परन्तु यह भी उचित था कि राजा अपने मित्रों के साथ भी रियायत न करै और जिन लोगों ने उसकी सेवा की थी, वह भी देश में शान्ति रखने

के लिये जो क़ानून बनाये जायं उनको मानने के लिये बाध्य किये जायं।

४।—हेनरी सप्तम का धनोपार्ज्जन—हेनरी के चित्त में यह बात रही हो या न रही हो परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि उसे दस हज़ार पौंड पाने का बड़ा आनन्द हुआ। हेनरी को धन की चाह थी परन्तु यह चाह सूम की सी न थी जो सोने चांदी की ढेरियां देख कर अपनी आंखों को तृप्त करता है। हेनरी यह जानता था कि धन होने से उसकी शक्ति बढ़ जायगी। परन्तु वह यह भी नहीं चाहता था कि ऐसे कर लगा कर अपनी प्रजा को असन्तुष्ट करे जिसे धनी और निर्धन दोनों को देना पड़े। उसने अपनी बुद्धिमानी धनियों से धन लेने में समझी और जब कभी कोई धनी क़ानून के प्रतिकूल कोई काम करता, चाहे उसका इरादा न भी रहा हो, तो राजा उसे दण्ड देने के बदले धन लेकर उसका अपराध क्षमा कर देता था। उसने एडवर्ड चतुर्थ की चलाये हुये स्वेच्छादान का प्रचार कराया। यह कथा प्रसिद्ध है कि उसका प्रधान मंत्री राजा के लिये धनियों से धन मांगा करता था और जिस रीति से वह मांगता था उसको कार्डिनल मोर्टन का चिमटा कहते थे क्योंकि उसके तर्क की एक बात से लोग न मानते तो वह दूसरी का उपयोग करता था। उसने जब सुना कि कोई धनी बड़े टीमटाम से रहता है, उसका बड़ा सुन्दर प्रासाद है और बहुत से नौकर चाकर हैं तो वह कहता कि तुम इतना धन ख़र्च करते हो तो तुम्हारे पास धन बहुत है और तुम राजा को बहुत कुछ दे सकते हो। जब वह कभी किसी को छोटे घर में थोड़े से नौकर चाकर रख कर साधारण रीति से रहते देखता तो उससे कहता कि तुम बड़ी मितव्ययिता से रहते हो। तुमने बहुतसा धन बचाया होगा और राजा को बहुत कुछ दे सकते हो।

५।—स्टार चेम्बर—सामन्तों के दबाने का दूसरा उपाय स्टार चेम्बर की स्थापना की। डेढ़ सौ बरस पहिले इसने बड़े अत्याचार किये थे परन्तु हेनरी सप्तम ने जब इसकी स्थापना की तो इस से बड़े लाभ हुए। सामन्त अपने पास पड़ोस के लोगों को तंग किया करते थे और जब हाकिमलोग दौरे की कचहरी करने आते थे तो उनके न्याय पाने में बाधा डालते थे। सामन्तों को रुष्ट करने के डर से कचहरी की पञ्चायतें सच्चा फ़ैसला न करती थी। स्टार चेम्बर की अदालत में ऐसे जज



सन १४९६ में जर्गी और देसी पहिनावा।

और कुछ सरकारी कर्मचारी रक्खे गये जो इंग्लिस्तान के सामन्तों से डरते न थे। जब कभी कोई षड्यंत्र सुना जाता या कोई बलवा या उपद्रव होता तो जो सामन्त इसमें शरीक रहता वह इस अदालत के सामने बुलाया जाता और उसको ऐसीही

सुगमता से दण्ड दिया जाता जैसे किसी साधारण किसान या लोहार को।

६।—राजा की बड़ी शक्ति—इस रीति से हेनरी सप्तम ने अपने को सिंहासन पर स्थिर रखा। उसने अंगरेज़ी प्रजा को एक बड़ी वस्तु दी जिसकी उनको बड़ी आवश्यकता थी और वह शान्ति थी। परन्तु उसने एक बात और दी जो किसी प्रजा के लिये कभी अन्त में मङ्गलकारी नहीं हो सकती और वह यह थी कि धनी लोगों पर बोझा डाल दिया जाता था, यद्यपि उचित यह है कि अपनी अपनी योग्यता के अनुसार सब पर बोझा बराबर बांट दिया जाय। दूसरी बुरी बात यह थी कि राजा जो चाहता था, कर सकता था। बात यह हुई कि सामन्तों का तो बल घट गया, परन्तु प्रजा में मिलजुल कर काम करने की शक्ति न थी। देश की दशा बताने के लिये समाचार-पत्र न थे और एक ज़िले के रहनेवाले को दूसरे ज़िले में क्या हो रहा है, इसका ज्ञान न था। इस कारण वे राजा पर विश्वास करके सन्तुष्ट रहते थे और इसीसे राजा को देश की भलाई करने की शक्ति मिल जाती थी। परन्तु उसमें बुराई करने की भी शक्ति इसी से मिली और अंगरेज़ी प्रजा को उसके पीछे हेनरी सप्तम की सन्तान से उस बल को छीनने के लिये बहुत कुछ विपत्तियां उठानी पड़ीं।

## ॥ अध्याय १७ ॥

### * हेनरी अष्टम के राज का आरम्भ *

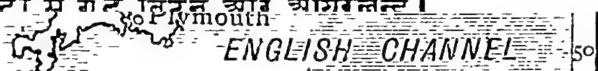
(१५०६—१५२६)

१।—हेनरी की लोकप्रियता—हेनरी सप्तम का बड़ा बेटा आर्थर प्रिन्स आफ़ वेल्स अपने बाप के जीते जी मर गया था।

उसका छोटा भाई हेनरी अष्टम के नाम से राजा हुआ और उसने आर्थर की विधवा आरागान के कैथरीन के साथ अपना विवाह कर लिया । कुछ दिनों तक नये राजा रानी बड़े सुख से रहे । हेनरी अष्टम को लोग बहुत मानते थे । वह बड़ा बली और बड़ा




सोलहवीं शताब्दी में ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड।



फुर्तीला था और उसकी प्रजा में उसके बराबर निशाना लगाने-वाला बिरला ही कोई होगा। उसे लोग "फक्कड़ राजा हाल" कहते थे और वह सबसे हंस कर बोलता और मिलता जुलता था। कुछ दिनों तक उसने राज्य प्रबन्ध अपने मंत्री कार्डिनल उल्ज़ी के हाथों में छोड़ दिया परन्तु वह स्वयं दृढ़प्रतिज्ञ था और जब कभी वह किसी बात पर विचार करने का कष्ट करता तो वह अपने राज्य के बड़े बड़े बुद्धिमानों की अपेक्षा अधिक चतुराई से अपना काम निकाल सकता था।

२।—महाद्वीप यूरप में युद्ध—अपने शासन के प्रारम्भिक काल में वह महाद्वीप यूरप की बहुत सी लड़ाईयों में लड़ा। अंगरेज़ों की सत्यानाशी लड़ाईयों के अन्त होने के पीछे फ्रान्स के राजालोग बली हो गये थे और स्पेन जो पहिले कई रियासतों में बंटा हुआ था, अब मिल कर एक राज्य बन गया था। हेनरी अष्टम के शासनकाल में फ्रान्स का राजा फ्रान्सिस प्रथम, स्पेन के राजा चार्ल्स प्रथम से निरन्तर लड़ता रहा। यह चार्ल्स प्रथम जर्मनी का भी राजा निर्वाचित कर लिया गया था और चार्ल्स पंचम के नाम से जर्मनी पर शासन करता था। हेनरी को इस बात का भय था कि इन दोनों में से कोई न कोई अधिक बली हो जायगा और इस कारण वह सदा इन दोनों में जो निर्बल होता उसका साथ दिया करता था। इन लड़ाइयों से किसी को लाभ पहुंचने की सम्भावना न थी।

३।—प्रजा की दशा—इस बीच में हेनरी की प्रजा गुलाबों की लड़ाई की अपेक्षा अधिक पढ़ने लिखने और विचार करने में लगी हुई थी। यूरप के समान इंग्लिस्तान में भी लोग छापे-खानों के खुल जाने के कारण पढ़ने लिखने में पहिली कई शता-ब्दियों की अपेक्षा अधिक समय लगाते थे। वहलोग केवल

अधिक अध्ययन ही नहीं वरन् भिन्न भिन्न विषयों का अध्ययन करते थे। महात्माओं के जीवनचरित और पादरियों और मठ्ठलोगों की रची हुई धार्मिक पुस्तकों के स्थान पर वह लोग यूनानियों और रोमवालोंकी लिखीहुई प्राचीन किताबें पढ़तेथे, और इस बात पर विचार करने के बदले कि लोग संसार से अलग मठ में रह कर स्वर्ग कैसे प्राप्त कर सकते हैं, यह विचार करने लगे कि पृथ्वी पर रह कर लोगों का कैसे उपकार कर सकते हैं। वास्तव में इस बात पर विचार करने की आवश्यकता भी बहुत थी। यह बात ठीक है कि निर्धन लोग रिचर्ड द्वितीय के शासन-काल के समान अब दास न रह गये थे। परन्तु उनके साथ बड़ा निठुर व्यवहार किया जाता था। जब राजा लड़ाई पर जाता तो वह बहुत से आदमियों को भाड़े पर सैनिक बना लेता था जो लड़ाई अन्त होने पर निकाल दिये जाते थे। वहलोग अपना काम भूल गये थे और भूखों मरने से बचने के लिये उन्हें जीविका-निर्वाह किसी बुरे ढंग से करना पड़ता था। अन्न के लिये लोग लूट मार किया करते थे। उस समय के कठोर क़ानून के अनु-सार चोरी करने वालों को कठोर दण्ड दिया जाता था। इस कारण हेनरी के राज में हज़ारों आदमियों का बध कर दिया गया। परन्तु लूट मार पहिले के समान जारी रही। कुछ बातों में इन दण्डों के कारण देश की दशा और भी बिगड़ गई। डाका डालने-वाला यह बात जानता था कि यदि वह पकड़ा गया तो फांसी पर लटका दिया जायगा और यदि उसने किसी का बध भी कर दिया तब भी उसको अधिक दण्ड न मिलेगा। इस कारण डाका डालनेवाला जिसको लूटता तो उसका बध भी कर डालता था जिस में वह उसके विरुद्ध गवाही न दे सके।

४।—बाड़े—दूसरी विपत्ति धरती के प्रबन्ध में परिवर्तन के कारण पड़ी। ज़िमीदारों ने यह देखा कि अनाज बेंचने की

अपेक्षा ऊन बेचने में लाभ अधिक है। इसलिये उन्हों ने बहुत से खेत जो अनाज बोने के लिये जोते गये थे, भेड़ों के चरने के लिये वंजर कर डाले। इस से हज़ारों किसानों के पास कुछ काम न रह गया क्योंकि भेड़ों के बड़े बड़े ग़ल्लों को चराने का काम दो तीन गड़रिये कर सकते थे और उतनी ही धरती में बहुत से किसान लग जाते तो खेती होती। जिन लोगों के पास कुछ काम न रहा वे नौकरी से छूटे सिपाहियों की तरह लूट मार करने लगे।

५।—यूटोपिया (Utopia) और अमरीका का आविष्कार—इन दुःखों को दूर करने के उपाय देर में निकले। सर टामस मोर एक बड़ा बुद्धिमान था। उसने यूटोपिया नाम की एक किताब लिखी जिसमें उसने यह सलाह बतायी कि धरती में फिर खेत बोये जायं और लोगों को काम करने में सहायता दी जाय जिससे वे चोरी न करें और अपराध करने पर फांसी न लटकाये जायं। सुधार के बड़े बड़े काम एकायक नहीं होते परन्तु लोगों का इन उपायों पर विचार करना ही एक अच्छा लक्षण है। बहुधा ऐसा देखा गया है कि उन्नति की राह खोलने-वाली ऐसी बातें होती हैं जिनका उस समय उस सुधार से कोई लगाव जान नहीं पड़ता। हेनरी सप्तम के राज में कोलम्बस ने ऐटलाण्टिक महासागर पार करके अमरीका का आविष्कार किया। परन्तु इससे अभी तक इंग्लिस्तान को कोई लाभ न हुआ था। कोलम्बस ई० १४९२ में स्पेन-राज की ओर से अमरीका गया। बहुत दिनों तक इस नयी दुनियां में स्पेन ही के जहाज़ जाया करते थे। स्पेनवाले ही वहां बस गये और वेही लोग वहां की खानों से सोना चांदी खोदकर अपने देश को लाये। धीरे धीरे इंग्लिस्तान को भी इस नयी दुनियां में अपना हिस्सा पाने की चाह हुई और विशेष करके उस व्यापार में आगे बढ़ने की आकांक्षा हुयी जो नयी और पुरानी दुनियां में समागम के

कारण बढ़ रहा था। लोगों ने देखा कि नाव चलाने, सौदागरी करने और कारखाने खोलने से उनको भेड़ चराने से अधिक और लूट मार करने से अच्छा काम मिल सकता है।

६।—धर्म-सुधार का आरम्भ—कुछ लोग तो इस विचार में पड़े थे कि दीन दुखियों की यह दशा कैसे सुधरे और कुछ धर्म की ओर प्रवृत्त थे। जर्मनी में मार्टिन लूथर ने यह उपदेश



ऐन बुलीन। टामस हावर्ड नार्फ़ोक का तीसरा ड्यूक। कार्डिनल उलज़ी।

दिया कि जिस ईसाई धर्म में लोग सैकड़ों बरस से मानते आये हैं वह बैबिल की शिक्षा के प्रतिकूल है। कुछ दिन पीछे लूथर के अनुयायी प्रोटेस्टैण्ट (प्रतिवादी) कहलाने लगे। इंग्लिस्तान में भी कुछ लोगों ने वही उपदेश दिया परन्तु ऐसे लोग कम थे। ऐसे लोग भी बहुत थे जो अपने पुराने विश्वास के प्रतिकूल नयी बात मानना न चाहते थे परन्तु परिवर्तन की आवश्यकता मान गये थे। इन दिनों बहुत कम बानप्रस्थ और भिक्षुणियां ऐसे

सदाचार से रहती थीं जैसे जब मठें बनी थीं। कितने उनमेंसे अपना जीवन व्यर्थ बिताते थे और उन्हें धर्म के आडम्बर को छोड़ कर और किसी बात की परवाह न थी। बहुतेरे पादरी मूर्ख थे और यह बात स्वयंसिद्ध है कि आलसी और मूर्ख कुकर्मी भी हो जाते हैं। उल्ज़ी और राजा दोनों की यह इच्छा थी कि इस दशा में परिवर्तन हो। दोनों ने यह विचारा कि बड़े बड़े स्कूल और कालेज खोलने और विद्या का प्रचार करने से पादरी सुधर जायंगे।

७।—हेनरी का पोप से झगड़ा—रानी कैथरीन के विवाह के कुछ दिन पीछे हेनरी उससे असन्तुष्ट हो गया और उसने चाहा कि ऐनबुलीन नाम की एक सुन्दरी के साथ अपना विवाह कर ले। एकायक उसको यह सूझी कि भौजाई के साथ विवाह करना अनुचित था और उसने पोप से कहला भेजा कि "कैथरीन को तलाक़ देदो क्योंकि हेनरी के साथ उसका विवाह धर्मसंगत नहीं हुआ" परन्तु पोप क्लीमेण्ट सप्तम कुछ निर्णय न कर सका। पुराने पोप अपनी मर्यादा पर स्थिर थे और बड़े माने जाते थे, जो उचित समझते वह करते और परिणाम की परवाह न करते। परन्तु क्लीमेण्ट में इतना साहस न था। एक ओर उसे यह डर लगा था कि रुष्ट होने से हेनरी प्रोटेस्टैण्ट हो जायगा और दूसरी ओर उसे कैथरीन के भतीजे सम्राट चार्ल्स का भी डर था जिस की बहुत बड़ी सेना इटली में रहती थी। इस दुबिधा में पड़ कर वह टालमटोल करता रहा। अन्त को उसने कार्डिनल उल्ज़ी और एक दूसरे कार्डिनल के नाम यह आज्ञा भेजी कि पोप के प्रतिनिधि बन कर दोनों पक्ष की बातें सुनें। ई० १५२९ में यह अदालत ब्लैक फ्रायर्स में बैठी। रानी हेनरी के चरणों पर गिर पड़ी। दो बार उसे हेनरी ने उठाना चाहा परन्तु न उठी। उसने अपनी टूटी फूटी अंगरेज़ी में कहा "मैं असहाय परदेशी

स्त्री हूं और बीस वर्ष तक मैंने आप की सेवा की है" । अन्त में उसने पोप ही पर छोड़ दिया और कहा कि मैं पोप ही को जवाब दूंगी । प्रतिनिधियों ने उसकी उपेक्षा की और अपनी कार्रवाई करते रहे । कुछ सोंच विचार कर उन्हों ने यह कहा कि रानी की बात मानी जाय और अदालती कार्रवाई रोम में समाप्त हो । इसपर हेनरी बहुत बिगड़ा । वह जानता था कि पोप सम्राट के डर के मारे उसकी इच्छा के अनुसार निर्णय न करैगा ।

८ ।—उल्ज़ी का पतन—उल्ज़ी पोप का एक प्रतिनिधि था इससे उसी के सिर पहिले बीती । वह अपने ओहदे से निकाल दिया गया और उसकी जायदाद इस बहाने से ज़ब्त कर ली गई कि उसने राजा से विरोध किया । इसके थोड़े ही दिन पीछे उसपर राजविद्रोह का दोष लगाया गया और वह अपनी रूबकारी के लिये बुलाया गया । लीस्टर पहुंच कर वह बीमार पड़ा और मर गया । मरते समय उसने यही कहा, "जिस सावधानी से मैंने राजा की सेवा की है उसी सावधानी से ईश्वर की सेवा करता तो वह बुढ़ापे में मुझे निस्सहाय न छोड़ता ।"

## ॥ अध्याय १८ ॥

### * हेनरी अष्टम के शासनकाल के पिछले साल *

१ ।—राजा का तलाक़ देना—हेनरी ने निश्चय कर लिया था कि पोप माने या न माने कैथरीन को तलाक़ दे दिया जाय । पहिले उसने पोप को डर दिखा कर अपनी इच्छा के अनुसार काम करना चाहा । जब उसने देखा कि इससे सफलता नहीं होती तो उसने पार्लामेण्ट से ऐसे क़ानून जारी कराये जिससे ईसाई धर्मसंघ के विषय के सारे मामले इंग्लिस्तान ही में तै हों । राजा

ने तब ऐन बोलीन के साथ अपना विवाह कर लिया। टामस क्रैनमर जो कदाचित कैथरीन के साथ राजा के विवाह को अनुचित समझता था कैराटरबरी का आर्कबिशप बना दिया गया और डन्सटेबुल में एक दरबार कर के उसने यह आज्ञा दी कि राजा का क़ानून के अनुसार विवाह हुआ ही न था। कैथरीन ने क्रैनमर का फ़ैसला स्वीकार न किया। उसने कहा कि मैं सदा राजा की धर्मपत्नी रही हूं और अबभी रहूंगी जबतक की पोप उसके प्रतिकूल निर्णय न करे। उसने कहा, मैं भिखमंगे की स्त्री बनूंगी और ईश्वर पर भरोसा रक्खूंगी और सारे संसार की रानी नहीं बनना चाहती कि संदेह में रहूं। हेनरी ने उसकी अवहेलना की और खुल्लम खुल्ला कह दिया कि ऐन हमारी धर्मपत्नी है।

२।—<u>हेनरी का प्रोटेस्टैण्टों को जला देना और कैथोलिकों का वध करना</u>—अब हेनरी का पोप के आधीन रहने का कोई झूठा बहाना भी न रहगया परन्तु उसकी कभी यह इच्छा न थी कि मैं प्रोटेस्टैण्ट बन जाऊं अपना धर्म बदलूं या अपनी प्रजा के धर्म में परिवर्तन करूं। उसकी इच्छा थी कि जनता पुरानी रीति से इतनी धार्मिक हो जाय जितनी पोप उसको न बना सका था। उसकी वही इच्छा थी जो बहुतेरे अंगरेज़ों की थी। वहलोग भी तो समझते थे कि कैथरीन के साथ अनुचित बर्ताव किया गया और इस बात को देखकर प्रसन्न थे कि उनका देश इटली के परदेशी पोप के आधीन न रहै परन्तु वह यह भी समझते थे कि धर्मसंघ वैसा ही रहैगा जैसा सदा से रहा है; प्रोटेस्टैण्ट पथ कोई सिखाने न पाये क्यों कि यह पाषण्ड है और इसके माननेवाले नरक के अधिकारी होंगे। इसके पीछे हेनरी के शासन काल में जनता उससे बहुत सन्तुष्ट रही क्यों कि उसने प्रोटेस्टैण्ट लोगों को पाषण्डी बना कर जीता जला दिया और कुछ और लोगों के सिर कटवा दिये या फांसी दी जो यह कहते थे कि धर्म

के विषय में पोप का पद राजा के पद से ऊंचा है ।

३ ।—सर टामस मोर का बध—राजद्रोही बना कर जो लोग पीड़ित किये गये उनमें सर टामस मोर सबसे बढ़ कर था । सबसे पहिले वही था जिसने निर्धन स्त्री पुरुषों को सुखी करने का उपाय सोचा । उसका कुल अच्छे गुणों का भंडार था । उसने अपने बच्चों को ऐसी शिक्षा दी थी जो उन दिनों के लिये अनोखी थी । उस समय भी और उसके बहुत दिन पीछे तक लोग यह समझते थे कि लड़के लड़कियों को ज्ञान सिखाने की यही रीति है कि उन पर बार बार कड़ी मार पड़ा करै । लूथर कहता था कि एक दिन स्कूल में मैं पन्द्रह बार पीटा गया । कैस्टन कुल की एक युवती के विषय में सुना जाता है कि गुड-फ्राइडे के दिन से वह अठवारे में एक बार या दो बार पीटी जाती थी । कभी दिन में दो बार पिटती थी और उसका सिर दो तीन जगह फूट गया था । महात्मा मोर का ज्ञान इससे अच्छा था । उसने अपने बच्चों को लिखा "हमने तुमको चूमा बहुत है परन्तु बेंत कभी नहीं मारा" । साधुस्वभाव के लोग सदा सङ्कल्प के बली होते हैं, अपने धर्म में दृढ़ रहते और जिसको असत्य मानते हैं उसको मर जायंगे तौभी सत्य नहीं कहते । ऐन बुलीन के विवाह के पीछे पार्लमेण्ट ने विरासत का एक क़ानून बनाया जिसके अनुसार, जिसे राजा चाहे उससे इस बात की क़सम लेले कि हेनरी का दूसरा विवाह उचित हुआ है और उससे और ऐन से जो बच्चे होंगे वह न्याय के अनुसार राज्य के उत्तराधिकारी होंगे । मोर उन दिनों चेल्सी में रहता था । वहां से क़सम खाने के लिये बुलाया गया । लिखा है के पहिले जब कभी वह स्त्री और बच्चों से अलग होता था तो वह सब उसे नाव तक पहुंचाने आते थे और वहां वह उनको चूम कर बिदा करता था । इस बार उसने किसी को फाटक के बाहर निकलने न दिया और उसे बन्द करा

के उदास मन से नाव पर बैठ गया। देर तक वह विचार करता रहा। उसके मन में इस बात का विवाद था कि उसे राजा से दबना चाहिये कि नहीं, परन्तु वह थोड़ी ही देर में चौंक पड़ा और कहने लगा कि "ईश्वर को धन्यवाद है, पाला मार लिया"। उसने प्रलोभन को पददलित कर दिया। जब वह लैम्बेथ पहुंचा तो उससे कहा गया कि क़सम खाओ। उसने उत्तर दिया, "मैं ऐन के बच्चों को राज्य का उत्तराधिकारी मानने की क़सम खाने को तैयार हूं क्योंकि मुझे विश्वास है कि राजा जैसा चाहेगा वैसा पार्लामेण्ट की अनुमति से निर्णय करा लेगा परन्तु मैं इस बात की क़सम नहीं खा सकता कि ऐन हेनरी की धर्मपत्नी है क्योंकि मैं उसको धर्मपत्नी नहीं मानता"। इस उत्तर पर वह क़ैद कर के टावर में भेज दिया गया। वहां बहुत दिन न रहा था कि पार्लामेण्ट ने राजविद्रोह का क़ानून (Treason Act) जारी किया जिसके अनुसार जो कोई राजा को उसकी उचित उपाधि से सम्बोधित न करे तो वह विद्रोही है और उसका बध किया जाय। राजा की नयी उपाधि यह थी, "इंग्लिस्तान के धर्मसंघ का परम अध्यक्ष"। मोर की समझ में हेनरी की यह उपाधि उचित न थी। उस पर मुक़दमा चलाया गया और उसे प्राणदण्ड की आज्ञा दी गई। वह बड़ा हंसमुख था और मरते मरते प्रसन्नचित्त रहा। जब उसे टावर हिल पर बध के लिये ले गये तो उसने कहा मुझे ऊपर अच्छी तरह चढ़ा दो, उतर आना मेरा काम है। जब उसने लकड़ी के ठेहे पर अपना सिर रख दिया तो उसने एक बार उठा कर अपनी दाढ़ी हटा दी और कहने लगा "बड़े शोक की बात है। इस सिर ने कोई राजविद्रोह नहीं किया, फिर भी यह काटा जाता है"। परन्तु गड़ासी ने अपना काम कर दिया और हेनरी के समय के सबसे उदार साधु स्वभाव अंगरेज़ का सिर उसके धड़ से अलग हो गया।

४ ।—बाइबिल का अनुवाद—परन्तु हेनरी का सबसे बड़ा भारी काम बाइबिल के अनुवाद की आज्ञा देना था। वह क्या जानता था कि जब उसने बाइबिल को अंगरेज़ी भाषा में छापने की आज्ञा दी तो कितने बड़े परिवर्त्तन का आरम्भ होगा। वह यही समझा था कि लोग इससे पोप से विरोध करना सीख लेंगे और उसे इस बात का ध्यान भी न था कि उन्हें इस पुस्तक में ऐसी बातें मिल जायंगी जो उसके विश्वास से भी भिन्न हैं। वह यह न जानता था कि जिस पुस्तक के पढ़ने का उसने अपनी प्रजा को उपदेश दिया उस से उसके धर्म और उसके विश्वास से भी बढ़कर शुद्ध-धर्म और आचरण सीख लेंगे और उनमें ऐसे विश्वास का संचार हो जायगा जिससे वे पोप और राजा दोनों से विरोध करेंगे, जब कभी राजा या पोप उन्हें ऐसी बात मानने को कहेंगे जिसे वे असत्य समझते हैं या ऐसा काम करने को कहेंगे जिसे वे अनुचित मानते हैं।

५ ।—छोटे मठों का दमन—हेनरी जब कभी स्वार्थवश भी कोई काम करना चाहता था तो वह अपने मन को समझा लेता था कि हम बहुत अच्छी बात कर रहे हैं। यह स्वभाव उसका मठों के साथ वर्ताव से विदित होता है। उसको रुपये की बड़ी आवश्यकता थी। वह बड़े ठाट-बाट से रहता था और उसमें जुये की भी लत थी। जुआड़ी सदा कङ्गाल रहता है और हेनरी की भी वैसी ही दशा थी। उसने यह समझ लिया कि छोटे मठों में जो वानप्रस्थ और भिक्षुणी रहती हैं वह सब दुष्ट हैं। ऐसा सोच कर राजा ने जांच के लिये राजपुरुष भेजे और उन लोगों ने आकर यह कहा कि आपका अनुमान ठीक है। इसमें सन्देह नहीं कि कुछ वानप्रस्थ स्त्री पुरुष अच्छे आचरण के न थे। इनमें अब साधुवृत्ति से रहने की वैसी लालसा न थी जैसी दो तीन सौ बरस पहिले रही और जब कुछ लोगों के पास कोई काम

नहीं रहता तो उनका आचरण बिगड़ जाता है। परन्तु इसमें भी सन्देह नहीं कि उनलोगों ने राजा को जो सूचना दी वह पूरी पूरी सच न थी। इस पर पार्लमेण्ट से क़ानून पास हो गया जिसके अनुसार दो सौ पौंड सालाना आमदनी की जायदादवाली सारी मठें तोड़ दी गईं और सारा धन राजा को मिल गया।

६।—ऐन बोलीन का वध और जेन सीमर की मौत—मठों की ज़ब्ती से पहिले हेनरी के सिंहासन की उत्तराधिकारिणी एक स्त्री थी। कैथरीन की लड़की, मेरी, राजा की बेटी न मानी गई। उसकी दूसरी स्त्री ऐन से एक कन्या एलिज़बेथ हुई जो ऐसी प्रसिद्ध हुई जैसा कोई पुत्र न हो सकता था। उसका पालन पोषन विपत्ति में हुआ और जो लोग ऐसी शिक्षा से कुछ लाभ उठाना चाहते हैं उनके लिये इससे बढ़ कर शिक्षा नहीं हो सकती।



जब वह निस्सहाय बच्ची पालने में झूलती थी और उसको भले बुरे का ज्ञान न था, उस पर पहिला दुःख पड़ा। उसकी माता के ऊपर एकाएक बहुत बड़ा भारी अपराध लगाया गया। यह कोई नहीं कह सकता कि वह दोषी थी या निर्दोष परन्तु उसको प्राण-दण्ड की आज्ञा दी गई और उसकी गरदन मारी गई। उसका विवाह भी अनुचित माना गया और हेनरी ने तुरन्त एक तीसरी स्त्री, जेन सीमर, व्याह ली। उस से एक लड़का हुआ जो एडवर्ड षष्ठ के नाम से सिंहासन पर बैठा था और वह मर गई। हेनरी कई बरस तक अकेला ही रहा।

७।—धर्म-यात्रा—छोटे मठों की ज़ब्ती पर उत्तर में बलवा हो गया। यार्कशायर, लङ्काशायर, डरहम और नार्थम्बरलैण्ड आजकल बड़े धनी ज़िले हैं क्योंकि धुएं की कल के आविष्कार से इन प्रान्तों में पत्थर का कोयला होने से बड़े बड़े कारख़ाने खुल गये हैं। हेनरी अष्टम के समय में इंग्लिस्तान का यह प्रान्त बड़ा कङ्गाल था और आबादी भी कम थी और यहां के रहनेवाले दक्षिण की धनी जनता की अपेक्षा परिवर्त्तन के विरोधी थे। यहां सरदारों को भी लोग मानते थे और दीन दुखियों की सहायता करने में मठें अपना काम करती थीं। इन कारणों से वहां के रहनेवाले राजा से बिगड़ गये। इस बलवे का नाम धर्म-यात्रा रक्खा गया क्योंकि बलवाइयों के झंडे पर ईसामसीह के पांच घाव बने थे। इस बलवे का दमन करना इतना कठिन था कि राजा ने उनको क्षमा करने की प्रतिज्ञा की और उत्तर में उनकी बातें सुनने के लिये पार्लमेण्ट की सभा करने को कहा। परन्तु कहीं कहीं कुछ झगड़े हो गये और हेनरी को अपनी प्रतिज्ञा भङ्ग करने का बहाना मिल गया। फिर क्या था धर्म-यात्रा के मुखिया पकड़ कर फांसी लटकाये गये।

८।—मूर्तियों का तोड़ा जाना—सर टामस मोर का यह विश्वास था कि धर्मसंघ के मामलों को राजा निपटायेगा तो बड़े बड़े परिवर्त्तन होंगे। लोगों ने अब जाना कि मोर ने सच कहा था। हेनरी कोई परिवर्त्तन करना न चाहता था। उसकी इच्छा थी कि लोगों का धर्म-विश्वास वही रहै जो सनातन से रहा है। परन्तु वह चाहता था कि उनको यह धर्म बतला दिया जाय जिससे वे उसको समझ लें। धर्म-यात्रा से पहिले उसने ऐसे उपदेश का प्रचार करना चाहा, परन्तु यह उपदेश वैसा न था जैसा कि पोप की ओर से दिया जाता है। इसमें मुख्य परिवर्त्तन मूर्तियों के विषय में था। सारे गिरजाघरों में महात्माओं की मूर्तियां थीं और क्रूश के ऊपर ईसामसीह का चित्र बना था। लोग इन्हीं के सामने ईश्वर-प्रार्थना करते थे। उनका अभिप्राय यह न था कि पत्थर और लकड़ी की पूजा की जाय। मूर्तियां और चित्र केवल उनलोगों की सुध दिलाते थे जिन्हें प्रार्थना करने-वाले देख न सकते थे। परन्तु मूर्ख अनपढ़ लोगों ने यह समझा कि मूर्तिही से प्रार्थना की जाती है और मूर्ति ही उनका कल्याण कर सकती है। राजा की इच्छा न थी कि मूर्तियों के आगे प्रार्थना करने के कारण उनको तोड़ देना चाहिए परन्तु उसने ऐसी मूर्तियों का तोड़ना निश्चय किया जिनके विषय में कहा जाता था कि अद्भुत काम करती हैं, क्योंकि उनमें उसकी जान में छल कपट था। जब वह छल जान लिया गया तो लोगों को दिखला कर मूर्तियां नष्ट कर दी गईं। इतना ही होता तो कोई विशेष हानि न थी। एक पादरी ने जिसका नाम फ़ायर फ़ारेस्ट था यह कहा कि राजा को पोप के आधीन रहना चाहिये। इस पर वह पाषण्डी माना गया और ज़ंजीरों का एक झूला बना कर फांसी में लटका दिया गया और उसके नीचे एक बड़ी मूर्ति के टुकड़े थे जो वेल्स से लाई गई थी। उसी समय लाटीमर नाम एक निर्भय

साधु, जो पीछे से शहीद की मौत मरा, उसको समझाने लगा कि तुमको भ्रम है। जब उपदेश समाप्त हो गया तो उसने फ़ारेस्ट से पूछा कि "तुम जीना चाहते हो या मरना"। फ़ारेस्ट ने कहा, "हम मरना चाहते हैं, तुमसे जो कुछ हो सकै करो। सात बरस पहिले तुम ऐसी बातें कहते तो तुम्हारी गर्दन मारी जाती परन्तु अब स्वर्ग से देवदूत भी आयें और हमारे बचपन के सीखे सिद्धान्त से भिन्न दूसरा सिद्धान्त बतायें तो हम उसे न मानैंगे। तुम हमारी बोटी बोटी काट डालो, हमें जला दो, फांसी लटकाओ तुम्हारे जो जी में आवै करो परन्तु हम अपने धर्म में दृढ़ रहैंगे"। लकड़ी की मूर्ति के टुकड़ों में आग लगा दी गई। फ़ारेस्ट उसके ऊपर झूलता रहा और उसका शरीर भस्म हो गया।

९।—हेनरी का अत्याचार—देश में चारों ओर ऐसे वीर पुरुष थे जो मरजाते और जिस बात को असत्य मानते थे उसको सत्य न कहते। उलज़ी के पतन के पीछे हेनरी ने राजकाज टामस क्रामवेल को सौंप रक्खा था। क्रामवेल की इच्छा थी कि इंग्लिस्तान पोप के आधीन न रहै और उसका स्वामी जो चाहै सो करै। उसमें न दया थी न करुणा। इसने देश भर में जासूस फैला दिये और राजा के विरुद्ध जो बातें सुनी जाती थीं उनकी उसको सूचना मिलती थी। राज भर में कोई निश्चिन्त न रहता था, धर्मविरोधी जला दिये जाते थे और पोप के अनुयायियों को फांसी दी जाती थी। उसके विरुद्ध किसी काम में सफलता न होती थी। सरदारों ने अनेक षड़यंत्र रचे परन्तु सब खुल गये और षड़यंत्रियों को प्राणदण्ड दिया गया। काउन्टेस सैलिसबरी, एक बुढ़िया ने ठेहे पर अपना सिर रखने के लिये घुटनों के बल बैठने से इनकार किया। जल्लाद उसके ऊपर गड़ांसी लेकर झपटा और वह खड़ी ही थी कि उसका सिर

काट लिया। दरबार में भी भांति भांति के विनोद में धन उड़ाया जाता था। हेनरी को अपने विनोद और अपने मित्रों के विनोद के लिये धन की आवश्यकता थी। दरबार में एक वाक्य, "गुड पेनी वर्थ" प्रचलित था जो व्याख्या के विना समझ में नहीं आ सकता। इसका अर्थ यह था कि किसी ने राजा से मठ की ज़िमीदारी का एक हिस्सा पाया है जिसके लिये उसने या तो कुछ नहीं दिया, या जो कुछ दिया, वह नहीं के बराबर था। दो ही चार बरस पीछे 'गुड पेनी वर्थों' का अन्त होने लगा तब यह विचारा गया कि छोटी मठों के साथ साथ बड़ी मठें भी तोड़ दी जायं। मठाधिकारियों ने राजा के पास स्वीकार-पत्र भेजे कि हमलोग और हमारे सारे वानप्रस्थ बड़े दुराचारी हैं। ऐसा करनेवालों को इनाम मिला। कैण्टरबरी में मुख्य मुख्य वानप्रस्थों ने घोर अपराधी होना स्वीकार किया और गिरजा को राजा के हवाले कर दिया। राजाने ज़िमीदारी लेली और उन नीच पापियों को गिरजा में डीन* और केनन† के अधिकार दिये। इसमें हमको सन्देह नहीं है कि इन घोर अपराधों का अस्तित्व न था परन्तु इतना हम कह सकते हैं कि यह सारा धन न तो लालची दरबारियों के पेट में गया न जुये में नष्ट हुआ। इसके एक अंश से नये गिरजाघर बन गये और कुछ धन जहाज़ों और क़िलों के बनवाने में खर्च हुआ, परन्तु बहुत सा नष्ट भी हो गया।

१०।—छः धारायें—हेनरी ने इस बात के लिये कठिन उद्योग किया कि लोगों का धर्म में विश्वास वही हो जैसा

---

* डीन (Dean) बिशप के आधीन गिरजा का एक अधिकारी।

† केनन (Canon) गिरजा का एक अधिकारी जिसको पूजा प्रार्थना करने के लिये वेतन मिलता है।

कि वह उचित समझता था परन्तु यह दिन दिन असम्भव होता जाता था। प्रोटेस्टैण्टों की संख्या बढ़ती जाती थी यद्यपि और जनता की अपेक्षा बहुत कम थी। कभी कभी यह लोग बड़ी धृष्टता कर बैठते थे। एक प्रोटेस्टैण्ट एकबार एक गिरजाघर में पहुंचा और जब पादरी ने ईसाई संस्कार की विधि की तो उसने कुत्ता उठाकर दिखा दिया। हेनरी ने उनको शान्त रखने का प्रयत्न किया और छः धाराओं का एक क़ानून बना जिससे प्रोटेस्टैण्टसिद्धान्तों के खुल्लमखुल्ला पोषण करनेवालों को फांसी दी जाय। परन्तु लोगों के विचार रोके नहीं जा सकते। ईश्वर का राज राई के दाने के बराबर सब दानों में छोटा होता है परन्तु बढ़ने पर एक बड़ा पौधा निकल आता है। सिर कटने और आग में भस्म किये जाने के डर से नये धर्म की उन्नति न रुकी। हेनरी को उसकी प्रजा चाहती थी, वह सदा हंसमुख रहता और वह वही चाहता था जो इंग्लिस्तान के बहुतेरे अंगरेज़ चाहते थे। परन्तु अपनी आत्मा को दृढ़ रखनेवाले धर्म के चाहनेवाले हेनरीके अनुयायी न थे। कुछ लोग पोप को छोड़ना न चाहते थे, कुछ बैबिल पढ़ते थे और स्वर्ग में ईसामसीह से प्रार्थना करते थे, पोप या राजा जो चाहैं सो कहा करैं। इसमें सन्देह नहीं कि बहुतेरे प्रोटेस्टैण्ट नाम मात्र ही को थे और अपने पड़ोसियों को नीच समझते थे और उनके साथ उन्हें अवसर मिलता तो राजा की भांति क्रूरता भी करते परन्तु कुछ प्रोटेस्टैण्ट शुद्ध शान्त और धार्मिक भी थे और राजा जो चाहै सो करै उनकी संख्या और उनका बल बढ़ता जाता था।

११।—<u>हेनरी अष्टम के अन्तिम साल</u>—छः धाराओं के क़ानून बनने के साथ ही साथ मठों के विनाश का एक नया क़ानून

बन गये। उसी समय क्राम्वेल का भी पतन हुआ। राजा ने फिर विवाह करने का विचार किया और क्राम्वेल ने जो दो जर्मन राजाओं को अपना मित्र बनाना चाहता था उसको एक जर्मन स्त्री ऐन क्लीवीज़ के साथ विवाह करने की सलाह दी परन्तु दौर्भाग्यवश क्राम्वेल इस बात को भूल गया कि स्त्री सुन्दर न होगी तो राजा प्रसन्न न होगा। नई रानी सुन्दर न होने के अतिरिक्त मोटी थी और हेनरी को सहजही उसको तलाक़ देने का बहाना मिल गया। ऐन क्लीवीज ने तलाक़ देते समय कोई झगड़ा न किया। हेनरी ने उसके लिये मासिक वृत्ति नियत कर दी जिससे बहुत दिनों तक सुख से रही।

हेनरी क्राम्वेल से बहुत ही रुष्ट था। क्राम्वेल को सब बुरा



कहते थे। जैसेही लोगों ने जाना कि हेनरी उससे बिगड़ गया है, उसपर राजद्रोह का अपराध लगाया गया और पार्लमेण्ट में यह प्रस्ताव किया गया कि उसका बध किया जाय। पार्लमेण्ट ने उसकी सफ़ाई न सुनी और उसके अत्याचार का अन्त उसके जीवन के साथ हुआ। हेनरी कुछ दिन और जिया। उसने कैथरीन हावर्ड नाम की एक पांचवीं स्त्री ब्याही परन्तु उसका भी सिर काटा गया। उसकी छठी स्त्री उसके मरने के पीछे तक जीती रही। हेनरी के शासन के अन्तिम बरसों में कोई बड़ी घटना न हुई। पहिले फ़ान्स के साथ लड़ाई हुई फिर स्काटलैण्ड के साथ युद्ध किया गया। छः धाराओं के क़ानून से प्रोटेस्टैण्ट दबे रहे परन्तु ईसाई पूजा प्रार्थना में कुछ परिवर्तन किया गया। ईश्वर प्रार्थना, धर्मसिद्धान्त और दशाज्ञाओं का पहिले अंगरेज़ी में अनुवाद किया गया। पीछे लिटनी भी अंगरेज़ी में कर डाली गई और कई प्रार्थनाएं अंगरेज़ी में बनीं। पवित्र भोज की प्रार्थना (Mass) लैटिन भाषा में पढ़ी जाती थी। राजा के मरने के समय बड़े बड़े परिवर्त्तनों की राह खुल गई।

## ॥ अध्याय १९ ॥

### * एडवर्ड षष्ठ, १५४७; मेरी, १५५३ *

१।—स्काटलैण्ड में लड़ाई और नई प्रार्थना-पुस्तक—हेनरी का बेटा एडवर्ड षष्ठ अपने बाप के मरने के समय निरा बालक था, और उसका चचा एडवर्ड सीमर ड्यूक समर्सेट संरक्षक के नाम से देश का शासन करता था। समर्सेट बुद्धिमान न था। उसके इतने मनसूबे थे कि किसी एक को पूरा करने को उसे समय न मिलता था। पहिले उसने चाहा कि स्काटलैण्ड-

वाले अपनी रानी एडवर्ड षष्ठ को ब्याह दें और जब उन्हों ने न माना तो उनसे लड़ बैठा। इडिन्बरा के पास पिंकी के मैदान में स्काट लोग हार गये और उनके बहुत से घर जला दिये गये। इसपर स्काटलैण्डवाले बहुत बिगड़े और अपनी कुमारी रानी को



एडवर्ड षष्ठ।

फ्रान्स भेज दिया जहां राजा के बड़े बेटे के साथ उसका विवाह हो गया। घर पर भी समर्सेट को बड़े काम करने पड़े। हेनरी ने गिरजाघरों में जो मूर्त्तियां छोड़ दी थीं उसने फेंकवा दीं। हेनरी के मरने के दो ही बरस पीछे पार्लामेण्ट ने आज्ञा दी कि गिरजाघरों में अंगरेज़ी भाषा में एक नई प्रार्थना-पुस्तक पढ़ी जाया करे और पादरी जो अब तक निहंग रहते थे अपना विवाह कर सकें। इन परिवर्त्तनों से लोगों के हृदयों को बड़ी चोट लगी

और कार्नवाल और डेवन ज़िलों में लोग बिगड़ गये और उनका विद्रोह बड़ी कठिनाई से दबाया गया।

२।—धर्मसंघ की जायदाद की ज़ब्ती—समर्सेट का स्वभाव ही ऐसा न था कि उससे जनता सन्तुष्ट रहती। इस में सन्देह नहीं कि समर्सेट वही बात करना चाहता था जिसे वह उचित समझता था परन्तु उसकी यह भी अभिलाषा थी कि उसको और उसके मित्रों को बहुत सा धन मिल जाय। हेनरी अष्टम ने यह बुरी प्रथा चलाई और मठों की धरती अपने अपने अनुग्रह-पात्र सरदारों में बांट दी। जब मठों की ज़िमींदारी बंट गई तो जो जायदाद गिरजाघरों में लगी थी उस पर दांत लगाया गया। उन दिनों समर्सेट अपने लिये लन्दन के स्ट्राण्ड महल्ले में एक महल बनवा रहा था जिसका नाम अपने नाम पर उसने समर्सेट-हौस (भवन) रक्खा। उसके लिये समर्सेट ने एक बड़े गिरजाघर को गिरा दिया और एक छोटे गिरजा को बारूद से उड़ा दिया। उसी के साथ क़ब्रिस्तान के भी एक भाग को मकान और दुकानें बनाने के लिये खोद डाला और गड़े मुर्दे उखड़वाकर दूर फेंकवा दिये।

३।—समर्सेट का पतन—परन्तु थोड़े ही दिनों में समर्सेट को और कठिनाइयों का सामना पड़ा। बड़े बड़े ज़िमींदार खेती करनेवालों को निकाल निकालकर, भेड़ रखने के लिये बाड़े बनाते गये। इस से लोग बहुत बिगड़े और नारफ़ाक में केट नाम के एक मोची को अपना मुखिया बनाकर बलवा कर दिया। समर्सेट ने बलवाइयों की दशा पर करुणा दिखाई पर उसे यह न सूझा कि इनकी सहायता कैसे की जाय। फिर भी वह उन पर चढ़ाई करना न चाहता था। परन्तु उसके साथ के बड़े बड़े सरदार उनपर करुणा करना जानते ही न थे। उन्हों ने निठुर

जान डडली, अर्ल वारिक की अध्यक्षता में सिपाही भेज दिये और बलवा दबा दिया गया। इस के बाद उन्होंने समर्सेट से संरक्षक का पद ले लिया और थोड़े ही दिन पीछे उसपर अधिकार पाने के उद्योग का दोष लगाया गया। अदालतने उसे दोषी ठहराया और उसको फांसी दी गई।



एडवर्ड सीमर ड्यूक समर्सेट। क्रैन्मर। जान डडली ड्यूक नार्थम्बरलैन्ड।

४।—नार्थम्बरलैण्ड का शासन—अर्ल वारिक, नार्थम्बरलैण्ड का ड्यूक बना दिया गया और शासन की बाग उस के हाथ में आगई। वह बड़ा स्वार्थी दुष्ट था। वह बड़ा धार्मिक बनता था और कहता था कि हम से जो कुछ हो सकेगा प्रोटेस्टैण्टों के हित की करेंगे। इस राज के आरम्भ में जो प्रार्थना-पुस्तक

बनी थी उससे बढ़कर परिवर्तित दूसरी पुस्तक निकाली गई। उसने और उसके मित्रों ने देश को लूट लिया। जो धन राज के काम करनेवालों में बांटने के लिये था उसे आप उड़ा ले गये। यह बुरी प्रथा देश में चलगई। इनदिनों के एक धर्मोपदेशक ने यहां तक कह डाला कि "आजकल के भलेमानस और सरकारी कर्मचारी जैसी अच्छी बातें कहते और जैसे नीच कर्म करते हैं वैसा कभी न हुआ था। बहुतेरों के लिये प्रोटेस्टैण्टधर्म से इंग्लिस्तान को यही लाभ हुआ कि राजकर्मचारियों को अपनी नीचता और दुष्टता दिखाने का अवसर मिलगया"। परन्तु ऐसे बुरे दिनों में भी इस नये धर्म का अच्छा फल हुआ। धर्म के एक वीर उपदेशक ने बड़े बड़े सरदारों के मुंह पर कह दिया कि "आप लोगों को अपनी दुष्टता पर लज्जित होना चाहिये और आपलोगों ने बरजोरी से या धोखा देकर जो धन गरीबों से लिया है उसे फेर दीजिये"। कई नगरों में सौदागरों और दूकानदारों ने ऐसे स्कूल खोलने के लिये धन दिया जिसमें सब लोग पढ़ सकें।

५।—<u>एडवर्ड की मौत और मेरी का सिंहासन पर बैठना</u>— एडवर्ड षष्ठ रोगी लड़का था और मर्द होने से पहिले ही क्षयरोग से मर गया। उसके मरने से पहिले नार्थम्बरलैण्ड ने उससे अपनी चचेरी बहिन लेडी जेन ग्रे को उत्तराधिकारिणी बनाने की अनुमति लेली थी। लेडी जेन ग्रे प्रोटेस्टैण्ट थी और एडवर्ड के लिये उसको अपना वारिस बनाना वैसा ही था जैसे एडवर्ड कानफ़ेसर का विलियम विजेता को। सारे अंगरेज़ एडवर्ड की बड़ी बहिन मेरी के पक्षपाती हो गये और जब नार्थम्बरलैण्ड रानी जेन के ओर से उनसे लड़ने गया तो उसी के सिपाही अपनी टोपियां उछाल उछाल कर चिल्ला उठे, "रानी मेरी की जय"।

मेरी ने राजसी ठाटबाट से लन्दन नगर में प्रवेश किया। जेन टावर में क़ैद कर ली गई और नार्थम्बरलैण्ड राजद्रोही माना गया और उसका सिर काट लिया गया।

६।—रानी मेरी के शासन का आरम्भ—मेरी ने तुरंत नई प्रार्थना-पुस्तक का प्रचार बंद करा दिया। इंग्लिस्तान में इस पुस्तक के चाहनेवाले कम थे और जब अंगरेज़ी धर्मसंघ पोप के आधीन था उस समय की पूजा प्रार्थना फिर से होनी लगी। परन्तु पुरानी पूजा के माननेवाले भी ऐसे बहुत थे जो पोप की आधीनता के विरोधी थे। बहुतेरे ऐसे भी थे जो अपना काम आप करना चाहते थे और किसी ऐसे के आश्रित रहना न चाहते थे जो पोप की भांति न अंगरेज़ था और न इंग्लिस्तान में रहता था। जिन लोगों को मठों के खेत और घर मिले थे उन्हें यह डर लगा था कि पोप के आधीन होजाने पर उन्हें यह सब फेर देने पड़ेंगे परन्तु रानी मेरी ने यह निश्चय कर लिया था कि इंग्लिस्तान का धर्मसंघ फिर पोप के आधीन हो जाय यद्यपि वह यह जानती थी कि पार्लामेण्ट बहुत दिनों में इस बात को मानेगी। उसने अपने मौसेरे भाई फ़िलिप के साथ अपना विवाह करना भी निश्चित कर लिया। फ़िलिप सम्राट चार्ल्स पञ्चम का बेटा था और पीछे से स्पेन का राजा हो गया था। यह विवाह किसी को अच्छा न लगा। कुछ लोगों ने बलवा भी कर दिया। यह बलवा दबा दिया गया परन्तु मेरी को दूसरे उपद्रव का डर लगा और उसने बेचारी निरपराध लेडी जेन ग्रे का सिर कटवा लिया और अपनी बहिन एलिज़बेथ को टावर में बन्द कर दिया। विवाह होते ही उसने पार्लामेण्ट से यह स्वीकृत कराया कि पोप फिर धर्मसंघ का अधिष्ठाता रहै और यह क़ानून बनवा दिया कि जो इस बात को

न मानै वह धर्मविरोधी है और जीतेजी जला दिया जाय। परन्तु पार्लमेण्ट के सदस्यों ने इस बात पर हठ किया कि जो जायदाद मठों से ली गई है वह फेरी न जाय और जिन के पास है उन्हीं की रहै। उन सदस्यों को अपनी जायदाद की चिन्ता थी अपने देशी भाइयों के प्राणों की नहीं।

७।—प्रोटेस्टैण्ट शहीद—इधर तो सरदारों और ज़िमीदारों को जितनी धनधरती की चिन्ता थी उतनी धर्म की नहीं, उधर कुछ प्रोटेस्टैण्ट शहीद भी निकल आये जिन्हों ने अपने विश्वास के लिये अपने प्राण ऐसे दिये जैसे सर-टामस मोर ने दिये थे। इसका एक उदाहरण यह है। सफ़क के एक पादरी रोलैण्ड टेलर को लंदन में जला दिये जाने का हुकुम हुआ और वह मरने के लिये अपने ज़िले में भेजा गया। सवेरा होने से पहिले अंधेरे में वह बंदीघर से निकला तो उसकी स्त्री और बच्चे गली में खड़े थे। उसकी एक बेटी चिल्ला उठी, "मेरे प्यारे पिता—अम्मा, अम्मा, देखो मेरे पिता को लिये जाते हैं"। उन दिनों सड़कों पर गैस की रोशनी न होती थी और रोलैण्ड की स्त्री उसे न देख सकी और चिल्लाई, "रोलैण्ड, कहां हो?"। रोलैण्ड बोला, "प्यारी, हम यहां हैं"। राजपुरुषों ने उसें थोड़ी देर ठहरने दिया और वह अपने परिवार के साथ ईश्वर प्रार्थना करने को घुटनों के बल बैठ गया। ज्योंही उठा, वह बोला, "प्यारी, मैं तुमसे बिदा होता हूं, तुम सोच न करो, मेरा अन्तःकरण शान्त है। ईश्वर मेरे बच्चों का रक्षक खड़ा कर देगा"। यहां से उसे सफ़क के उस गांव में ले गये जहां वह गिरजाघर में उपदेश दिया करता था। जब वह उस स्थान पर पहुंचा जहां जलाने को लकड़ी इकट्ठी करके बीच में एक खंभा सा गड़ा था तो वह बोला, "ईश्वर को अनेक धन्यवाद, मैं सुख से अपने घर पहुंच गया"। जब वह

खंभे में बांध दिया गया, तो एक दुष्ट ने उसके मुहं पर एक जलती लकड़ी फेंक दी। वह बोला, "भैया, इसका तो कुछ काम न था। हमारे साथ तो बहुत कुछ हो चुका है"। चिता में आग लगा दी गई, बात की बात में आग उसके चारों ओर फैल गई और रोलैण्ड टेलर शान्त हो गया। यही गति और भी अनेक वीर धार्मिकों की हुई। इनमें दो बिशप आक्सफ़र्ड में जला दिये गये, एक दीन रिडली और दूसरा सन्मार्ग का वीर उपदेशक लैटिमर। दहकती आग में से लैटिमर ने कहा, "रिडली, घबराना मत ; मर्द बने रहो, आज हमलोग इंग्लिस्तान में ऐसा दीप प्रज्वलित कर रहे हैं जो, मुझे पूरा विश्वास है, कभी न बुझैगा"।

८।—<u>मेरी के अन्तिम दिन</u>—लैटिमर ने सच कहा। क्रैन्मर भी उसका अनुगामी हुआ। अच्छे से अच्छे दृढ़विश्वास के प्रोटेस्टैण्ट बध के लिये निर्वाचित किये गये। परन्तु परिणाम कुछ न हुआ। लोग ऐसे धर्म के विरोधी हो गये जिसकी रक्षा ऐसे उपायों से होती थी। मेरी का शासन क्रूर होने पर बलहीन था। अपने पति फ़िलिप को प्रसन्न करने के लिये वह फ्रान्स के साथ युद्ध करने को उसके साथ हो गई। फ्रान्सवालों ने तुरंत कैले पर धावा मार दिया। मेरी ने कैले की रक्षा का कोई उचित प्रबंध न किया था और जो कैले गढ़ एडवर्ड तृतीय के समय से इंग्लिस्तान के अधिकार में था उसके हाथ से सदा के लिये निकल गया। इसके थोड़े ही दिन पीछे मेरी हासी मांदी सी उदास मर गई। वह जानती थी कि उसकी बहिन एलिज़बेथ उसकी उत्तराधिकारिणी होगी और प्रोटेस्टैण्टों को भस्म न करैगी। मेरी का राज अन्तिम शासन था जिसमें अंगरेज़ी पार्लमेण्ट ने अंगरेज़ी धर्मसंघ पर पोप का अधिकार माना।

# ॥ अध्याय २० ॥

## * एलिज़बेथ के शासन का आरम्भ *

( १५५८—१५८० )

१।—<u>एलिज़बेथ और अंगरेज़ी जनता</u>—एलिज़बेथ हैटफील्ड बाग में एक पेड़ के नीचे बैठी थी जब उसने अपनी बहिन के मरने का समाचार सुना। वह बोली, "यह सब ईश्वर का करतब है; हमलोगों के लिये कैसा विचित्र है"। अब वह इंग्लिस्तान की रानी होगी और उसे टावर में बन्दीहोकर जाना या अपना सिर कटाना न पड़ेगा। अंगरेज़ों में कोई विरला ही था जिसने यह न समझा कि क़ैद से छूटे। अब स्त्री-पुरुष जीते जी न जलाये जायंगे और न अंगरेज़ों को स्पेनराज की ओर से लड़ने बाहर जाना पड़ेगा। एलिज़बेथ का दृढ़ संकल्प था कि उसके राज में परदेशी अंगरेज़ी शासन में हस्तक्षेप न करने पायेंगे। स्पेन और फ्रान्स दोनों के राजा बड़े शक्तिमान थे और दोनों के पास बड़ी बड़ी सेनायें थीं। एलिज़बेथ के सेना थी ही नहीं। परन्तु वह यह भी जानती थी कि दोनों, जितने उसके बैरी नहीं, उतने एक दूसरे के भी बैरी हैं, और दोनों में से कोई भी न चाहैगा कि दूसरा इंग्लिस्तान को जीत ले। इस से वह दोनों की ओर से निश्चिन्त थी। उसने फ्रान्स के साथ सन्धि करली और अपने घर का काम सम्हालने में लग गई।

२।—<u>एलिज़बेथ और धर्मसंघ</u>—धर्मसंघ के विषय में वह कुछ निश्चय न कर सकी कि क्या करना चाहिये। आधी से अधिक जनता यह चाहती थी कि जैसी उनके बापदादे पूजाप्रार्थना किया करते थे और जैसी रोमन कैथोलिक लोग आजतक करते हैं वैसी ही करते रहैं। कुछ थोड़े से अंगरेज़ ऐसे भी थे जो एडवर्ड षष्ठ के समय की रीतियां फिर से चलाना चाहते थे।

## हेनरी सप्तम की सन्तान का वंशवृक्ष ।
Genealogical table of the descendants of Henry VII.

हेनरी सप्तम—वि, यार्क की इलिज़बेथ
Henry VII. = Elizabeth of York

- मारगरेट—वि, स्काटलैण्ड का जेम्स चतुर्थ
  James IV. = Margaret of Scotland
  - स्काटलैण्ड का जेम्स पञ्चम
    James V. of Scotland
    - मेरी स्काटलैण्ड की रानी
      Mary, Queen of Scots.
- हेनरी अष्टम
  Henry VIII
  - एडवर्ड
    Edward VI.
  - मेरी
    Mary
  - इलिज़बेथ
    Elizabeth
- मेरी—वि, ड्यूक सफ़क
  Mary = Charles Brandon, Duke of Suffolk
  - फ्रेन्सेज़
    Frances
  - हेनरी ग्रे, ड्यूक सफ़क
    Henry Grey, Duke of Suffolk
    - लेडी जेन ग्रे—वि, लार्ड गिलफ़ोर्ड डडली, ड्यूक नार्थम्बरलैण्ड का पुत्र
      Lady Jane Grey = Lord Guilford Dudley son of Duke of Northumborland

परन्तु बहुत से लोग जो प्यूरिटन ( शुद्ध-मार्गी ) कहलाते थे, यूरप महाद्वीप के प्रोटेस्टैण्टों की भांति पूजा प्रार्थना करने में प्रसन्न थे जैसी कि आजकलके डिसेण्टर ( प्रतिवादी ) करते हैं। एलिज़बेथ डर के मारे यह न चाहती थी कि रोमन कैथोलिक या प्यूरिटन अपनी मनमानी कर सकें। उसको शान्ति प्रिय थी, और वह समझती थी कि दोनों में से किसी ने भी सारे गिरजाघरों पर अधिकार कर लिया तो दूसरा दल उनको बल से लेने का प्रयत्न करैगा। परन्तु उसे यह भी अच्छा न लगा कि दोनों दल अपने गिरजा अलग रक्खें जैसा कि आजकल होता है। उसे दोनों में झगड़े की सम्भावना देख पड़ी और उसने यह चाहा कि सब लोग एक ही विधि से पूजा किया करें। उसे यह आशा थी कि एक दूसरे को सताने के बदले कुछ दिनों में दोनों मेल करना सीख लेंगे। संयोग वस पार्लमेण्ट ने भी इसे मान लिया और ईश्वरप्रार्थना पुस्तक जो ऐडवर्ड षष्ठ के शासन में बनी थी कुछ घटा बढ़ाकर गिरजाघरों में पढ़ी जाने लगी। और किसी प्रकार की पूजाप्रार्थना न होने पाई। जिन बिशपलोगों ने मेरी के राज में पोप की आधीनता स्वीकार की थी सब अपने पद से हटा दिये गये और नये बिशप बनाये गये। लोगों के धर्मविश्वास की जांच बन्द हो गई और रोमन कैथोलिक या और कोई सिद्धान्त मानने के लिये दण्ड देने की प्रथा उठा दी गई। परन्तु रानी यह चाहती थी कि सब लोग गिरजाघर जाया करें।

३।—स्काटलैण्ड में धर्मसुधार—एलिज़बेथ की एक प्रतिद्वन्दी स्काटरानी मेरी थी। मेरी परम सुन्दरी और असाधारण बुद्धिमती थी और फ्रान्सराज के साथ उसका विवाह हो चुका था। उसकी अनुपस्थिति में उसकी माता राजप्रतिनिधि के अधिकार से राजकाज देखती थी। बहुत से स्काट प्रोटेस्टैण्ट हो गये और चाहते थे कि उनके देश में रोमन कैथोलिक विधि की पूजा

उठा दी जाय। स्काट सरदारों का भी पादरियों की ज़िमीदारी पर दांत लगा था। इसको रोकने के लिये राजप्रतिनिधि ने फ्रान्स से सिपाही बुलवाये। एलिज़बेथ को यह शंका हुई कि फ्रान्स के सिपाहियों ने स्काटलैण्ड जीत लिया तो इंग्लिस्तान जीतने का भी प्रयत्न करेंगे और उसने स्काटलैण्ड में एक सेना भेज दी जिसने फ्रान्सवालों को मार भगाया। इसके कुछ ही पीछे राजप्रतिनिधि की भी मौत हो गई। मेरी भी बिधवा हो गई और वह राज करने को अपने देश लौट आई। मेरी आप कट्टर रोमन कैथोलिक थी परन्तु प्रोटेस्टैण्टों की संख्या इतनी बढ़ गई थी कि उसने अपनी प्रजा को धर्म के विषय में पूरी स्वतन्त्रता देदी। परन्तु एलिज़बेथ को अपने पड़ोस में रोमन कैथोलिक रानी का रहना बुरा लगा और जब उसने देखा कि स्काटलैण्डवाले अपनी रानी के विरुद्ध धर्मपथ पर चलते हैं तो उसको यह आशा हो गई कि अंगरेज़ों के प्रतिकूल स्काटप्रजा अपनी रानी का साथ न देगी।

४।—स्काटलैण्ड में रानी मेरी—एलिज़बेथ को यही डर न था कि स्काटलैण्ड की रानी रोमन कैथोलिक थी। उसे बड़ा भारी खटका यह था कि मेरी कहीं इंग्लिस्तान के राज पर भी अपना हक़ न जमा दे। वह हेनरी अष्टम की बड़ी बहिन की पोती थी और वह यह कहती थी कि एलिज़बेथ की मा ऐन बुलीन हेनरी की धर्मपत्नी न थी,उसकी बेटी को राज का कोई हक़ नहीं है। इस से जब एलिज़बेथ ने सुना कि मेरी अपने देश में संकट में पड़ गई तो उसे बड़ा सन्तोष हुआ। मेरी ने अपने एक चचेरे भाई लार्ड डार्नली के साथ अपना विवाह कर लिया। डार्नली मूर्ख था। एक दिन जिस घर में वह सोता था वह बारूद से उड़ा दिया गया। डार्नली निकल भागा परन्तु बाग में मार डाला गया। इसको कोई निश्चय से नहीं कह सकता कि मेरी ने डार्नली का बध कराया परन्तु स्काटलैण्ड में सब लोग उसी पर

सन्देह करने लगे। मेरी क़ैद कर ली गई और लाकलीवन गढ़ी में बन्द कर दी गई। परन्तु उसको कुछ सहायक मित्र मिल गये और वह निकल भागी। उसने राज पाने का प्रयत्न किया परन्तु वह हार गई और अपने प्राण बचाने को इंग्लिस्तान पहुंची और एलिज़बेथ से कहलाया कि राज पाने में मेरी सहायता करो।

५।—इंग्लिस्तान में स्काटरानी मेरी—भला एलिज़बेथ उसकी क्यों सहायता करती। उसे यह डर लगा कि कहीं अंगरेज़ी रोमन कैथोलिक उससे न बिगड़ जायं और मेरी को सिंहासन पर बैठा दें। ऐसा समझकर उसने मेरी को क़ैद कर लिया और कभी एक सरदार के गांव की कोठी में और कभी दूसरे की कोठी में रक्खा और इस बात की आज्ञा दी कि भागने न पाये।

६।—उत्तर में बलवा—मेरी को क़ैद कर लेने से एलिज़बेथ को चैन न हुआ। पोप ने उसको बिधर्मी कहकर उसकी प्रजा से कहला भेजा कि उसका शासन न मानैं। बहुतेरे अंगरेज़ सरदार मेरी के पक्षपाती थे। ड्यूक नार्फ़ाक उसके साथ अपना विवाह करके राज के दावे में अपना भी हिस्सा लगाना चाहता था। इंग्लिस्तान के उत्तर में बहुधा लोग, क्या सरदार क्या साधारण जनता, पुरानी धर्मविधि के पक्षपाती थे और हेनरी अष्टम के समय की भांति मठों को फिर से स्थापित करना चाहते थे। इस कारण वहां एक बड़ा बलवा हुआ जिसे उत्तर का विद्रोह कहते थे। बलवाई डरहम के गिरजाघर में घुस गए, बैबिल और प्रार्थना पुस्तक फाड़ डाली और एक पादरी से फिर रोमन कैथोलिक रीति से "मास" पढ़वाई। यही अंतिम वार था जब इंग्लिस्तान के एक पुराने गिरजे में "मास" पढ़ी गई। तौभी अंगरेज़ी रोमन कैथोलिक एलिज़बेथ से लड़ने को राज़ी न हुए और उसकी सेना को बलवा दबाने में कठिनाइ न पड़ी।

उसके स्वभाव में दया थी परन्तु डर के मारे उसने दया करना छोड़ दिया और बहुत से बलवाई निष्ठुरता के साथ फांसी दे दिये गये। थोड़े ही दिन पीछे उसने यह भी सुना उसके बध के लिये एक षड़यन्त्र रचा गया और इस बात की भी चरचा फैली कि मेरी को रानी बनाने के लिये स्पेन से एक सेना भेजी जायगी। उसने यह जान लिया कि नार्फ़ाक सारे भेद जानता है और उसने नार्फ़ाक पर मुक़द्दमा चला कर उसको प्राणदण्ड दिलवाया।

७।—देश में सम्रृद्धि—अंगरेज़लोग जो एलिज़बेथ की सहायता करने को तैयार थे उसका एक कारण यह भी था कि देश सम्रृद्ध हो रहा था। एलिज़बेथ ने अपनी प्रजा को और देशों से लड़ाने भिड़ाने के बदले मेलजोल से रक्खा। इस से व्यापार बहुत बढ़ गया। खेतीबारी भी लोगोंने पहिले से बहुत अच्छी की और लोग अपने ही देश में कपड़ा बनाना सीख गये जिस से उन्हें बाहर से कपड़ा मंगाना न पड़ा। अंगरेज़ी माल जिन नावों पर बाहर भेजा जाता था, आजकल की अपेक्षा बहुत छोटी होती थीं परन्तु मांझी बड़े परिश्रमी थे। इस धन की बढ़ती से सब को कुछ न कुछ मिल गया। भले आदमी भड़कीले कपड़े पहिनने लगे और उनके शरीर चमकीले रंगों के मख़मल और रेशमी कपड़ों से सजे रहते थे। मध्यम श्रेणीवालों को भी इसका अनुभव हो गया। पहिले जो लोग नमक मछली खाते थे अब मांस खाने लगे और हृष्टपुष्ट होगये। मकानों के छतों में धुआं निकलने के लिये पहिले एक छेद

भी इसका अनुभव हो गया। पहिले जो लोग नमक मछली खाते थे अब मांस खाने लगे और हृष्टपुष्ट होगये।

में बन्द करा दिये क्योंकि शीशा बहुत महंगा था और लगे रहने से उसके टूट जाने का डर था। एलिज़बेथ के राज में खिड़कियों में शीशा आम तौर पर लगाया जाता था। जिनके पास शीशा या तकिया मोल लेने को धन न था उनके लिये भी कुछ न कुछ हुआ। पहिले दीन दुखियों या बुड्ढों के लिये जो काम न कर सकते थे गिरजाघरों में कुछ धन जमा रहता था। कुछ दिन पीछे एक क़ानून बना जिसका नाम "ग़रीबों का क़ानून" था, जिसके अनुसार प्रत्येक "पैरिश" * को उन लोगों के अन्न वस्त्र का प्रबंध करना पड़ा जो काम करने को तैयार थे परन्तु उन्हें काम न मिलता था। कोई भूखों न मरने पाता था और जिसका धन चोरी गया हो या धोखा देकर छिन गया है वह यह न कह सकता था कि जीवनयात्रा का कोई और उपाय नहीं है।

८।—स्पेन से बिगाड़—इसी समृद्धि के कारण अंगरेज़लोग एलिज़बेथ को बहुत मानते थे। परन्तु स्पेन से उनका विरोध बढ़ता जाता था। स्पेन का राजा फ़िलिप द्वितीय जिसके साथ इंग्लिस्तान की रानी मेरी का विवाह हुआ था, यूरप के कई देशों का शासक था और लोगों को प्रोटेस्टैण्ट होने से रोकने के लिये जी तोड़ कर परिश्रम करता था। नेदरलैण्ड में उसने इतने मनुष्य जलाये और ऐसे भारी कर लगाये कि उससे कुछ लोग बिगड़ गये और बलवा कर दिया। फ़िलिप के पास वीर योद्धाओं की बड़ी बड़ी सेनाये थीं और उसने बलवा दबाने का बहुत कुछ उद्योग किया। उसके सेनानायक और उसके सिपाही बड़े निठुर थे और जिस नगर को लेते उसके स्त्री पुरुषों को मार डालते थे। परन्तु बलवाई लड़ते ही रहे और कुछ दिनों में डच प्रजातन्त्रराज स्थापित हो गया जिसे फ़िलिप न जीत सका। फ़िलिप की क्रूरता की कहानियां सुन सुन कर अंगरेज़ भी उस से बिगड़ गये।

* पेरिश—इंग्लिस्तान में ज़िले का वह भाग जो एक बड़े पादरी के आधीन है।

कितने अंगरेज़ों के मन में यह समा गया कि जो राजा ऐसे काम करै उसपर चढ़ाई करने में पुण्य है और इस बात को सोच कर प्रसन्न हुये कि जीत गये तो बड़ा लाभ होगा। यूरप में तो उसके अनेक देश थेही अमरीका में भी उसके आधीन बहुत सी धरती थी और इस धरती में सोने और चांदी की खानैं थीं जहांसे हर साल बहुत सा धन जहाज़ों पर लद कर आता था। अंगरेज़ी मांझियों ने फ़िलिप की पर्वाह न की और वेस्ट इंडिया * टापुओं में पहुंचे। ये टापू फ़िलिप के राज में थे और इनमें अंगरेज़ों को व्यापार करने की मनाही थी, तोभी अंगरेज़ न माने। कितने अंगरेज अफ़्रीका में हबशी पकड़ पकड़ कर उनके हाथ बेचते थे और इस व्यापार को अच्छा समझते थे। कभी कभी इनलोगों ने स्पेनी जहाज़ लूट लिये। फ़िलिप उनको पकड़ पाता तो क़ैद कर लेता और कभी कभी उनके साथ बहुत बुरा बर्त्ताव करता क्योंकि यह सब प्रोटेस्टैंट थे। स्पेन के साथ खुल्लम खुल्ला लड़ाई न थी परन्तु अंगरेज़ स्पेनवालों को इतना बुरा मानते थे कि उनका धन इंग्लिस्तान को ले जाना बहुत अच्छा समझते थे। और सारे अंगरेज़ी मांझियों का तो यह विश्वास था कि यूरप में लड़ाई हो या न हो अमरीका में स्पैनवालों को लड़ने में कोई हानि नहीं है। इन मांझी सिपाहियों में एक फ्रान्सिस ड्रेक था। उसकी जन्मभूमि डेवनशायर थी और डेवनशायर के मांझी बड़े बहादुर होते थे। ई० १५८२ में वह नई दुनिया में पहुंचा और पनामा में उतर कर उसने स्पेनवालों की बहुत सी चांदी छीन ली। वहां से लौटते समय उसने शान्त महासागर के दर्शन किये और घुटनों के बल बैठ कर ईश्वर से यह प्रार्थना की किसी दिन ऐसे समुद्र में यात्रा करूं जिसमें कभी कोई अंगरेज़ न गया था।

* वेस्ट इन्डिया का अर्थ है पच्छिमी हिन्दुस्तान; ईन टापुओं के आविष्कार करनेवाले समझे थे कि हम हिन्दुस्तान पहुंच गये।

६।—<u>ड्रेक की जलयात्रा</u>—पांच बरस पीछे ड्रेक फिर प्लिमथ से चला। उसके साथ पांचही छोटे छोटे जहाज़ थे जिसमें सब मिला कर केवल १६४ मांझी थे। जब वह मगेलन जल संयोजक के पास पहुंचा तो उसे उस जोखम-भरी राह को छोड़ कर आगे बढ़ने का कोई उपाय न सूझा। यह मार्ग टेढ़ा मेढ़ा है और इसमें सदा हवा के झोंके आया करते हैं। शान्त




उत्तर और दक्षिन अमरीका।

महासागर में जाने की यही राह थी क्योंकि लोग टेरा डेल फ़ुएगो को उस महाद्वीप का उत्तरी सिरा समझते थे जो दक्षिण ध्रुव तक फैला समझा था। अकेला पेलिकन जहाज़ जिसपर ड्रेक आप सवार था शान्त महासागर में पहुंचा। उसके साथ के चार जहाज़ यातो डूब गये या पीछे ठेल दिये गये। परन्तु ड्रेक का साहस न छूटा। वह जानता था कि सारा चिली और पिरू प्रान्त स्पेन के आधीन है और न किसी को उसके आने की आशा थी न उससे कोई लड़ने को तैयार था। वह वालपरेज़ो के वन्दरगाह में चला गया जहां उसे एक बहुत बड़ा स्पेनी जहाज़ मिला। स्पेनी सिपाहियों को इसका ध्यान भी न था कि वहां कोई अंगरेज़ी जहाज़ पहुंच सकता है और ड्रेक के साथियों को अपने देशी भाई समझ कर उनको खिलाने पिलाने की तैयारी करने लगे। अंगरेज़ी मांझी स्पेनी जहाज़ में घुस पड़े और ४०० पौंड तोल की सोने की गुल्लियां उठा कर पेलिकन में ले गये। वहां से ड्रेक तरपका गया। यहां चह के ऊपर चांदी की ईंटों का ढेर लगा था; उसको उसने अपनी नावों में गिरा लिया। ड्रेक वहां से किनारे किनारे चला और उसको और भी सोना चांदी और रत्न मिलते गये। जब ड्रेक और उसके साथियों को बहुत सा धन मिल गया तो वह उत्तर की ओर बढ़ा। कैलिफ़ोर्निया पहुंचा तो उसे जान पड़ा कि बहुत दूर निकल गये। और वहां से शान्त महासागर पार कर के केप गुड होप होता हुआ अपने घर लौटा। पृथिवी की परिक्रमा करनेवाला वह पहिला अंगरेज़ था। स्पेनवालों ने उसे जल-डाकू माना और एलिज़बेथ से कहा कि इसे हमारे हवाले कर दो या आप इसको दण्ड दो परन्तु एलिज़बेथ को उसके साहस का अभिमान था और उसको सरदार (नैट) बना दिया। तबसे उसका नाम सर फ्रान्सिस ड्रेक पड़ गया।

१० ।—आविष्कार के लिये अंगरेज़ों की जलयात्रा—उन लड़ाई झगड़े के दिनों में भी सारे अंगरेज़ी मांझी लूट मार ही में न लगे थे । हेनरी सप्तम के शासनकाल में कैबट नाम का एक वेनिसवासी इंग्लिस्तान से भेजा गया और उसने लैब्रडार समुद्र-तट का आविष्कार किया । वही पहिला यूरपवासी था जो अमरीका महाद्वीप में उतरा क्योंकि कोलम्बस उससे पहिले वेस्ट इंडिया टापुओं ही तक पहुंचा था । हेनरी अष्टम के समय में न्यू फ़ौगड लैगड के पास उन स्थानों पर अंगरेज़ी मांझी पहुंच गये जहां काड मछली पकड़ी जाती थी । परन्तु साहसियों की एक मात्र चिन्ता यह थी कि हिन्दुस्तान और चीन की सीधी राह निकल आये । मेरी के समय में सर ह्यू विलोबी नार्वे के उत्तर जलयात्रा करने चला । वह समझा था कि इसी राह से धनी देशों में पहुंच जायंगे परन्तु वह अपने साथियों समेत अपने ही जहाज़ में बरफ़ से सीझकर मर गया । उसके साथ एक और जहाज़ था जिसमें उसका साथी चन्सिलर आर्केंजिल पहुंचा और रूस के साथ व्यापार की राह खुल गई क्योंकि उन दिनों वहां न कोई बाल्टिक सागर होकर जा सकता था और न काले सागर ही की राह खुली थी और श्वेत सागर ही सुगम मार्ग था । एलिज़बेथ के राज में कई मांझियों ने हिन्दुस्तान और चीन को "पश्चिमोत्तर मार्ग" से आने का प्रयत्न किया । यह लोग हिन्दुस्तान को वहां समझे थे जहां आजकल अमरीका महाद्वीप का उत्तर खण्ड है क्योंकि कोई लब्रेडार के आगे न गया था । मार्टिन फ़ाबिशर ने उस जलसंयोजक का आविष्कार किया और समझा कि हिन्दुस्तान की राह तो मिलही गई सोने की बड़ी बड़ी खाने भी हाथ लगीं । लोगों को सोना पाने की चिन्ता ऐसी प्रबल थी कि व्यर्थ बहानों से यह मानने को तैयार हो जाते कि मिलाही चाहता है । फ़ाबिशर ने लोगों से पूछा, "तुम कैसे समझे कि तुमको

सोना मिल जायगा"। उन्हों ने उत्तर दिया, "एक बात तो यही है कि हमने बहुत से मकड़े देखे। और मकड़ों का होना सोने के निधान का पूरा लक्षण है"। फ्रावेशर को तो सोना न मिला परन्तु जिस जलसंयोजक का उसने आविष्कार किया वह उसी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसके कुछही बरस पीछे बैफ़िन की खाड़ी को सागर से मिलानेवाले जलसंयोजक को जान डेविस ने ढूंढ़ निकाला और वह डेविस जलसंयोजक कहलाया। रैले के सौतेले भाई सर हम्फ्रे गिलबर्ट ने उस स्थान पर जहां अब संयुक्त राज्यों का उत्तर खंड है एक उपनिवेश बनाने की इच्छा से जलयात्रा की। परन्तु उसके साथी उस से लड़े और आपस में भी झगड़ने लगे और उसे घर लौटना पड़ा। उसका जहाज़ "स्क्वारल" बहुत छोटा था जिसमें केवल पौने तीन सौ मन बोझा लद सकता था। एक बार आंधी आई और उसके साथ का एक जहाज़ इतना पास पहुंच गया कि उसके मांझियों ने उसे स्पष्ट कहते सुना, "अजी स्वर्ग तो जितना समुद्र से दूर है उतना ही थल से भी है"। उस रात उसके साथियों ने "स्क्वारल" के दीपों को तरंगो के ऊपर नाचते देखा। एकायक दीप लुप्त हो गये और न वह वीर बुड्ढा न उसके मांझी फिर देख पड़े। उपनिवेश बसाने के और भी यत्न किये गये। रैले ने आप बहुत से आदमी उस प्रान्त में बसने के लिये भेजे जिसका वर्जिनियां (कुमारी) नाम इस कारण से रक्खा गया कि एलिज़बेथ कुमारी रानी थी। परन्तु वह सब मर गये या उन्हें "लाल इंडियन" लोगों ने मार डाला। और लोग भी गये परन्तु अमरीका में एलिज़बेथ के मरने से पहिले कोई अंगरेज़ी बस्ती जम कर न बसी।

## ॥ अध्याय २१ ॥

### * एलिज़बेथ की विजयकीर्ति *

( १५८०—१५८८ )

१ ।—रोमन कैथोलिक मनादी-करनेवाले पादरी—जिस समय ड्रेक अपनी जलयात्रा से लौटा कुछ भिन्न प्रकार के लोग इंग्लिस्तान में उतरे । एलिज़बेथ को राज करते बीस बरस हो गये थे और जवान स्त्री पुरुष मेरी के समय में 'मास' का पढ़ा जाना भूल गये थे । इससे रोमन कैथोलिक धर्म के माननेवालों को प्रोटेस्टैराटों की संख्या बढ़ती देख कर बड़ा सोच हुआ । इस बात के कुछ विश्वास-करनेवाले बाहर चले गये और इंग्लिस्तान में मनादी-करनेवाले पादरी बन कर फिर लौट आये । एलिज़बेथ बहुत घबड़ा गई । वह जानती थी कि पोप ने उसे इंग्लिस्तान की रानी नहीं माना और उसे यह डर लगा कि इन लोगों ने बहुत से अंगरेज़ों को रोमन कैथोलिक बना दिया तो मुझे सिंहासन से उतार देंगे और कदाचित मार भी डालें । ऐसा सोच समझ कर उसने और उसकी पार्लामैराट ने इन पादरियों के विरुद्ध कड़े क़ानून बनाये । उन क़ानूनों के अनुसार कोई रोमन कैथोलिक पादरी किसी को अपने धर्म में लाता या मासही पढ़ाता तो वह राजद्रोही समझा जाता और मार डाला जाता । प्रोटेस्टैराट लोगों को यह विश्वास था कि जो लोग पोप में रानी को सिंहासन से उतारने का अधिकार मानते हैं वे कभी रानी के भक्तअनुरक्त नहीं हो सकते और उनको इस बात में सन्देह न था कि रोमन कैथोलिक लोगों का यही विश्वास है ।

जो रोमन कैथोलिक पादरी न थे वे भी प्रोटेस्टैएटों के गिरजे में न जाते तो उन्हें बहुत सा धन देना पड़ता और कितने क़ैद कर लिये गये और उनके साथ बड़ा निष्ठुर बर्ताव किया गया।

२।—**थ्रागमार्टन का षड़यंत्र और समाज**—जब बहुत लोग सताये जाते हैं तो उनमें से बहुतेरे अपने सतानेवालों से बदला लेने के लिये बुरा से बुरा काम करने को तैयार रहते हैं। कितने कैथोलिक लोगों ने बड़ी धीरता से अपने संकट सहे परन्तु कुछ ऐसे भी थे जो चाहते थे कि एलिज़बेथ को सिंहासन से उतारकर स्काट-रानी मेरी को इंग्लिस्तान का राज दें। फ्रान्सिस थ्रागमार्टन ने एक ऐसा ही षड़यंत्र रचा परन्तु भेद खुल गया और उसको प्राणदण्ड दिया गया। यह जान पड़ा कि स्पेन के राजदूत को भी यह षड़यंत्र विदित था और एलिज़बेथ ने तुरन्त उसे आज्ञा दी कि राज से निकल जाओ। कामनसभा को भी इस बात की बड़ी चिन्ता थी कि एलिज़बेथ के वध का कोई प्रयत्न न करे। कुछ सभ्यों ने मिलकर एक समाज बनाया जिसका उद्देश्य यह था कि अगर रानी एलिज़बेथ मारी गई तो उसके घातकों के अतिरिक्त वह लोग भी मार डाले जायंगे जिनका उसके मरने से लाभ होगा। इसका अभिप्राय यह था कि एलिज़बेथ मारी गई तो स्काट रानी मेरी भी मार डाली जायगी। उन्होंने यह समझा कि इस समाज के बन जाने से मेरी के मित्र एलिज़बेथ को मार कर मेरी को जोखम में न डालेंगे। यह प्रतिज्ञा जिस काग़ज़ पर लिखी गई वह सारे इंग्लिस्तान में फिराया गया और उस पर बहुत से अंगरेज़ों के हस्ताक्षर थे। अंगरेज़लोगों को गुप्त प्राणघात अच्छा नहीं लगता और थ्रागमार्टन के षड़यंत्र से हज़ारों अंगरेज़ पोप के विरोधी हो गये।

३।—<u>डचलोगों की सहायता</u>—धर्म का वहाना लेकर बध करना केवल इंग्लिस्तान ही में न था। नेदरलैण्डस में जहां डच लोग बड़ी वीरता के साथ फ़िलिप से लड़ रहे थे उनके नायक प्रिंस आरेंज को जिसका परपोता एक दिन इंग्लिस्तान का उद्धार करनेवाला था, एक रोमन कैथोलिक ने मार डाला। उसका पुत्र



रावर्ट डिवरु अर्ल इसेक्स। विलियम सेसिल लार्ड वर्ले। रावर्ट डडली अर्ल लीस्टर।

निरा वालक था, इसलिये एलिज़बेथ ने डचलोगों की सहायता करनेको सेना भेजी परन्तु उनका नायक एक मूर्ख स्वार्थी रावर्ट डडली अर्ल लीस्टर था जिसको वह बहुत चाहती थी। यह डडली उस दुष्ट ड्यूक नार्थम्बरलैण्ड का बेटा था जिसने एडवर्ड षष्ठ के समय में इंग्लिस्तान का शासन किया था। सिपाहियों को तनख्वाह भी नहीं दी गई। इस चढ़ाई में सर फ़िलिप सिडनी की भी जान गई। सिडनी एक नवयुवक था परन्तु गद्य और

पद्य दोनों का प्रसिद्ध लेखक, एक वीर योद्धा और मिलनसार भला मानुस था। जब वह घायल हो गया तो उसकी प्यास बुझाने को एक कटोरे में पानी लाया गया। उसके पास एक साधारण सिपाही कराह रहा था। उसको देखकर सिडनी ने उसे पानी पिला दिया और कहा, "तुमको पानी की आवश्यकता बहुत अधिक है"।

४।—वेस्ट इन्डीज़ में ड्रेक—जिस समय अंगरेज़लोग नेदरलैण्डस में व्यर्थ अपने प्राण खो रहे थे, ड्रेक ज़हाज़ों का एक सुन्दर बेड़ा लेकर वेस्ट इन्डीज़ पहुंचा और सेण्ट डोमिंगो पर आक्रमण करके उसको ले लिया और जब उसे बहुत सा धन दिया गया तब उसको छोड़ा। वहां से वह कर्टेजीना गया और नगरनिवासियों को धमका कर उनसे तीन सौ पौंड ले लिया। उसके जहाज़ में पीला ज्वर फैल गया और वह घर लौट आया। परन्तु उसने स्पेन के राजा को बतला दिया कि बड़ी भारी जलसेना रहने पर भी स्पेन के नगर वीर अंगरेज़ी मांझियों से बच नहीं सकते।

५।—बैविंगटन षड़यंत्र और स्काटरानी का बध—अब अंगरेज़ों को स्पेनराज का डर न रह गया परन्तु उनको ऐसे षड़यंत्रों से बड़ी चिन्ता रही जो रानी के बध के लिये किये जाते थे। जिस साल ड्रेक घर लौटा, एक नया षड़यंत्र रचा गया। एण्टनी बैविंगटन और कुछ और नवयुवक जिनमें से अनेक रानी के सेवक थे और जिनको रानी के पास जाने में कोई बाधा न थी मिल गये और एलिज़बेथ को गुप्तरीति से मारने का उपाय सोचने लगे परन्तु सारा भेद खुल गया और षड़यंत्रियों को प्राणदण्ड दिया गया। उनका अभिप्राय था कि मेरी रानी हो। हज़ारों अंगरेज़ों का यह विश्वास था कि जब तक मेरी जियेगी एलिज़बेथ का सिर जोखिम में रहेगा। उन्हों ने यहांतक कहा कि मेरी की

लिखी हुई चिट्ठियां मिली हैं जिस में उसने इस षड़यंत्र की अनुमति दी है। इसके सच होने में सन्देह है। जो कुछ हो मेरी को नारथैम्प्टनशायर के फादरिंगे नगर में ले गये और वहां अदालती कार्रवाई करके उसका सिर काट लिया गया।

६।—ड्रेक ने स्पेनराज की दाढ़ी जला दी—अब सारे अंगरेज़ एलिज़बेथ के पक्षपाती हो गये थे। उन्हें निरन्तर बधों से घृणा हो गई थी और रानी के बध के उद्योगों से सब के सब रोमधर्मसंघ के विरोधी हो गये थे। अंगरेज़ों का यह भी दृढ़ सङ्कल्प था कि परदेशी आक्रमण से अपने द्वीप को सुरक्षित रक्खें और उनलोगों ने यह भी सुना कि इंग्लिस्तान जीतने और पोप के आधीन करने के लिये फ़िलिप जहाज़ों का एक बहुत बड़ा बेड़ा और बहुत बड़ी सेना भेजने की तैयारी कर रहा है। ई० १५८७ में ड्रेक फिर अपने घर से निकला और उसने यह सुना कि कैडिज़ के बन्दरगाह में एक बहुत बड़ा जहाज़ी बेड़ा इंग्लिस्तान पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा है। वह सीधा बन्दरगाह में घुस गया और स्पेनी तोपों ने उसपर बहुतेरे गोले बरसाये परन्तु उसने रसद के जहाज़ों में आग लगा दी जिसमें बेड़े के लिये सामान धरा था। यहां से वह सेण्ट विन्सेण्ट अन्तरीप का चक्कर करता हुआ पुर्तगाल के किनारे किनारे उत्तर की ओर चला। राह में बैरी के दो जहाज़ मिले, उन्हें जलाता गया। घर पहुंचने पर उसने गर्व से यह कहा कि मैं ने स्पेनराज की दाढ़ी जला दी। उसने यह समझ लिया कि इतने बड़े बेड़े की अब समय पर इतनी बड़ी रसद नहीं मिल सकती कि उस साल इंग्लिस्तान को आसके।

७।—आरमेडा का प्रस्थान—ड्रेक का अनुमान ठीक था और दूसरे साल बहुत बड़ा बेड़ा जिसे स्पेनवाले "अजेय

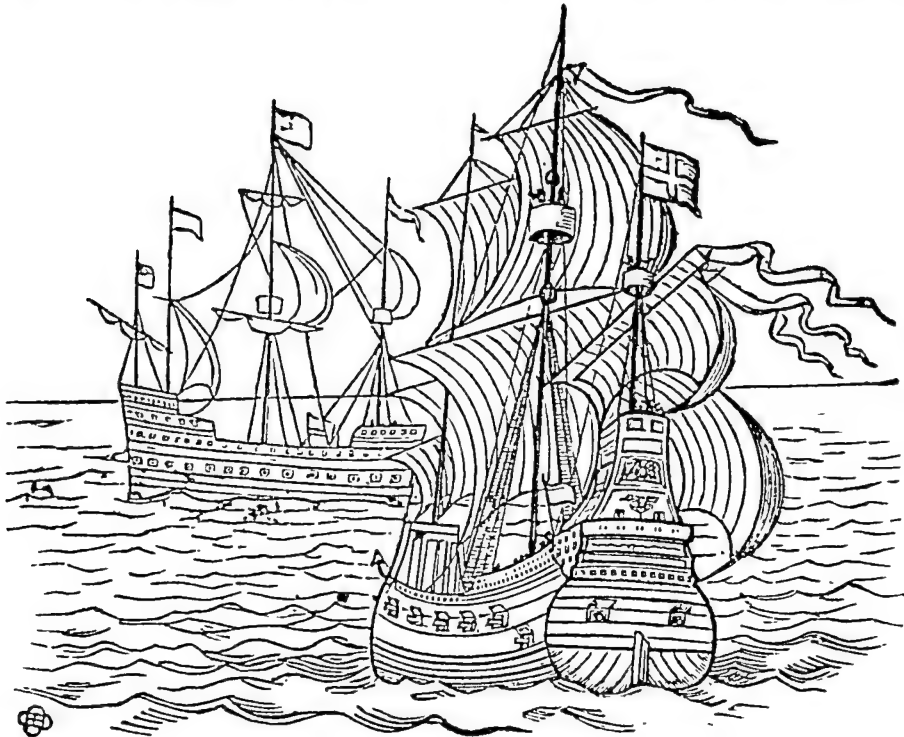
आरमेडा" कहते थे इंग्लिस्तान की ओर बढ़ा। उसका विचार था कि चैनल होकर आगे बढ़े और एक बहुत बड़ी स्पेनी सेना जो फ़िलिप के बड़े सेनापति ड्यूक पार्मा की कमान में फ्लैण्डर्स के समुद्रतट पर खड़ी थी, अपने जहाज़ों पर चढ़ा ले। स्पेनवाले यह समझे थे कि यह सेना इंग्लिस्तान में उतर जाय तो एलिज़बेथ उसके सामने ठहर न सकेगी परन्तु एलिज़बेथ नहीं डरी। उसके पास न कोई सुसज्जित सेना थी, और न जहाज़ी बेड़ा था, परन्तु उसने यह घोषणा दी कि जो अंगरेज़ हथियार उठा सके वह अपनी जन्मभूमि की रक्षा के लिये खड़ा हो। इस पर सब तैयार हो गये, क्या कैथोलिक क्या प्रोटेस्टैण्ट। एलिज़बेथ ने किलबरी के स्थान में अपनी सेना का निरीक्षण किया और बोली, "मेरी प्यारी प्रजा, जिन लोगों को हमारी रक्षा की चिन्ता रहती है उन्होंने हम से कहा है कि इस हथियारबन्द भीड़ में धोखा देने वाले भी न निकल आवें परन्तु मैं तुम से सच कहती हूं कि मैं अपनी भक्त अनुरक्त प्रजा पर अविश्वास करके जीना नहीं चाहती। मैं ने सदा अपना आचरण ऐसा रक्खा है कि ईश्वर की कृपा से मेरी रक्षा, मेरा बल, और मेरी कुशल मेरी प्रजा के भक्त हृदयों में है, और यही सोचकर मैं इस समय तुम लोगों के पास आई हूँ कि अपने ईश्वर के लिये, अपने राज के लिये, अपनी प्रजा के लिये, अपनी प्रतिष्ठा के लिये, और अपने कुल के लिये, अपने जीवन को धूल में मिला दूं। मैं जानती हूं कि मेरा शरीर एक बलहीन अबला का है परन्तु मुझमें रानी का हृदय है और वह कौन सी रानी! इंग्लिस्तांन की रानी और पार्मा या स्पेन या यूरप के किसी राजा को मेरे राज पर आक्रमण करना बड़े लज्जा की बात है"। जब एलिज़बेथ ने ऐसी बातें कहीं तो इसमें किसीको आश्चर्य हो सकता है जो उसकी हज़ारों प्रजा उसके लिये और अपने लिये लडने मरने को तैयार हो गई?

स्पेनवालों के प्रस्थान का समाचार सारे देश में पहाड़ियों पर आग जला जला कर फैला दिया गया जिससे यह भी सूचना दी गई कि सब लोग अपने देश के लिये लड़ने को कमर बांधें।

सन्ध्या के रंग लाल सिन्धु था
बेला-तट कुछ काला था।
छई अंधेरी जैसी उस पर
उसका ढंग निराला था॥
सारे इंग्लिस्तान देश में
कभी न देखी ऐसी रात।
कभी न ऐसी होने को है,
हमको है निश्चय यह बात॥
एडिस्टोन से बेरिक तक
औ लिनसे जहं मिल-फ़ोरड जल।
दिन का सा प्रकाश फैला था
दिन का सा था चहलपहल॥
महा कठिन बैरी का आना
गावं गावं बतलाने को।
प्रबल सामना करने को
अंगरेज़ी-तेज जगाने को॥
पूरब पश्चिम सकल देश में
जो जो ऊंचे टीले थे।
क्या मैकेलगिरि क्या बीचीहेड
ज्वाला से चमकीले थे॥
ठांव ठांव पर एक साथ ही
बड़े अलाव जलाये थे।
लूका से अकास के मानो,
उतर देश में आये थे॥

दूर सिंधु ही से वैरी ने
देखी तट पर मनौं जड़ी।
ज़िले ज़िले में दक्खिन के
ज्वाला की मानों एक लड़ी॥

८।—चैनल में आरमेडा—अंगरेज़ी बेड़े का सेनापति एफ़िंघम का लार्ड हावर्ड था। वह थोड़े से सरकारी जहाज़ और बहुत से व्यापारी जहाज़ लिये प्लिमथ में खड़ा था। व्यापारी जहाज़ भी लड़ने को तैयार थे। जब स्पेनी बेड़ा देख पड़ा तो सारंग कटोरों का खेल खेल रहे थे। ड्रेक ने कहा, "खेल बन्द न किया जाय। खेल पूरा करने और स्पेनवालों को मार भगाने के लिये समय बहुत है"। बड़े बड़े स्पेनी जहाज़ अर्द्धचंद्रा-



एलिज़बेथ के समय के जंगी जहाज़।

कार आगे बढ़े। जब सामने आये तो छोटे छोटे अंगरेज़ी जहाज़

उनकी दूनी गति से चल कर आगे निकल जाते और फिर लौट आते। स्पेन के जहाज़ न उनसे हट सकते थे न उन्हें पकड़ सकते थे। आरमेडा के जहाज़ गोले बरसाते और गोले खाते चैनल में बढ़े। उनके गोले अंगरेज़ी सिपाहियों के सिर के उपर से निकल जाते थे। एक स्पेनी जहाज़ बारूद से उड़ा दिया गया और दो तीन पकड़ लिये गये। जो बचे वह आगे चले परन्तु अंगरेज़ों ने उनका पीछा न छोड़ा और भालू के पीछे मधुमक्खियों की भांति उनके साथ लगे रहे। स्पेनवाले कैले के फ्रान्सीसी बन्दरगाह में पहुंचे परन्तु उनको यह विदित हो गया कि इंग्लिस्तान जीतना लड़कों का खेल नहीं है।

९।—उत्तर सागर में आरमेडा—लार्ड हावर्ड और उनके सारंगों ने समझ लिया कि कैले के पास आरमेडा को देर तक रहने देने में कुशल नहीं है। पार्मा अपनी सेना समेत फ्लैण्डर्स में उनकी राह देख रहा था। यद्यपि कुछ डच जहाज़ उनको छेड़ रहे थे परन्तु ज्यों ही आरमेडा डचों को परास्त करने आता, वह बड़ी बड़ी नावों में सवार हो कर पहुंच जाते। इस कारण अंगरेज़ी सारंगों ने निश्चय किया कि आरमेडा फिर दूर भगा दिया जाय। इन लोगों ने अपने आठ जहाज़ लिये उन पर राल पोत दी और रात को ज्वार भाटा के साथ बैरी के बेड़े में बहा दिया। जब यहलोग स्पेनवालों के पास पहुंचे तो अंगरेज़ी नावें पर जो लोग थे उन्हों ने रालपुते जहाज़ों में आग लगा दी और आप नावों में कूद कूद कर भाग खड़े हुए। रात के अंधेरे में एकाएक आग लगती देख कर स्पेनवाले घबड़ा गये और स्पेनी सेना-नायक ड्यूक मेडिना सैडोनिया ने भाग जाने का संकेत किया। माझियों ने तुरन्त लंगरों की लहासें काट दीं और भागे। उसी समय तूफ़ान आया। अंगरेज़ी बेड़े ने उनका पीछा किया और गोले बरसा कर उनको भगाया। स्पेनवालों

के लिये रुकना असम्भव हो गया और जिस तट पर पार्मा की सेना उनकी रक्षा के लिये खड़ी थी वहां न ठहर सकी। हवा न वदल जाती तो सारा बेड़ा हालैण्ड के तट पर नष्ट हो जाता। कई दिनों तक बरावर एक न एक स्पेनी जहाज़ या तो समुद्र तट पर पहुंच जाता या अंगरेज़ी गोलों से छिद जाता। ड्रेक वहुत प्रसन्न था। उसने अपने एक मित्र को चिट्ठी में लिखा, "मुझे यह देख कर वड़ा आनन्द होता है कि दक्खिन की हवा में वैरी उत्तर भागा जाता है। ईश्वर करें हमलोग ड्यूक पार्मा को देखें क्योंकि ईश्वर की कृपा से थोड़ीही देर में हम ड्यूक सैडोनिया को वता देंगे कि तुम्हारे लिये सैंट मेरी पोर्ट में अपने नारंगी के वाग़ में वैठने ही में कुशल है।" वहुत दिन न वीते थे कि ड्रेक ने सव कुछ कर लिया। उसकी वारूद सव चुक गई थी और जव उसने अपनी पालों के वीच में हवा की सन सनाहट सुनी तो वह जान गया कि अव स्पेनवाले अंगरेज़ोंसे भिड़ने का साहस न करेंगे।

१० ।—आरमेडा का विनाश—परन्तु आरमेडा का विनाश मानुषी शक्ति से ऐसा न हुआ जितना दैवी घटना से। तूफ़ान उसको वहुत दूर उत्तर उड़ा ले गया। स्पेन से डेढ़ सौ जहाज़ चले थे इनमें जव अंगरेज़ों ने इनका पीछा छोड़ दिया, एक सौ बीस वचे थे परन्तु उनकी भी वुरी गति थी। रसद घट रही थी और वहुतेरे सैनिक वीमार थे और मर रहे थे। गोले और तूफ़ान से पालें फट गईं थीं और मस्तूलों के टुकड़े उड़ गये थे। अन्त को यह वेड़ा अर्कनीज़ का चक्कर करता हुआ स्काटलैण्ड और आयरलैण्ड की परिक्रमा करता घर लौट जाने का उद्योग करने लगा। एक जहाज़ मलद्वीप के पास टकरा कर चूर चूर हो गया। टापू के रहनेवाले उन दिनों जङ्गली थे। उन्हों ने जहाज़ में आग लगा दी और माझियों समेत भस्म कर दिया। वचे बचाये जहाज़ ऐरलैण्ड के पश्चिम समुद्र-तट पर पहुंचे; इनमें

से कितने अटलाण्टिक के तरङ्ग के झोकों में पड़ कर ऊंची पहाड़ियों से टकरा कर टूट गये। जो स्पेनवाले थल पर उतरे और अंगरेज़ों को मिले वे तो मार ही डाले ही गये परन्तु जो ऐरलैण्ड-वालों के सामने आये वह भी लूटने के लिये मारे गये। कितने समुद्र में डूब कर मरे। एक अंगरेज़ ने लिखा है, जब मैं स्लैगो में था तो मैंने पांच मील से कुछ लम्बे बेलातट पर ग्यारह सौ लाशें देखीं जिन्हें समुद्र ने थलपर फेंक दिया था। गांववालों ने मुझको बतलाया कि ऐसे ही लाशें और भी पड़ी हैं। रोगी और दुखी नौ हज़ार सैनिक लादे हुए चौवन जहाज़ ज्यों त्यों कर के स्पेन पहुंचे। फ़िलिप के हृदय पर इस हार की बड़ी चोट लगी। वह कई दिन तक अपने कमरे में बन्द पड़ा रहा और किसी से बात न की। जब हारा हुआ जल-सेनापति उसके सामने गया तो उसने उसको बुरा भला न कहा और बोला "हमने तुमको मनुष्यों से लड़ने भेजा था, हवा से नहीं। एलिज़बेथ ने भी कहा, "यह विजय न मेरे कारण हुई न मेरे माझियों की करतूत से।" वह राजसी ठाट के साथ सेण्ट पाल के गिरजाघर को इस विजय के लिये धन्यवाद देने को गई और उसने एक तमग़ा बनवाया उस पर यह खुदा था, "ईश्वर ने अपनी हवा के झोंके से उनको छिन्न भिन्न कर दिया।"

## ॥ अध्याय २२ ॥

### * एलिज़बेथ के शासन के पिछले साल *

### (१५८८—१६०३)

१।—<u>स्पेन के साथ युद्ध का सिलसिला</u>—आर्मेडा के परास्त होने पर एलिज़बेथ ने पन्द्रह बरस और राज किया।

स्पेन अमरीका के साथ न अपने व्यापार की रक्षा कर सका न अपने उपनिवेशों को बचा सका। स्पेन के नगर लूट लिये गये और स्पेन का धन इंग्लिस्तान को पहुंचा दिया गया। स्पेनबासी वीर थे और बहुत लड़े। ड्रेक एक बार वेस्ट इण्डीज़ लूटने गया था। वहीं उसकी मृत्यु हुई।

२।—सर रिचर्ड ग्रेनवील की मृत्यु—सारी लड़ाई में सर रिचर्ड ग्रेनवील बड़ी वीरता से लड़कर मरा। उसका छोटा जहाज़, रिवेञ्ज, अज़ोरेज द्वीप समूह के पास तिर्पन स्पेनी जहाज़ों से घिर गया। इन में कई जहाज़ बहुत बड़े थे। इतने बड़े बेड़े का सामना होतेही उसके पांच साथी भाग खड़े हुये परन्तु ग्रेनविल ने भागना स्वीकार न किया और दुपहर से सन्ध्या तक अकेला लड़ता रहा। अंगरेज़ी महाकवि टेनिसन ने उस लड़ाई का वर्णन ऐसा किया है मानो वह भी उन्ही वीर मांझियों के साथ था। उसका हिन्दी अनुवाद यह है :—

वीता सारा गरमी का दिन
जोति भानु की मन्द हुई।
एक और तिरपन की तोपी
नहीं लड़ाई बन्द हुई॥
एक अकेले ही रिवेञ्ज पर
झपटे पोत एक पर एक।
सारी रात यही लीला थी
ग्रेनविल-धीरज डिगा न नेक॥
इक रिवेञ्ज पर दौड़ दौड़ कर
सबने गोले बरसाये।
लौट गये सब हार मानकर
लोथभरे, मुहं की खाये॥

कितने टूटे कितने डूबे
कितने पोत हुये बेकाम ।
जब से जग की सृष्टि हुई है
हुआ न था ऐसा संग्राम ॥

सारी रात एक अंगरेज़ी जहाज़ जिसमें केवल सौ सिपाही थे तिर्पन स्पेनी जहाज़ों से लड़ता रहा ।

बीती रात मुसकराते से
सूरजदेव निकल आये
टूटे अंग पोत बैरी के
चारों ओर रहे छाये ॥
वैरी की सेना भौचक्की
रही देखती हमें खड़ी ।
सब समझे, जो पास गये
तो फिर वैसी ही मार पड़ी ॥
मन में लगे सोचने देखो
इसका क्या होगा परिणाम ।
सुना न था देखा न किसी ने
ऐसा घोर वीर-संग्राम ॥
जान गये वैरी भी उसदिन
युद्धकला हमको पक्के ।
एक अकेले ही रिवेञ्ज ने
छुड़ा दिये सब के छक्के ॥
घड़ी घड़ी घटता जाता था
तौभी हम लोगों का बल ।
सौ में चालिस लही वीरगति
बचे सो आधे थे घायल ॥

एक ओर से गोले बरसे
होती रही घोर घमसान।
जान तोड़ कर एक ओर से
ली सब न लड़ने की ठान॥
घायल रोगी पड़े नाव में
पीड़ा से चिल्लाते थे।
कौन उठावै कौन खिलावै
सरदी ही वह खाते थे॥
बल्ली बांस गिरे या टूटे
पीपों की बारूद चुकी।
पाल फटीं मस्तूल लपेटे
एक ओर सो रहीं झुकी॥

बेचारा छोटा रिवेञ्ज अब संभल न सका। ग्रेनविल और उसके जितने साथी बचे थे सब घायल हो गये थे। स्पेनवालों ने धावा मार कर जहाज़ पकड़ लिया और ग्रेनविल को अपने एक जहाज़ पर ले गये। मरते समय उसने जो बातें कहीं, ऐसे वीर के योग्य थी, "मैं रिचर्ड ग्रेनविल बड़े प्रसन्न और शान्त मन से मर रहा हूं। मैंने अच्छे सिपाही की मौत पाई और अपने देश, अपनी रानी, अपनी प्रतिष्ठा, और अपने धर्म के लिये लड़ते लड़ते मरा"।

३।—कैडिज़ पर आक्रमण—इसके बाद कैडिज़ को एक सेना भेजी गई। इसके दो नायक थे, एक इफिंघम का लार्ड हावर्ड और दूसरा अर्ल इसेक्स जो इन दिनों रानी का प्रेमपात्र बन गया था। इसेक्स बड़ा साहसी युवक था और उसकी सदा यह लालसा रहती थी कि झटपट कोई बड़ा काम कर डाला जाय और किसी बड़ी लड़ाई में उसका नाम हो जाय। किसी ने कहा कि अब लड़ाई बहुत हो चुकी, स्पेन के साथ संधि हो जाय

तो अच्छा हो। इसपर आप बहुत बिगड़ गये। एक दिन जब वह ऐसी बातें कर रहा था लार्ड बर्ले ने जो एलिज़बेथ का सदा-मन्त्री रहा, बैबिल खोलकर यह वाक्य दिखाया, "खूनी और धोखा देनेवाले अपनी आधी उमर भी न जियेंगे"। उसी बेड़े में एक जहाज़ पर सर वाल्टर रैले था। वह ऐसा चतुर था कि जिस काम में हाथ लगाता उसे कर डालता। जब वह बेड़ा कैडिज़ पहुंचा तो उसने देखा कि सत्तर अस्सी स्पेनी जहाज़ हथियारों से सजे हुये नगर की रक्षा को खड़े हैं। नगर के चारों ओर कोट भी था जिसपर तोपें चढ़ी थीं। अंगरेज़ी बेड़ा झपट कर घुसपड़ा और जितने सारंग थे सब ने यही चाहा कि हमारा जहाज़ सब से आगे चले। स्पेनी घबरा गये और जहाज़वाले सिपाही तीर पर ऐसे कूदे मानो बोरों में से कोयला गिराया जाता है। उनलोगों ने अपने जहाज़ों में आग लगा दी और बात की बात में सारा स्पेनी बेड़ा भस्म हो गया। कैडिज़ नगर ले लिया गया और लूटकर जला दिया गया।

४।—ऐरलैण्ड में इसेक्स—इसेक्स सदा कहा करता था कि मुझे सेनानायक बनाकर कहीं भेजदो। इसबार रानी ने उसे ऐसा काम दिया जो कैडिज़-बिजय से बढ़कर था। ऐरलैण्डद्वीप कभी जीता न गया था। डबलिन के आस पास एक छोटा सा ज़िला अंगरेज़ी शासन में था; और सारे द्वीप में लोग अपनी अपनी राह चलते और अनेक छोटे छोटे सरदार उनका शासन करते थे। एलिज़बेथ को यह शंका थी कि इसे कहीं स्पेनवाले न ले लें और उसने ऐरलैण्ड के सरदारों को जीतने की ठान ली। एक बार उसने उनसे बहुत सी धरती छीन कर अंगरेज़ों को दे दी। ऐरलैण्डवालों को बुरा लगा और आर्मेडा-ध्वस के कई बरस पीछे उन्हों ने एक अंगरेज़ी सेना को हरा दिया। इसपर एलिज़बेथ ने उनके दमन के लिये एक बड़ी सेना इसेक्स

की कमान में भेज दी। इसैक्स देश में इधर उधर फिरता रहा उसके बहुत से सिपाही मारे गये परन्तु उस से कुछ बन न पड़ा। कुछ ही दिनों में ऐसे अवसर पर जब उसको ऐरलैण्ड में रहना उचित था, वह इंग्लिस्तान लौट आया और इस आशा से कि रानी उसका अपराध क्षमा करदेगी वह मैले कपड़े पहिने उसके सामने चला गया। एलिज़बेथ को अपने प्रेमपात्र की यह धृष्टता अच्छी न लगी और उसको आज्ञा दी कि तुम जा कर अपने घर में ठहरो जब तक इस बात की जांच न होजाय कि तुम ऐरलैण्ड से क्यों चले आये। इसैक्स इसपर बिगड़ गया और कुछ घुड़सवार मित्रों को साथ लिये लंदन नगर में घुस आया और कुछ और नगरनिवासियों से कहता फिरा कि मेरी रक्षा के लिये बलवा करदो। नगरनिवासियों ने न माना और इसैक्स राजविद्रोह का अपराधी ठहराकर मारडाला गया।

५।—ऐरलैण्ड-विजय—इसैक्स के लौटने पर एलिज़बेथ ने ऐरलैण्ड जीतने के लिये लार्ड मोंज्वाय को भेजा और उसे सफलता हुई। एलिज़बेथ के शासन के अन्त में सारा ऐरलैण्ड पहिलीही बार अंगरेजों के आधीन हो गया। परन्तु मोंज्वाय ने ऐरलैण्ड देश को अन्न ही चौपट करके जीता था और ऐसा काल पड़ा कि हज़ारों ऐरलैण्डवासी भूखों मर गये।

६।—इजारे—एलिज़ाबेथ के पास धन न था। वह अपनी प्रजा में असन्तोष फैलने के डर से पार्लमेण्ट से कर लगाने को न कहती। परन्तु उसके बहुत से अनुग्रहपात्र थे जिनको पारितोषिक देना चाहती थी और इसका उपाय उसने यह किया कि उनको किसी न किसी वस्तु का इजारा देदिया जिसका अर्थ यह था कि दूसरा कोई उसे न बेच सकै। इसका परिणाम यह हुआ कि इजारेदार बहुत बड़े दाम मांगते थे। इसपर लोग



रानी एलिजबेथ गार्टर के आर्डर का चुग़ा पहिने हुये

बहुत रुष्ट हुये और कामन सभा ने रानी से इजारे बन्द करने की प्रार्थना की। रानी तुरन्त मान गई। उसने जब जाना कि प्रजा ने किसी बात को निश्चय कर लिया है तो कभी हठ न किया। उसने कामन सभा के सभापति से कहा, "तुम मुझे क्या धन्यवाद देते हो, मैं तुम्हारी कृतज्ञ हूं और मैं तुम से कहती हूं कि तुम कामन सभा को भी मेरी ओर से धन्यवाद दो क्योंकि तुम मुझसे न कहते तो मैं सच्ची सूचना न पाने के कारण बड़ी भूल कर बैठती। मैं ने अपने सामने सदा क़यामत का दिन रक्खा है और मैं ऐसा शासन करना चाहती हूं कि मुझे हाकिमों के हाकिम के सामने जवाब न देना पड़े और मैं यही कहूं कि मेरे मन में कभी कोई ऐसा विचार न आया जिसमें मेरी प्रजा का कल्याण न हो।

इस सिंहासन पर वड़े वड़े शान्तिकामी और वड़े वड़े बुद्धिमान राजा वैठे हैं और वैठेंगे परन्तु तुम्हे ऐसा कोई न मिलेगा जो मुझ से वढ़कर तुमको चाहै या जिसको तुम्हारी चिन्ता रहै"।

७।—एलिज़वेथ की मौत—यही अन्तिम वार था जव एलिज़वेथ अपनी प्रजा से वोली थी। ई० १६०३ में एलिज़वेथ पैंतालीस वरस राज करके परलोक सिधारी। उसमे अनेक दोष होने पर भी इंग्लिस्तान के शासकों में उसका पद वहुत ऊंचा है। जव वह सिंहासन पर वैठी तो इंग्लिस्तान आपस की फूट से निवल हो रहा था और उसके मरते समय देश में मेल था और अंगरेज़ शक्तिमान हो गये थे और उनको अपने देश का अभिमान था। उस समय की घटनाओं पर विचार करने से यह सिद्ध होता है कि स्पेन से वदला लेने में अंगरेज़ों ने क्रूरता और निष्ठुरता की तो उन के विजय से संसार का मंगल हो गया। स्पेन में अत्याचार था जहां राजा या धर्मसंघ के विरुद्ध वोलने-वाले की जीभ काटी जाती थी। इंग्लिस्तान में भी उस समय उतनी स्वतंत्रता न थी जितनी अव है; तो भी यूरप के और देशों की अपेक्षा वहुत स्वतंत्रता थी। यहां जो राजविप्लव न चाहता तो जो उसके जी में आता कह सकता था। एलिज़वेथ के शासनकाल के अन्त में इंग्लिस्तान में वड़े वड़े लेखक और वड़े वड़े कवि हो गये। इन में शेक्सपियर सव से वड़ा था। उसने ऐसी वात कही जिससे अंगरेज़ों ने अपनी रानी की भक्ति अनुरक्ति के साथ साथ मेल जोल में अपना कल्याण समझा। उसके वाक्य का अनुवाद यह हैं:—

हुआ कभी होगा नहीं मानी इंग्लिस्तान।
विजयी के पद से दलित जव लगि तन में प्रान॥
हनै छुरी निज पेट में जो अपने ही हाथ।
तो है है सन्देह विन इंग्लिस्तान अनाथ॥

# * दूसरा युग *

---

## ॥ अध्याय २३ ॥

### * जेम्स प्रथम और कामन्स सभा *

(१६०३—१६१४)

१।—जेम्स प्रथम का सिंहासन पर बैठना—एलिज़बेथ के बाद जेम्स प्रथम इंगलैण्ड का राजा हुआ। जेम्स स्काटलैण्ड से आया था। यह आठवें हेनरी की सबसे बड़ी वहन का पोता और स्काटलैण्ड की उसी रानी मेरी का बेटा था, जिसका फ़ोदरिंगे में वध किया गया था। यह पहिला समय था जबकि इंग्लैण्ड और स्काटलैण्ड एकही राजा के आधीन हुए, यद्यपि बहुत दिनों तक दोनों देशों की पार्लामेण्टें जुदी जुदी थीं और दोनों देश अपने अपने क़ानून वर्त्तते थे।

२।—हैम्पटन कोर्ट कान्फ़रेन्स—बहुत से लोग यह समझते थे कि एलिज़बेथ के बाद जो नया राजा होगा वह बहुत से ऐसे नये काम करैगा जिन्हें एलिज़बेथ करना न चाहती थी। इन लोगों में जो प्युरिटन धर्म के थे वे इस विचार में थे कि नया राजा हमारे हित के लिये कुछ अवश्य करैगा। यह लोग इंग्लिस्तान के धर्म-संघ से भिन्न अपना अलग धर्मसंघ बनाना नहीं चाहते थे। इन लोगों में जो पादरी थे वे पूजा प्रार्थना के उन स्थानों को त्याग देना चाहते थे जिनका प्रयोग अनुचित समझते थे। ये बच्चों के बपतीसमा होने के समय एक प्रकार का वस्त्र जिसे सर्प्लिस (Surplice) कहते हैं, पहिनना और क्रास का चिह्न बनाना व्यर्थ मानते

थे, और न ये विवाह के समय स्त्री को अंगूठी पहिनाना चाहते थे क्योंकि ये इन बातों को भी व्यर्थ मानते थे। इनके अतिरिक्त ये लोग ईसाइयों की प्रार्थना-पुस्तक में भी कुछ परिवर्तन कराना चाहते थे। जेम्स ने कुछ आदमियों और लाट पादरियों को हैम्पटन कोर्ट में बातचीत करने के लिये बुलाया। वास्तव में जेम्स



जेम्स प्रथम।

इनकी बातों को सुनना चाहता था। परन्तु जेम्स उन लोगों की बातों को जो उससे मतभेद रखते थे सहन नहीं कर सकता था और ऐसे लोगों को वह मूर्ख समझता था। इसलिये इस बुलाने का यह परिणाम हुआ कि वह प्युरिटन लोगों से रुष्ट हो गया और उसने उनको सहायता देना स्वीकार न किया। इस कान्फ़रेन्स से केवल एक अच्छी बात यह हुई कि बैइबिल के एक नया अनुवाद किये जाने की आज्ञा दी गई जिसमें सारी अशुद्धियां जो पहिले अनुवादों में थी, ठीक कर दी गई। यह अनुवाद कई वर्षों में समाप्त हुआ। यही अनुवाद आजकल अधिकतर इंग्लैण्ड में प्रचलित है।

३ ।—जेम्स और कामन सभा—जब पार्लामेण्ट की बैठक हुई तब कामन सभा के सदस्यों ने जेम्स के कामों से असन्तोष प्रकट किया । इन्हों ने देखा कि पादरी अच्छे उपदेश देने के लिये काफ़ी संख्या में नहीं मिल सकते और यह विचारा कि ऐसी दशा में यह अच्छा होगा कि सारे पादरियों को उपदेश करने की आज्ञा दे दी जाय और इस बात का कुछ विचार न किया जाय कि ये अपने सर्प्लिस पहिनते या नहीं पहिनते । इससे यह ज्ञात होता है कि कामन सभा के सदस्यों की जेम्स से बनती न थी । और ये इससे उस समय जबकि उसने इनसे रुपया मांगा अप्रसन्न भी हो गये । एलिज़बेथ रुपये को बड़ी किफ़ायत के साथ ख़र्च करती थी । उसके ख़र्च को देख कर यह भी कहा जा सकता है कि वह कंजूस थी परन्तु जेम्स ने, जो एक ग़रीब देश स्काटलैण्ड से आया था, इंग्लैण्ड में आकर इस विचार में कि अब मैं इंग्लैण्ड का राजा बन कर धनी हो गया, अपने स्काटलैण्डवालों को जागीरें और धन देना आरम्भ कर दिया । उसे यह जल्द मालूम हो गया कि इंग्लैण्ड में जहां आमदनी अधिक है वहां उसके साथ साथ ख़र्च भी अधिक है और यदि कामन सभा रुपये का प्रबन्ध न करेगी तो उसे क़र्ज़ लेना पड़ेगा । इधर जेम्स की यह अवस्था थी उधर कामन सभा के सदस्य इस बात पर तुले हुए थे कि जबतक जेम्स हमारी बात न मानेगा तबतक हम उसे रुपया न देंगे । बस इस प्रकार सदस्यों और जेम्स में मतभेद था ।

४ ।—गनपाउडर षड़यंत्र—कैथोलिकों के साथ प्युरिटनों से भी अधिक बुरा बर्त्ताव हुआ । जेम्स ने इन लोगों को यह वचन दिया कि यदि आप लोग कोई उपद्रव न करेंगे तो आपलोगों को जो क़ानूनी जुर्माना देना पड़ रहा है उसे हटा लिया जायगा । परन्तु उसने अपने इस वचन को थोड़े दिनों के बाद तोड़ दिया ।

इनमें से एक केट्स्बी था। उसने यह विचार किया कि पार्लामेण्ट की बैठक होने पर जब लार्डस और कामन्स राजा के भाषण को सुनने के लिये आयें तब इन सब को गनपाउडर (बारूद) से उड़ा दिया जाय; बस इस प्रकार जेम्स और वह लोग सज़ा पा जायंगे जिन्हों ने उन नियमों के बदलने से इनकार किया था जिनके द्वारा कैथोलिक लोग सताये जा रहे हैं। इसके साथ साथ केटस्बी की यह भी आशा थी कि जेम्स के साथ जेम्स के पुत्र भी मर जायंगे और तब वह जेम्स की छोटी पुत्री को जो वारविक में शिक्षा पा रही थी, ले आयेगा और उसे कैथोलिक रानी की तरह शिक्षा देगा। यदि केटस्बी को सफलता प्राप्त हो जाती



बारूद के षड़यन्त्री।

तो वह जेम्स की पुत्री के पास पहुंचने से पहिले ही मार डाला जाता। परन्तु उसने अत्यन्त क्रोध के वेग में आकर इस षड़-यंत्र के काम को स्वयं बिल्कुल ही त्याग दिया और इसको पूरा करने के लिये कुछ और कैथोलिकों को तैयार कर दिया। इनमें

से एक गुइडो फ़ाक्स था जो अब सर्व साधारण में गुई फ़ाक्स के नाम से प्रसिद्ध है। इनलोगों ने उस मकान के पास जिसमें पार्लमेण्ट की बैठक होनेवाली थी एक मकान किराये पर लिया। इस मकान की उस दीवार में एक छेद किया जो पार्लमेण्ट के मकान से मिली हुई थी। यह पार्लमेण्ट के मकान के उस स्थान के नीचे गोला बारूद पहुंचाने के लिये किया गया था जहां राजा के बैठने की जगह थी। यह लोग ऐसे कठिन काज करने में अभ्यस्त न थे और काम को जिस प्रकार से कर रहे थे उससे इन्हें निराशा थी। एक दिन एकायक इन्हें कुछ खड़खड़ाहट सुनाई दी। इसको सुन कर एक इनमें से वहां गया जहां से यह खड़खड़ाहट का शब्द आ रहा था और उसने देखा कि एक स्त्री तहख़ाने में से कोयला निकाल रही है, और यह किराये पर दिये जाने को ख़ाली किया जा रहा है। यह तहख़ाना उस कमरे के ठीक नीचे था जिसमें पार्लमेण्ट की बैठक होनेवाली थी, इसलिये इन्हों ने इसे किराये पर ले लिया। अब इन्हें दीवार में छेद करने की कोई आवश्यकता न रही। बस इस तहख़ाने में बारूद भर दी गयी और उसे ऊपर से लकड़ियों से ढक दिया।

५।—षड़यंत्र का भेद खुल गया—षड़यंत्र-कारियों का इतने धन से जितना उन्हें मिला था काम नहीं चल सकता था। उन्हें और रुपये की आवश्यकता थी। उन्हें घोड़े और कवच ख़रीदने थे, क्योंकि उनको पूरी तैयारी के साथ जेम्स की पुत्री को अपने अधिकार में कर लेने के लिये जाना था। इस लिये रुपया पाने की आशा में कुछ धनवान् आदमियों को अपना भेद बतला दिया। इन धनवान आदमियों में से एक का बहनोई लार्ड-सभा में था। उसने अपने बहनोई को बचाने के अभिप्राय से उसे षड़यंत्र का सब हाल बतला दिया जिसकी सूचना अन्त में

राजा को भी मिल गई। जिस रात को पार्लामेण्ट की वैठक होनेवाली थी उस रात को गुई फ़ाक्स वैठक के समय से पहिले ही तहख़ाने में आग देने को तैयार रहने के लिये जा पहुंचा। आग लगाने का समय प्रातःकाल रक्खा गया था। राजा को षड़यंत्र की सूचना पहिले मिल ही चुकी थी, इसलिये गुई फ़ाक्स पकड़ा गया और उसके साथीलोग गांव की ओर भाग गये। इन में से कुछ का वहीं वध कर दिया गया और कुछ पकड़ कर लाये गये और इन्हें मृत्युदण्ड दिया गया।

६।—ऐरलेण्ड और अंगरेज़ी शासन—ऐरलैण्ड का देश पहिले पहिल पूर्णरूपसे अंगरेज़ी शासन में एलिज़बेथ के राज्यकाल के अन्त में आया। कुछ वरसों तक अंगरेज़ों का व्यवहार ऐरलैण्ड के निवासियों के साथ वहुत अच्छा रहा। जो ऐरलैण्डनिवासी शान्तिपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करना चाहते थे उनको ज़मीनें दी गईं और जो सिवाय लड़ाई के काम के और दूसरा काम नहीं कर सकते थे वहलोग विदेशों में युद्ध करने के लिये भेजे गये। ऐरलैण्ड के सरदारलोग जो अंगरेज़ों की विजय के पूर्व, देश पर राज करते थे उनको अपने देश में अंगरेज़ों का इतना भारी अधिकार देखना पसन्द न था। और जहां वे अपना मनमानी करते थे, वहां उन्हें अंगरेज़ों का फ़ैसला देखना अच्छा नहीं लगता था। इनमें से टाइरन के सरदार ओनील का झगड़ा एक ऐरलैण्ड के निवासी से हो गया। इस सरदार को मुक़द्दमे के लिये अंगरेज़ गवर्नर ने जिसे इंग्लैण्ड के राजा ने नियुक्त किया था डवलिन वुलाया। यहां पर सरदार ने गवर्नर के साथ ऐसा वुरा व्यवहार दिखलाया कि उसे आज्ञा हुई कि वह अपने इस दुर्व्यवहार का उत्तर इंगलैण्ड में जाकर दे। इस पर सरदार वहुत डर गया। उसने सोचा कि यदि मैं इंग्लैण्ड गया तो फिर अपने देश न आ सकूंगा; इस लिये वह डर कर एक दूसरे सरदार के साथ स्पेन को चला गया।

७।—अलस्टर का उपनिवेश—ये दो सरदार जो भाग कर स्पेन को चले गये थे ६ जिलों के ज़मींदार थे। ये ज़िले अलस्टर प्रान्त में थे। चिचेस्टर ने इन ज़िलों के सम्बन्ध में यह सलाह दी कि इन ज़िलों की ज़मीन इनके निवासियों को दे दी जाय और जो ज़मीन बच रहे वह उनलोगों को दे दी जाय जो ऐरलैण्ड में इंग्लैण्ड और स्काटलैण्ड से जाकर बसे थे। इंग्लिस्तान की सरकार को यह सलाह पसन्द नहीं आई। उन ज़िलों में जो अच्छी ज़मीन थी वह तो इंग्लिस्तान और स्काटलैण्ड के लोगों को दी गई और जो ख़राब ज़मीन बच रही वह वहां-वालों को दे दी गई। ये नये निवासी ऐरलैण्डवालों से अधिक परिश्रमी थे। इन्हों ने ज़मीन को बहुत जल्द उपजाऊ बना लिया। परन्तु ऐरलैण्ड के लोगों के साथ जो बर्ताव हुआ था वह बहुत बुरा था। वे इस बर्ताव को कभी भूल न सकते थे।

८।—बड़ा मुआहिदा और चुंगी—इन आपत्तियों के कारण ऐरलैण्ड में पहिले से अधिक सेना रखना आवश्यक हो गया। इस अधिक सेना के रखने के कारण जेम्स और भी अधिक ऋणी हो गया। इसलिये ई० १६१० में उसने पार्लामेण्ट की मंजूरी के लिये एक योजना उपस्थित की जो बड़े मुआहिदे के नाम से प्रसिद्ध है। इस योजना में यह कहा गया कि यदि पार्लामेण्ट राजा को रुपया दे देगी तो वह उन सब सरकारी नियमों को रद्द कर देगा जिनको प्रजा भार समझती है। कामन्स सभा ने एक बड़े महत्व पूर्ण प्रश्न के सम्बन्ध में राजा से दबने के लिये कहा। मामला यह था कि जेम्स ने रुपया पाने के अभिप्राय से इंग्लिस्तान के दरामद बरामद माल पर उन करों के अतिरिक्त जिन्हें पार्लामेण्ट ने लगाया था एक और नया कर लगा दिया था। इस कर को राजा ने स्वयं लगाया था इस लिये यह

राजकर कहलाता था। इस सम्बन्ध में जज लोगों का यह कहना था कि राजा को इस प्रकार का कर लगाने का अधिकार है और कामन्स सभा इसका विरोध करती थी। बड़े मुआहिदे और राजकर के विषय में राजा और पार्लामेण्ट में समझौता हो चुका था परन्तु अन्त में अनबन हो गई। पार्लामेण्ट जितना रुपया देना चाहती थी जेम्स उससे अधिक मांगता था। जब उसकी मांग पूरी न हुई तब उसने क्रोध में आकर पार्लामेण्ट उठा दी।

६।—ऐडल्ड पार्लामेण्ट—जेम्स को एक और पार्लामेण्ट बुलानी ही पड़ी परन्तु राजकर के विषय में इस पार्लामेण्ट ने भी वैसा ही मत प्रकट किया जैसा कि पहिली पार्लामेण्ट ने किया था। कुछ सप्ताहों के बाद ही राजा ने इस पार्लामेण्ट को भी बरख़ास्त कर दिया। यह पार्लामेण्ट ऐडल्ड पार्लामेण्ट के नाम से प्रसिद्ध है क्योंकि वह एक भी क़ानून न बना सकी थी।

## ॥ अध्याय २४ ॥

### * जेम्स प्रथम और स्पेन *

(१६१४—१६२५)

१।—जेम्स के अनुग्रहपात्र—जेम्स का पार्लामेण्ट से इस कारण झगड़ा हो गया कि वह हरएक बात अपनी मनमानी करना चाहता था, और उन बातों की परवाह न करता था जिनको उसकी प्रजा चाहती थी। शासन-सम्बन्धी बातों में भी वह किसी का मत लेना नहीं पसन्द करता था। वह केवल एक ऐसे नवयुवक को अपने पास रखना अच्छा समझता था जो चतुर होता था और उसे प्रसन्न रखता था और जो अपनी इच्छा की कुछ भी परवा

न करके उसकी इच्छानुसार हर बात करने के लिये तैयार रहता था। पहिला आदमी जिसको जेम्स ने इस काम के लिये पसन्द किया वह एक स्काटलैण्ड का निवासी था। उसका नाम रोबर्ट कार था। उसको जेम्स ने सोमरसेट का अर्ल बनाया। कुछ दिनों बाद यह नया अर्ल बध करने का अपराधी ठहराया गया। यद्यपि यह पूर्ण रूप से निश्चय नहीं है कि रोबर्ट कार ने उस बध को किया परन्तु इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि उसकी स्त्री ने उस पाप कर्म के करने के लिये उपाय बतलाया था। रोबर्ट कार और उसकी स्त्री पर मुक़द्दमा चलाया गया जिसमें उन दोनो को प्राण-दण्ड दिया गया। यद्यपि जेम्स ने उनका अपराध क्षमा कर दिया था परन्तु वे फिर राज दरबार के पास कभी न आये। जेम्स का दूसरा अनुग्रहपात्र जार्ज विलियर्स था जिसे उसने बहुत जल्द लार्ड बकिंघम बना दिया और कुछ बरसों के बाद बकिंघम का ड्यूक बना दिया। यह एक प्रसन्नचित्त नवयुवक था। इसे नाचने और घोड़े की सवारी का बड़ा शौक़ था। यह राजा को अपनी बातचीत से प्रसन्न रखने में समर्थ था। जेम्स ने एक बहुत बड़ी ज़मींदारी इसको दी जिसके कारण यह बड़ा धनी हो गया। जब यह पहिले पहिल दरबार में आया तब यह इतना ग़रीब था कि इसे अपने पद के योग्य कपड़े बनवाने के लिये रूपया उधार लेना पड़ा था। कोई आदमी तब तक किसी पद पर नियुक्त नहीं किया जा सकता था जबतक कि वह पहिले बकिंघम के पास उसकी कृपा की भिक्षा मांगने न आता था। यह आरम्भ में दयालु और प्रियवादी था परन्तु पीछे से अभिमानी हो गया और जो इसके साथ बहुत मान प्रतिष्ठा के साथ बर्त्ताव नहीं करते थे उनसे बुरी तरह से बातचीत करने लगा। यह राजा के लिये बहुत बुरा हुआ क्योंकि जो लोग राजा को उचित परामर्श देने के योग्य थे वे इस बकिंघम के सामने झुकना नहीं चाहते थे।

२ ।—स्पेन के साथ विवाह की सन्धि—जेम्स यह जानता था कि यदि मैं किसी और दूसरे उपाय से रुपया प्राप्त न कर सकूंगा तो मुझे लाचार हो कर एक दूसरी पार्लमेण्ट बुलानी पड़ेगी। एक उपाय उसके पास रुपया पाने का यह था कि वह अपने पुत्र चार्ल्स का विवाह स्पेन के राजा तृतीय फ़िलिप की पुत्री मेराया के साथ कर दे। मेराया इनफ़ैण्टा के नाम से प्रसिद्ध थी। इनफ़ैण्टा की उपाधि स्पेन में राजपुत्री को दी जाती है। फ़िलिप ने विवाह के समय बहुत धन देने का बचन दिया परन्तु साथ ही साथ उसने यह भी कहा कि इंग्लिस्तान में कैथोलिक पंथ के अनुयायियों को अपनी विधि के अनुसार पूजा पाठ करने की आज्ञा दे दी जाय और उनको इसके लिये कोई दण्ड न दिया जाय। अंगरेज़लोग बारूद षड़यंत्र (गन पाउडर प्लाट) के कारण कैथोलिकों से इतने बिगड़े बैठे थे कि यदि जेम्स ऐसा करना भी चाहता तौभी न कर सकता। यद्यपि कुछ दिनों से विवाह के सम्बन्ध में बातचीत हो रही थी परन्तु यह सम्भव नहीं जान पड़ता था कि विवाह वास्तव में हो ही जायगा। अंगरेज़लोग इस बात को विलकुल नहीं चाहते थे कि हमारे राजा और स्पेन के राजा में मित्रता हो जाय क्योंकि इन्हों में एलिज़बेथ के विरुद्ध जो किया गया था उसके लिये स्पेन को क्षमा नहीं किया था और अंगरेज़लोगों का यह भी ख़याल था कि यदि स्पेन के राजा का हमारे राजा के साथ मेल हो जायगा तो वह अपने पिता द्वितीय फ़िलिप की भांति इंग्लिस्तान के राज-काज में हस्तक्षेप करने के लिये उद्यत रहेगा।

३ ।—रैले की समुद्र यात्रा—उन अंगरेज़ों में से जो स्पेन से अत्यन्त घृणा करते थे एक सर वाल्टर रैले था। जेम्स के शासन-काल के आरम्भ में इस पर एक ऐसा दोष लगाया गया जिसका यह दोषी न था, और इसको मृत्यु दण्ड की आज्ञा हो गई।

परन्तु जेम्स ने इसको मृत्युदण्ड देने के बदले कारागार में रक्खा। इसने कारागार में से यह कहलवाया कि यदि राजा मुझे मुक्त कर दे तो मैं दक्षिणी अमरीका में ओरिनोको नदी के पास जो सोने की खान है वहां जाऊं और वहां से बहुत सा सोना लेकर आऊं। जेम्स को सोने की आवश्यकता थी। उसने रैले को कारागार से मुक्त कर दिया और उससे कहा कि तुम उन स्थानों में कभी न जाना जो स्पेन के अधिकार में है और यदि ऐसा होगा तो बिना किसी प्रकार का नया मुक़द्दमा किये ही प्राणदण्ड दे दिया जायगा क्योंकि यह दण्ड पहिले ही से दिया जा चुका है। रैले ने दक्षिणी अमरिका के लिये समुद्र-यात्रा आरम्भ कर दी और वह ओरिनोको नदी के मुहाने पर जा पहुंचा। वहां यह प्रबन्ध किया गया कि कुछ जहाज़ तो नदी के मार्ग से खान की खोज में अन्दर जायं और जो शेष रहें वे यहीं मुहाने पर खड़े हो कर स्पेनवालों के जहाज़ों को अन्दर जाने से रोकते रहें। रैले जब तक मुहाने की रक्षा करने के लिये न ठहरे तबतक कोई मल्लाह अन्दर जाने के लिये तैयार न होता था। उनका कहना था कि हमारा यह विश्वास और किसी पर नहीं होता कि आपत्ति आने पर वह वहां से न हटेगा। इसलिये रैले ने लाचार होकर खान की खोज का काम अपने एक लड़के और एक मित्र कप्तान केमिस के सुपुर्द किया। केमिस जब उस स्थान के समीप पहुंचा जहां खान थी तो उसने देखा कि वहां पर नदी के किनारे स्पेनवालों का एक गांव आबाद है जिसका उसे ध्यान तक न था। उसने वहांपर अपने आदमियों को उतार दिया और उस गांववालों से थोड़ी देर युद्ध हुआ। अन्त में उन्हों ने उस गांव में प्रवेश किया, यद्यपि स्पेनवालों को गांव से बाहर निकालने के लिये उन्हें गांव में आग लगाने के लिये लाचार होना पड़ा। रैले का लड़का युद्ध में गोली खाकर मर गया। उसके साथ लोग उस स्थान तक जहां

स्थान थी न पहुंच सके। जब अंगरेज़ लोग आगे बढ़ने की चेष्टा करते थे तब स्पेननिवासी जो जंगल में जाकर छिप गये थे वृक्षों की आड़ में से उनपर गोली चलाते थे। दुखित होकर कप्तान केमिस को लाचार अपने आदमियों को नावों में सवार करके नदी के मुहाने की ओर चलना पड़ा। रैले को अपने मित्र कप्तान केमिस से यह विदित होगया कि अब सफलता और जीवन की आशा करना व्यर्थ है। रैले को इस पर बड़ा क्रोध आया। उसने सब दोष बेचारे केमिस के मत्थे मढ़ा जिसने अपनी भरसक कोशिश की थी। केमिस से उसने कहा देखो राजा को तुम स्वयं सन्तुष्ट करना क्योंकि तुमने अपनी मनमानी की है। मैं यह नहीं कर सकता। वह वृद्ध मांझी इस अनुचित अपमान को सहन न कर सका। वह वहां से उठकर अपने कमरे को गया और वहांपर अपने पेट में छुरी भोंक ली। एक लड़के ने आधे घण्टे के बाद किवाड़ खोला तो केमिस को मरा हुआ पाया।

४।—रैले का लौटना और वध—इस विफलता के उपरान्त रैले ने सब से पहिली बात यह सोची कि बेड़े के कप्तानों को स्पेनवालों के कुछ जहाज़ों पर राजा के लिये सोना या चांदी लेजाने के अभिप्राय से आक्रमण करने के लिये तैयार किया जाय। कप्तानों ने इसको जलडकैती समझा और रैले से कहा कि हमको ऐसा करके फांसी पर नहीं लटकना है। रैले को इंग्लिस्तान लौटना पड़ा। यहां आने पर वह पकड़ करके कारागार में डाल दिया गया। इंग्लिस्तान में लोग स्पेननिवासियों से इतनी अधिक घृणा रखते थे कि जेम्स को जनता के सन्मुख रैले को अपना बयान देने की आज्ञा देने का साहस न हुआ। इंग्लिस्तान का हर एक आदमी उस साहसी माझी की प्रशंसा करने के लिये तयार था जिसने स्पेननिवासियों के अतिरिक्त और किसी को

नहीं सताया था। रैले इस समय इंग्लिस्तान में सब से अधिक लोकप्रिय था। वह फांसीके चबूतरे पर आनन्द के साथ चढ़ा। उस समय बड़ी भीड़ थी। उसने अपने एक मित्र को बड़ी कठिनाई के साथ भीड़ को चीरकर आते हुये देखा। रैले ने पुकार कर कहा कि मैं यह नहीं समझता कि तुम आगे आकर क्या परिवर्तन करोगे। जब वह अपना सर ठेहे पर रखने के लिये घुटनों के बल बैठ गया तब किसी ने कहा कि मुख पूर्व दिशा की ओर होना चाहिये। रैले ने इसके उत्तर में कहा हृदय ठीक रहना चाहिये, इस से कुछ मतलब नहीं कि सर किस ओर जाकर पड़े। बस इसके बाद गड़ासी उसकी गर्दन पर पड़ी और सदा के लिये उसका बोल बन्द हो गया।

५।—जेम्स और तीस बरस का युद्ध—इस समय जर्मन देश में एक युद्ध जारी हो गया। यह युद्ध तीस बरस का युद्ध कहलाता है। इस युद्ध में जर्मन देश के कैथोलिक राजा एक ओर थे और प्रोटेस्टैण्ट राजा दूसरी ओर। प्रोटेस्टैण्ट दल का प्रधान फ़्रेडरिक था जो पेलैटीनेट पर, जिसकी राजधानी हिंडैलवर्ग थी, राज्य करता था। फ़्रेडरिक के साथ जेम्स की पुत्री एलिज़बेथ का विवाह हुआ था। वह युद्ध में हार गया और उसके राज्य का कुछ भाग स्पेन की सेना ने, जो उसके शत्रुओं की सहायता करने के लिये आई थी, अपने अधिकार में कर लिया। अंगरेज़ इस बात के लिये बड़े चिन्तित हो उठे कि फ़्रेडरिक की भूमि स्पेन-वालों के अधिकार में न रहनी चाहिये क्योंकि कहीं ऐसा न हो जाय कि उसको और उसकी प्रजा को अपने धर्म को बदलने के लिये लाचार होना पड़े। इस विषय में जेम्स भी अपनी प्रजा के साथ सहमत हो गया, क्योंकि वह यह नहीं चाहता था कि उसकी लड़की और उसके बच्चे अपने घर से बाहर निकाल दिये जायं।

उसने अपने दूतों को बहुत से छोटे बड़े राजाओं के पास युद्ध बन्द कर देने की प्रार्थना लेकर भेजा परन्तु उन्होंने कुछ भी ध्यान न दिया । इसलिये उसने एक दूसरी पार्लामेण्ट बुलाई और उससे यह कह कर धन मांगा कि यदि लड़ाई में जाना पड़े तो उस सेना का मैं वेतन दे सकूं जो पैलेटीनेट (Palatinate) की रक्षा करने के लिये भेजी जाय । जेम्स पहिले से कुछ और दूत भेजने का विचार कर चुका था, इसलिये पार्लामेण्ट ने उसको बहुत थोड़ा रुपया दिया और यह देखने के लिये रुक गई कि यदि दूत लोग कैथोलिकों से पैलेटीनेट को छुड़ाने में सफल न होंगे तो जेम्स क्या करेगा ।

६ ।—<u>एकाधिकार और लार्ड चन्सलर बेकन</u>—कामन्स सभा ने देश की बहुत सी बातों पर बड़ा दुःख प्रकट किया । एलिज़बेथ की भांति जेम्स ने भी व्यवसाय में बहुत से एकाधिकार दे रक्खे थे । यह उसने कुछ तो अपने मित्रों को पुरस्कार देने के अभिप्राय से किया था परन्तु अधिकतर उसने अपने देश में नयी नयी चीज़ों की उपज बढ़ाने के अभिप्राय से किया । एकाधिकार पाये हुए लोगों ने उन लोगों के साथ जिन्होंने राजा की आज्ञा के बिना चीज़ें बनाने का प्रयत्न किया बड़ी कठोरता का वर्त्ताव किया । क्योंकि ये लोग यह समझे हुए थे कि सिवाय हमारे और कोई इनको नहीं बना सकता । कामन्स सभा ने इस बात की शिकायत की जिसका परिणाम यह हुआ कि जेम्स को लाचार इन एकाधिकारों को रद्द करना पड़ा । इसके बाद कामन्स सभा ने और मामलों में भी दोष निकाले । उन दिनों बड़े कर्म्मचारियों को आजकल की भांति नियमित रूप से वेतन नहीं दिया जाता था किन्तु इनको उन लोगों से नज़र मिल जाया करती थी जो इनसे सहायता मांगते थे । इन लोगों को इस नज़र देने से रोकना

बड़ा कठिन काम था। इस समय बेकन लार्ड चैन्सेलर था। वह बड़ा बुद्धिमान था और दर्शन शास्त्र का पंडित था। परन्तु जब उसको नज़र दी गई, उसकी भी बुद्धि नष्ट हो गई। उसने नज़र लेते समय यह नहीं सोचा कि यह रिश्वत है। जिनलोगों ने बेकन को नज़र दी थी उनकी यह आशा थी कि वह जब न्यायाधीश के पद पर होगा तब कुछ मामलों में हमारे अनुकूल फ़ैसला देगा। बेकन उनसे धन लेता रहा परन्तु उसने, जब देखा कि ये लोग अन्याय चाहने पर हैं, उनके प्रतिकूल फ़ैसला दिया। उनमें से कुछ लोग बेकन से बहुत बिगड़े और कामन्स सभा से उसकी शिकायत की। कामन्स सभा ने उसको हाउस आफ़ लार्डस के सामने दोषी ठहराया। बेकन को अपने पद के त्यागने के लिये आज्ञा दी गई और दण्ड भी दिया गया।

७।—पैलेटीनेट का हाथ से निकल जाना—जेम्स ने भी जान लिया कि मेरे दूतलोग केवल बातचीत कर के पैलेटीनेट की रक्षा नहीं कर सकते इसलिये उसने पार्लामेण्ट से और धन मांगा। जेम्स ने स्पेन देश के विरुद्ध युद्ध छेड़ने की प्रतिज्ञा करने पर कामन्स रुपया देने के लिये बिल्कुल प्रस्तुत थे। वे इस बात को जानते थे कि स्पेनवालों ने अपनी पहिली सेना पैलेटीनेट पर आक्रमण करने के लिये भेज दी है और उनका यह विचार था कि यदि स्पेन देश पर धावा किया जाय और उसको समुद्र के युद्ध में परास्त कर दिया जाय, जैसा कि सर फ़्रान्सिस ड्रेक के समय में किया गया था, तो स्पेन का राजा अपने हस्तगत अमरीका देश की खानों से सोना चांदी के प्राप्त करने में असमर्थ हो जायगा। जिसका परिणाम यह होगा कि वह फिर जर्मन देश के कैथोलिकों की सेनाओं की सहायता न कर सकेगा। इसलिये कामन्स स्पेन के साथ युद्ध करना चाहते थे और वे इस बात से रुष्ट थे कि

जेम्स अब भी स्पेन के राजा फ़िलिप चतुर्थ से इस बात के लिये बातचीत कर रहा है कि वह अपनी बहन इनफ़ैण्टा का विवाह युवराज के साथ कर दे। अंगरेज़ लोग ऐसी दशा में जबकि चार्ल्स इंग्लिस्तान का राजा होनेवाला था किसी रोमन कैथोलिक रानी को अपने देश में आना न चाहते थे। जेम्स इसके विरुद्ध स्पेन देश के साथ शान्ति रखना चाहता था और केवल जर्मन देश के कैथोलिकों के विरुद्ध युद्ध छेड़ना चाहता था। वह इस प्रश्न पर कामन्स सभा पर बहुत बिगड़ा और पार्लामेण्ट को उठा दिया। पार्लामेण्ट के धन न देने के कारण वह सेना का ख़र्च न दे सका और सन १६२२ के समाप्त होने से पहिले ही पैलेटीनेट को स्पेनवालों और उनके मित्रों ने जीत लिया।

८।—राजकुमार चार्ल्स की मैडरिड यात्रा—इस समय बकिंघम की चार्ल्स से उसके पिता की अपेक्षा अधिक बनती थी। उसने चार्ल्स को इनफ़ैण्टा को प्रेम करने के अभिप्राय से मैडरिड जाने के लिये तैयार किया। इन दिनों राजकुमार अन्य देशों में बहुत कम जाया करते थे क्योंकि उनको इस बात का भय रहता था कि कहीं हमको कोई पकड़ कर क़ैद न करले और सामान छीन ले। बकिंघम ने चार्ल्स को समझाया कि स्पेन का राजा तुम्हारे वहां जाने का अपना बड़ा मान समझे गा। और वह इतना प्रसन्न होगा कि पैलेटिनेट तुमको लौटा देगा। अन्त को बकिंघम और चार्ल्स दोनों मैडरिड जाने के लिये तैयार हुए। इन्हों ने अपना रूप छिपाने के लिये बनावटी डाढ़ियां लगाईं और अपना नाम टोम स्मिथ और डिक स्मिथ रक्खा। जब ये मैडरिड पहुंचे तो स्पेन का राजा इनको देख कर ऊपर से तो प्रसन्न हुआ परन्तु वास्तव में उसको इनके आने से दुःख था। स्पेन के राजा की बहिन ने यह कह दिया था कि मैं चार्ल्स के साथ विवाह न करूंगी

क्योंकि वह प्रोटेस्टैण्ट है। चार्लस को एकान्त में इनफ़ैण्टा से मिलने के लिये आज्ञा नहीं मिली। एक दिन उसने सुना कि इनफ़ैण्टा बाग़ में है। वह उससे बात करने के लिये बाग़ की दीवार फांद कर अन्दर पहुंच गया। इनफ़ैण्टा चार्लस को देख कर बड़े ज़ोर से चिल्लाई और दौड़कर एक मकान में चली गई। फ़िलिप ने इस शर्त पर अपनी बहन का विवाह चार्लस के साथ करना चाहा कि इंग्लिस्तान में कैथोलिकों को अपनी रीति के अनुसार, बिना दण्ड दिये हुये पूजा पाठ करने की आज्ञा दे दी जाय। चार्लस से इस समय जिस बात की प्रतिज्ञा कराई गई उसको मान गया और इसका कुछ विचार न किया कि मैं ऐसा कभी कर भी सकूंगा या नहीं। अन्त में फ़िलिप ने चार्लस से कहा कि अब तुमको इंग्लिस्तान को लौट जाना चाहिये और वहां जाकर जो कुछ तुमसे करने को कहा गया है वह करना चाहिये। यदि तुम इस सबको पूरा कर दोगे तो पीछे से इनफ़ैण्टा भी तुम्हारी रानी होने के लिये भेज दी जायगी। इनफ़ैण्टा ने भी यह सब स्वीकार किया परन्तु उसका जी न चाहता था। उसको अंगरेज़ी भाषा की एक व्याकरण की पुस्तक और एक कोष दे दिये गये और उसने अंगरेज़ी भाषा सीखना आरम्भ कर दिया क्योंकि उसे उससे यहां काम लेना था। परन्तु चार्लस ने यह सोचा कि मेरा अपमान किया जा रहा है। वह लौटकर इंग्लिस्तान आया और यह विचार प्रकट किया कि यदि फ़िलिप पैलेटीनेट को वापिस न देगा तो मैं उसकी बहन के साथ विवाह न करूंगा। इसके उत्तर में स्पेनराजाने कहा कि मैं ऐसा नहीं कर सकता। इसके बाद विवाह का प्रश्न फिर कभी नहीं उठा। इनफ़ैण्टा ने भी अंगरेज़ी का व्याकरण और कोष उठाकर अलग रख दिया। कई बरस के बाद उसने सम्राट के पुत्र एक जर्मन कैथोलिक राजा के साथ विवाह कर लिया और यहां वह बड़े आनन्द से रही। यह

आनन्द उसे सम्भवतः इंग्लैण्ड में चार्लस की स्त्री होकर और प्रोटेस्टैण्टों के बीच रहकर प्राप्त नहीं हो सकता था ।

९ ।—जेम्स के शासन का अन्त—जेम्स ने एक और पार्लामेण्ट बुलाई जिसने धन देने का प्रस्ताव पास किया । यह पार्लामेण्ट जेम्स से बहुत प्रसन्न रहती यदि वह तुरन्त स्पेन के साथ युद्ध छेड़ देता । उस ने कहा कि मैं पैलेटीनेट लौटा लेने के लिये युद्ध करने को तैयार हूं परन्तु मुझे पहिले कुछ और दूत भेजकर इस बात का पता लगा लेना चाहिये कि मेरा साथ कितने राजा देंगे । पार्लामेण्ट को अपनी बैठक के समाप्त होने के पहिले ही यह विदित हो गया था कि जेम्स अपने पुत्र चार्लस का विवाह फ्रान्स देश के राजा तेरहवें लुई की पुत्री हैन्रीटा मारिया के साथ करना चाहता है । अंगरेज़लोग यह सुनते कि चार्लस एक प्रोटेस्टैण्ट स्त्री के साथ विवाह करनेवाला है तो अधिक प्रसन्न होते । जेम्स और चार्लस ने अपनी प्रजा को कुछ थोड़ा सा सन्तोष देने के अभिप्राय से यह प्रतिज्ञा की कि हम फ्रान्स के राजा को यह वचन न देंगे कि इंग्लिस्तान में कैथोलिकों को पूजा पाठ की स्वतंत्रता दी जायगी । पार्लामेण्ट की बैठक समाप्त होने पर जेम्स ने जाना कि फ्रान्स का राजा चार्लस के साथ अपनी बहन का विवाह तब तक न करेगा जब तक कि जेम्स और चार्लस दोनों इस बात का वचन न दे देंगे कि कैथोलिकों को पूजा पाठ की स्वतंत्रता दे दी जायगी । यह सोच कर कि स्पेन की तरह यहां भी निराश न होना पड़े पिता पुत्र दोनों ने फ्रान्स के राजा की बात मान ली और पार्लामेण्ट से जो प्रतिज्ञा की उसको तोड़डाला । इसलिये वह तबतक पार्लामेण्ट के बुलाने में डरता रहा जब तक विवाहकार्य समाप्त न हो गया, क्योंकि विवाह होने पर प्रतिवाद करना सब व्यर्थ हो जाता । यह विवाह और भी अधिक अनर्थकर इस कारण हुआ

कि युद्ध के लिये कुछ तैयारियां पहिले ही से हो चुकीं थीं ; और यह प्रबन्ध किया जा चुका था कि १२ हज़ार अंगरेज़ सिपाही एक जर्मन अफ़सर कौंट मैन्सफ़ील्ड के साथ पैलेटीनेट के जीतने के लिये जाने चाहियें। पार्लमेण्ट धन देने की सम्मति देने के लिये नहीं बुलाई गई थी, इसलिये बेचारे सिपाही जाड़े के दिनों में बिना वेतन और बिना खाने पीने के सामान के भेज दिये गये। हालैंड पहुंचे तो नदियों के द्वारा अन्दर ले जाने के लिये बड़ी बड़ी नावों में सवार कराये गये। इस समय जाड़े के कारण नदियों का पानी जम गया था और नावें आगे न बढ़ सकीं। यदि दयालु डचलोग इन सिपाहियों के खाने के लिये रोटी और पनीर न लाते तो ये भूखों मर जाते। ऐसी परिस्थिति में इनके पास ओढ़ने के लिये सिवाय थोड़ी सी घास फूंस के और कुछ भी न था। इन को उस जाड़े ने ऐसा सताया कि दो तीन सप्ताह में १२ हज़ार सिपाहियों में से केवल ३ हज़ार सिपाही चलने फिरने के योग्य रह गये। इनसे पैलेटीनेट जीतना असम्भव था और यह यात्रा विफल रही। इसी समय जेम्स की भी मृत्यु हो गई।

## ॥ अध्याय २५ ॥

### (ई० १६२५—१६२९)

### * चार्लस प्रथम और उसकी पहिली तीन पार्लमेण्टें *

१।—<u>चार्लस प्रथम की पहिली पार्लमेण्ट</u>—चार्लस प्रथम ने पार्लमेण्ट बुलाई और युद्ध के लिये रुपया मांगा। कामन सभा यह जानती थी कि राजा बकिंघम के हाथ में है और जो

बकिंघम कहता है वही करता है। उसे यह भी विदित था कि बकिंघम ही ने मैन्सफ़ील्ड की कमान में अंगरेज़ी सेना बिना अन्न और बिना धन के भेजी थी। सभ्यों को यह भी सन्देह हुआ कि चार्ल्स ने रोमन कैथोलिक लोगों के विषय में जो प्रतिज्ञा की थी उसपर दृढ़ न रहा था। इन विचारों से उन्होंने राजा को उसकी मांग से बहुत थोड़ा धन दिया। चार्ल्स ने कहा कि और धन चाहिये। सभा ने उत्तर दिया कि "जब तक आप धन के ख़र्च करने में बकिंघम ही से सलाह लेंगे हम कुछ नहीं कर सकते। हमलोगों का जिनपर विश्वास है उनकी सलाह लीजिये तो हम और धन दें"। इस पर चार्ल्स बहुत बिगड़ा और पार्लामेण्ट तोड़ दी।

२।—<u>कैडिज़ पर आक्रमण</u>—बकिंघम ने राजा को सलाह दी कि आप लड़ाई जारी रखिये, पार्लामेण्ट धन दे या न दे। उसको इतना धन मिल गया जिस से उसने एक सेना और जहाज़ों का एक बेड़ा कैडिज़ को भेज दिया। जब सेना वहां उतरी तो नगर पर आक्रमण करने के बदले एक और स्पेनी पल्टन पर चढ़ाई करने के लिये जिसका समाचार अंगरेज़ी सेनापति को मिला था, दूसरी ओर चली। वहां कोई स्पेनी सेना न मिली और अंगरेज़ी सिपाही गरमी से व्याकुल बहुत थक गये और खाने पीने की सामग्री साथ न होने से भूखों मरने लगे। उन्हें एक स्पेनी गांव में बहुतसी शराब मिल गई। इसे सबने इतना पिया कि सब बदमस्त हो गये और जो कहीं बैरी पास होता तो सब के सब मार डाले जाते। दूसरे दिन सेना कैडिज़ को लौट आई। परन्तु यह नगर भी कोट से सुरक्षित था और बिना कुछ किये ही सेना और बेड़ा दोनों इंग्लिस्तान को लौट गये।

इस लड़ाई का बखान किसी किसी बच्चों के गीतों की पुस्तकों में यों मिलता है :—

राजा ने इस्पेन जीतने
सेना एक पठाई थी ।
उलटे पावों बिना कुछ किये
सो घर को फिर आई थी ॥

३ ।—चार्ल्स प्रथम की दूसरी पार्लामेण्ट और जब्र का क़र्ज़ा—दूसरी पार्लामेण्ट की कामन्स सभा ने लार्डसभा में बकिंघम के ऊपर यह अपराध लगाया कि इसने अपने को धनी बनाया और देश का नाश कर दिया । परन्तु रूबकारी होही रही थी कि राजा ने पहिली की भांति यह पार्लामेण्ट भी उठादी । अब उसे धन कहां मिले । बड़े संकट में पड़ गया । तब उसने अपनी प्रजा के पास धन मांगने को कर्मचारी भेजे । परन्तु किसी से कुछ न मिला और धन देने के लिये दबाव डालना क़ानून के विरुद्ध था । तब किसी ने चार्ल्स को यह सलाह बताई कि धन देने के लिये प्रजा को बाध्य नहीं कर सकते तो उनसे उधार मांगिये । परन्तु उधार पटने की सम्भावना न थी इससे यों देने और उधार देने में भेदही क्या था । फिर भी उसने सलाह मान ली और जिनके पास जायदाद थी उनको हुकुम दिया कि "जब्र के क़र्ज़े" के नाम से धन दो । जिन लोगों ने धन देना स्वीकार न किया उनमें से मुख्य मुख्य को राजा ने क़ैद कर लिया और जो लोग क़ैद से बचना चाहते थे उन्हों ने उसे बहुत सा धन दे कर अपना पीछा छुड़ाया ।

४ ।—फ़्रान्स के साथ लड़ाई और रे पर आक्रमण—चार्ल्स को धन मांगने का बहुत अच्छा कारण था । दूसरी पार्लामेण्ट

तोड़ने के साल भीतर ही उसने फ़ान्स और स्पेन दोनों से लड़ाई छेड़ दी। फ़ान्स-राज अपनी प्रोटेस्टैण्ट प्रजा से लड़ रहा था और ला रोशेल नगर घेरे हुये था। उसको बचाने के लिये बकिंघम एक बड़ा बेड़ा और बड़ी सेना लेकर पहुंचा और ला रोशेल के पास रे टापू में एक गढ़ को घेर लिया। गढ़ न टूटा और बिना कुछ किये ही बकिंघम घर लौट आया।

५।—चार्ल्स प्रथम की तीसरी पार्लामेण्ट और "हक़ों की अरज़ी"—परन्तु चार्ल्स का दृढ़ संकल्प था कि लड़ाई जारी रहै और ला रोशेल का उद्धार हो जाय। उसके पास धन न था इस लिये उसने तीसरी पार्लामेण्ट बुलाई। इस पार्लामेण्ट ने उसको "हक़ों की अरज़ी दी" जिसमें लिखा था कि राजा पार्ला-मेण्ट की अनुमति के बिना न कोई कर लगाये और न जब्र का क़रज़ा ले, और बिना प्रमाण के किसी को क़ैद न करे जिससे वह अदालत में अपनी रूबकारी करा सकै। कोई प्रमाण न हुआ तो अदालत क्या जानैगी कि उस पर क्या अपराध लगा है और उस पर मुक़द्दमा कैसे चलाया जायगा और वह जब तक राजा चाहै क़ैद में पड़ा रहैगा। चार्ल्स ने पहिले तो बहुत कुछ अनिच्छा दिखाई परन्तु पीछे से मान गया और हक़ों की अरज़ी क़ानून बन गई। लन्दन निवासियों ने आनन्द से घण्टे बजाये और गलियों में रोशनी की।

६।—बकिंघम का वध—"हक़ों की अरज़ी" की मंजूरी के बदले चार्ल्स को धन मिल गया और उसने बड़ा बेड़ा और बड़ी सेना सजाई जिसको लेकर बकिंघम ला रोशेल के घेरे को उठाने चला और पोर्टस्मथ पहुंचा। व्यर्थ युक्तियों में जो कभी सफल न हुईं, धन नष्ट करने और अपने देशी भाइयों के प्राण गंवाने के कारण सारे अंगरेज़ उसके बैरी हो रहे थे। एक मनुष्य जिसका

नाम जान फ़ेल्टन था पहिले सेना में अफ़सर था। उसे बकिंघम ने निकाल दिया था। उसने यह विचारा कि बकिंघम को मार डालने में बड़ा पुण्य होगा जैसे केट्सबी और गाइ फ़ाक्स ने समझा था कि राजा और पार्लामेण्ट को मार डालने से बड़ा पुण्य होगा। उसने एक छुरी मोल ली और पोर्ट्स्मथ पहुंच कर उस कमरे के बाहर खड़ा हो गया जिसमें बकिंघम खाना खा रहा था। बकिंघम अपने एक फ़ौजी अफ़सर से कुछ कहने को ज्योंही बाहर निकल कर ठहर गया, फ़ल्टन ने उसके पेट में छुरी भोंक दी और बोला "ईश्वर तेरी आत्मा पर दया करें"। बकिंघम पछाड़ खाकर गिरा और मर गया। घातक भाग खड़ा हुआ परन्तु उसकी टोपी गिर पड़ी और वह पहिचान लिया गया। अदालत ने उसे प्राणदण्ड की आज्ञा दी और उसे फांसी दी गई।

७।—चार्ल्स और पार्लामेण्ट में अनबन—चार्ल्स को अब विना बकिंघम के शासन करना पड़ा। जब पार्लामेण्ट की दूसरी बैठक हुई तो राजा के साथ नये नये बखेड़े उठ खड़े हुये। पहिला झगड़ा प्युरिटन लोगों से हुआ। प्युरिटन कुछ ऐसे धार्मिक सिद्धान्त सिखाना चाहते थे जिन्हें राजा न चाहता था कि सिखाये जायं। दूसरा झगड़ा "दरामद बरामद" माल की चुंगी पर हुआ। इनको टनेज और पौण्डेज कहते थे और यह दोनों कर पहिले के राजाओं और रानियों को उनकी पार्लामेण्टों ने उनके जीवन भर के लिये दे रक्खे थे। चार्ल्स ने अपनी पहिली पार्लामेण्टों को जल्दी तोड़ दिया था और उसे इस बात पर विचार करने का अवसर ही न मिला कि राजा को यह कर मिलै या न मिलै। परन्तु चार्ल्स ने यह मान लिया कि पार्लामेण्ट हमको दे चुकी और जिन लोगों ने चुंगी न दी थी उनके माल ज़ब्त कर

लिये। जिनके माल ज़ब्त हो गये थे उन में एक सर जान इलियट था। इलियट बड़ा उदार सरदार कामन्स सभा का सभ्य और बड़ा बोलनेवाला था। उसने सभा में यह प्रस्ताव किया कि चुंगी के हाकिम जिन्हों ने उसका माल ज़ब्त किया था बुलाये जायं और उन को दण्ड दिया जाय। राजा ने कहा कि उन लोगों ने हमारे हुकुम से ऐसा किया है उनकी सज़ा न होनी चाहिये। और सभा की बैठक "मुल्तवी" कर दी। सभा ने पहिली बार राजा की आज्ञा मान ली परन्तु दूसरी बार जब फिर "मुल्तवी" करने का हुकुम आया तो दो प्रबल सदस्यों ने जो यह जानते थे कि जबतक सभापति जिसका काम सभा का नियमित संचालन है, अपने आसन पर विराजमान है तब तक सभा "मुल्तवी" नहीं हो सकती, आगे बढ़ कर सभापति को अपने आसन से उठने न दिया और इलियट ने सभा में यह प्रस्ताव किया कि प्युरिटनलोग जिस सिद्धान्त को धर्मविरुद्ध कहें उसका सिखानेवाला, और पार्लमेण्ट की अनुमति के विना कोई कर लेनेवाला और देनेवाला, तीनों अपने देश के वैरी हैं"। इस पर सभा में बड़ा दंगा मचा परन्तु ज्योंही इलियट के प्रस्ताव पर सभासद हां हां करने लगे राजा भी आ गया। राजा ने सभा को उठा दिया और यह निश्चय कर लिया कि कुछ दिन तक पार्लमेण्ट न बुलाई जायगी। यह तीसरी पार्लमेण्ट ई० १६२६ में टूटी और ग्यारह बरस तक राजा ने कोई पार्लमेण्ट न बुलाई।

## ॥ अध्याय २६ ॥

### * चार्ल्स प्रथम का पार्लमेण्ट-हीन शासन *

### (ई० १६२६ से १६४० तक)

१।—<u>पार्लमेण्ट के सदस्यों का क़ैद किया जाना</u>—चार्ल्स ने तीसरी पार्लमेण्ट तोड़कर पहिला काम यह किया कि इलियट

और कुछ और सदस्यों को जिन्हों ने सभा में हुल्लड़ मचाया था, क़ैद कर लिया। इलियट और उसके साथियों ने कहा कि जो कुछ हम ने पार्लामेण्ट में किया है उसके लिये हमारी रूबकारी पार्लामेण्ट ही में होनी चाहिये। इलियट और दो सदस्यों पर जिन्हों ने सभापति को उठने न दिया था कड़े जुर्माने किये गये। इलियट ने जुर्माना देने से इन्कार किया और टावर में क़ैद रक्खा गया जहां वह कुछ दिनों में मर गया। चार्ल्स ने जब सुना कि वह मर रहा है तब भी उसे न छोड़ा और मरने पर भी उसकी लाश को गाड़ने के लिये कार्नवाल में उसके घर ले जाने न दिया।

२।—धर्मसंघ में लाड का शासन—ईसाई धर्मसंघ का कामकाज सब विलियम लाड करता था। लाड पहिले लन्दन नगर का बिशप था पीछे ई० १६३३ में कैण्टरबेरी का आर्कबिशप बना दिया गया। उसका यह दृढ़संकल्प था कि इंग्लिस्तान के सारे गिरजाघरों में एक बिधि से पूजा प्रार्थना हो और पादरी लोग प्रार्थनापुस्तक में जितनी प्रार्थनायें हैं सब को पढ़ा करें, यह नहीं कि जितना उनका जी चाहें छोड़ दें। प्युरिटैनलोग एक बात से बहुत बुरा मान गये। वह यह थी कि पवित्र भोज (कम्युनियन) की मेज़ बहुतेरे गिरजाघरों में गिरजाघरके बीच में रक्खी रहती थी। वह गिरजाघरों के पूर्व के सिरे पर उठाकर रख दी गई। लोग समझे कि लाड उन्हें फिर से रोमन कैथोलिक बनाना चाहता है। यह बात झूठी थी परन्तु जिस बिधि को लोग अनुचित समझते थे उस बिधि से उनसे पूजा कराने में लाड ने बुद्धिमानी न दिखाई। रानी एलिज़बेथ के शासन-काल में हाई कमीशन कोर्ट के नाम की एक अदालत बनी थी। इस में उन पादरियों की रूबकारी होती थी जो सारी प्रार्थना पुस्तक न पढ़ते या जो इसके सिद्धान्तों के प्रतिकूल धर्म सिखाते या

जिनको लाड या उसके मित्र ऐसा अपराध करनेवाले समझते। ऐसे कितने पादरी अपने पद से हटा दिये गये और उन्हें इंग्लिस्तान छोड़ना पड़ा।

३।—<u>स्टार चेम्बर की अदालत</u>—हेनरी सप्तम के राज में यह अदालत बड़े बड़े सरदारों को शासन में रखने के लिये स्थापित की गई थी। चार्लस प्रथम ने अपने शासन के विरोधियों को दण्ड देने का काम इस से लिया। जिनलोगों ने गालियां दी थीं या बुरा भला कहा था उन्हें "पिलोरी" में खड़ा रहना पड़ता था। पिलोरी एक लकड़ी होती थी जिसमें गला जाने भर को छेद रहता था। इसमें बांधकर कान काट लिये जाते थे। शासन के कुछ विरोधी क़ैद कर लिये या उनपर जुर्माने किये गये। स्टारचेम्बर की अदालत में जूरी (पंचायत) न थी। इसमें राजसभा के सारे सदस्य और दो जज रहते थे। यही लोग चार्लस के हुक्मों की तामील करते थे इस लिये स्टार चेम्बर में यही लोग अपनी कारखाई के विरुद्ध आचरण करनेवालों को दण्ड देते थे। आप ही दोष लगाते और आप ही दण्ड देते थे। इस कारण से यह अदालत लोकविद्विष्ट हो गई।

४।—<u>शिपमनी</u>—कई बरस तक विना पार्लामेण्ट के धन दिये ही चार्लस की निभ गई। उसने व्यापारियों पर कर लगा दिये और फ्रान्स और स्पेन के साथ सन्धि कर लेने के कारण उसे जहाज़ी बेड़े और सेना पर धन खर्च करने की आवश्यकता न रही। इस से जब शान्ति स्थापित हुई तो देश का वाणिज्य-व्यापार भी बढ़ा और उसके बढ़ने से पहिले की अपेक्षा राजा को अधिक धन भी मिलने लगा। परन्तु बहुत दिन न बीते थे कि चार्लस को जहाज़ी बेड़ा रखने की आवश्यकता हो गई। डच-लोगों के पास बरसों से बहुत बड़ा बेड़ा था, फ्रान्सवालों के पास

भी एक बड़ा बेड़ा हो गया था। इस लिये चार्ल्स ने बिचारा कि इंग्लिस्तान को भी अपने समुद्रतट और अपने व्यापार की रक्षा के लिये बेड़ा रखना चाहिये। चार्ल्स के लिये उचित तो यह था कि पार्लामेण्ट बुलाकर जहाज़ी बेड़े और जलसेना के लिये धन मांगता। परन्तु चार्ल्स यह जानता था कि पार्लामेण्ट कभी धन न देगी जब तक वह बात बात में उसकी सलाह न मानैगा और यह करना उसके संकल्प के विरुद्ध था। चार्ल्स के एक क़ानूनी सलाहकार ने उसे यह बताया कि जब देश संकट में है तो राजा अपने अधिकार से समुद्रतट के नगरनिवासियों को आज्ञा दे सकता है कि अपने अपने जहाज़ लेकर बैरी से लड़ने को प्रस्तुत रहैं। इसपर उसने उन नगरों से जहाज़ मांगे और चतुराई से ऐसे बड़े जहाज़ मांगे जो लन्दन को छोड़कर कहीं न थे। जब जहाज़ न मिले तो उसने यह आज्ञा दी कि जिसके पास जहाज़ न हो वह उसके बदले धन दे। धन दिया गया, और दूसरे साल उसने इंग्लिस्तान के सारे ज़िलों से जहाज़ों के लिये धन मांगा। इस कर का नाम शिपमनी (जहाज़ के लिये धन) पड़ गया। राजा ने कहा कि जिसके पास मध्यप्रान्तों में ऊनवाली भेड़ है उसे देश के व्यापार की रक्षा में इतना ही हित है जितना बन्दरगाह के नगरों में रहनेवाले का है जिसके जहाज़ पर ऊन लद कर देशावर को भेजा जाता है। उसका कहना सच्च था; परन्तु बात तो इतनी ही थी कि बिना पार्लामेण्ट की मंजूरी के दोनो में से किसी से भी यह कर न लिया जा सकता था।

५।—<u>हैम्पडन का मामिला</u>—जान हैम्पडन, बकिंघम ज़िले का रहनेवाला एक छोटा ज़िमीदार था। उसने यह कर देने से इनकार किया। इसपर बारह जजों की एक अदालत बनी जिससे यह पूछा गया कि क़ानून इस विषय में क्या कहता है।



चार्ल्स प्रथम के समय की सेज गाड़ी।

बारह में से सात ने अपना यह मत प्रकट किया कि राजा को शिपमनी लेने का अधिकार है। राजा ने समझा कि झगड़ा निपट गया परन्तु बहुतेरे अंगरेज़ फिर भी कहते थे कि हैम्पडन ही के पक्ष में न्याय है।

६।—स्काटलैण्डवालों की प्रार्थना पुस्तक और एडिनबरा का बलवा—इधर तो अंगरेज़ों में असन्तोष फैला जाता था उधर स्काटलैण्डवाले रोकटोक करने की तयारी कर रहे थे। जेम्स ने स्काटधर्मसंघ को बिशप लोगों की आधीनता में रहने को बाध्य किया था परन्तु उसने प्रार्थना करने की बिधि बदलने का कोई प्रयत्न न किया और स्काटलोगों की ईश्वरप्रार्थना अंगरेज़ी धर्म-संघ की प्रार्थना से भिन्न थी। चार्ल्स ने एक नई प्रार्थना पुस्तक बनवाई जो इंग्लिस्तान में प्रचलित पुस्तक से मिलती जुलती थी। ई० १६३७ में उसने यह आज्ञा दी कि यही पुस्तक स्काटलैण्ड के गिरजाघरों में पढ़ी जाय। एडिनबरा के प्रधान गिरजाघर में ज्योंही पादरी इसे पढ़ने लगा कि लोगों ने हल्ला मचा दिया और उसकी बोली किसी को सुनाई न दी। पादरी पढ़ता ही गया

इसपर एक स्त्री ने उसपर एक स्टूल फेंक दिया परन्तु पादरी बच गया। मजिस्ट्रेटों ने हल्ला करनेवालों को गिरजाघर के बाहर निकाल दिया। एडिनबरा के रहनेवाले उनके पक्षपाती हो गये और स्काटलैण्डवालों ने एडिनबरा निवासियों का साथ दिया। नई प्रार्थना का पढ़ना सारे स्काटलैण्ड भर में असम्भव हो गया। चार्ल्स ने बहुतेरी धमकी दी परन्तु कुछ न हुआ। ई० १६३८ में स्काटलोगों ने एक जातीय प्रतिज्ञा-पत्र (National Covenant) पर दस्तखत किये जिसमें प्रतिपक्षियों से अपने धर्म की रक्षा करने की क़सम खाई और साल के अन्त में ग्लासगो नगर में एक बड़ी सभा करके यह घोषणा कर दी कि आज से हमारे देश में विशप न रहेंगे और चार्ल्स के मुक़र्रर किये हुये विशपों को अपने अपराध की जवाबदिही करने को अपने सामने बुलाया।

७।—चार्ल्स का सीमा पर प्रस्थान—यह सुनकर चार्ल्स बहुत बिगड़ा। उसने सेना इकट्ठी की और सीमा की ओर बढ़ा। स्काट लोग भी वहीं पहुंचे। चार्ल्स की सेना में अच्छे योद्धा न थे और उन्हें तनख़ाह देने को उसके पास धन भी पूरा न था। जब सब चुक गया तो उसने सन्धि करली, और न करता तो क्या करता।

८।—वेण्टवर्थ का बुलाया जाना—दो ही चार महीने बीते थे कि चार्ल्स फिर असन्तुष्ट हो गया। सन्धि का अर्थ स्काट लोग कुछ लगाते थे और राजा कुछ और कहता था। स्काट मानतेही न थे इससे चार्ल्स ने एक बार और उनसे लड़ने की ठान ली और ऐरलैण्ड से वेण्टवर्थ को सलाह लेने के लिये बुलाया। चार्ल्स के शासन-काल के आरम्भ में जो पार्लामेण्ट बुलाई गई थी वेण्टवर्थ उसकी कामन्ससभा का सदस्य रह चुका था और बकिंघम के विरोधियों के मुखियों में से था। उसने प्रजा का दुख दूर

करने के लिये भी बहुत कुछ कहा सुना था। "हक़ों की अरज़ी" मंजूर होने पर वह राजा का पक्षपाती हो गया था। वह प्युरिटैन लोगों को न चाहता था और न उसकी यह इच्छा थी कि कामन्स सभा जो चाहै सो किया करै। वह ऐरलैण्ड का शासन करने भेजा गया था। वहां उसने शान्ति रक्खी और प्रजा को सुख दिया। उसने ऐरलैण्डवालों के हित के अनेक काम किये और उनको एक प्रकार का सन बोना सिखा दिया जिससे "लिनेन" कपड़ा बनता है। परन्तु वह बड़ा हठी था और चाहता था कि सब उसकी आज्ञा मानैं और जो न मानता उसके साथ बड़ी निठुराई करता था। इससे ऐरलैण्ड में उसके अनेक वैरी हो गये थे और इंग्लिस्तान में भी बहुत से वैरी हो जाना कोई अनहोनी बात न थी। वेण्टवर्थ के आने पर चार्ल्स ने उसे अर्ल स्ट्रैफ़र्ड बना दिया और सालभरतक उसने चार्ल्स के नाम से इंग्लिस्तान का शासन किया।

९।—<u>छोटी पार्लमिण्ट</u>—स्ट्रैफ़र्ड ने राजा को एक और पार्लमिण्ट बुलाने की सलाह दी। ग्यारह बरस से इंग्लिस्तान में कोई पार्लमिण्ट न थी। स्ट्रैफ़र्ड ने यह समझा था कि नई पार्लमेण्ट जिसकी पहिली बैठक अप्रैल १६४० में हुई स्काटलैण्डवालों से विरोध करैगी। परन्तु पार्लमिण्ट की कामन्स सभा ने राजा से प्रार्थना की कि फिर कभी "शिपमनी" कर न लगाया जाय और कहा कि राजा इस बात की प्रतिज्ञा करै तो हम भी धन देने की प्रतिज्ञा करैंगे परन्तु उतना नहीं जितना राजा को अपेक्षित है। उनका दूसरा निश्चय यह था कि स्काट लोगों के साथ सन्धि कर ली जाय। चार्ल्स और स्ट्रैफ़र्ड दोनो इसे न चाहते थे। इस कारण पार्लमिण्ट तोड़ दी गई। यह पार्लमिण्ट बहुत थोड़े दिन रही इसलिये इतिहास में इसे छोटी पार्लमिण्ट कहते हैं।

१० ।—स्काटलैण्ड पर आक्रमण—पार्लामेण्ट को बरखास्त करके चार्ल्स ने स्काटलोगों से लड़ने की ठान ली। उसने पार्लामेण्ट की बैठक से पहिले धन उधार लिया था अब फिर उधार लेने का उपाय करने लगा। जब उसे किसी ने कुछ न दिया तो स्ट्राफ़र्ड ने अनेक उपायों से धन खींचना चाहा। उसने लन्दन नगर के लार्ड मेयर और अल्डरमेन को धन न देने के लिये सज़ा की धमकी दी और कहने लगा कि टकसाल में जो चांदी रक्खी है उसको लेकर खोटा सिक्का बनाया जाय और जो राजा का आठ आने का करज़दार है उसे चार आने का माल मिलै। अन्त को उसने बहुतसी काली मिर्च मोल ली और साल भीतर दाम देने का वादा किया। फिर उसने मिर्च को घाटे पर तुरन्त बेच डाला। परन्तु मिर्च बेचकर जो सेना रक्खी गई वह निपट निकम्मी थी। इसको क़वायद सिखाई न गई थी और स्काटलोगों से लड़ना भी न चाहती थी। सेना सुसज्जित होने से पहिले स्काटलोग ट्वीड नदी पार करके नार्थम्बरलैण्ड पहुंच गये और न्युकैसल के पास न्यूबर्न के मैदान में चार्ल्स ने स्काट लोगों से सन्धि करली परन्तु धन देने का वादा करके। बिना पार्लामेण्ट के धन कहां मिलता इसलिये उसने फिर पार्लामेण्ट बुलाई और यह ऐसी आई जिसका उठाना कुछ कठिन काम था।

---

* लार्ड मेयर को हिन्दुस्तान में म्युनिसिपल बोर्ड का चेयरमेन कहते हैं और अल्डरमेन म्युनिसिपल कमिश्नर हैं।

## ॥ अध्याय २७ ॥

### * लम्बी पार्लमेण्ट और राजा प्रजा की लड़ाई *

### ( ई० १६४०—१६४६ )

१।—स्ट्रैफ़र्ड की रूबकारी—जिस पार्लमेण्ट की बैठक सब से पहिले नवम्बर १६४० में हुई वह लम्बी पार्लमेण्ट के नाम से प्रसिद्ध है। क्योंकि इसके अधिवेशन कई बरस तक होते रहे। सब से पहिले इसने उन लोगों को मुक्त कर दिया, जिनके कान स्टार चेम्बर ने काटे थे। इसके बाद इसने राजा के प्रधान मन्त्रियों पर मुक़द्दमा चलाया। स्ट्रैफ़र्ड और लाड टावर में बन्द किये गये, औरों ने यूरप में भाग कर अपने प्राण बचाये। लार्डसभा में स्ट्रैफ़र्ड पर अनेक अत्याचार के अपराध लगाये गये और कामन्स सभा ने यह प्रस्ताव किया कि स्ट्रैफ़र्ड देश और राजा का बैरी है, इसकी गरदन मारी जाय। कारण यह बताया कि बिना पार्लमेण्ट के शासन कराना राजविद्रोह है क्योंकि इस से राजा लोकविद्विष्ट हो जाता है। स्ट्रैफ़र्ड के ऊपर उनके कोप का विशेष कारण यह था। उनका यह विश्वास था कि स्ट्रैफर्ड ने अंगरेज़ी जनता को राजा की इच्छानुसार काम करने को बाध्य करने के लिये ऐरलैण्ड से सेना बुलाने की युक्ति की थी। कामनलोग स्ट्रैफ़र्ड से बहुत डरते थे। उन्हें विदित था कि न्यूबर्न की हारी अंगरेज़ी सेना अभी तक यार्क ज़िले में पड़ी है और स्ट्रैफ़र्ड छोड़ दिया गया तो इसी सेना का नायक बनकर उनपर चढ़ बैठेगा। लन्दन के रहनेवाले भी न चाहते थे कि उनके नगर पर क़बज़ा करने के लिये सेना चढ़ै और सब लार्ड-सभा में आकर चिल्लाने लगे कि स्ट्रैफ़र्ड के साथ न्याय किया

जाय। लार्डलोगों की तो पहिले यही इच्छा थी कि स्ट्रैफ़र्ड को छोड़ दें परन्तु कुछ सोच समझकर उसे दोषी ठहराना निश्चय कर लिया। राजा भी अपने भक्त सेवक का बध न चाहता था और उसने टावर पर क़बज़ा करने के लिये सिपाही भेज दिये जिस में स्ट्रैफ़र्ड बन्द था परन्तु सिपाही भीतर घुसने न पाये। इस पर कुछ बिगड़े लोग राजा रानी को धमकाते हुये ह्वैट हाल पहुंचे। राजा ने हार मानली और स्ट्रैफ़र्ड का सिर काट लिया गया। स्ट्रैफ़र्ड जब फांसी के चबूतरे पर खड़ा हुआ तो कहने लगा, "मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूं कि मैं मरने से नहीं डरता और मैं अपने कपड़े ऐसे ही प्रसन्न मन से उतार रहा हूं मानों मैं सोने जा रहा हूं"।

२।—क़ानून में परिवर्तन—जब यह घटना हो रही थी और इसके कुछ दिन पीछे तक पार्लमेण्ट क़ानून बदलने में लगी हुई थी, राजा ने प्रतिज्ञा की कि पार्लमेण्ट की अनुमति के बिना न शिपमनी कर लगायेगा और न चुंगीघरों में और कोई महसूल होगा। हाई कमिशन और स्टार चेम्बर की अदालतें तोड़ दी गईं और अनेक ऐसे क़ानून बने जिनके अनुसार राजा को पहिले से अधिक पार्लमेण्ट की अनुमति लेना आवश्यक हो गया। अभाग्य वश चार्लस को ये परिवर्तन अच्छे न लगे और कामन्स सभा को यह विश्वास हो गया कि राजा का बस चलै तो अपने पुराने अख़्तियार फिर ले लेगा। इस से जब अन्त को स्काटलैण्ड से सन्धि कर ली गई और अंगरेज़ी और स्काट सेना दोनों तोड़ दी गई, सिपाही अपने अपने घर भेज दिये गये तो लोगों की छाती का बोझ उतर गया क्योंकि चार्लस के पास पार्लमेण्ट के प्रतिकूल कार्रवाई करने का कोई सामान न रह गया।

३।—धार्मिक दल—सारी कामन्स सभा सहमत थी कि राजा पार्लमेण्ट से सलाह लिया करें और कानून के अनुसार

शासन करें। परन्तु एक बात ऐसी थी जिसमें एक मत न था। लाड के समय में विशप लोगों ने प्युरिटैन लोगों को बहुत सताया था। इससे प्युरिटैन-दलवाले चाहते थे कि देश में विशप रक्खे ही न जायं। उनकी यह भी इच्छा थी कि प्रार्थना-पुस्तक बदल दी जाय। इनके विरुद्ध कामन्स सभा में ऐसे लोग भी थे जो चाहते थे कि विशप ज्यों के त्यों बने रहें और प्रार्थना-पुस्तक भी जैसी की तैसी रहे। ई० १६४१ की गर्मी में कामन्स सभा में दोनों दल बराबर थे और धर्मसंघ के विषय की कोई बात आती तो एक दूसरे के प्रतिकूल सम्मति देते। परिवर्त्तन चाहनेवालों में पिम और हैम्पडन मुख्य थे और हाइड और फ़ाकलैण्ड उस दल के मुखिया थे जो चाहता था कि परिवर्त्तन न हों। किसी को यह सम्भव प्रतीत न हुआ कि जो जैसा उचित समझे वैसा उसको करने देना चाहिये और कुछ गिरजाघरों में एक प्रकार की प्रार्थना-पुस्तक पढ़ी जाय, कुछ में दूसरे प्रकार की और कुछ ऐसे भी रहें जिनमें प्रार्थना-पुस्तक रहे ही नहीं तो कोई हानि नहीं है।

४।—ऐरलैण्ड में बलवा—इधर तो दोनों दल एक दूसरे से बिगड़े हुये थे उधर ऐरलैण्ड में बलवा हो गया। अल्स्टर के ऐरिश लोगों ने, जिनकी धरती ज़ेम्स के शासन-काल में छिन गई थी, अंगरेज़ों और स्काट लोगों को, जो उनके धरती पर जाकर बसे थे देश से निकाल दिया। ऐरिश अनपढ़ उजड्ड थे और समझे थे, कि हमारे साथ अत्याचार किया गया है। उन्हों ने बहुतेरों को जान से मार डाला। बहुतेरे स्त्री पुरुषों के कपड़े उतरवा लिये और जाड़े की ठंडी रातों में उन्हें घर के बाहर मारे मारे फिरने को निकाल दिया। बात बुरी तो थी ही परन्तु इंग्लिस्तान में बहुत बढ़ा कर कही गई। पार्लामेण्ट ने निश्चय किया कि ऐरलैण्ड को एक सेना भेजी जाय। सेना ने ऐरिश लोगों के

साथ बड़ी निठुराई की और मर्दों के साथ औरतों और बच्चों को भी मार डाला ।

५ ।—बड़ा उपालम्भ और पांच सभ्यों को दण्ड देने का प्रयत्न—कामन्स सभा में पिम और उसके मित्रों को यह डर लगा था कि राजा ने इस सेना के अफ़सर मुक़र्रर किये तो ऐरलैण्ड-वालों को तो दण्ड दिया ही जायगा, राजा उन्हें पार्लामेण्ट के ऊपर भी छोड़ देगा । इस डर से उन लोगों ने एक बड़ा ख़रीता तैयार किया जिसका नाम बड़ा उपालम्भ रक्खा । इसमें उन्हों ने चार्ल्स के उपर यह दोष लगाया कि जब से राजा हुआ है इसने कुछ नहीं किया, अब उन्हीं को अपना मन्त्री मुक़र्रर करे जिनकी मंजूरी पार्लामेण्ट दे । उन्होंने राजा से यह भी प्रार्थना की कि प्रार्थना-पुस्तक में क्या क्या परिवर्त्तन होने चाहियें इन पर विचार करने के लिये पादरियों की सभा करें । चार्ल्स ने न माना । कामन्स सभा के बहुत से सभ्य उसके विरोधी थे परन्तु लार्ड सभा के बहुतेरे सदस्यों ने उसका पक्ष लिया । नगर निवासियों की एक भीड़ लार्ड लोगों और विशेष करके बिशपों को धमकाने के लिये पहुंच गई । इसपर चार्ल्सने चाहा कि राजाज्ञाके प्रतिकूल आचरण करने के लिये कामन्स सभा के पांच सभ्यों और लार्ड सभा के एक सदस्य पर मुक़द्दमा चलाया जाय । कामन्स सभा ने उन्हें राजा के हवाले करने से इनकार किया इस पर राजा तीन चार सौ हथियार-बन्द सिपाही लेकर सभा-मण्डप में पहुंच गया परन्तु जिन पांचों को वह पकड़ने गया था वह वहां से चल दिये थे । तब उसने सभापति से कहा, "बताओ कहां गये" सभापतिने उत्तर दिया, "श्रीमान्, मेरे न देखने को आंखें हैं और न सुनने को कान हैं । उतना ही देख सुन सकता हुं जितना सभा मुझे आज्ञा देती है" । राजा को पांचों सदस्य न मिले और वह सभा मण्डप से चला गया ।

दूसरे दिन उसने सुना कि पांचों नगर में हैं। वहां भी वह उन्हें पकड़ने पहुंचा परन्तु नगरनिवासियों ने पकड़ने न दिया। उसके कुछ दिन पीछे कुछ हथियारबन्द नगर-निवासी उन्हें वेस्टमिन्स्टर पहुंचा गये। चार्ल्स ने अपने बैरियों का उत्साह देखना न चाहा और लन्दन के बाहर चला गया।



कवालियर और प्युरिटन

६।—राजा और पार्लमेण्ट में अनबन—कई महीने तक राजा और कामन्स सभा में विवाद होता रहा। कामन्स सभा को राजा का विश्वास न था। कामन लोग यह समझे थे कि राजा उन पर आक्रमण करने के लिये परदेशी सिपाही बुलावेगा और उन्होंने राजा से कहा कि कच्ची सेना के अफ़सर भी पार्लमेण्ट ही मुक़र्रर करें। उन दिनो इंग्लिस्तान में कोई स्थायी सेना न थी।

देश की रक्षा के लिये कुछ पुरुष साल में कुछ दिन क़वायद सिखाये जाते और अपने घर जाकर अपना कामधंधा करते थे। यह लोग मिलिशिया (Militia) कहलाते थे। देश पर बैरी चढ़ आता तो यही लोग इकट्ठा होकर उसका सामना करते। अबतक इनके अफ़सरों को राजा मुक़र्रर करता था परन्तु कामन्स सभा डर के मारे अब न चाहती थी कि उन्हें राजा मुक़र्रर करे। परन्तु राजा इस अधिकार को छोड़ना न चाहता था। वह यार्क चला गया और अपनी भक्त अनुरक्त प्रजा को बुलाया। कामन्स




घरेलू लड़ाई में इंग्लिस्तान और वेल्स।

सभा के आधे सदस्य और लार्ड सभा के आधे से अधिक उसके पक्षपाती थी। चार्ल्स उनका राजा था इस लिये बहुतेरे उसके लिये लड़ने मरने को तैयार हुये और कुछ लोग उसके लिये इस कारण से लड़े कि प्रार्थनापुस्तक को बदलना न चाहते थे। अन्त को ई० १६४२ अगस्त के महीने में राजा ने नाटिंघम नगर में अपना झण्डा गाड़ दिया जो इस बात का सूचक था कि राजा पार्लमेण्ट पर आक्रमण करना चाहता है। राजा प्रजा में लड़ाई का यही प्रारम्भ है। राजा के पक्षपाती कवालियर (Cavalier) कहलाते थे, जिसका अर्थ घुड़सवार या भद्रलोक है और जिन लोगों ने पार्लमेण्ट का पक्ष लिया वे रौण्डहेडस(Roundheads) मुण्डों के नाम से प्रसिद्ध थे क्योंकि प्युरिटैन होने के कारण उनके सिर के बाल कतरे रहते थे।

७।—राजा प्रजा की लड़ाई का प्रारम्भ—पहिले कुछ दिनों तक राजा की जीत रही। पहिली लड़ाई एजहिल (Edgehill) में हुई इसमें कोई न जीता परन्तु पार्लमेण्टवाले पीछे हट गये थे इससे राजा का पक्ष बली रहा। राजा ने आक्सफ़ोर्ड नगर में प्रवेश किया और जब तक लड़ाई जारी रही वहीं अपना सदर रक्खा। यहां से वह लन्दन की ओर बढ़ा और ब्रेण्टफ़ोर्ड पहुंचा। लन्दन-निवासियों ने हथियार उठाये और टर्नहम ग्रीन पहुंचे। दोनों सेनाओं में देखादेख हुई परन्तु युद्ध न हुआ। राजा लन्दन नगर जीत लेता तो युद्ध समाप्त हो जाता क्योंकि लन्दन के सौदागर बड़े धनी थे और बिना उनकी सहायता के पार्लमेण्ट अपनी सेना का खर्च न सम्हाल सकती। दूसरे बरस ई० १६४३ में कभी एक पक्ष हारता कभी दूसरा। हैम्पटन पार्लमेण्ट की ओर से लड़ते लड़ते मरा और फ़ाकलैण्ड ने राजा के लिये अपने प्राण दिये। इस साल राजा की हानि की अपेक्षा

उसे लाभ अधिक हुआ। इंग्लिस्तान का सम्पूर्ण उत्तरी और पश्चिमी भाग राजा के हाथ में आ गया। इसी साल के अन्त में चिन्ताग्रस्त होकर पिम भी मर गया। पार्लामेण्ट के मुखियों ने निराश होकर स्काट लोगों को अपनी सहायता के लिये बुलाया और ई० १६४४ में सीमा पार करके स्काट लोग अंगरेज़ लोगों से मिले। दोनों सेनाओं ने यार्क नगर के पास मार्सटन मूर के उत्तर राजा की सेना को परास्त किया। तब से राजा का पक्ष दबता ही गया।

८।—<u>प्रेस्बिटीरियन (Presbyterian) और इण्डीपेण्डेण्ट Independent</u>—प्युरिटैनलोगों में भी दो पक्ष हो गये थे। कामन्स सभा के बहुत से सभ्य जो राजा के विरोधी बने थे प्रेस्बिटीरियन थे। उनका मत यह था कि ईसाई धर्मसंघ में बिशप न रक्खे जायं और प्रार्थना पुस्तक न पढ़ी जाया करें। वह लोग इस बात के प्रतिकूल थे कि ऐसे सिद्धान्तों के उपदेश सुनने के लिये जिनका अनुमोदन प्रेस्बिटीरियन पादरी न करें कोई समाज इकट्ठी हो। कुछ सदस्य इण्डीपेण्डेण्ट कहलाते थे। उनका मत यह था कि प्रत्येक समाज अपने धर्म का निर्णय आप कर ले और प्रत्येक मनुष्य को, कम से कम प्रत्येक प्युरिटन को, इस बात की स्वतन्त्रता मिलनी चाहये कि जिस रीति से चाहै ईश्वर की आराधना करै। इस दल का नेता ओलिवर क्रारवेल था। युद्ध के आरम्भ में वह एक सेना का कप्तान था और उसने अपनी सेना में ऐसे प्युरिटैन भर्त्ती कर लिये थे जो अपने धर्म के लिये लड़ने मरने को तैयार थे। युद्ध बढ़ने पर वह सेनापति हो गया और उसने अपनी पल्टनों में ऐसे ही सिपाही भर लिये। परन्तु उसै थोड़े ही दिनों में विदित हो गया कि उसकी सेना के सब लोग प्युरिटन होने पर भी धर्म

सम्बन्धी बातों में एक न थे। एक सिपाही बेपटिस्ट था, दूसरा इण्डीपेण्डेण्ट और तीसरा प्रेस्बिटीरियन। अफ़सरों के मुक़र्रर करने में क्रास्वेल ने केवल उनकी युद्ध की योग्यता देखी। इतनी ही जांच की कि वे प्युरिटन हैं और भले मानुस हैं और किसी से न पूछा कि तुम्हारा मत क्या है। पार्लामेण्ट के सदस्य और राज्य के कर्मचारी चुनने में भी उसके यही विचार थे। प्रेस्बिटीरियन लोगों को यह बात न रुची। उनका यह विचार था कि जो लोग प्रेस्बिटीरियन नहीं हैं उन्हें कोई पद न मिले।

९।—आत्मसंयम का नियम और नया नमूना—सेना के बहुत से नायक प्रेस्बिटीरियन थे और इस विषय में क्रास्वेल के मनमानी करने के अधिकार की अपेक्षा राजा के साथ समझौता करना अच्छा समझे थे। यह लोग राजा को अधिक दण्ड देना न चाहते थे इस विचार से उन लोगों ने उसकी कोई हानि न की। बहुत लोग युद्ध से घबरा भी गये थे। इस कारण क्रास्वेल ने पार्लामेण्ट से आत्मसंयम का नियम और नया नमूना स्वीकृत करा दिया जिसके अनुसार पार्लामेण्ट का सदस्य सेना में अफ़सर न हो सकता था। सेना में मुख्य प्रेस्बिटीरियन नायक पार्लामेण्ट के मेम्बर भी थे इससे उन्हें अपना पद त्यागना पड़ा। क्रास्वेल भी पार्लामेण्ट का सदस्य था परन्तु वह बड़ा योग्य सेनानायक था इसलिये उसे लोगों ने सेना में रहने की अनुमति दे दी और सब नये नये अफ़सर मुक़र्रर किये गये। फ़ेयरफ़ैक्स (Fairfax) सेनापति बनाया गया और क्रास्वेल उपसेनापति रहा। इस परिवर्तन होने पर जो सेना बनी उसका नाम नया नमूना रक्खा गया।

१०।—राजा प्रजा की पहिली लड़ाई का अन्त और राजा से सन्धि की बातचीत—नई सेना ई० १६४५ में राजा से नेस्बी

( Naseby ) स्थान में भिड़ गई और उसको परास्त कर दिया। दूसरे साल उसे कोई आशा न रही और स्काटलोगों के पास जाकर उसने आत्मसमर्पण कर दिया। उन्हों ने उससे इंग्लिस्तान में प्रेस्बिटीरियन शासन स्थापित करने की प्रार्थना की। राजा ने न माना। तब स्काटलोगों ने उसे अंगरेज़ी पार्लामेण्ट के हवाले कर दिया और पार्लामेण्ट ने उसपर नार्थाम्पटन ज़िले के होल्मबी भवन में बन्द कर दिया। राजा वहां बहुत दिन न रहा था कि अंगरेज़ी सेना और पार्लामेण्ट में झगड़ा हो गया। पार्लामेण्ट के प्रेस्बिटीरियन सदस्य चाहते थे कि सिपाहियों को तनख़ाह न दी जाय और अपने अपने घर भेज दिये जायं। सिपाहियों ने कहा कि "हम विना तनख़ाह लिये घर न जायंगे—हम धर्म के लिये लड़े हैं। जब तक हमें निश्चय न हो जायगा कि जैसी हम उचित समझते हैं वैसी हम पूजा कर सकैंगे तब तक हम हथियार न डालैंगे"। सिपाहियों ने लन्दन नगर में कूच करके मुख्य मुख्य प्रेस्बिटीरियन सदस्यों को पार्लामेण्ट से निकाल दिया। अब इंग्लितान में सेना का राज हो गया। इसके पहिले उसने राजा को पकड़ कर हैम्पटन कोर्ट में ठहराया था। सेना के नायकों ने इस बात की अनुमति दे दी कि अंगरेज़ी धर्म-संघ की पूजाविधि फिर से जारी की जाय परन्तु जो न चाहै वह उस समाज में आने को बाध्य न किया जाय और प्रोटेस्टैण्ट लोगों को पूरी धार्मिक स्वतन्त्रता दी जाय। चार्ल्स ने एक न सुनी और वैट टापू को भाग गया।

११।—राजा प्रजा की दूसरी लड़ाई और चार्ल्स का वध—परन्तु चार्ल्स स्वतन्त्र रहने न पाया और न्यूपोर्ट ( Newport ) के पास कैरिस्ब्रूक ( Carisbrooke ) गढ़ में बन्द कर दिया गया। यहां उससे सन्धि की बातचीत करने को पार्लामेण्ट ने

कुछ सदस्य भेजे। चार्ल्स एक ओर उनसे तो मित्रभाव से बातें कर रहा था दूसरी ओर दूसरे युद्ध की तयारी करता था। बसन्त ऋतु में वेल्स, केण्ट और एसेक्स में उसके पक्षवालों ने बलवा कर दिया। उसी का पक्ष लेकर एक स्काट सेना ने भी इंग्लिस्तान के उत्तर प्रान्त पर चढ़ाई कर दी। चार्ल्स ने कैरिस्ब्रुक से निकल कर भाग जाने का प्रयत्न किया, परन्तु जिस खिड़की से निकलना चाहता था, उसमें जंगला लगा था जिसकी छड़ें पास पास थीं। इससे वह निकल न सका और तब से उसकी रखवारी में बड़ी चौकसी होने लगी। फ़ेयरफ़ैक्स ने केण्ट औ एसेक्स का बलवा दबा दिया। क्रामवेल ने वेल्स का बलवा दब कर उत्तर को कूच किया और प्रेस्टन में स्काटलोगों से भिड़कर उनको हरा दिया। इस विजय से लौट कर सिपाहियों का चार्ल्स पर बड़ा क्रोध हुआ और सबने यही समझा कि मुहँ मित्रभाव की बातें करते हुये चार्ल्स ने लड़ाई छेड़ कर उनको धोखा दिया। इस विचार से उन्हों ने चार्ल्स पर मुक़द् चलाना चाहा। मुक़द्दमा करने के लिये अदालत चाहिये सरकारी जजों ने मुक़द्दमा करने से इनकार किया। नई अदालत न बना सकती थी। इस पर सिपाहियों ने कामन्स सभा के ६० सदस्य निकाल दिये। जो बचे उन्हों ने [illegible] की कही और यह 'वोट' दिया कि राजा की रूबकारी के एक हाईकोर्ट होनी चाहिये। लार्डसभा ने कहा कि हमलोग विषय में कुछ न करेंगे और लार्ड भी निकाल दिये गये। इस नई अदालत में बुलाया गया तो उसने कहा कि इस को हमारी रूबकारी करने का अख्तियार नहीं है, हम न करेंगे। परन्तु अदालत ने उसे प्राणदण्ड दिया और व्हाइट हाल में उसी के महल की खिड़कियों के आगे टिकटी खड़ी उसका सिर काट लिया गया।

## ॥ अध्याय २८ ॥

### * प्रजातन्त्र राज्य और संरक्षक शासन *

(ई० १६४८—१६६०)

१।—प्रजातन्त्र राज्य—अब से इंग्लिस्तान में प्रजातन्त्र स्थापित हो गया। इसका अर्थ यह है कि कोई राजा न रहे और देश के शासन करने को पार्लामेण्ट एक राजसभा (Council of State) प्रतिवर्ष निर्वाचित करे। इस पार्लामेण्ट में लार्ड-सभा न थी और कामन्स सभा में सौ से कुछ ऊपर सदस्य थे जो अब तक अधिवेशन करते रहे। और सदस्य युद्ध में राजा की ओर से लड़ने के लिये वेस्टमिन्स्टर छोड़ कर चले गये थे या समय समय पर सिपाहियों के अत्याचार से निकाल दिये गये थे।

२।—ऐरलैण्ड में क्राम्वेल—प्रजातन्त्र राज्य के पहिले साल क्राम्वेल ऐरलैण्ड को भेजा गया। आठ बरस पहिले जब अल्स्टर में बलवा हुआ था तब से ऐरलैण्ड में मारकाट जारी रही। क्राम्वेल शान्ति स्थापन करने गया था। ड्राघिडा (Drogheda) के रक्षक उसकी आज्ञा से बड़ी निठुराई से मार डाले गये। वेक्सफ़ोर्ड (Wexford) के रक्षकों का भी वध किया गया परन्तु उसकी आज्ञा से नहीं। औरों ने उसके उठाये काम को पूरा किया। ऐरिश लोगों की धरती अंगरेज़ और स्काट लोगों को दे दी गई जो वहां जाकर बसे। हज़ारों ऐरिश लोग कनाट के उजाड़ प्रान्त में रहकर अपने दिन काटने को अपने अपने घरों से निकाल दिये गये। ऐरलैण्ड में शान्ति स्थापित हो गई परन्तु केवल प्रजा को दबाकर जो शान्ति स्थापित होती है वह बहुत दिनों तक नहीं रहती।

३।—स्काटलैण्ड से लड़ाई—दूसरे बरस क्राम्वेल को सेना समेत स्काटलैण्ड जाना पड़ा। राजा के बध से स्काटलोगों के हृदयों पर बड़ी चोट लगी थी और उन्हों ने उसके बेटे को बुलाकर चार्ल्स द्वितीय के नाम से राजा बनाया। क्राम्वेल डनबार (Dunbar) में समुद्र और उन पहाड़ियों के बीच में फंस गया जिन पर स्काट सेना पड़ी हुई थी। वह वहां से न तो लड़ सका और न निकल ही सका। एक दिन स्काट सेना उसकी ओर बढ़ती हुई नीचे उतरी। दूसरे दिन सवेरा होते ही वह उस पर टूट पड़ा। जब उसके सिपाही जो अभी तक कभी न हारे थे शत्रु की सेना में घुसे तो उसने चिल्ला कर कहा, "भगवान्, उठो और तुम्हारे वैरी तितर बितर हो जांय"। स्काट सेना उल्टे पावँ भागी और क्राम्वेल की जीत हो गई। क्राम्वेल ने एडिनबरा पर क़बज़ा कर लिया परन्तु सारा स्काटलैण्ड उसके हाथ न आया। दूसरे बरस ई० १६५१ में एक स्काट सेना चार्ल्स द्वितीय को अपने साथ लेकर क्राम्वेल के पास से छिपकर निकल गई और इंग्लिस्तान पर चढ़ गई। यह सेना दृढ़ता से आगे बढ़ी और राजा के पक्षपाती अंगरेज़ों को अपना साथ देने के लिये पुकारती गई। क्राम्वेल भी इसके पीछे चला आ रहा था और ऊर्सटर (Worcester) के मैदान में उनसे भिड़कर उनको नष्ट भ्रष्ट कर दिया। इस घटना के विषय में उसने लिखा है कि, "ईश्वर की दया का विस्तार मेरे ध्यान में भी नहीं आ सकता। इससे बढ़कर और क्या दया हो सकती है"। क्राम्वेल ने यथार्थ कहा। वह जब तक जीता रहा तब तक न स्काट लोगों ने और न राजा के अंगरेज़ी पक्षपातियों ने इंग्लिस्तान में सिर उठाया। नये राजा ने भाग कर यूरप महाद्वीप में शरण ली। कहा जाता है कि वह एक बार एक बड़े पेड़ के कोटर में छिपा हुआ था जिसके नीचे क्राम्वेल के सवार जा रहे थे।

४ ।—लम्बी पार्लामेण्ट का निकाला जाना—इन दिनों ८० सदस्यों ने पार्लामेण्ट बना रक्खी थी और इन्हों ने इंग्लिस्तान का अच्छा शासन न किया था । यह लोग सदस्यों के मित्रों और नातेदारों को ओहदे देना चाहते थे और राजा के पक्षपातियों के साथ जो उन्हें रिश्वत न देते, कठोर बर्ताव करते थे । क्राम्वेल ने उनसे कहा कि यह पार्लामेण्ट तोड़ दी जाय और दूसरे चुनाव का हुक्म निकाला जाय । परन्तु यह नया चुनाव किस रीति से हो इस पर क्राम्वेल और सदस्यों में मत भेद था । इसके अतिरिक्त पार्लामेण्ट ने डच लोगों के साथ लड़ाई छेड़ दी । यह लड़ाई क्राम्वेल को अच्छी न लगी क्योंकि वह प्रोटेस्टैण्ट जातियों का आपस में लड़ना न चाहता था । ई० १६५३ में वह एक दिन सभामण्डप में आया और कुछ सिपाही बुलाकर सारे सदस्यों को निकाल दिया और फाटक में ताला लगा दिया । यह घटना इंग्लिस्तान में किसी को बुरी न लगी । क्राम्वेल ने कुछ दिन पीछे लिखा कि "उनके जाने पर कुत्ता भी न भूंका" ।

५ ।—बेयरबोन्स ( Barebones ) पार्लामेण्ट—क्राम्वेल और उसके सरदारों ने बहुत से मनुष्य बुलाये और उनसे कहा कि एक सभा करके यह विचार करो कि अब क्या करना चाहिये । यह सभा वास्तव में पार्लामेण्ट न थी । इसका एक सदस्य प्रेज़-गाड बेयर-बोन्स था, इसी से यह बेयरबोन्स पार्लामेण्ट के नाम से प्रसिद्ध है । इसने कोई काम नहीं किया और दो चार महीने बिता कर सारे अधिकार क्राम्वेल को दे दिये ।

६ ।—क्राम्वेल की पहिली पार्लामेण्ट—क्राम्वेल अब प्रोटे-क्टर ( Protector संरक्षक ) हो गया जिसका अभिप्राय यह था कि राजा का नाम न था परन्तु पूरा राजा था । उसे एक

सभा की पार्लमेण्ट मिली परन्तु पार्लमेण्ट ज्यों ही बैठी उसने यह चाहा कि उसी की इच्छानुसार सब काम हों और उसने उसे तोड़ दिया और बिना पार्लमेण्ट के शासन करने लगा।

७।—<u>क्राम्वेल का शासन</u>—इंग्लिस्तान में क्राम्वेल ने प्युरिटैन लोगों को उनकी इच्छा के अनुसार पूजा करने की आज्ञा दे दी परन्तु अंगरेज़ी धर्मसंघवालों को इकट्ठा होकर प्रार्थना-पुस्तक में से प्रार्थना करने न दिया क्योंकि वह जानता था कि धर्म-संघवाले फिर देश में शासन करने के लिये युवा राजा को बुलाना चाहते हैं। उसने इंग्लिस्तान के बाहर स्पेन के विरुद्ध लड़ाई में फ्रान्स का साथ दिया और फ्रान्सीसी सेना से मिलकर उसने स्पेनवालों को परास्त कर दिया और इस सहायता के बदले उसे डंकर्क (Dunkirk) नगर मिल गया। जलयुद्ध से प्रसिद्ध जलसेनापति ब्लेक ने स्पेनवालों पर विजय प्राप्त की। क्राम्वेल बड़े बड़े काम कर सकता था। परन्तु इंग्लिस्तान की जनता उसे चाहती न थी। इंग्लिस्तान के रहनेवाले ऐसे शासन से सन्तुष्ट न थे जो सेना की सहाता से किया जाय और न इतनी बड़ी सेना रखने के लिये बड़े बड़े कर देना चाहते थे। क्राम्वेल जानता था कि मेरे विरुद्ध निरन्तर षड़यन्त्र रचे जा रहे हैं। उनको दमन करने के लिये उसने सब कुछ किया और उचित अनुचित का विचार न किया। पार्लमेण्ट विसर्जन करने पर उसने ऐसे ऐसे कर लगाये जिनकी पार्लमेण्ट ने कभी अनुमति न दी थी। तोभी वह यह चाहता था कि उसे ऐसी पार्लमेण्ट मिल जाय कि जो उसकी सहायता करें और उसने दूसरी पार्लमेण्ट बुलाई।

८।—<u>क्राम्वेल की दूसरी पार्लमेण्ट</u>—इस बार उसने उन सदस्यों की सूची बनाई जिनसे अड़चन पड़ने की शंका थी और उनको पार्लमेण्ट में आने न दिया। परिणाम यह हुआ कि पहिली पार्लमेण्ट की अपेक्षा दूसरी उसके अनुकूल रही। इस

पार्लमिण्ट ने "अर्ज़ी और सलाह" के नाम का एक खर्रा तैयार किया जिस में उसने क्रास्वेल से प्रार्थना की कि राजा की पदवी धारण करैं, पार्लमिण्ट में एक लार्डसभा भी स्थापित करैं और जिन लोगों का चुनाव हो चुका है उनको सभा में आने से रोकने का अधिकार छोड़ दें। क्रास्वेल ने राजा की पदवी स्वीकार न की, और बातैं मान लीं। परन्तु पार्लमिण्ट का दूसरा अधिवेशन हुआ तो क्राम्वेल की स्थिति पहिले से भी बिगड़ी। कामन्स सभा ने नये लार्डों का सम्मान न किया और कहा कि हम कुछ काम न करैंगे। क्रामवेल ने पहिली की भांति दूसरी पार्लमिण्ट भी तोड़ दी। सिपाहियों के अतिरिक्त उसके हितैषी बहुत कम थे। ई० सन् १६५७ बीतने न पाया था कि क्रास्वेल की मृत्यु हो गई। जहां तक उसकी समझ में आया उसने भलाई करने का उद्योग किया परन्तु इंग्लिस्तान चाहता ही न था कि एक सिपाही उसपर शासन करै।

६।—रिचर्ड क्रास्वेल का महासंरक्षकत्व और प्रजातन्त्र-राज्य का फिर से स्थापित होना—क्रास्वेल का बड़ा बेटा रिचर्ड उसके मरने पर महासंरक्षक बना। वह बड़े सरल स्वभाव का था, किसी काम में हाथ डालना न चाहता था और उसे शासन करना न आता था। उसने एक पार्लमिण्ट बुलाई और इस पार्लमिण्ट ने इस विचार से कि वह सिपाही न था और सिपाही का शासन किसी को अच्छा न लगता था, उसका साथ दिया। सिपाहियों ने यह प्रार्थना की कि हम जिसको चाहैं अपना सेनापति बना लें जिससे रिचर्ड के आधीन न रह जायँ। जब उनकी बात स्वीकृत न हुई तो वह लोग वेस्टमिंस्टर पहुंचे और रिचर्ड और उसकी पार्लमिण्ट को बाहर निकाल दिया और उस पार्लमिण्ट के बचे हुए सदस्यों को बुला लाये जिसे क्रास्वेल ने निकाल दिया था। परन्तु यह लोग भी रिचर्ड की पार्लमिण्ट की भांति सिपाहीशासन

के विरोधी थे, और इन्हें भी सिपाहियों ने निकाल दिया। सिपाहियों ने निश्चय किया कि बिना पार्लामेण्ट के देश का शासन करें परन्तु उनको थोड़े ही दिनों में विदित हो गया कि पार्लामेण्ट की अनुमति के विना कोई कर न देगा। इसपर सिपाहियों ने पुरानी लम्बी पार्लामेण्ट के सदस्यों को फिर बुला लिया।

१० ।—परावर्त्तन—स्काटलैण्ड में एक अंगरेज़ी सेना थी जिसका सेनापति जार्ज मङ्क (George Monk) था। वह बड़ा चुप्पा था और उसैं इस बात की पर्वाह न थी कि देश का शासन कैसे हो परन्तु वह यह जानता था कि अंगरेज़ लोग सिपाही शासन के विरोधी हैं। उसने ट्वीड (Tweed) नदी पार की और अपना अभिप्राय किसी को विना बताये कूच करता हुआ लन्दन पहुंचा। वहां उसने देखा कि नगर में गड़बड़ मचा हुआ है। कुछ संकोच करके उसने स्वतन्त्र पार्लामेण्ट की घोषणा दे दी। स्वतन्त्र से अभिप्राय यह था कि जिसका चुनाव हो जाय उसे सिपाही रोक न सकैं और पार्लामेण्ट जैसा उचित समझै वैसा निर्णय करैं चाहै उस निर्णय को सिपाही मानैं या न मानैं। पुरानी लम्बी पार्लामेण्ट अपनी ही सम्मति से टूट गई। एक नई पार्लामेण्ट चुनी गई और चार्ल्स प्रथम का बड़ा बेटा बुलाकर चार्ल्स द्वितीय के नाम से राजा बनाया गया।

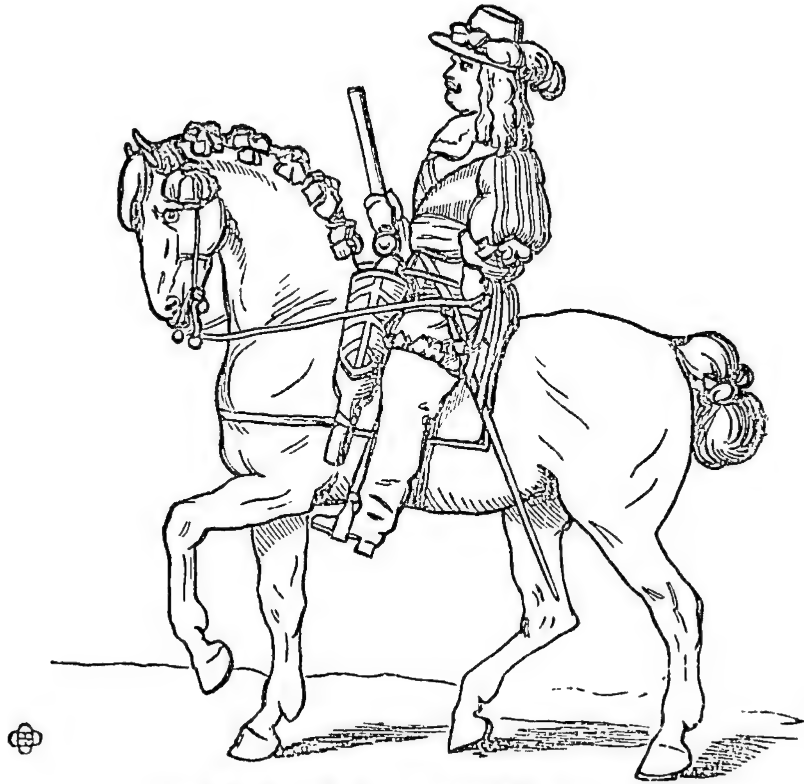
## ॥ अध्याय २९ ॥

### * चार्ल्स द्वितीय के शासन के पहिले बारह बरस *

( ई० १६६१ से १६७२ तक )

१ ।—चार्ल्स द्वितीय का चालचलन—उन दिनों राजा के पक्षपाती एक गीत गाया करते थे जिसके प्रत्येक पद के अन्त में

यह आता था, "राजा फिर भोगैगा राज"
चार्लस यह समझता था कि भोग विलास करने ही से उसके जीवन का परमार्थ सिद्ध हो जायगा। उसने अपने भाई से कहा कि जो चाहे सो हो जाय हम फिर परदेश की यात्रा न करैंगे। उसे सुख भोग अच्छा लगता था परन्तु यह भी बड़े नीच प्रकार का था। उसने पुर्तगाल की राजकुमारी ब्रगांज़ा (Braganza) की कैथरीन (Catherine) के साथ विवाह किया परन्तु उसका वर्त्ताव अच्छा न था। वह बड़ा हंसमुख था और हंसोड़ों के साथ वैठने से प्रसन्न रहता। उसकी प्रजा उसे प्रसन्नवदन राजा कहती थी परन्तु यह बात उसके ध्यान में न आई कि राजा को अपने कर्त्तव्य पालन में अपना समय विताना चाहिये और अपने हंसी खेल को उठा रखना चाहिये। सच तो यह है कि उसने कभी यह भी न समझा कि कर्त्तव्य भी कोई वस्तु है। उसके विषय में कहा जाता था कि उसने कभी कोई भोंडी बात न कही न कभी कोई चतुराई की बात कही। उसने कोई बुद्धिमानी का काम न किया परन्तु उसमें इतनी चतुराई अवश्य थी कि वह मूर्खता के काम करने में अपनी हानि समझ जाता था। जब उसने देखा कि जनता ने अपनी इच्छा के अनुसार काम करने का दृढ़ संकल्प कर लिया है तो उसने अपने पिता की भांति उनको रोकने का प्रयत्न न किया। इस आचरण से वह इंग्लिस्तान में अपने पलंग पर ही मरा और न अपने पिता की भांति अपना सिर कटवाया न अपने उत्तराधिकारी भाई की भांति देश से निकाला गया यद्यपि कोई यह नहीं कह सकता कि उसने कोई भला काम भी किया। उसको धर्म की पर्वाह न थी। जब वह इंग्लिस्तान आया तो उसने अपने को गुप्त रूप से कैथोलिक बताया और मरते समय भी उसने अपने को कैथोलिक कहा। परन्तु अपने सारे शासनकाल में वह खुल्लम खुल्ला प्रोटेस्टैण्ट बना रहा।



चार्ल्स द्वितीय के समय का जंगी सवार।

२।—सेना का विसर्जन और चार्ल्स प्रथम के जजों का वध—जिस समय चार्ल्स द्वितीय डोवर में उतरा था उसका बड़ी धूम से स्वागत किया गया था। यह स्वागत देखकर वह बोला कि इसमें मेरा ही दोष है जो मैं इस से पहिले अपने देश में न आया। "मुझसे सब यही कह रहे हैं कि हम लोग आपका लौटना मना रहे थे।" वास्तव में यह दोष प्युरिटन सेना का था। अंगरेज़ लोग उस सेना से बड़ी घृणा करते थे जिसके बल से क्राम्वेल ने उन पर शासन किया था। सब यह चाहते थे कि राजा प्रजा की लड़ाई के पहिले जैसे रहते थे वैसे ही रहें। उन दिनों कोई स्थायी सेना न थी। कुछ किसान और कुछ दुकानदार साल में थोड़े दिनों के लिये क़वायद सीखने आते थे फिर अपना कामधन्धा करने चले जाते थे। चार्ल्स को

क्राम्वेल के सिपाहियों को अपने अपने घर भेज देने में कोई कठिनाई न पड़ी। केवल तीन पल्टनें रह गईं और वही आजकल की राजसेना की जड़ हैं। जिस अदालत ने चार्ल्स प्रथम को प्राणदण्ड दिया था उसके कुछ जजों और उन लोगों पर भी जिन्हों ने निष्ठुरता से उसका विरोध किया था मुक़दमा चलाया गया और उनका वध किया गया। क्राम्वेल और दो औरों के मृतक शरीर क़ब्रें खोद कर निकाले गये और उनको फांसी दी गई।

३।—प्युरिटन लोगों के साथ बर्त्ताव—राजा के लौटने पर एक बरस पीछे नई पार्लमिण्ट का चुनाव हुआ। इसमें ऐसे बहुत कम सदस्य आये जिन्होंने चार्ल्स प्रथम का साथ न दिया था। इसलिये यह पार्लमिण्ट कवालियर पार्लमिण्ट कहलाती थी। जब लोग बहुत डर जाते हैं तो कभी कभी उनके मन में ऐसे विचार आने लगते हैं कि जिन लोगों ने उन्हें सताया है उन्हें बलसे हटा दें। क्राम्वेल के समय में प्युरिटन लोगों ने अंगरेज़ी जनता को बहुत सताया था। जिन्हें पुरानी चाल की पूजा अच्छी लगती थी वह लोग वैसी पूजा करने न पाते थे और जो लोग पूजा की पर्वाह न करते थे वे अपना मनमाना विनोद करने से रोके जाते थे। इस कारण जनता और पार्लमिण्ट दोनों प्युरिटन लोगों से रुष्ट थीं। बिशप फिर मुक़र्रर किये गये और अंगरेज़ी धर्मसंघ की पूजा फिर से गिरजाघरों में होने लगी। ऐसे क़ानून पास किये गये जिनसे यह समझा जाता था कि प्युरिटन समूल नष्ट हो जायंगे। जो पादरी प्रार्थना-पुस्तक का प्रयोग करना न चाहते थे अपने पैरिशों (Parish)* से निकाल दिये गये और उनको गिरजाओं या घरों के भीतर उपदेश देने की भी मनाही

* नगर या गावँ का वह भाग जो एक पादरी के आधीन हो।

हो गई। कोई अपनेही घर में पूजा करने को अपने कुल के लोगों को छोड़कर पांच मनुष्य से अधिक न बुला सकता था। जो प्युरिटन पादरी निकाल दिये गये थे वह लोग किसी नगर से पांच मील के भीतर न आ सकते थे क्योंकि यह समझा जाता था कि नगरों में प्युरिटन पादरियों के उपदेश सुननेवाले बहुत हैं और प्युरिटन पादरी नगरों में न आने पायेंगे तो उन्हें छिपकर उपदेश करने को भी जमाअत न मिलेगी। पार्लामेण्ट इस बात को भूल गई कि एलिज़बेथ के शासन काल में कैथोलिक लोगों के विरुद्ध बड़े बड़े क़ानून बने परन्तु कैथोलिक ज्यों के त्यों बने रहे तो प्युरिटन कैसे नष्ट हो जाते। उनके साथ बड़ा बुरा बर्त्ताव किया गया। अंगरेज़ी धर्मसंघ से प्रार्थनाओं को बदलने की आशा तो उन्हों ने छोड़ ही दी अब केवल इतना ही चाहते थे कि अपने अपने गिरजाघरों में पूजा कर सकें और उनको दण्ड न दिया जाय। इस कारण अब वे डिसेण्टर (Dissenter) कहलाते थे जिसका अर्थ है मतभेदी, क्योंकि धर्मसंघ से उनका मत भिन्न था और अलग होना चाहते थे। यह लोग बड़े कट्टर थे: जो बात अनुचित मानते उसे कितने ही सताये जाने पर भी न करते।

४।—जान बनियन (John Bunyan)—इनमें से एक जान बनियन था। वह अपने धर्म के लिये बेडफ़र्ड जेल में क़ैद कर लिया गया था; वहीं उसने पिलग्रिम्स प्रोग्रेस (Pilgrim's Progress) नाम ग्रंथ लिखा। उसका जन्म बेडफ़र्ड के ज़िले में हुआ था और उसके माता पिता बड़े कङ्गाल थे। जवानी में वह दुष्ट था परन्तु कुछ दिन पीछे उसने अपना चालचलन बदल दिया। परावर्त्तन के पीछे उसने गिरजाघर जाने से इन्कार किया और अपनी ही जमाअत को उपदेश देता रहा। इसलिये वह बहुत सताया गया। वह जेल में बन्द कर दिया गया और वहीं बारह

बरस तक पड़ा रहा। उसका पैत्रिक उद्यम टिन के बर्त्तन बनाने का था और वह जेल में डोरों के सिरों के लिये टैग* बना कर अपना पेट पालता था। उसने अनेक ग्रन्थ लिखे जिनमें पिलग्रिम्स प्रोग्रेस बहुत प्रसिद्ध है।

५।—जान मिल्टन (John Milton)—जान मिल्टन इंग्लिस्तान का प्रसिद्ध महाकवि प्युरिटन सम्प्रदाय का था। उसने अपना पराडैज़ लास्ट (Paradise Lost) नाम महाकाव्य चार्ल्स द्वितीय के समय में प्रकाशित किया। उसने चार्ल्स प्रथम के समय में जब वह जवान था कई सुन्दर काव्य लिखे थे। जब लंबी पार्लमेण्ट इकट्ठी हुई तो उसने काव्य लिखना छोड़ दिया और धर्मसंघ की दशा पर ग्रन्थ लिखना अपना कर्त्तव्य समझा। उसके विचार में गिरजाघरों के विधिविधानों से सच्चे धर्म में बाधा पड़ती थी और विधिविधान कराके बिशप लोग जनता को अधार्मिक बना देते थे। इस कारण उसने बिशप लोगों के विरुद्ध बहुत कुछ लिख डाला और राजा के हारने पर वह बहुत प्रसन्न हुआ। वह क्रास्वेल की बड़ी प्रशंसा करता था और अन्धा होने पर भी वह प्रजातन्त्र राज्य और संरक्षकत्व के दिनों में अन्य राजाओं को लैटिन भाषा में पत्र लिखने का काम करता था। परावर्त्तन होने से वह बहुत दुखी हुआ। पराडैज़ लास्ट समाप्त करने पर उसने सैमूसन (Samson) के ऊपर एक काव्य लिखा। बुढ़ापे में उसके अन्धेपन ने सैम्सन के अन्धेपन की सुध दिलाई और जब उसने सैम्सन के सताये जाने पर फ़िलिस्टीनों का वर्णन किया तो उसके ध्यान में चार्ल्स द्वितीय के दुराचारी दरबारी थे जो ऐसा ही दुष्टपन किया करते थे।

---

* टिन के टुकड़े जिनसे डोरों के सिरे बँधे रहते हैं

६ ।—लार्ड चैन्सलर क्लैरेण्डन (Clarendon)—परावर्त्तन के थोड़े ही दिन पीछे मंक को ड्यूक अल्बमार्ल (Duke of Albemarle) का पद दिया गया परन्तु गवर्मेण्ट का उसने कोई काम न किया । इन दिनों हैड (Hyde) राजकाज करता था ।



जार्ज मङ्क ड्यूक आल्बेमार्ल ।

हैड लंबी पार्लामेण्ट के आरम्भ में राजकीय दल के मुखियों में से था । वही हैड अर्ल क्लैरेण्डन (Earl Clarendon) और लार्ड चैन्सलर बनाया गया । हैड उन लोगों का भी मुखिया था जो फिर से बिशप स्थापन करना चाहते थे । उसका मत यह था कि राजा को सदा पार्लामेण्ट रखनी चाहिये परन्तु राजा जो चाहै सो करै, पार्लामेण्ट को कभी उसके विरुद्ध हथियार न उठाना चाहिये । उस समय पार्लामेण्ट के भी यही विचार थे ।

बहुधा लोग अपने बैरी के ऐसे कामों का अपवाद बड़ी उग्रता से करते हैं जिन्हें आप करना नहीं चाहते। जैसे चार्ल्स प्रथम के समय में प्युरिटनलोग राजा से लड़ बैठे थे वैसे ही एक दिन राजकीय दलवालों को भी करना पड़ैगा यह बात उनके ध्यान में न आई। इस लिये उन्होंने ऐसे सब लोगों को दोषी ठहराया जिनका यह मत था कि कभी कभी राजा से विरोध भी करना उचित है।

७।—पहिला डच-युद्ध—थोड़े ही दिनों में इस कवालियर पार्लामेण्ट ने भी देखा कि राजा ने निन्दनीय काम किया है। डचलोग बड़े व्यापारी थे। उनके जहाज़ सारे समुद्र में चलते थे। इंग्लिस्तान भी अब व्यापारी देश हो गया था और दोनों जाति के लोग एक दूसरे को ऐसे ईर्षाभाव से देखने लगे जैसे एक सौदा बेचनेवाले दो दुकानदार (जिनकी दुकानें पास पास हों) एक दुसरे को देखते हैं। जब दो जातियों में मनोमालिन्य हो गया तो लड़ने का बहाना बड़ी सुगमता से मिलजाता है और ई० १६६४ में अंगरेज़ों और डच लोगों में लड़ाई छिड़ गई।

८।—लन्दन में ताऊन और अग्निकोप—ई० १६६५ की गरमी में लन्दन नगर में एक भयानक रोग फैला जिसै प्लेग (ताऊन) कहते थे। यह संक्रामक रोग इंग्लिस्तान में कई वार पहिले भी आ चुका था परन्तु ऐसा भयानक कभी न हुआ था। लंदन और और नगरों की गलियां संकरी और मैली रहती थीं और घरों के ऊपर के खण्ड नीचे के खण्ड से चौड़े रहते थे जिससे आमने सामने के मकान एक दूसरे से मिल से जाते थे और शुद्ध वायु के आने जाने को जगह न रहती थी। वही लोगों को बीमार करने के लिये बहुत था। उन दिनों आजकल की अपेक्षा रोग बहुत थे और मनुष्य भी बहुत मरते थे। जब किसी को

प्लेग हो जाता तो डाक्टर भी न जानते थे कि क्या करना चाहिये। उस घर के दरवाज़े पर एक लाल क्रूश बना दिया जाता था और उसके उपर "ईश्वर हम पर दया करै" लिखा रहता था। वह घर बन्द कर दिया जाता था और उसमें न कोई जा सकता था न उसमें से कोई निकल सकता था। जो लन्दन छोड़ कर बाहर जा सका वह चला गया, ग़रीब लोग मरने को वहीं पड़े रहे। प्लेग की छूत लगने का डर चारों ओर फैल गया। उस समय के एक मनुष्य ने लिखा है, "लन्दन से तीस मील, चालीस मील, सौ मील तक की दूरी के रहनेवाले बज़ार से कोई वस्तु लेने में बहुत डरते थे। उनके पास कोई माल आता या उनके घर कोई मनुष्य आता तो समझते थे कि मौत का संदेसा आ गया। मित्र मिलने आते तो किवाड़ बन्द कर लिये जाते थे। खेतों में एक दूसरे से बचते रहते थे। इतने लोग नित्य मरते कि उनका गाड़ना कठिन हो गया। रात को नगर में गाड़ियाँ चलती थीं उनके आगे घण्टी बजाता हुआ एक मनुष्य पुकारता जाता था कि अपने अपने मुर्दे लाओ। इतने मुर्दों के लिये बकस कहां मिलते, सब एक बड़े गड्ढे में फेंक दिये जाते थे। छूत रोकने के विचार से गलियों में आग लगाई जाती थी। जाड़ा आते ही ठंडक पड़ने से प्लेग भी घट गया। दूसरे बरस इस बड़े नगर पर दूसरी विपत्ति पड़ी। एक जगह आग लगी और हवा ज़ोर से चली। इससे सारे नगर में फैल गई और तीन दिन तक जलती रही। टावर से टेम्पल तक और टेम्स नदी से स्मिथफ़ील्ड (Smithfield) तक सारा नगर भस्म हो गया। पुराना सेण्ट पाल का गिरजा जो इंग्लिस्तान में सब से बड़ा गिरजाघर था, आग में स्वाहा हो गया। आग से लन्दनवालों को बड़ा दुःख हुआ परन्तु इससे एक लाभ हो गया। गलियों की हवा रोकने-वाले पुराने घर जल गये और लन्दन में प्लेग फिर न आया।

९।—मेडवे (Medway) में डच—उधर डच लोगों के साथ लड़ाई भी होती रही। समुद्र में बड़े बड़े युद्ध हुये। दोनों पक्ष में किसी की भी जीत न हुई। पार्लमेण्ट ने लड़ाई जारी रखने को धन दे दिया था जिससे जंगी जहाज़ी बेड़े तैयार रहैं। परन्तु राजकीयदलवालों ने देखा कि इस धन का एक अंश राजा अपने भोग विलास में उड़ा रहा है। पार्लमेण्ट के भीतर और बाहर, दोनों, लोगों ने असन्तोष प्रकट किया और आपस में कहते फिरते थे कि क्राम्वेल होता तो ऐसी बातैं न होतीं। इसी अवसर पर एक ऐसी आपत्ति पड़ी जिससे उनका असन्तोष और भी बढ़ गया। होलैण्ड के ब्रीडा (Bræda) नगर में सन्धि की बातचीत होने लगी और सन्धि की शर्तैं भी कुछ तै हो चुकी थीं, परन्तु पूरी पूरी नहीं। चार्ल्स ने यह समझ लिया कि अब लड़ाई न होगी और कुछ मांझी छुड़ा दिये जिससे जो रुपया उन्हें दिया जाता उसी को मिल जाय। डच लोगों ने तुरन्त अपना बेड़ा टेम्स नदी में भेज दिया। यहां उनसे लड़ने को कोई अंगरेज़ जहाज़ न थे। डच बेड़ा मेडवे तक चला गया और तीन जहाज़ जला कर चौथे को पकड़ ले गया। कुछ दिनों तक डच लोगों ने टेम्स की राह रोक रक्खी और लन्दनवालों को पत्थर का कोयला न मिल सका। चार्ल्स डच लोगों से हार मान गया और जैसी डच चाहते थे वैसी ही सन्धि ब्रीडा में हो गई।

१०।—कबाल (Cabal) मंत्रिमण्डली—इस सन्धि के दो चार सप्ताह बीतने पर क्लारेण्डन का अधिकार जाता रहा। उसके आधीन पांच मन्त्री थे: १—क्लिफ़र्ड (Clifford), २—आर्लिंग्टन (Arlington), ३—बकिंघम (Buckingham), ४—ऐश्ले (Ashley), और ५—लाडरडेल (Lauderdale)। इन

नामों के पहिले अक्षरों को मिलाने से कबाल (Cabal) शब्द बनता था और उन दिनों राजकाज में राजा जिस सभा समिति से सलाह लेता उसे कबाल कहते थे। इस कारण इतिहास में इसे कबाल मंत्रिमण्डली कहते हैं। लाडरेडल स्काटलैण्ड का रहनेवाला था और अपने देश के मामिलों में मुख्य करके उससे काम लिया जाता था। और मंत्रीलोग धर्मसंघ के अतिरिक्त और धर्मों को भी निर्विघ्न अपनी अपनी पूजा प्रार्थना कराने की आज्ञा देना चाहते थे जिससे कि सब लोग अपने अपने गिरजा-घरों में अपनी जमाअतें इकट्ठा कर सकें। कामन सभा इसके विरुद्ध थी। डिसेण्टरों को तो कदाचित् आज्ञा दे भी देती परन्तु कैथोलिक-मत-वालों को उससे आशा न थी क्योंकि उनसे लोग बुरा मानते थे और डरते थे। उन दिनों फ्रान्स में एक बड़ा शक्तिशाली राजा लुइ चतुर्दशम था; उसके पास बड़ी सेना और चतुर सेनानायक थे। धन भी उसके पास बहुत था और इंग्लिस्तान के रहनेवालों को यह शंका थी कि प्रोटेस्टैण्टों के विरुद्ध कैथोलिक-पंथवालों की सहायता करने को वह कहीं अपनी सेना इंग्लिस्तान न भेज दे। चार्ल्स लुई का सगा फुफेरा भाई था क्योंकि उसकी मां हेनरियट्टा मेराया (Henrietta Maria) लुई के बाप की बहिन थी और चार्ल्स भी बहुत दिनों तक इंग्लिस्तान से निर्वासित रहने पर फ्रान्स में रहा था। इससे चार्ल्स को अपनी युक्ति पूरी करने के लिये लुई से सहायता मांगने में लाज न आई जब उसकी प्रजा उसकी युक्तियों के प्रतिकूल थी। पार्लमेण्ट से और कर लगा कर धन न मांग कर उसने अपनी मनमानी करने को लुई से धन भी मांग लिया।

११।—<u>राजत्रय-सख्य</u> (Triple Alliance)—चार्ल्स चाहता था कि बहुतसा धन भी मिल जाय और पार्लमेण्ट के

आधीन भी रहना न पड़े। कुछ पहिले उसने डच और स्वीडन-वालों से मिलकर एक सन्धि की थी जिसे राज्यत्रय-सख्य कहते थे। इसका उद्देश यह था कि लुई और देश जीतने से रोका जाय। परन्तु थोड़े दिन न बीते थे कि लुई ने चार्ल्स से कह सुन कर दोनों मित्रों का साथ छुड़ा दिया और डोवर के सन्धि-पत्र (Treaty of Dover) पर हस्ताक्षर करा लिये। इससे चार्ल्स को डचलोगों से लड़ने के लिये फ़ान्स का साथ देना पड़ा। चार्ल्स को अपने को कैथोलिक कहना पड़ा और लुई से उसे धन मिल गया। लुई ने यहां तक प्रतिज्ञा की कि चार्ल्स को अपनी प्रजा से विरोध की संभावना हो और प्रजा बलवा करै तो उसके दमन को फ़ान्सीसी सेना भेजी जायगी। यह सन्धि गुप्त रक्खी गई। खुल जाती तो लोग बिगड़ जाते। चार्ल्स ने अपने मंत्रियों तक को न बताया। केवल दो मंत्री क्लिफ़र्ड और आर्लिंग्टन जिनका धर्म अनिश्चित था सब जानते थे। और मंत्री प्रोटेस्टैण्ट थे। उन्हें केवल इतना विदित था कि डचलोगों के साथ लड़ाई होनेवाली है और राजा अपनी प्रजा को जैसा कि उसकी रुचि होगी वैसी पूजा करने की आज्ञा दे देगा।

१२।—<u>उपेक्षा की घोषणा (Declaration of Indulgence) और दूसरा डच युद्ध</u>—चार्ल्स का इतना साहस तो न हुआ कि अपने को खुल्लम खुल्ला कैथोलिक कह देता परन्तु उसने डचलोगों के साथ युद्ध की घोषणा कर दी और उपेक्षा की भी एक घोषणा निकाल कर यह आज्ञा दी कि कैथोलिक और डिसेण्टर लोगों के विषय में जो हुकुम हो चुके हैं उन पर अमल न किया जायगा। इस पर पार्लमेण्ट बहुत बिगड़ गई। कामन सभा में राजा का वह आदर न रह गया था जो परिवर्त्तन के समय बारह बरस पहिले था और जो इंग्लिस्तान के धर्मसंघ में न था

उसे अपने मत के अनुसार पूजा करने की आज्ञा देना न चाहती थी। सभा ने कहा कि राजा को क़ानून पर अमल करने को मना करने का कोई हक़ नहीं है। जनता भी अधिकांश यही कहती थी। यह दशा देख कर चार्ल्स ने भी हठ न किया। वह चाहता ही न था कि फिर वलवा हो जाय और वह देश से निकाला जाय या उसके पिता की भांति उसका भी सिर कटै। उसने घोषणा लौटाली और अंगरेज़ी धर्मसंघ की प्रार्थना-पुस्तक अकेली देस में प्रचलित रह गई। और किसी विधि से प्रार्थना करने-वाले चोरी से करते थे।

## ॥ अध्याय ३० ॥

### * चार्ल्स द्वितीय के शासन के पिछले वारह वरस *

(ई० १६७३—१६८५)

१।—<u>जांच का क़ानून</u> (Test Act)—डोवर की सन्धि गुप्त रक्खी गई थी परन्तु लोगों को सन्देह हो रहा था कि कोई ऐसा प्रवन्ध किया गया है जिसे वह लोग नहीं जानते। उनका दृढ़ संकल्प था कि कैथोलिक फिर न वली हो जायं और इसीलिये टेस्ट एक्ट (जांच का क़ानून) वनाया गया जिसके अनुसार जिस किसी को जलसेना, स्थलसेना या राज्यप्रवन्ध में कोई ओहदा मिलता तो उसे अंगरेज़ी धर्मसंघ के पादरी से सैक्रामेण्ट (Sacrament)* लेना पड़े और इस वात की पूरी जांच के लिये वह कहीं रोमन कैथोलिक तो नहीं है उसे रोमन कैथोलिक धर्मसंघ के एक वड़े उपयोगी सिद्धान्त में अपना अविश्वास प्रकट करै। इस

* पवित्र भोज के समय ईसाई धर्मपर दृढ़ रहने की प्रतिज्ञा। इसकी विधि रोमनकैथोलिक ऐसी करते हैं उससे प्रोटेस्टेण्टों की विधि भिन्न है।

क़ानून ने कवाल-मन्त्रित्व का अन्त कर दिया। क्लिफ़र्ड और आर्लिंग्टन ने जांच स्वीकार न की और चार्लस ने ऐशले को जो अब अर्ल शैफ्टसबरी (Earl of Shaftsbury) हो गया था



चार्ल्स द्वितीय के समय की दर्बारी पोशाक।



चार्ल्स द्वितीय के समय का नागरिक पहिनावा।

निकाल दिया। चार्लस और ऐशले में अनबन हो गई थी जिसका कारण कदाचित् यह हो कि ऐशले डोवर की सन्धि का भेद जान गया था और इस धोखे से रुष्ट हो गया था। उस दिन से शैफ्टसबरी ने राजा से अपने भरसक विरोध किया। उसने डिसेण्टरों को निर्विघ्न पूजा प्रार्थना का अधिकार देने और कैथोलिकलोगों को इससे वञ्चित रहने का भरपूर उद्योग किया। जनता कैथोलिक लोगों को ओहदों पर देखना न चाहती थी क्योंकि चार्लस का छोटा भाई जेम्स ड्यूक यार्क जो राज्य का

उत्तराधिकारी था कैथोलिक हो गया था और लोग समझते थे कि राजा होने पर यह धर्मसंघ की हानि करैगा ।

२ ।—डैनबी (Danby) की मंत्रिमण्डली—चार्लस ने अर्ल डैनबी को अपना विश्वासपात्र बनाया । डैनबी कामन सभा से बात बात में सहमत था । अपने देश में वह कैथोलिकों के लिये या डिसेण्टरों के लिये धर्मस्वतन्त्रता के प्रतिकूल था; देश के बाहर वह फ्रान्सराज्य को मदद देना न चाहता था । कुछ दिन बीते डचलोगों के साथ सन्धि कर ली गई और उसके थोड़े ही दिन बाद चार्लस ने एक ऐसे विवाह की अनुमति दे दी जिसका परिणाम अत्यन्त उपयोगी हुआ । ड्यूक यार्क के कोई बेटा न था, उसके दो बेटियां मेरी और ऐन थीं और दोनों प्रोटेस्टैण्ट थीं । दोनों उसके पीछे रानी हुई । मेरी का विवाह आरेञ्ज (Orange) के राजा विलियम के साथ हो गया । विलियम, राजा की सब से बड़ी बहिन का बेटा था और ड्यूक यार्क और उसकी बेटियों के बाद राज्य का उत्तराधिकारी था । विलियम डच प्रजातन्त्र राज्य का मुख्य दण्डनायक था और यूरप के उन राजाओं का मुखिया था जो लुई चतुर्दशम के बुरे बर्त्ताव से बचने के लिये लड़ रहे थे । इस विवाह का अनुमोदन करके डैनबी ने यह प्रबन्ध कर दिया कि चार्ल्स और उसके भाई के मरने पर जो रानी हो उसका पति प्रोटेस्टैण्ट हो और फ्रान्सराज्य का मित्र न हो । इससे कुछ दिनों के लिये युद्ध की सम्भावना न रह गई । चार्लस भी फ्रान्सराज के हाथ बिका सा था । वह कब चाहता कि फ्रान्स से लड़ाई हो क्योंकि चार्लस को कामन सभा से धन न मिलता तो लुई से पा जाता था । कामन सभा भी फ्रान्स से लड़ना न चाहती थी क्योंकि चार्लस के अधिकार में बड़ी सेना आ जाती तो लड़ाई बन्द होने पर उसे पार्लमेण्ट के दबाने में लगा दे सकता था ।

३।—पोपी षड़यन्त्र (Popish plot)—इधर तो जनता को राजा की ओर से सन्देह हो रहा था और यह न जानती थी कि किसका विश्वास किया जाय, उधर एक ऐसी बात फैल गई जिस से देश में सनसनी फैल गई। टैटस ओटीज़ (Titus Oates) नाम का एक मनुष्य निकला और कहने लगा कि मैं पहिले कैथोलिक था अभी प्रोटेस्टैंएट हो गया हूं और कैथोलिक लोगों ने राजा के बध के लिये एक षड़यन्त्र रचा है। उसका बयान एक मैजिस्ट्रेट सर एडमंडबरी गाडफ़्रे (Sir Edmund Bury Godfrey) के आगे लिया गया। उसके कुछ ही दिन पीछे गाडफ़्रे को प्रिमरोज़ हिल के पास किसी ने मार कर डाल दिया। कुछ लोग कहने लगे कि गाडफ़्रे ने ओटीज़ की बात सच मानली थी इससे कैथोलिक लोगों ने उसे मार डाला। जनता और पार्लामेण्ट दोनों क्रोध से पागल हो गईं। इस षड़यन्त्र का नाम पोपी षड़यन्त्र (Popish Plot) पड़ गया और सारे इंग्लिस्तान में कोई ऐसा प्रोटेस्टैंएट न था जिसको इसमें सन्देह होता। पहिले तो यह राजा के बध का षड़यन्त्र रहा पीछे यह प्रोटेस्टैण्टधर्म्म को जड़ से उखाड़ने और हज़ारों निरपराधियों के बध करने का षड़यन्त्र हो गया। एक कल्पित वैरी से अपनी रक्षा करने को लोग हथियार बांधकर फिरने लगे। ओटीज़ बड़ा झूठा था। उसने लोगों के अन्धविश्वास का सहारा पाकर क़सम खा खा कर निरपराध लोगों और विशेष करके कैथोलिक लोगों पर बड़े बड़े भयंकर दोष लगाये। जजों और जूरियों (पंचायतों) ने उसकी एक एक बात सच मान ली और इस बात को न देखा कि कल जो बयान कर गया है उससे आज का बयान नहीं मिलता। बहुत से निरपराधी षड़यन्त्र रचनेवाले बनाकर या गाडफ़्रे के घातक मानकर मारे गये। ओटीज़ भी ऐसा लोकप्रिय हो गया कि उसके मित्र उसे बड़े सुख चैन से रखते थे जब वह झूठ बोल

बोल कर ऐसे लोगों के प्राण जोखम में डाल रहा था जिनके पास वह बैठने के भी योग्य न था। उसके सहायक अधिकतर भोले भाले लोग थे परन्तु कुछ नीतिज्ञ लोग भी राजा के साथ विरोध करने में इस हलचल से कुछ लाभ उठाना चाहते थे। इन दिनों शाफ्टस्बरी गवर्मेण्ट के विरोधियों का मुखिया था। उसने पोपी षड्यन्त्र के सच माने जाने का भरपूर उद्योग किया।

४।—निराकरण का मसौदा (Exclusion Bill)—ई० १६७८ में साढ़े सत्तरह बरस बैठकर कवालियर पार्लामेण्ट टूट गई और डैनबी के मन्त्रित्व का भी अन्त हो गया। फिर तीन बरस में तीन पार्लामेण्टें हुई जो चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल की तीन छोटी पार्लामेण्टें कहलाती हैं। तीनों में शाफ्टस्बरी के पक्षवाले अधिक थे। उन्होंने यह संकल्प कर लिया था कि ड्यूक यार्क को राजा न होने देंगे और रोमन कैथोलिक-मत-वालों को राज पाने से सदा के लिये रोकने का एक मसौदा पार्लामेण्ट में पेश किया। कामन सभा ने इस मसौदे को छेड़ना न चाहा; इस लिये राजा ने यह पार्लामेण्ट ही तोड़ दी। दूसरी छोटी पार्लामेण्ट में कामन सभा ने इसे पास कर दिया। लार्ड सभा में उन दिनों हैलीफ़ैक्स (Halifax) एक बड़ा विद्वान् सदस्य था परन्तु एक दल छोड़ कर दूसरे दल में मिल जाया करता, विशेष करके जब दल को बली देखता था और जब दल के भरोसे पर रहता तो बड़ी निठुराई और सबलई से काम लेता था। वह अपने को मल्लाह बतलाता था और कहता था कि मेरा काम मल्लाह का सा है जो नाव को घुमाया करता है जिससे सीधी खड़ी चलै। उसने केवल निराकरण के मसौदे का प्रतिवाद न किया। वह यह भी जानता था कि शाफ्टस्बरी चार्ल्स के मरने पर जेम्स की प्रोटेस्टैण्ट बेटी मेरी को राज दिलाना नहीं चाहता था, जो ग्रारेञ्ज

के राजा को ब्याही थी परन्तु चार्ल्स द्वितीय के हरामी लड़के ड्यूक मन्मथ को राजा बनाने में लगा था जिसे राज पाने का कोई हक़ न था। इस हैलीफ़ैक्स ने लार्ड सभा में इस मसौदे का प्रतिवाद किया और कहा कि इतने बड़े परिवर्तन में बड़ा जोखम है। यह भी हो सकता कि जेम्स अपने भाई के आगे ही मर जाय और न भी मरै तो उसके पीछे बहुत दिन न जियैगा। उसने कहा कि दो चार बरस कैथोलिक राजा रहने दिया जाय जो अपने सिर बीतैगा वह भुगत लिया जायगा पीछे तो मेरी के राज्य में शान्ति हो ही जायगी। उसने लार्ड सभा को समझा बुझा कर अपने मत में कर लिया और मसौदा नामंजूर हो गया। तीसरी छोटी पार्लामेण्ट आक्सफ़र्ड में बुलाई गई। शाफ्टस्बरी के अनुयायी अपनी रक्षा के लिये हथियार बांध कर आये। उन्हों ने हठ करके कहा कि मसौदा पास किया जाय और चार्ल्स ने औरों की भांति इस पार्लामेण्ट को भी तोड़ डाला।

५।—ह्विग (Whig) और टोरी (Tory)—दोनों दलों के नाम अब ह्विग और टोरी पड़ गये थे और डेढ़सौ बरस तक दोनों दल इन्हीं नामों से प्रसिद्ध रहे। पहिले दोनों नाम चिढ़ाने के थे। ह्विग स्काच भाषा का शब्द है और इसका अर्थ है मट्ठा। इस नाम से स्काटलैण्ड के पश्चिम में पहिले कुछ ऐसे लोग पुकारे गये जिन्हों ने गवर्नमेण्ट के विरुद्ध बलवा किया था। ड्यूक यार्क के मित्रों ने शाफ्टस्बरी के अनुयायियों को इसी नाम से पुकारा तो उनका अभिप्राय यह था कि यह लोग भी वैसे ही हैं जैसे स्काटलैण्ड के बलवाई। टोरी शब्द ऐरलैण्ड से आया और वहां के डाकू टोरी कहलाते हैं। ड्यूक यार्क के विरोधियों ने उसके अनुयायियों को टोरी कहा तो उनका अभिप्राय यह था कि यह लोग ऐरलैण्ड के डाकुओं की भांति प्रोटेस्टैण्टों के वैरी

हैं। पहिले दोनों नाम घृणासूचक थे पीछे से स्वीकृत हो गये और इन शब्दों के मूल अर्थ को भूलकर लोग गर्व से कहने लगे हम ह्विग हैं, हम टोरी हैं।

६।—<u>टोरियों का अत्याचार</u>—ई० १६८१ में तीसरी छोटी पार्लामेण्ट के टूटने पर टोरियों की जीत रही और उन्होंने जो चाहा सो किया। थोड़े दिनों ह्विग प्रबल रह चुके थे क्योंकि बहुत कम अंगरेज़ चाहते थे कि कैथोलिक राजा हो। परन्तु एक बात और उनको न रुचती थी। कोई न चाहता कि देश में आपस में युद्ध छिड़ जाय। ई० १६८१ में राजा प्रजा की लड़ाई के छिड़ने को केवल उनतालीस बरस बीते थे। घर की लड़ाई से जो विपत्ति पड़ी थी उसके जाननेवाले जीते थे। इसलिये जब लोगों ने जाना कि ह्विग लोग आक्सफ़र्ड में हथियार बांध कर गये और यह कहते रहे कि राजा मानै या न मानै हम जो चाहेंगे उससे करा लेंगे, तो समझदार लोगों ने जिन्हें राजनीति का विचार न था यह निश्चय किया कि जेम्स को राज पाने से रोकना न चाहिये। कैथोलिक राजा होना इससे अच्छा था कि एक प्युरिटन सेना इंग्लिस्तान पर शासन करै और शाफ्टस्बरी संरक्षक हो जाय। ह्विग बलवे के डर से लोग पोपी षड़यन्त्र की घबराहट भूल गये। जिन ह्विगोंने कैथोलिकमतवालों को धमकाया और सताया था वह लोग आप धमकाये और सताये जाने लगे। जजलोग उनको घुड़कते थे और जूरी न्याय का विचार छोड़ कर अपना निर्णय सुनाती थी।

७।—<u>लन्दन की सनद की ज़बती</u>—शाफ्टस्बरी के ऊपर एक अपराध लगाया गया। लन्दन में एक बड़ी जूरी थी वह निश्चय किया करती थी कि रूबकारी होनी चाहिये या नहीं। उसने शाफ्टस्बरी पर मुक़द्दमा चलाने की अनुमति न दी।

कारण यह था कि जूरी के चुनने का अधिकार शेरिफ़* (Sheriff) लोगों को था और शेरिफ़ उन्हीं लोगों को चुनता था जो उसके वैरियों को या जिन्हें वह न चाहता था उन्हें दण्ड देते, और जो उसके हित मित्र थे उन्हें बचा लेते। शाफ्टस्बरी पर मुक़दमा चलता तो मिडलसेक्स में चलता और लन्दन के शेरिफ़ सारे



चार्ल्स द्वितीय के समय का लन्दन नगर का कोतवाल।

मिडिलसेक्स के शेरिफ़ थे। चार्ल्स ने सुना कि शाफ्टस्बरी इस युक्ति से बच गया तो बहुत बिगड़ा और अपने वकीलों से बोला कि देखिये नगर की सनद में कोई दोष तो नहीं है। यह सनद चमड़े के काग़ज़ पर थी जिससे पिछले राजाओं ने नगर को अपने मजिस्ट्रेट चुनने और अपना शासन आप करने का अधिकार

* राजा का मुकर्रर किया हुआ उहदेदार जो फौजदारी और दीवानी का काम ज़िले में करता है।

दिया था। वकीलों ने सोच विचार के चार्टर में एक दोष बताया और जिन जजों के सामने वह सनद पेश हुई उन्हों ने भी उसे दूषित माना। राजा ने इसपर सनद ज़ब्त करली और अपने लार्ड मेयर और शेरिफ़ मुक़र्रर किये। अब तो शाफ्टस्बरी को निश्चय हो गया कि नये शेरिफ़ ऐसी जूरी निर्वाचित करेंगे जो उसको दण्ड दे। वह हालैण्ड भाग गया और वहीं मर गया।

८।—राइहौस षड़यन्त्र (Ryehouse Plot)—इन्हीं दिनों कुछ ह्विग लोगों ने क्रोध कर के न्यूमार्केट (New Market) से लौटने पर राइहौस में राजा और उसके भाई को मारडालने का षड़यन्त्र रचा। षड़यन्त्र का भेद खुल गया और षड़यन्त्री कुछ भाग गये और कुछ पकड़ कर मार डाले गये।

९।—लार्ड रसल (Lord Russell) का वध—राइहौस षड़यन्त्र में बड़े बड़े लोग थे। इससे टोरीदल ने ह्विगदल के मुखिया लोगों को निपटा देना निश्चय कर लिया। इन मुखियों ने एक युक्ति की थी और जो लोग उनसे सहमत थे उनसे प्रार्थना की कि राजा से दूसरी पार्लामेण्ट बुलाने को कहा जाय और राजा न माने तो बल से बाध्य किया जाय। परन्तु इस बल का प्रयोग कैसे होगा इसको निश्चय न कर सके थे। परन्तु भेद खुल गया और राजा की ओर से मुख्य मुख्य ह्विगलोगों पर यह अपराध लगाया गया कि यह लोग केवल राष्ट्रीय आन्दोलन ही में नहीं वरन राइहौस षड़यन्त्र में भी कार्यकर्त्ता थे। अर्ल एसेक्स (Earl of Essex) ने जेलखाने ही में आत्मघात कर लिया। लार्ड रसल (Lord Russell) और अलजरनन सिडनी (Algernon Sidney) पर अदालती कार्रवाई की गई और उनका सिर काटा गया। रसल के मुक़दमे से उसके दलवाले बहुत ही शोकाकुल हुये। वह बड़ा सीधा सच्चा और शुद्ध अन्तःकरण

का था। उसका दृढ़ विश्वास था कि कैथोलिक राजा होने पर अंगरेज़ी स्वतन्त्रता नष्ट हो जायगी। टैटस ओटीज़ की सारी बातें सच्ची न हों तो भी बेजड़ न थीं। चबूतरे पर चढ़ कर उसने कहा, "पोपी षड़यन्त्र में रहने का जो मुझ पर दोष लगा है उसके विषय में मैं ईश्वर को साक्षी करके कहता हूं कि मैंने जो कुछ किया शुद्ध अन्तःकरण से किया है। मुझे दृढ़ विश्वास तब था और अब भी है कि राजा के विरुद्ध, अंगरेज़ी जनता के विरुद्ध और प्रोटेस्टैंण्ट धर्म के विरुद्ध, एक समिति बनी थी"। उन दिनों किसी निरपराध पर राजद्रोह का मुक़दमा चलाया जाता तो आजकल की अपेक्षा उसके बचने की आशा कम थी। वह अपने मुक़दमें में बहस करने को वकील न कर सकता था और अपनी सफ़ाई आप करता था। रूबकारी से पहिले रसल को अपनी स्त्री की एक चिट्ठी मिली जिसमें लिखा था कि "तुम्हारे मित्रों का विश्वास है कि तुम्हारी रूबकारी में मैं भी कुछ काम कर सकती हूं, मैं तैयार हूं मेरा संकल्प दृढ़ है, तुम भी दृढ़ रहो"। अदालत में यह सती स्त्री अपने पति के पास बैठी रहती और जो कुछ कहता जाता था उसे लिखती जाती और जब उसका पति कुछ भूलता तो उसे बताती जाती थी।

१०।—चार्ल्स द्वितीय के अन्तिम दिन—बहुत दिनों तक चार्ल्स ने कोई पार्लामेण्ट न बुलाई। उसके कुछ सहायक उसैं इस बात की सलाह देते रहे। ह्विगों की धृष्टता देख कर हैलीफ़ैक्स टोरी दल से मिल गया था परन्तु अब टोरियों की उग्रता से घबरा रहा था। उसने राजा से पार्लामेण्ट बुलाने को कहा। इसमें सन्देह रहीं कि पार्लामेण्ट में राजा के पक्षपाती अधिक आते क्योंकि ह्विगों पर जनता का क्रोध शान्त न हुआ था। चार्ल्स आगा पीछा करता रहा। फ़्रान्सराज जानता ही था कि

चार्ल्स कभी उससे लड़ाई न करेगा और पार्लामेण्ट कदाचित् युद्ध की संमति दे दे, इसलिये उसे धन देता रहा। चार्ल्स कुछ निश्चय न कर सका। इतनेही में वह बीमार पड़ गया और विदित हो गया कि न बचैगा। कैण्टरबरी के आर्कबिशप, सैंक्राफ्ट (Sancroft) ने उससे खुल कर कहा, "अब सच ही कहने का अवसर है, आप बड़े न्यायाधीश के सामने जा रहे हैं जो राजा प्रजा में भेद नहीं करता"। राजा ने उसकी अवहेलना की। इसी बीच में ड्यूक यार्क आ गया। सभासदों और बिशप लोगों से कहा गया कि बाहर चले जाओ। एक रोमन कैथोलिक पादरी बुलाया गया और मरते मरते चार्ल्स ने रोमी-धर्म-संघ का अधिकार स्वीकार किया। कुछ बेर और जिया और जो लोग पास खड़े थे उनसे क्षमा मांगी और कहने लगा कि मेरे मरने में बड़ी बेर लग रही है आप लोग क्षमा करैं।

## ॥ अध्याय ३१ ॥

### जेम्स द्वितीय का शासन

१।—<u>जेम्स द्वितीय और मन्मथ (Monmouth) का बलवा</u>—नये राजा ने ई० १६८५ में अपना राज संभाला, उस समय सारी बातें उसके अनुकूल थीं। उसने यह घोषणा करदी कि हमारा विचार अंगरेज़ी धर्मसंघ को समर्थन और उसकी रक्षा करने का है परन्तु उसने ह्वाइट हाल के अपने छोटे गिरजा में मास (Mass)* के उत्सव में उपस्थित होकर स्पष्ट रूप से दिखा दिया कि वह अपने धर्म को छोड़ना नहीं चाहता। एक नई पार्लामेण्ट बुलाई गई जो पूर्णरूप से उसकी अनुरक्त रही। जेम्स अपनी

* मास रोमन कैथोलिकलोगों का धर्मगान।

प्रजा को यह विश्वास दिला देता कि यद्यपि कैथोलिक लोग सताये न जायंगे परन्तु उनको अधिकारवाले पद न मिलेंगे तो उसे इंग्लिस्तान के शासन करने में कोई कठिनाई न पड़ती। थोड़े ही दिन बीतने पर उसकी प्रजा की भक्ति दुविधा में पड़ गई। बहुतेरे विग्लोग जो पिछले राज्य में अपने दल की युक्तियों में सम्मिलित रहे अपना देश छोड़कर हालैण्ड में रहते थे,



जेम्स द्वितीय।

उन्होंने यह समझा कि हम इंग्लिस्तान लौट जायं तो सारी अंगरेज़ जाति जेम्स से बिगड़ जायगी। मन्मथ इन लोगों का नायक बना और डार्सट (Dorset) ज़िले के लाइम (Lyme) गांव में उतरा। किसानों और दुकानदारों ने उसका बड़ी धूम धाम से स्वागत किया परन्तु भलेमानुस और पादरीलोग राजा के पक्षपाती थे। कुछ समय तक मन्मथ के विरुद्ध कोई कार्रवाई न हो सकी। भीड़ की भीड़ मन्मथ को देखने चली और बहुतेरों ने उसकी ओर से लड़ने को हथियार उठा लिये। मन्मथ विजयपताका

उड़ाता हुआ टाण्टन (Taunton) नगर में पहुंचा और फ़िलिप के नार्टन (Philip's Norton) तक कूच करता चला गया। उधर राजसेना भी उसकी ओर बढ़ती जाती थी और टोरी ज़मींदारों और सर्दारों ने बड़े उत्साह के साथ राजा की सहायता की। मन्मथ पीछे हट गया और बृजवाटर (Bridgewater) पहुंच कर रात को अपनी सेना के साथ वैरी पर धोखे से धावा मारने की घात में फिरता रहा, परन्तु उसके आगे पानी भरा हुआ एक गहरा नाला आ गया। घमसान लड़ाई हुई और मन्मथ के सिपाही कुछ मारे गये और कुछ भाग खड़े हुये। मन्मथ निकल भागा और मारा मारा फिरता रहा। अन्त को भूखा प्यासा एक नाली में छिपा हुआ पाया गया और लन्दन ले जाकर उसका सिर काटा गया।

२।—खूनी अदालतें—बलवा दब गया। बहुत से बलवाई बिना अदालती कार्रवाई के तुरन्त लटका दिये गये। उन्ही दिनों जेफ़रीज़ (Jeffreys) नाम का एक दुष्ट और निष्ठुर जज पश्चिम में दौरे की कचहरी करने आया। यह कचहरी सदा खूनी अदालत के नाम से प्रसिद्ध रहैगी। विनचेस्टर (Winchester) में उसने ऐलिस लाइल (Alice Lisle) एक बुढ़िया को प्राणदण्ड दिया। उसका अपराध इतना ही था कि उसने अपने घर में दो मनुष्यों को सरन दी थी जो बदला लेनेवालों के डर से भागे थे। डारचेस्टर में ७४ मनुष्य लटकाये गये। समरसेट ज़िले में २३३ मनुष्यों का वध किया गया। जेफ़रीज़ अपराधियों को चिढ़ाता भी था। एक अपराधी ने कहा कि "मैं अच्छा प्रोटेस्टैण्ट हूं"। जेफ़रीज़ बोला, "तुम प्रेस्बिटीरियन हो। हम बाज़ी लगा के कहते हैं। हमको बीस कोस से प्रेस्बिटीरियन की गन्ध आती है"। किसी ने एक दीन दुखिया अपराधी के

लिये दया की प्रार्थना की और कहा, "श्रीमान, यह कङ्गाल है इसको अनाथालय से खाना मिलता है;" उसको उत्तर मिला, "तुम इसके लिये व्याकुल न हो; हम अनाथालय के सिर से इसका बोझा उतार लेते हैं"। जेफ़रीज़ ने तुरन्त उसे फांसी देने



जेम्स द्वितीय के समय का चीफ़ जष्टिस।

की आज्ञा दे दी। खूनी अदालत में सब मिलाकर ३२१ मनुष्य मारे गये और ८४४ वेस्ट इण्डिया टापू को भेज दिये गये जहां की कड़ी गर्मी में काम करते करते वे मर गये। दौरे से लौटने पर जेम्स ने जज का स्वागत किया; उसकी कार्रवाई का पुरस्कार स्वरूप उसको लार्ड चैन्सिलर का पद दिया।

३।—टेस्ट-क़ानून के प्रतिकूल आचरण—बलवाइयों के ऊपर यह सब कार्रवाई होती रही और पार्लामेण्ट कुछ न बोली। परन्तु राजा ने एक काम ऐसा किया जिसका पार्लामेण्ट में

प्रतिवाद हुआ। राजा ने सेनामें कुछ कैथोलिक अफ़सर भरती कर लिये थे और टेस्ट ऐक्ट के अनुसार जांच से उनको वरी कर दिया था। शासन सभा ने यह विचारा कि राजा दो चार को वरी कर सकता है तो बहुतों को भी वरी करदेगा। वास्तव में कोई बात न रह जायगी जो उसे सेना और शासन के सारे उहदे कैथोलिकों को देने से रोक सके। सभासदों ने यह भी सोचा कि राजा वैसा ही वर्त्ताव अपनी प्रोटेस्टैण्ट प्रजा के साथ करेगा जैसा कि क्रास्वेल और उसकी प्युरिटन सेना ने अपनी मनमानी की थी। शासन सभा ने प्रतिवाद किया और राजा से प्रार्थना की कि अब से क़ानून के अनुसार काम किया जाय। जेम्स बिगड़ गया और पार्लामेण्ट तोड़ दी।

४।—उपेक्षा का अधिकार (The Dispensing Power)—जेम्स यह समझता था कि अवसर पड़ने पर क़ानून की उपेक्षा करने का उसे अधिकार है और उसने जजों से यह पूछा कि राजा को यह अधिकार है कि नहीं। उन दिनों राजा जब चाहता जजों को निकाल देता। चार जजोंने उसके प्रतिकूल राय देदी; उनको उसने छुड़ा दिया और जो जज उनकी जगह रक्खे गये वह लोग राजा के अनुकूल राय देने को तैयार थे। इस युक्ति से जेम्स ने जजों से कहला लिया कि राजा को अधिकार है कि जब चाहे क़ानूनी जांच की उपेक्षा कर दे। यह राय ठीक होती तो राजा न्याय संगत हो या न हो जो उसके जी में आता सब कुछ कर सकता था।

५।—उपेक्षा की घोषणा (Declaration of Indulgence)—अब जेम्स को यह चिन्ता हुई कि टेस्ट ऐक्ट के रद्द करने का क़ानून भी पार्लामेण्ट बनादे। वह यह भी जानता था कि मैं बहुत दिन न जिऊंगा और मेरे मरने पर मेरी बेटी मेरी रानी होगी और मेरी जो जज मुक़र्रर करेगी वह लोग मेरे जजों से भिन्न

राय देंगे। ऐसा सोच विचार करके उसने दोनों सभाओं के मुख्य मुख्य सदस्यों को बुलाया और अलग अपने कमरे में उनसे बात चीत की। एक एक सदस्य ने यही कहा कि हमलोग श्रीमान् को प्रसन्न करने के लिये जो हमारा अन्तःकरण उचित कहै, वह सब करने को तैयार हैं परन्तु हमारा अन्तःकरण टेस्ट ऐक्ट के रद करने को वोट देने की प्रेरणा नहीं करता। जेम्स ने तब अपने अधिकार से उपेक्षा की घोषणा निकाल दी कि हमारी सारी प्रजा डिसेण्टर हो या कैथोलिक अपनी इच्छानुसार पूजा कर सकती है और बिना किसी प्रकार की जांच के उहदे पा सकती है। कितनों ने इस घोषणा के लिये राजा को धन्यवाद दिया परन्तु बहुतेरों को ऐसा प्रसाद न रुचा और यह समझे कि राजा की आज्ञा से कुछ क़ानून रद हो जायं तो सारे क़ानून रद हो सकते हैं। अंगरेज़ी-धर्म-संघ के मुखियों ने उन्हें विश्वास दिलाया कि जो कुछ भी हो जाय उनकी कोई हानि न होगी और दूसरी पार्लमिण्ट ज्योंही आई एक ऐसा क़ानून बना देगी जिससे उनको धर्मविषयक स्वतन्त्रता मिल जायगी। अंगरेज़ी धर्मसंघवालों और डिसेण्टर दोनों राजा का प्रतिवाद करने को मिल गये। उन्हें कैथोलिक लोगों का विश्वास न था न उनको चाहते थे और उन्हें यह डर लगा था कि राजा जिस अधिकार के प्राप्त करने का उद्योग कर रहा है उसका दुष्प्रयोग न करै।

६।—<u>मेगडालेन (Magdalen) के शिक्षकों का निकाला जाना</u>—कुछ ही दिन बीते थे कि जेम्स ने पहिले से भी अधिक अपनी प्रजा का दिल दुखाया। इंग्लिस्तान में उन दिनों कुल दो ही विश्वविद्यालय थे। एक आक्सफ़र्ड में दूसरा केम्ब्रिज में जहां नवयुवक स्कूल की पढ़ाई पढ़ चुकने पर शिक्षा पा सकते थे। इन विश्वविद्यालयों में वही शिक्षा दे सकता था जो अंगरेज़ी

धर्मसंघ का मेम्बर हो। परिणाम यह हुआ कि जो उस धर्मसंघ का मेम्बर न था वह अपने लड़के को या तो शिक्षा न दे या धनी हो तो उसके लिये शिक्षक नौकर रख ले। जेम्स की यह इच्छा थी कि कैथोलिक लोगों को अपने धर्म की शिक्षा के लिये भी कोई राह निकालनी चाहिये। इस अभिप्राय से उसने यह उपाय किया कि आक्सफ़र्ड के दो कालेजों के मुख्य अधिकारी कैथोलिक हों। इतने में मैगडालेन कालेज का सभापति मर गया। शिक्षकों को पूरा अधिकार था कि अपना सभापति आप चुन लें। जेम्स ने उनको हुकुम् दिया कि इस बार एक कैथोलिक चुना जाय। शिक्षकों ने एक प्रोटेस्टैण्ट को चुना और जेम्स को कहला भेजा कि हम लोगों ने क़ानून के अनुसार काम किया है और उसी की आज्ञा मानेंगे जिसको हमने अपने अधिकार से चुन लिया है। जेम्स ने उन्हें कालेज से निकाल दिया और कहा कि जाओ भीख मांगो। परन्तु शिक्षक भूखों मरने न पाये। उन्हें ज़िमींदारों ने बुला कर अपने घर में रक्खा और राजा के प्रतिकूल आचरण करने के लिये उनका सम्मान करके प्रसन्न हुये और इसमें सन्देह नहीं कि उनका राजा के प्रतिकूल आचरण करना उचित था। अपने अपने धर्म की शिक्षा पाना बहुत अच्छी बात है परन्तु क़ानून कुछ भी कहै राजा को अपनी मनमानी करना बहुत बुरा है। राजा आक्सफ़र्ड के तीन कालेज कैथोलिक लोगों को दे सकता तो दोनों विश्वविद्यालयों के सारे कालेज क्यों न दे सकता और प्रोटेस्टैण्ट अशिक्षित रह जाते। प्रोटेस्टैण्टों ने भी निश्चय कर लिया कि इसके रोकने का भरपूर प्रयत्न करेंगे।

७।—<u>सात बिशपों की रूबकारी</u>—इसके बाद जेम्स ने हुकुम् दिया कि उसकी उपेक्षा की घोषणा सारे गिरजाघरों में पादरी

सुनाया करें। बहुतेरे पादरी इस घोषणा को क़ानून के प्रतिकूल और अनुचित समझते थे। सात बिशपों ने एक प्रार्थनापत्र पर हस्ताक्षर करके राजा से कहा कि पादरी अपने अन्तःकरण के प्रतिकूल काम करने को बाध्य न किये जायं। सारे इंग्लिस्तान में किसी बिरले ही पादरी ने राजा की आज्ञा मानी और कहीं कहीं घोषणा पढ़ी जाने लगी तो जमाअत उठकर गिरजाघर के बाहर चली गई। राजा ने हुकुम् दिया कि इन सातों बिशपों पर झूठा विद्रोह प्रकाश करने का अभियोग चलाया जाय जिसका अर्थ यह था कि इन लोगों ने गवर्मेण्ट के कामों में बाधा डालने के अभिप्राय से झूठी बात कही। रूबकारी दिनभर हुई। बिशपलोगों के वकीलों ने कहा कि प्रार्थनापत्र में कोई झूठा कलंक नहीं है। जूरी अपना "निश्चय" विचार करने को अदालत के बाहर चली गई। पहिले बारह पंचों में से नौ बिशप लोगों के पक्षपाती थे और तीन राजा के। पीछे से तीन में दो भी निकल गये और बिशपों का विरोधी एक ही रह गया। इसका नाम आर्नल्ड (Arnold) था और यह राजा के लिये बीयर शराब बनाया करता था। रूबकारी से पहिले उसने कहा, "मैं जो कुछ करूंगा, मेरा सत्यानास हो जायगा। जो मैंने कहा कि बिशप लोग अपराधी नहीं हैं तो राजा मुझ से शराब न बनवायेंगे। जो कहा कि अपराधी हैं तो कोई मेरी शराब न लेगा"। परन्तु उसने यह निश्चय कर लिया कि राजा का काम सब के काम से अच्छा है। आस्टिन (Austin) एक दूसरा पंच उससे वाद-विवाद करने लगा, "आर्नाल्ड, मैं विवाद करना नहीं चाहता देखो तुम ऐसी बात कहोगे तो मेरी ओर देखो। मैं बारहो पंचों में सब से बली और सब से बड़ा हूं, मैं इस प्रार्थना पत्र को झूठा कलंक कहने से पहिले यहीं तब तक खड़ा रहूंगा जब तक घटते घटते तमाखू के पैप के बराबर न हो जाऊं।" इस धमकी को

मानसों ने जिनमें कुछ ह्विग और कुछ टोरी थे आरेञ्ज के विलियम के पास यह सन्देसा भेजा कि इंग्लिस्तान आकर अंगरेज़ों के क़ानून और उनके स्वतन्त्रता की रक्षा कीजिये। इससे पहिले यह निमन्त्रण क्यों न भेजा गया इसका एक कारण था। कुछ ही दिन पहिले यह घोषणा कर दी गई थी कि जेम्स के एक बेटा पैदा हुआ है। उसके पहिले यह सब जानते थे कि जेम्स के मरने पर आरेञ्ज की प्रोटेस्टैण्ट रानी उसकी उत्तराधिकारिणी होगी और जेम्स का किया कराया सब उलट दिया जायगा। परन्तु अब जो वारिस पैदा हुआ वह निरा बच्चा है और उसे अपने बाप ही के धर्म की शिक्षा दी जायगी और सयाना होने पर अपने बाप के पांव पर पाँव धरैगा। जिस बात के न मानने में लोगों का हित हो उसके न मानने को लोग झटपट तैयार हो जाते हैं। इससे बहुतेरे कहने लगे कि यह राजा रानी का लड़का है ही नहीं। किसी दूसरे का लड़का छिपा कर महल में लाया गया है। आरेञ्ज के विलियम ने यह बात सच्ची मानी हो या झूठी परन्तु उसने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। उसने जहाज़ों का एक बेड़ा बनाया और थोड़ी सी सेना लेकर टोरबे (Torbay) में उतरा और सीधा लन्दन की ओर कूच करता चला गया। थोड़ी ही देर में बड़े बड़े सरदार उससे मिल गये, और इंग्लिस्तान के उत्तर और मध्यप्रान्तों में लोगों ने बलवा कर दिया। जेम्स के जंगी अफ़सर तक विलियम के पास चले गये और जेम्स ने देखा कि इंग्लिस्तान में उसका कोई साथ देनेवाला नहीं है। अब भी वह अपनी सब चालें छोड़ देता तो उसे कोई न छेड़ता और वह राजा बना रहता। परन्तु उसने न माना। उसने फ्रान्स में भागकर सरन लेना चाहा परन्तु पकड़कर लौटाया गया और विलियम ने चतुराई से उसे रोकना न चाहा। स्काटरानी मेरी की भांति उसे बन्दी बना कर देखना या चार्ल्स प्रथम की भांति उसकी गरदन

मारना दोनों विलियम को अपेक्षित न था। बन्दी के साथ सहानुभूति करनेवाले निकल आते और बध करने पर वह शहीद कहलाता। विलियम ने इस विचार से जेम्स को भागने का अवकाश दिया। जेम्स कुशल समेत फ़ान्स पहुंच गया, जहां लुई चतुर्दशम ने उसका स्वागत किया। जेम्स ने फिर इंग्लिस्तान आने का नाम न लिया।

## ॥ अध्याय ३२ ॥

### * विलियम और मेरी *

( ई० १६८९ से १६९४ तक )

१।—राजयक्रान्ति और सहिष्णुता का क़ानून (Toleration Act)—जेम्स के चले जाने पर पार्लामेण्ट की बैठक हुई और बहुत वादविवाद के पीछे यह कहा गया कि जेम्स ने बुरा शासन करके इंग्लिस्तान छोड़ दिया इससे वह सिंहासन पर से उतर गया। पार्लामेण्ट ने तब ख़ाली सिंहासन विलियम और मेरी को इस शर्त पर दिया कि दोनों मिलकर राज करैं, सिक्कों पर मेरी का भी चेहरा बनाया जाय और राजघोषणाओं में उसके पति के साथ उसका नाम भी लिया जाय परन्तु जब तक दोनों जीते रहैं राज काज विलियम ही करै। दोनों में कोई मर जाय तो दूसरा सिंहासन पर बना रहै और जब दोनों मर जायं और कोई सन्तान न छोड़ैं तो मेरी की बहिन राजकुमारी ऐन रानी हो। दोनों राजा रानी को सिंहासन पर बैठने का जन्माधिकार न था। उनको पार्लामेण्ट ने बैठा दिया इसलिये बैठे थे। पार्लामेण्ट उनके प्रतिकूल रहती तो दोनों न रह सकते थे। इस परिवर्त्तन का पहिला परिणाम यह हुआ कि सहिष्णुता का क़ानून पास हो गया और

डिसेण्टर लोगों को अपने गिरजाघरों में पूजा करने की आज्ञा मिल गई। परन्तु कैथोलिक लोगों को न मिली। लोग उनसे डरते थे और उनसे ऐसे ही बुरा मानते थे जैसे परावर्त्तन के पहिले डिसेण्टरों से। इस कारण उनको दबाये रखना चाहते थे।



विलियम तृतीय।

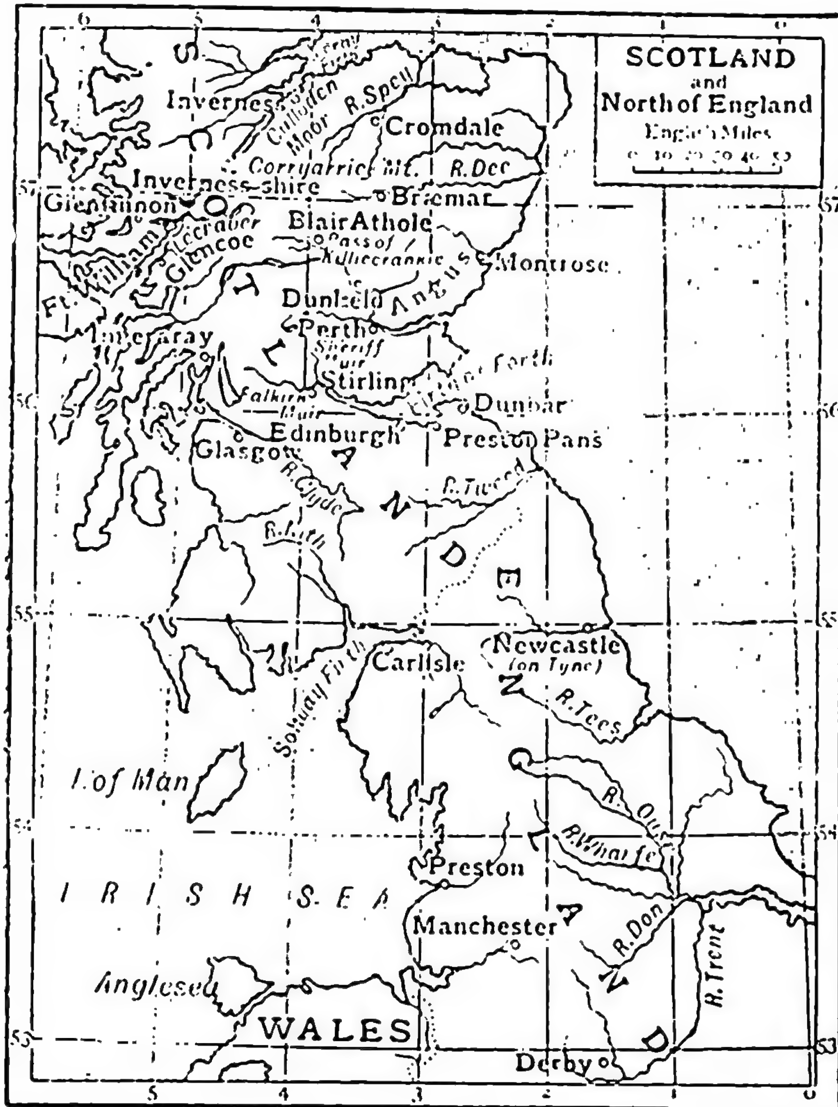
परन्तु थोड़े दिनों में उन्हें यह विदित हो गया कि कैथोलिक इतने नहीं हैं कि उनसे डर हो, इससे कुछ दिन बीते कैथोलिकलोगों को भी अनुज्ञा मिल गई और अपनी विधि से पूजा करने लगे यद्यपि बहुत दिनों तक ओहदे न पा सके।

२।—स्काटलैण्ड में लड़ाई—विलियम को विदित था कि राज के लिये लड़ाई अनिवार्य है। वह आप यूरप महाद्वीप के अनेक छोटे राज्यों का अफ़सर था जो फ्रान्सराज लुई चतुर्दशस से लड़ रहे थे और इंग्लिस्तान में उसके दमन करने को लुई क्या न करता। स्काटलैण्ड में बहुत लोग विलियम के पक्षपाती

हो गये । एक बड़ा वीर स्काच लार्ड डंडी (Dundee) जेम्स के सहायकों में से था । वह हैलैण्डस (Highlands) चला गया और वहां उसने हैलैण्डरों की एक सेना इकट्ठी थी । यह लोग निर्धन थे । इन्हें मैदान के धनी रहनेवालों को लूटने का एक बहाना भी मिल गया । डंडी ने अपनी सेना ब्लेयर अथोल (Blair Athol) के पास किल्लीक्रांकी (Killiecrankie) दर्रे में होकर ऊंची पहाड़ी पर सजा दी । विलियम के सिपाही गरमी में पहाड़ पर चढ़ते चढ़ते हांफते आये । जब उनके निकट पहुंचे तो हैलैण्डर पहाड़ पर से उतर कर उन्हें अपनी तलवारों से काटने लगे । विलियम के सिपाही भागते थे और हैलैण्डर उनके पीछे थे । इस झगड़े के पहिले डंडी को गोली लगी और वह गिर पड़ा और हैलैण्डर लूटपाट कर अपने अपने घरों को लौट गये । इसके पीछे विलियम ने हैलैण्डरों के निकलने की जहां जहां राहें थीं वहां वहां सिपाही बिठा दिये और सरदारों को पुरस्कार दिया जिससे बहुत दिनों तक स्काटलैण्ड में लड़ाई बन्द रही ।

३ ।—<u>ग्लेङ्को (Glencoe) की नरबलि</u>—हैलैण्ड के सर्दारों को इस बात की क़सम खानी पड़ी कि लड़ाई दंगा न करेंगे । क़सम खाने की मियाद थी । जब वह दिन आ गया तो एक ही सरदार बचा था जिसने क़सम न खाई । यह ग्लेङ्को का मक आयन (Mac Ian) था । ग्लेङ्को पश्चिमी हैलैण्डस में एक उजाड़ पहाड़ी घाटी थी । मक आयन बुड्ढा था और एक छोटी सी जथा का सरदार था । उसने क़सम खाने का संकल्प किया था परन्तु वह बड़ाई इसी में समझता था कि सब बड़े बड़े सरदार क़सम खा लें तो मैं भी क़सम खाऊं । अभाग्य बस वह ऐसी जगह क़सम खाने को गया जहां उससे क़सम लेनेवाला कोई न था । वह तुरन्त दूसरी जगह पहुंचा और वहां उसने नियमानुसार

क़सम खाई परन्तु मियाद का दिन बीत चुका था। उन दिनों विलि-यम की ओर से एक मास्टर अफ़ स्टेयर (Master of Stair) स्काटलैण्ड का शासन करता था। उसे एक आयल को दण्ड




स्काटलैण्ड और इंग्लिस्तान के उत्तर का भाग।

देने का बहाना मिल गया। वह यह भी जानता था कि हैलैण्ड-वाले सदा लड़ने और लूटने को तैयार रहते हैं और एक आयल की जथावाले और हैलैण्डरों की अपेक्षा मैदान से अधिक ढोर

डंगर पकड़ ले जाते थे। इसलिये उसने कहा कि इन्हें ऐसा दण्ड दिया जाय जिससे लोग थर्रा जायं और विलियम ने उस चोर मण्डली को समूल नाश करने की आज्ञा भी दे दी। मास्टर ने यह काम धोखा देकर बड़ी निष्ठुरता से किया। विलियम के सिपाही जथावालों के मित्र बनकर आये, उनके बीच में ठहरे, उनके साथ खाना खाया और ताश खेला। एक दिन बड़े सवेरे सिपाहियों ने उन्हीं लोगों के झोपड़े घेर लिये जिनके साथ पिछली रात को बैठकर मद पिया था, उनको आप बिछौनों से उठाकर बाहर खींच लाये और उन्हें मार डाला। कितने निकल भागे परन्तु बड़ा कड़ा जाड़ा पड़ रहा था और ठंडक और भूख से उन्हीं बरफ़ों में मर गये जिनमें छिपकर सरन लेना चाहते थे। ग्लेङ्को की नरबलि स्काटलैण्डवालों को कभी न भूलैगी।

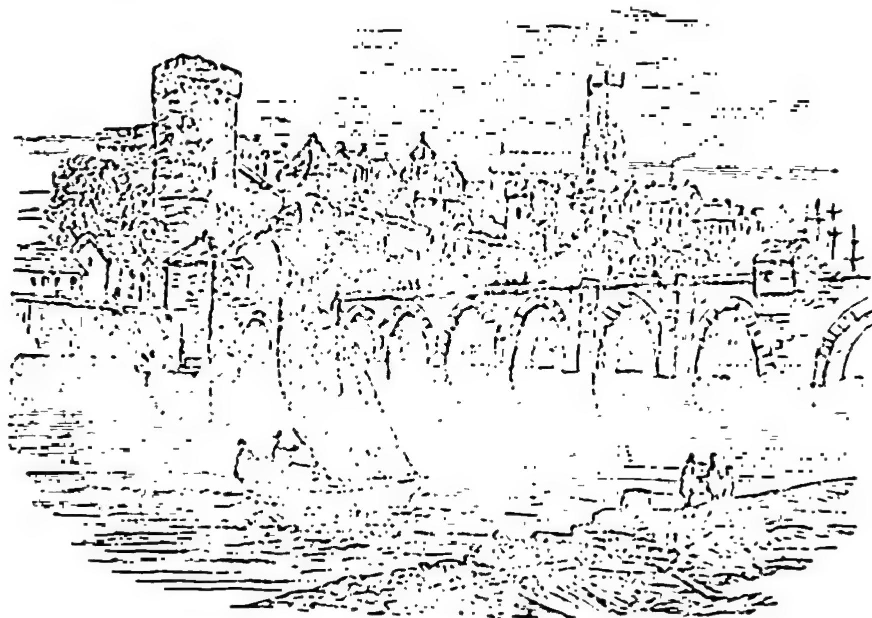
४।—लंडनडेरी (Londonderry) का घेरा—ऐरलैण्ड में स्काटलैगड की अपेक्षा बहुत दिनों तक युद्ध रहा। ऐरलैगड में अंगरेज़ जाति के लोग बहुत हैं परन्तु जनता ऐरिश जाति की है और कैथोलिक धर्म मानती है। क्राम्वेल ने उनके साथ बहुत बुरा बर्त्ताव किया था और परावर्त्तन के पीछे चार्ल्स का बर्त्ताव भी बुरा ही रहा। जब जेम्स द्वितीय इंग्लिस्तान में कुछ परिवर्त्तन कर रहा था तो उसे ऐरिश लोगों से सहायता पाने की आशा थी। उसने एक गवर्नर भेजा था जिसने ऐरिश कैथोलिकों की एक सेना इकट्ठी की थी। कुछ दिनों तक ऐरिश लोगों ने अपनी मनमानी की। उन्होंने अंगरेज़ी प्रोटेस्टेंगटों को सताया, लूट लिया, और अपने अपने घरों से निकाल दिया जैसा कि उन्होंने ई० १६४१ में किया था। कुछ थोड़े ही नगर बचे थे जिनमें अंगरेज़ कुशल से रहते थे। इनमें लंडनडेरी एक था। जेम्स आप ऐरलैगड पहुंचा और उसे आशा थी कि लंडनडेरी आत्मसमर्पण कर देगा और सारा ऐरलैगड

उसके हस्तगत हो जायगा। लंडनडेरी के गवर्नर लंडी ने आत्म-समर्पण करना निश्चय कर लिया और आज्ञा दी कि जब ऐरिश सेना आ जाय तो कोई रोकटोक न हो। इस आज्ञा को दो वीर योद्धाओं ने न माना। वाकर (Walker) नाम के एक पादरी ने नगर-निवासियों से कहा कि "लड़ मरो, किसी को न आने दो"। "आत्मसमर्पण न होगा" कहते हुये लोग खुले फाटकों की ओर झपटे और जेम्स के सामने ही उन्हें बन्द कर लिया। ऐरिश सेना ने तब नगर को घेर लिया और बल्लियां बांध बांध कर नदी में डाल दीं जिससे न फाटकों से खाने पीने की वस्तु आ सकें न नावों पर लाई जाय। नगर-रक्षक भूखों मरने लगे। बहुत दिनों तक उन्हें मांस न मिला तो घोड़े मार मार कर खाने लगे और घोड़े भी बहुत न थे। गिरजाघरों के मीनारों से लोगों ने अपनी सहायता को विलियम के भेजे जहाज़ आते देखे परन्तु कई सप्ताह बीत गये और जहाज़ों ने बल्लियों के तोड़ने का साहस न किया। इतने दिनों में बहुत से नगरनिवासी रोग और भूख से मर गये। धनी लोगों की यह दशा हो गई कि कुत्ते के मांस का एक टुकड़ा पाने पर प्रसन्न हो जाते। नदी में एक छोटी सी मछली मिल जाती तो बड़ा माल समझी जाती और मछुये उसे दाम लेकर न बेचते। प्राणरक्षा के लिये लोग सूखा चमड़ा चबाते थे कदाचित् उसी में से कुछ निकल आये। बहुतेरे मर गये परन्तु किसी ने आत्मसमर्पण करने का नाम न लिया। वाकर सदा उनका उत्साह बढ़ाता रहा और कहता रहा कि सब कुछ सहेंगे किन्तु नगर न छोड़ेंगे। अन्त को तीन जहाज़ जो अब तक आसरा देखते रहे नदी की ओर बढ़े। एक ने बल्लियों के गट्ठे पर धक्का दिया। बल्लियां टूट गईं परन्तु जहाज़ भी दूर जाकर गिरा। शेष दो जहाज़ नगर के वीर रक्षकों के लिये खाने पीने का सामान भरे नगर में पहुंचे। घेरा करनेवाले निरास होकर चले गये।

५ ।—ब्वायन (Boyne) की लड़ाई और ऐरलैण्ड में युद्ध का अन्त—लण्डनडेरी का घेरा विलियम के इंग्लिस्तान आने के साल हुआ । दूसरे साल विलियम आप ऐरलैण्ड पहुंचा और ब्वायन की लड़ाई में जेम्स को परास्त कर दिया । जेम्स निराश हो कर फिर फ़्रान्स को भाग गया । ऐरिश लोग लड़ते रहे और दूसरे ग्रीष्म ऋतु में उनका बल टूट गया । अघरिम (Aghrim) में दूसरी लड़ाई हुई, उसमें भी ऐरिश हार गये और जिन्हें फिर भी लड़ने की चाह रही वे लिमरिक (Limerick) में जा छिपे । लिमरिक भी ले लिया गया तो निरास हो गये । बहुत दिनों तक ऐरलैण्ड में प्रोटेस्टैण्ट ही शासक रहे । यह लोग बहुधा अंगरेज़ जाति के थे । डबलिन में एक पार्लामेण्ट थी जिसके सदस्य प्रोटेस्टैण्ट ही हो सकते थे और समय समय पर कैथोलिक लोगों के लिये कड़े क़ानून बनाते रहे ।

६ ।—बीचीहेड (Beachy Head) की लड़ाई—विलियम इंग्लिस्तान में लोकप्रिय न रह गया । वह अंगरेज़ी शिष्टाचार न जानता था और अपने को अंगरेज़ों का मेली न बना सका । वह अंगरेज़ी भाषा भी टूटी फूटी बोलता था और जनता अपने देश के एक सिंहासन पर एक डच को देखना न चाहती थी । परन्तु सिंहासन पर उसका होना इंग्लिस्तान में फ़्रान्सीसी सेना के उतरने से अच्छा ही था । लुई जेम्स को फिर राजा बनाने के लिये इंग्लिस्तान पर चढ़ाई करना चाहता था और ऐसे भय के अवसर पर अंगरेज़ विलियम के लिये लड़ने को तैयार थे । जब विलियम ऐरलैण्ड में था तो एक फ़्रान्सीसी बेड़ा चैनल में देख पड़ा । यहां उसकी मुठभेर एक ऐसे बेड़े से हुई जिसमें अंगरेज़ी और डच दोनों जहाज़ थे । अंगरेज़ी जलसेनापति बिगड़ा हुआ था । उसने डच जहाज़ों को लड़ने दिया; आप न लड़ा और भाग कर

टेम्स नदी में आ छिपा। फ्रान्सीसी जलसेनापति टेनमथ (Teignmouth) में उतरा और उसने कुछ झोपड़ों में आग लगा दी। इसमें कोई बड़ी बात न थी परन्तु अंगरेज़ इस से जोश में आ गये। इंग्लिस्तान में बहुत से ऐसे थे जो जेम्स को फिर



लिमरिक।

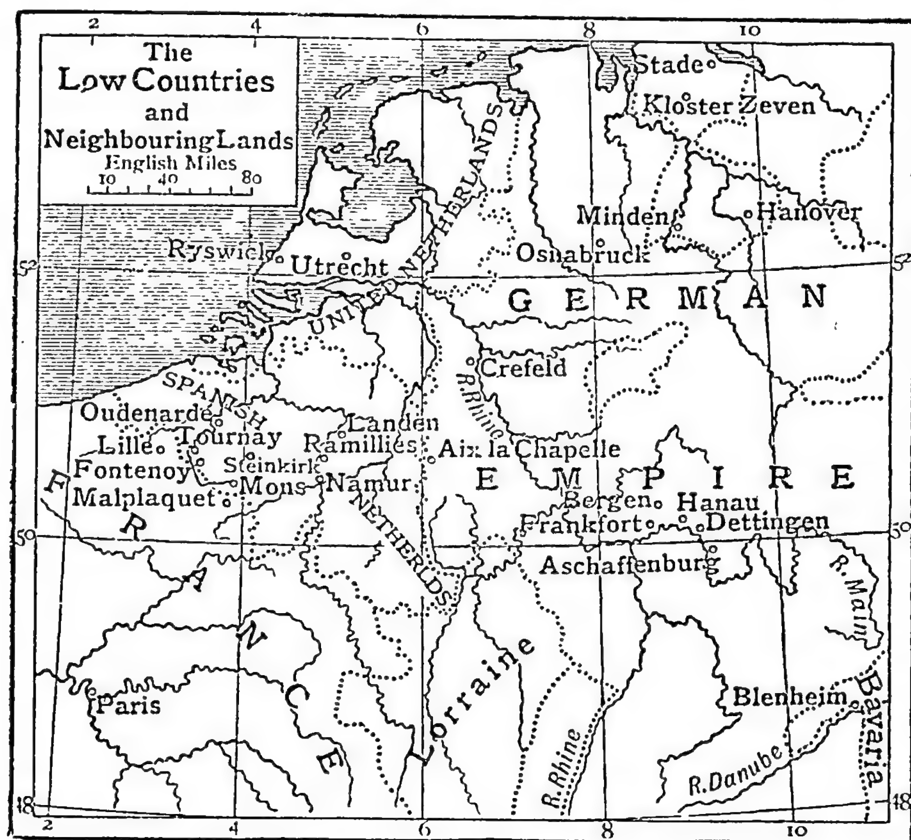
सिंहासन पर देखना चाहते थे परन्तु ऐसा कोई न था जो इंग्लिस्तान पर फ्रान्सीसी आक्रमण रोकने के लिये अपना लोहू गिराने को तैयार न था।

७।—ला होग (La Hogue) की लड़ाई—दो बरस पीछे वैसा ही उत्साह फिर हुआ। बीचीहेड पर जो फ्रान्सीसी बेड़ा लड़ा था उससे भी बड़ा बली बेड़ा बड़ी फ्रान्सीसी सेना लिये हुये इंग्लिस्तान पर चढ़ाई करने को तैयार किया गया। फ्रान्सीसी यह समझे थे कि विलियम को अंगरेज़ मानते ही नहीं, जेम्स को फिर राजा बनाने के अभिप्राय से आनेवाले फ्रान्सीसियों का स्वागत करेंगे। उनका सामना करने को जो अंगरेज़ी बेड़ा बना उसका

सेनापति रसल उसी रसल का भाई था जिसका सिर चार्ल्स द्वितीय के समय में काटा गया था। वह सदा रूठा मुह बनाये रहता था और समझता था कि मेरा समुचित आदर नहीं किया जाता है। वह विलियम का नौकर था परन्तु उसने जेम्स के कुछ मित्रों से कह भी दिया था कि हम पुराने स्वामी को फिर से सिंहासन पर देखना चाहते हैं। इन में से एक उसके पास जेम्स के लिये सहायता मांगने आया। सेनापति बोला, "क्यों जी तुम समझते हो कि मैं अपने समुद्र में फ्रान्सवालों को विजयी होने दूंगा। मैं तुमसे कहे देता हूं कि राजा भी उनके जहाज़ पर हुये और फ्रांन्सीसी मेरे सामने आये तो उनसे लड़ूंगा।" रसल अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहा। ला होग (La Hogue) अन्तरीप के पास फ्रान्स के बेड़े से भिड़ गया और उसे मार भगाया। अंगरेज़ी सिपाहियों ने उसका पीछा किया और जिन मोरचों के नीचे उसने सरन ली थी वहीं जाकर उसके बहुत से जहाज़ों में आग लगा दी। एसेक्स और रैले के कार्डिज़ विजय के दिन से अंगरेज़ी बेड़े की कोई ऐसी जीत पहिले न हुई थी और पीछे भी तभी हुई जब नेलसन (Nelson) ने नील नदी पर और ट्राफ़ाल्गार (Trafalgar) पर फ्रान्सीसी बेड़े को परास्त किया।

८।—<u>नेदरलैण्डस (Netherlands) में लड़ाई और मेरी की मृत्यु</u>—विलियम लुई की सेना को रोकने के लिये हर साल नेदरलैण्डस जाया करता था। जितनी लड़ाइयां लड़ी गईं उनमें फ्रान्सीसियों ही की जीत हुई परन्तु विलियम ने उन्हें इन जीतों से कोई विशेष लाभ होने न दिया। उसकी अनुपस्थिति में उसकी सती पत्नी जो उससे बड़ा प्रेम रखती थी और जिसे वह भी बहुत चाहता था घर पर राजकाज करती रही। ई० १६९४ में उसको शीतला निकली। उन दिनों टीका लगाना कोई जानता

न था और हर साल शीतला से बहुत लोग मरते थे। जब वैद्यों ने विलियम से कहा कि रानी के बचने की आस नहीं है तो उसका हृदय शोक से विदीर्ण हो गया। उसने एक बिशप से कहा "मैं संसार में सब से बढ़कर सुखी था अब सब से बढ़




बेलजियम हालैण्ड और उनके पास के देश।

कर दुखी हो गया। उसमें कोई दोष न था ; तुम सब जानते हो परन्तु तुम क्या जानो, मैं ही जानता हूं वह कैसी सुशील थी।" रानी मर गई परन्तु अपनी यादगार छोड़ गई। चार्लस द्वितीय ने ग्रीनिच (Greenwich) में टेम्स के किनारे एक सुन्दर महल बनाना आरम्भ किया था। यह महल उसी महल के स्थान पर बनता था जहां कभी पुराने राजा रहते थे। ला-होग की लड़ाई में सैंकड़ों सिपाही घायल होकर घर लौटे।

मेरी ने आज्ञा दी कि यह इमारत पूरी कर दी जाय और इसमें मेरी या उसका पति न रहै बरन् जो जल-सैनिक अपने देश की सेवा में बेकाम हो गये हैं उनके ठहरने के काम आये। इस उदार रानी की यादगार यही ग्रीनिच का अस्पताल है।

६।—पुस्तकों की स्वतन्त्रता—इन्हीं दिनों एक बड़ा उपयोगी परिवर्त्तन हो गया। अब तक कोई किताब न छप सकती थी जिसै एक अफ़सर जिस को लैसैन्सर (Licenser) कहते थे न देख लेता था और लैसैन्सर उचित समझता तो किताब की बिक्री रोक देता। इस कार्रवाई से जो समझते थे कि गवर्मेंगट अनुचित काम कर रही है वह लोग इस विषय की पुस्तक न छाप सकते थे। अब वह क़ानून रद्द कर दिया गया जिसके अनुसार ग्रन्थकारों को अपनी पुस्तक प्रकाशित करने के लिये लैसैन्सर से आज्ञा लेनी पड़ती थी। इससे जनता में शान्ति की बासना बढ़ गई क्योंकि जो समझता था कि अनुचित काम हो रहा है वह पुस्तक लिखकर या समाचारपत्र छापकर औरों से कह सकता था कि सब मिलकर इसे सुधार दें न कि पहिले की भांति षड्यन्त्र रच कर गवर्मेंगट को उलट देने का प्रयत्न किया जाय।

## ॥ अध्याय ३३ ॥

### * विलियम तृतीय *

### (ई० १६९४ से १७०२ तक)

१।—नामूर (Namur) का घेरा—ई० १६९५ तक लुई चतुर्दशम की बराबर जीत होती रही। उसकी जीतों से हज़ारों जानैं गईं और असंख्य धन ख़र्च हो गया। इस क्षति के कारण

फ्रान्स के रहनेवाले दिन दिन ग़रीब होते जाते थे और सिपाहियों को पहिले की भांति वेतन देने के समर्थ न रह गये। अपनी प्रभुता बढ़ जाने के कारण लुई भी बिगड़ गया। उसने अपने राज्य के आरम्भ में अपनी सेना में अच्छे सेनापति और राज्य का प्रबन्ध करने के लिये अच्छे मंत्री रख लिये थे। इस समय उसने अपना रंग बदल दिया और उन लोगों को ओहदे दे दिये जो उसकी खुशामद करते थे और जो सभा में उसको प्रसन्न किये रहते थे और इस बात में योग्य अयोग्य का विचार न किया। इधर इसके अतिरिक्त इंग्लिस्तान और हालैण्ड दोनों व्यापार से धनी हो गये थे। विलियम ने भी ऐसे नौकर रक्खे जो योग्य थे और काम करने को तैयार थे। ई० १६९५ में उसने नामूर नगर का अवरोध किया। इस अवरोध में उसने ऐसी चतुराई की कि फ्रान्सीसी सेना उसको हटा न सकी। अन्त को नामूर ने आत्म-समर्पण कर दिया। इस काल में ज्वार-भाटे की गति देख पड़ी। यह पहिला ही अवसर था कि लुई के हाथ से इस युद्ध में एक नगर निकल गया।

२।—गुप्तवध का षड़यन्त्र—जेम्स भी निराश न हुआ था। उसके कुछ अनुयायी अब भी इंग्लिस्तान में थे और ये जेकोबैट (Jacobite) के नाम से प्रसिद्ध थे क्योंकि लैटिन भाषा में जेम्स को जेकोबस कहते हैं। लुई ने यह वचन दिया था कि यदि पहिले जेकोबैट लोग इंग्लिस्तान में विलियम के विरुद्ध खड़े हो जायं तो फ्रान्सीसी सेना इंग्लिस्तान को भेज दी जायगी। जेकोबैट लोगों ने इसके उत्तर में कहा कि जबतक इंग्लिस्तान में फ्रान्सीसी सिपाही न आजायंगे हम सिर न उठायेंगे। लुई ने इस बात को निश्चय किये बिना कि जेकोबैट लोग उसकी मदद करेंगे अपनी सेना को समुद्र पार करके जोखम में डालने में

चतुराई न समझी। इस युक्ति पर विचार हो ही रहा था कि चालीस जेकोबैटों ने विलियम का बध करना निश्चय कर लिया। जेकोबैट जानते थे कि विलियम जब हैम्पटन कोर्ट (Hampton Court) को शिकार से लौटता था तो एक गली में होकर उसकी राह थी और उसके साथ केवल पच्चीस रक्षक रहते थे। जेकोबैट लोगों की यह युक्ति थी कि चटपट गली में घुस पड़ें, रक्षकों को गोली मार दें और पीछे से राजा को भी मार डालें। सौभाग्य-वश इन षड़यन्त्रियों में कुछ ऐसे लोग भी थे जो इस युक्ति से अलग रहना चाहते थे और उन्हों ने राजा को सारा भेद बता दिया। षड़यन्त्री पकड़े गये और उनमें से कुछ मारे गये। विलियम के बध के लिये जेकोबैट लोगों का प्रस्तुत होना सुनकर लोगों के चित्त पर वही असर पड़ा जो सौ बरस पहिले रानी एलिज़बेथ के बध के लिये कैथोलिक लोगों के रहने से हुआ था। अब तक विलियम लोकप्रिय न था। एक तो वह परदेसी था, दूसरे बात चीत में मिलनसार भी न था। इस षड़यन्त्र को सुनकर लोग सब भूल गये। उसके गुप्त बध का प्रयत्न सुनते ही सब उसके पक्षपाती हो गये और लार्ड सभा और कामन सभा के अधिकतर सदस्यों ने विलियम के शासन की रक्षा करने के लिये एक समिति बनाने, उसके बध करने का प्रयत्न करनेवालों से बदला लेने और उस क़ानून के अनुमोदन करने की प्रतिज्ञा की जिससे कि विलियम के मरने पर राजकुमारी ऐन को सिंहासन मिलना निश्चित हुआ था। जिस काग़ज़ पर यह प्रतिज्ञा लिखी गई थी वह सारे देश में फिराया गया और उसपर हज़ारों ने अपने हस्ताक्षर कर दिये जिनमें से बहुतेरे ऐसे थे जो विलियम के पक्ष में न आते जो उसके बध का प्रयत्न न किया गया होता।

३।—सिक्के चलन का सुधार—इन्हीं दिनों गवर्नमेण्ट को एक ऐसे विषय पर ध्यान देना पड़ा जो ऊपर की घटना से

निपट भिन्न था। बहुतेरे चांदी के सिक्के जो उस समय चलते थे चिकने किनारों के होते थे। उनके किनारों पर आज कल के शिलिंग और छ पेन्स की भांति दांतुये कटे न रहते थे। इसका परिणाम यह होता था कि दुष्ट लोग सिक्कों के किनारों पर से एक पर्त उतार लेते थे जिससे सिक्का कुछ छोटा हो जाता था और यही सिक्का चलाया जाता था। आज कल कोई ऐसा करै तो तुरन्त पकड़ा जाय क्योंकि दांतुयं कट जायंगे। उन दिनों इसका पता लगना कठिन था और सिक्का दिनोंदिन छोटा होता जाता था। किसी को एक शिलिंग दिया जाता तो उसे इतना तो निश्चय ही था कि नौ पेन्स दाम का सिक्का मिला है, कभी कभी यह सिक्का छः ही पेन्स का रहता था। इससे सिक्कों के लेन देन में सदा झगड़ा हुआ करता था। जिसै एक शिलिंग पाना था वह वही सिक्का मांगता था जो पूरा शिलिंग हो। सौदा बेचनेवाले यह न जानते कि कितने दाम मांगैं और ऐसी स्थिति हो जाती थी तो बहुधा अधिक दाम पर सौदा होता था। अन्त को गवर्मेण्ट और पार्लामेण्ट ने हस्तक्षेप किया। दांतुआवाला सिक्का बना और गोल कटे सिक्के के बदले चलाया गया। इस से जो हानि हुई वह जनता के सिर पड़ी।

४।—<u>रिज़विक (Ryswick) की सन्धि</u>—दो बरस तक कोई लड़ाई न हुई। लुई ने विलियम पर आक्रमण करने का साहस न किया और विलियम भी जो कुछ उसे मिल चुका था उसी पर सन्तुष्ट रहा। अन्त को ई० १६९७ में रिज़विक नगर में एक सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर किये गये जिसमें लुई ने विलियम को इंग्लिस्तान का राजा स्वीकार किया और जेम्स के पक्ष को त्याग दिया। विलियम सन्धिरूपी कल्याण के लिये ह्वाइट हाल से कृतज्ञता प्रकाश करने गया और सेण्टपाल के नये गिरजाघर में ईश्वर

को धन्यवाद देने के लिये एक विशेष पूजा की गई। यह पहिला अवसर था जब सर्वसाधारण लोग इसमें पूजा करने आये थे। इस मन्दिर का नक़्शा बहुत बड़े शिल्पकार सर क्रिस्टोफ़र रेन (Sir Christopher Wren) ने बनाया था और उसी स्थान पर धीरे धीरे बन रहा था जहां इकतीस बरस पहिले पुराना गिरजा भस्म हो गया था।

५।—<u>डच रक्षकों का छुड़ा दिया जाना</u>—विलियम ने सोचा कि युद्ध समाप्त होने पर भी सेना का एक बड़ा भाग रखने में भलाई है। वह जानता था कि लुई का उत्साह घटा नहीं है और फ़ान्सराज जब जानैगा कि जैसे अंगरेज़ी सिपाही उससे नामूर में लड़े थे, वैसे ही बहुतेरे और उससे लड़ने को तैयार हैं तो उसके शान्त रहने की सम्भावना अधिक रहैगी। कामनसभा ने इस भय का विचार न किया और यह चाहती थी ख़र्च जितना घट सकै उतना घटा दिया जाय। यह सभा न भूली थी कि क्रास्वेल ने अपने सिपाहियों की सहायता से इंग्लिस्तान पर शासन किया था और जितनी सेना की वास्तव में आवश्यकता थी उससे अधिक देखना न चाहती थी। कामन सभा ने केवल इसी बात पर हठ न किया कि सेना घटा दी जाय, उसने कहा कि डच रक्षक भी जिन्हें विलियम अपने साथ लाया था अपने देश को लौटा दिये जायं। इस पर विलियम बहुत अप्रसन्न हुआ परन्तु उसे कामन सभा की बात माननी ही पड़ी और सभा की मनमानी हो गई।

६।—<u>स्पेन राज्य का उत्तराधिकार और बटवारे की सन्धि</u>—विलियम को इंग्लिस्तान की अपेक्षा यूरप की अधिक चिंता रहती थी। स्पेन का राजा चार्ल्स द्वितीय रोगी और जड़ था। उसके बहुत दिनों तक जीने की आशा न थी। लुई के साथ

उसकी सब से बड़ी बहिन का विवाह हुआ था जिसके कारण वह अपनी सन्तान को स्पेन के राजसिंहासन का हक़दार समझता था। और भी राजकुमार थे जो अपना अपना हक़ बताते थे। विलियम ने इस बात का तो विचार न किया कि इन लोगों के हक़ क्या हैं परन्तु वह यह नहीं चाहता था कि फ्रान्स का राजा जो पहिले ही से बड़ा शक्तिशाली था उसका बेटा या पोता स्पेन-राज्य पर शासन करे। उन दिनों इटली देश का बहुत बड़ा भाग दक्षिण नेदरलैण्डस और अमरीका का बहुत बड़ा अंश स्पेनराज्य के अन्तर्गत था। आरम्भ में लुई की यह इच्छा न थी कि इस मामले की फिर लड़ाई छिड़ जाय। इसलिये एक सन्धि हुई जो पहिली बटवारे की सन्धि के नाम से प्रसिद्ध है। इस सन्धि के अनुसार स्पेनराज्य का बहुत बड़ा भाग बवेरिया के राजा को दे दिया गया। इससे किसी को डर न था। अभाग्यवश वह राजा मर गया और नया प्रबन्ध करना पड़ा। इस बार यह मामला दूसरी बटवारे की सन्धि से निपटा। स्पेनराज्य का कुछ अंग लुई के पोते फ़िलिप को मिला, शेष जिसमें स्पेन भी था सम्राट् के छोटे बेटे आर्कडयूक चार्ल्स (Archduke Charles) को दिया गया। यह सम्राट् अनेक भिन्न भिन्न उपाधियों से आस्ट्रिया और उसके आस पास के देशों पर शासन करता था। ई० १७०० में स्पेन का राजा भी मर गया और एक वसीयतनामा छोड़ गया जिसमें उसने अपना राज फ़िलिप को दिया था। लुई ने अपने नाती के लिये यह बड़ी वरासत स्वीकार करली और बटवारे की सन्धि पर अमल करने से इन्कार किया।

७।—इंग्लिस्तान में युद्ध करने की चाह—इंग्लिस्तान में बहुत कम लोग चाहते थे कि जेम्स फिर राजा हो। ई० १७०१ में पार्लमेण्ट ने एक क़ानून पास किया जिससे विलियम के

निःसन्तान मरने पर जेम्स की बेटी ऐन रानी हो। ऐन विलियम की रानी की बहिन थी। उसके पीछे इलेक्ट्रेस सोफ़ाया जो प्रोटेस्टैण्ट थी उत्तराधिकारिणी हुई। वह इलेक्ट्रेस पैलाटाइन की बेटी और जेम्स प्रथम की नातिनी थी। उस समय शासनसभा में टोरी मेम्बर बहुत थे, और ह्विगों की अपेक्षा टोरी ही बहुत चाहते थे कि लड़ाई से अलग रहैं। इसलिये जब विलियम ने चाहा कि लुई बटवारे की सन्धि पर अमल करने को बाध्य किया जाय तो उन्हों ने सहायता न दी। लुई ने इंग्लिस्तान को चिढ़ाने के अनेक काम किये और उसने नेदरलैण्डस में फ़ान्सीसी सिपाही भेज दिये कि स्पेनी क़िलों पर दख़ल कर लें, मानौ उसके पोते का राज उसी का था। परन्तु लुई जो चाहता सो करता, अंगरेज़ शान्ति ही रखने पर तुले हुये थे। परन्तु एक ऐसा समाचार मिला जिससे सब के चित्त के भाव बदल गये। फ़ान्स में जेम्स द्वितीय की मृत्यु हो गई। लुई ने तुरन्त उसके बेटे को बुलाया और उसे जेम्स तृतीय के नाम से इंग्लिस्तान का राजा मान लिया। यह वही लड़का था जिसे इंग्लिस्तान में बहुत लोग जेम्स का लड़का मानते ही न थे। फ़ान्सराज की इस ढिठाई पर अंगरेज़ों को बड़ा क्रोध आया कि फ़ान्सराजा एक ऐसे लड़के को अंगरेज़ों का राजा बनादे जिसका हक़ न अंगरेज़ी जनता ने माना न अंगरेज़ी पार्लामेण्ट ने स्वीकार किया। अब लड़ाई के प्रबन्ध करने में विलियम को कोई कठिनाई न पड़ी। उसने एक नई पार्लामेण्ट बुलाई जिसने उसे धन और सेना दोनों देना मंज़ूर किया। विलियम सेना लेकर यूरप महाद्वीप में जाने की तैयारी कर रहा था कि उसका काल आ पहुंचा। हैम्पटन-कोर्ट के बाग़ में उसके घोड़े ने ठोकर ली और वह गिर पड़ा। उसकी हंसली की हड्डी टूट गई और दो चार दिन पड़ा रहकर मर गया। उसने इंग्लिस्तान के लिये बड़े बड़े काम किये थे और आपस

की लड़ाई और निरन्तर फांसी और बध जो उसके पहिले राजाओं के समय में होते थे उनको रोकने के लिये उसने जितना किया उतना कोई दूसरा न कर सकता था। वह क़ानून के अनुसार शासन करता था और अपनी पार्लामेंटों को अपनी राह पर ला सकता था क्योंकि वह न कभी बिगड़ता और तबभी न हठ करता जब वह देखता कि जनता वही काम करने पर तुली हुई है जिसे वह ठीक नहीं समझता।

## ॥ अध्याय ३४ ॥

### * रानी ऐन *

### (ई० १७०२ से १७१४ तक)

१।—नैमित्तिक अनुवृत्ति का मसौदा—अपने शासन के आरम्भ ही से ऐन लोकप्रिय थी। जो लोग उसे नित्य देखा करते थे उन्हें वह रूखी फीकी लगती थी परन्तु जनता जो उसे कभी कभी देखती या देखती ही न थी इसकी परवाह न करती थी। वह लोग इस बात से प्रसन्न थे कि ऐन अंगरेज़ जाति की हैं न कि विलियम की भांति परदेसी। इसके अतिरिक्त लोग यह भी जानते थे कि ऐन डिसेण्टरों को नहीं चाहती और इंग्लिस्तान में बहुत लोग डिसेण्टरों से बुरा मानते थे। उन्हें अपने अपने गिरजाओं में प्रार्थना करना सब ने देखा था और देखते देखते अब उनकी घृणा छूट सी गई थी परन्तु यह कोई न चाहता था कि राज में उनको ओहदे मिलें। टेस्ट ऐक्ट ने उन्हें और कैथोलिक दोनों को ओहदों से वंचित कर दिया था क्योंकि जो मनुष्य किसी ओहदे पर मुक़र्रर किया जाता था उसे इस क़ानून के अनुसार गिरजा में "कम्युनियन" (Communion) * रीति करनी पड़ती थी।

* सेक्रमेण्ट में सम्मिलित होने की रीति।

कुछ दिनों से इस नियम के होते हुये भी कुछ डिसेण्टरों को ओहदे मिल गये थे क्योंकि उन्हों ने एक बार गिरजा में आकर कम्युनियन करने में हानि न समझी थी और फिर अपने अपने गिरजाघरों में चले गये। इसका नाम नैमित्तिक अनुवृत्ति था। ह्विग लोग सदा डिसेण्टरों के मित्र रहे और उन्हों ने कुछ न कहा परन्तु टोरी-दल-वाले इसके विरोधी थे और उन्होंने नैमित्तिक अनुवृत्ति के प्रतिकूल एक मसौदा तैयार किया जिससे जो डिसेण्टर ओहदा पाने पर फिर अपने चेपल (छोटे गिरजा) में जाय उसको दण्ड दिया जाय। कामन सभा में टोरी बहुत थे इस लिये उसने यह युक्ति मान ली। परन्तु जब तक लार्ड सभा भी न मानती, मसौदा क़ानून न बन सकता था। लार्ड सभा में टोरियों की अपेक्षा ह्विग प्रबल थे इससे यह प्रस्ताव कई बरस तक वहां स्वीकृत न हुआ।

२।—<u>ब्लेनहैम (Blenheim) रैमिलीज़ (Ramilies)</u>—यूरप महाद्वीप में लुई से लड़ने को जो सेना सजी गई थी उसके प्रधान सेनापति का पद ड्यूक मार्लबरा (Duke of Marlborough) को दिया गया। रानी ऐन उसकी स्त्री को बहुत चाहती थी और मार्लबरा के बराबर सेनापति ड्यूक वेलिंग्टन (Duke of Wellington) से पहिले इंग्लिस्तान में पैदा ही न हुआ था। मार्लबरा को अंगरेज़ी सेना के अतिरिक्त डच और जर्मन सेना पर भी कमान करनी पड़ती थी। जिन राजा रईसों ने जर्मन सेना भेजी थी वहलोग अपने अपने विचारों में डूबे थे और मार्लबरा जो उनसे करने को कहता था उसे बहुत कम मानते थे। उसे सब के साथ विनय से रहना पड़ता था और उन्हीं की भलाई के काम उन्हीं से कराने को उनको फुसलाया करता था। लड़ाई के पहिले दो बरसों में उसे डच नेदरलैण्डस की रक्षा के लिये बहुत कुछ करना पड़ा। ई० १७०४ में उसने उससे भी बढ़कर काम

किये। फ्रान्सराज ने ववेरिया को अपने पक्ष में कर लिया था और बवेरिया में एक फ्रान्सीसी सेना पड़ी हुई थी। मार्लबरा एकायक ब्लेक फ़ारेस्ट, (Black Forest काले बन) में होता हुआ राइन नदी के उद्गम की ओर चला। डेन्यूब नदी के तट पर ब्लेनहैम स्थान में उसे फ्रान्स की सेना मिली। उसको मार्लबरा ने परास्त कर दिया। लुई चतुर्दशम के शासनकाल में यह पहिला अवसर था जब फ्रान्सीसी सेना हार खा गई। इस लड़ाई का यह परिणाम हुआ कि फ्रान्सवाले जर्मनी से निकाल दिये गये। पार्लामेण्ट ने ड्यूक को उडस्टाक (Woodstock) के पास एक बड़ी जागीर दी जहां उसने एक बड़ा सुन्दर महल बनवाया जो अब तक ब्लेनहैम हौस के नाम से प्रसिद्ध है। कुछ दिन बीतने पर मार्लबरा की रैमिलीज़ में दूसरी जय हुई जिसके पीछे फ़ान्सीसी पूरे पूरे नेदरलैण्डस से निकाल दिये गये।

३।—<u>स्पेन में लड़ाई</u>—स्पेन में भी लड़ाई हो रही थी। जिस साल ब्लेनहैम का युद्ध हुआ था उसी साल जलसेनापति सर जार्ज रूक (Sir George Rooke) पांच हज़ार सिपाही समेत एक जहाज़ी बेड़ा लेकर जिब्राल्टर पहुंचा। गढ़ के भीतर १५० स्पेनी सिपाही थे। एक त्यौहार का दिन था। सब गिरजा गये हुये थे। स्पेनवाले ईश्वर प्रार्थना कर रहे थे उसी समय अंगरेज़ी सिपाही उतर पड़े और जिब्रालटर को बड़ी सुगमता से ले लिया। तब से यह अंगरेज़ों के अधिकार में है। नगर के पीछे एक पहाड़ी स्थल की ओर ऐसी ऊंची है कि उस पर बैरी चढ़ नहीं सकता। एक बार समुद्र की ओर से बैरी ने इस पर आक्रमण किया था परन्तु उसका प्रयत्न निष्फल हुआ। इसके अतिरिक्त स्पेन में और लड़ाइयां जीती गई। अंगरेज़ और उनके मित्रों को यह आशा थी कि देश जीत कर आर्क ड्यूक चार्ल्स (Archduke

Charles) को दे दिया जायगा परन्तु स्पेनवाले उसके शासन में रहना न चाहते थे। वह लोग फ़िलिप पंचम को चाहते थे और इसका कारण वही था जिससे अंगरेज़ों ने विलियम का पक्ष लिया। स्पेनवाले न चाहते थे कि परदेसी उनका राजा हो। उन्हें ऐसा राजा अपेक्षित था जो उनके बीच में रहे न कि ऐसा जो परदेसी सेना का दबाव डालकर उनको अपने शासन में रक्खै।

४।—स्काटलैण्ड के साथ मिलाप (Union)—इन विजयों के बीच में एक ऐसा प्रश्न उठा जो अंगरेज़ों के लिये अत्यन्त उपयोगी था और जिसकी उपयोगिता इस से बढ़कर थी कि स्पेन का राजा फ़िलिप हो या चार्ल्स। निवेशन के क़ानून (Act of Settlement) ने यह निश्चित कर दिया था कि रानी ऐन के मरने पर इंग्लिस्तान के सिंहासन पर इलेक्ट्रेस सोफ़ाया (Electress Sophia) बैठै या उसका बेटा। परन्तु स्काटलैण्ड की पार्लामेण्ट ने ऐसा कोई क़ानून पास न किया था। स्काटलैण्ड एक भिन्न राज्य था। उसकी पार्लामेण्ट जुदी थी। उसके क़ानून और थे। सम्भव था कि स्काटलैण्डवाले अपने लिये एक ऐसा राजा निर्वाचित करैं जो इंग्लिस्तान के राजा से भिन्न हो। यह बात अंगरेज़ों को न रुची। अंगरेज़ न चाहते थे कि स्काटलैण्ड इंग्लिस्तान से जुदा रहै और जैसा जेम्स प्रथम के इंग्लिस्तान में आने से पहिले हुआ करता था उसके इंग्लिस्तान से लड़ने की सम्भावना रहे। यह बात न स्काटलैण्डवालों को भाई न अंगरेज़ों को, परन्तु स्काट लोग जब कभी अपना माल बेचने को इंग्लिस्तान में लाते तो उन्हें परदेसियों की भांति कड़ा महसूल देना पड़ता था और उन्हों ने निश्चय कर लिया कि जब तक उनको इंग्लिस्तान के साथ व्यापार करने की स्वतन्त्रता न मिल जायगी वहलोग सिंहासन के विषय में अंगरेज़ों का कहना

न मानेंगे। अंगरेज़ इस विचार में थे कि स्काटलोग बिना महसूल दिये इंग्लिस्तान में अपना माल बेचने पायेंगे तो बहुत सस्ते दामों बेचेंगे क्योंकि अंगरेज़ों की अपेक्षा स्काटलोग थोड़े खर्च से अपनी जीविका का निर्वाह करते थे। स्काटलोग कोथमील का हलवा बनाकर अपना पेट भरते और अंगरेज़ गोमांस और डबल रोटी खाते थे। अंगरेज़ों को यह डर लगा कि सब लोग अपने काम की वस्तु स्काट लोगों से लेने लगेंगे तो हम लोग कहीं के न रह जायंगे। अन्त को अंगरेज़ मान गये और ई० १७०७ में मिलाप का क़ानून बना जिससे दोनों देशों की एक पार्लामेण्ट बनी और व्यापार की स्वतन्त्रता हो गई। केवल स्काटलैण्ड के क़ानून जुदे रहे और प्रेस्बिटीरियन धर्म रह गया। परन्तु अंगरेज़ों की, जैसा समझे थे, बड़ी हानि न हुई।

५।—<u>ह्विग मंत्रिमण्डली</u>—यूरप महाद्वीप में लड़ाई चली जा रही थी। मार्लबरा ने दो और लड़ाइयों में विजय पाई एक ऊडेनार्ड (Oudenarde) में दूसरे मालप्लाके (Malplaquet) में। दोनों में फ़्रान्सीसी जी तोड़ कर लड़े परन्तु इन युद्धों से जो लाभ हुये वह ब्लेनहैम और रैमिलीज़ के विजयों से घटकर थे। लड़ाई जारी रहने से टोरी दल उकता गया। उसने यह समझा कि फ़्रान्सवाले नेदरलैण्डस से निकाल दिये गये इतना ही बहुत है, स्पेन का राजा फ़्रान्स का राजकुमार हो या न हो। विलियम के समय के बड़े युद्ध के दिनों से राज के मुख्य ओहदे ऐसे लोगों को दिये जाते थे जो राष्ट्रीय विषयों में सहमत होते थे। इन ओहदे-दारों के नाम हैं।

१—लार्ड चैन्सिलर (Lord Chancellor) क़ानून और अदालतों के महकमे का अफ़सर (न्यायाधिकारी)।

२—फ़र्स्ट लार्ड अफ़ दी ट्रेज़री (First Lord of the Treasury) ख़ज़ाने का हाकिम, सरकारी ख़र्चे की देखभाल करनेवाला (कोशाधीश)।

३—चैन्सिलर अफ़ दी इक्सचेकर (Chancellor of the Exchequer) अर्थात् कराधिकारी।

४—फ़र्स्ट लार्ड अफ़ दी एडमिरल्टी (First Lord of the Admiralty) जलसेनाधिकारी।

५—सेक्रेटरीज़ अफ़ स्टेट (Secretaries of State) प्रबन्ध मंत्री जो देश के भीतर और बाहर के मामलों में गवर्मेण्ट का हुक्म जारी करते थे।

यह लोग दो चार और बड़े अफ़सरों के साथ बैठ कर राजकाज में सलाह करते थे। यह लोग मन्त्री कहे जाते थे और इनकी सभा का नाम केबिनेट (Cabinet) था। वास्तव में यही केबिनेट इंग्लिस्तान का शासन करती थी।

ह्विग लोग युद्ध के पक्षपाती थे और कुछ दिनों तक जनता भी लड़ाई चाहती रही। इस से ब्लेनहैम की लड़ाई के बाद कामन सभा में ह्विग बहुत से आ गये। मार्लबरा भी लड़ाई जारी रखना चाहता था। उसने रानी को समझा बुझाकर ह्विग कैबिनेट बनवाई। परन्तु थोड़े ही दिनों में जनता के विचार बहुत बदल गये। कितने समझे कि अब सन्धि का समय आ गया और ई० १७०९ में ह्विग उतने ही लोकविद्विष्ट हो गये जितने कि ब्लेनहैम के युद्ध के पीछे ई० १७०४ में लोकप्रिय थे।

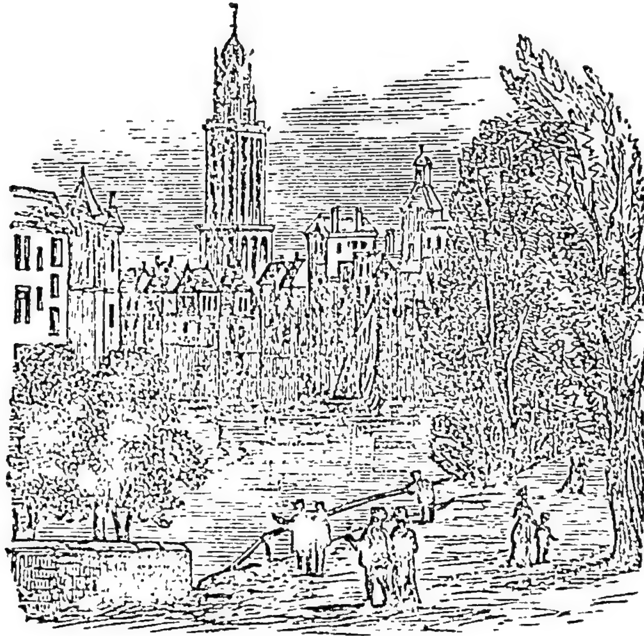
६।—<u>सचेवरल (Sacheverell) की रूबकारी</u>—ई० १७०९ के अन्त में जब अंगरेज़ लोग लड़ाई से थक गये थे, डाक्टर सचेवरल नाम एक पादरी ने डिसेण्टरों और उनके पक्षपाती ह्विगों

के विरुद्ध एक व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में उसने यह भी कहा कि राजा से विरोध करना न्याय के प्रतिकूल तो है ही ईसाई धर्म के भी प्रतिकूल है। ह्विग मन्त्रियों ने इसे उस विरोध पर कटाक्ष समझा जो जेम्स द्वितीय के शासन के अन्त में किया गया था और जिससे राज्यक्रान्ति हुई थी। लोगों ने तब तक यह न सीखा था कि जब कभी कोई उनके विरुद्ध भी कोई बात कहे तब भी वाक्स्वतन्त्रता बहुत अच्छी वस्तु है और उन्होंने मूर्खता से सचेवरल पर मुक़द्दमा चला दिया। पादरी तुरन्त ही लन्दन की जनता की आंखों का तारा हो गया। भीड़ की भीड़ गलियों में दौड़ती फिरी, डिसेण्टरों के गिरजाघर गिरा दिये और धर्मसंघ और सचेवरल की दुहाई देते फिरते थे। लार्डसभा ने आज्ञा दी कि सचेवरल का व्याख्यान जला दिया जाय और तीन बरस तक वह व्याख्यान न दे सके। इस से सचेवरल की कोई बड़ी हानि न हुई। वह देश में फिरता रहा और उसका ऐसा स्वागत किया गया मानो राजा अपने भक्त प्रजा के बीच में घूम रहा है। गिरजाघरों में घंटे बजे, अलाव जलाये गये और उसके नाम से लोगों ने मंडली बना कर शराब पी। इससे प्रकट हो गया कि जनता अब ह्विगों को चाहती न थी।

७।—टोरी मन्त्रिमण्डली—वास्तव में रानी भी ह्विगों से प्रसन्न न थी। केवल मार्लबरा के कहने से उनको मानती थी। इन्हीं दिनों वह मार्लबरा की स्त्री से भी रुष्ट हो गई जो उसके बचपन की सहेली थी। डचेस को बड़ा अभिमान था और बात बात में लड़ बैठती थी। रानी के साथ भी वह बड़ी ढिठाई करती रही। रानी से न सहा गया और उसने डचेस को निकाल दिया और मंत्री छुड़ा दिये। एक नया टोरी मंत्रिमण्डल बना जिसके मुख्य सदस्य हारले (Harley) और सेण्ट जान (St. John)

थे। हार्ले बड़ा उद्योगी और परिश्रमी था परन्तु बड़ा चतुर न था। सेण्ट जान बड़ा पण्डित था; उसके समान कामन सभा में कोई वक्ता न था और राजकाज को खेल समझता था विशेष करके जब इस खेल से उसे कुछ धन मिलै या उसका अधिकार बढ़ जाय।

८।—यूट्रेक्ट (Utrecht) की सन्धि—नये मन्त्रियों ने पहिली बात यह सोची कि फ़्रान्स के साथ सन्धि कर लेनी चाहिये। यह उचित भी था क्योंकि हारते हारते फ़्रान्स इतना निर्बल हो गया था कि युद्ध से कुछ लाभ न होता। ई० १७१३ में यूट्रेक्ट की



यूट्रेक।

सन्धि पर हस्ताक्षर किये गये। आर्क ड्यूक चार्ल्स जो स्पेन न ले सका था अब आस्ट्रिया का सम्राट् हो गया था। उसै इटली और नेदरलैण्डस के स्पेनी प्रान्त मिल गये। लुई चतुर्दशम के नाती फ़िलिप पंचम के पास स्पेन और अमरीका और और स्थानों के स्पेनी उपनिवेश रह गये।

६।—रानी ऐन के अन्तिम दिन—सन्धि के अतिरिक्त नये मंत्री डिसेण्टरों के प्रतिकूल जो कुछ उनसे हो सका करते रहे। पार्लामेण्ट ने भी नैमित्तिक अनुवृत्ति के विरुद्ध एक क़ानून बना दिया और कुछ दिन पीछे एक पाषण्ड का क़ानून बना जिसके अनुसार बिना बिशप की आज्ञा के कोई स्कूल न खोल सकै। इसका प्रयोजन यह था कि डिसेण्टर लोग अपने स्कूल न खोलने पायें। परन्तु टोरियों को भी वही कठिनाई पड़ी जो जेम्स द्वितीय को पड़ी थी। जैसे जेम्स जानता था कि जो कुछ मैंने किया उसे मेरे मरने पर मेरी बेटी मेरी उलट देगी वैसे ही टोरी भी समझते थे कि रानी ऐन के मरने पर उनका सब किया कराया मिट्टी में मिल जायगा। क़ानून के अनुसार इलेक्ट्रेस सोफ़ाया (Electress Sophia) ऐन की उत्तराधिकारिणी थी। वह ई० १७१४ में मर गई और उसका बेटा जार्ज, हनोवर का इलेक्टर* उसका वारिस हुआ। टोरी जानते थे कि जार्ज ह्विगों का पक्षपात करैगा। इस विचार से कितने टोरी यह चाहते थे कि क़ानून बदल दिया जाय और ऐन के पीछे राज करने को जेम्स का बेटा बुला लिया जाय। यह बेटा पीछे कपट राजकुमार (Pretender) कहलाया। कपट राजकुमार प्रोटेस्टैण्ट होता तो यह संभव भी था। परन्तु कपट प्रोटेस्टैण्ट न था और टोरी लोग कैथोलिक राजा न चाहते थे। टोरी इसी उधेड़बुन में लगे थे कि रानी का देहान्त हो गया।

---

* इलेक्टर का पद छोटे राजा के बराबर है।

## ॥ अध्याय ३५ ॥

### पहिले दो जार्जों का शासन, पेलहम की मृत्यु तक ।

### जार्ज प्रथम, १७१४; जार्ज द्वितीय, १७२७; हेनरी पेलहम की मृत्यु १७५४ ।

१ ।—जार्ज प्रथम के शासन का आरम्भ—नये राजा ने टोरी मंत्री हटा दिये और उनकी जगह ह्विग मंत्री नियत किये। ई० १७१५ में इंग्लिस्तान के उत्तर और स्काटलैण्ड में जेकोबैट लोगों ने विद्रोह मचाया। कपट राजकुमार आप स्काटलैण्ड में उतरा। वह



जार्ज प्रथम ।

बड़ा आलसी और बड़ा मट्ठर था और युद्ध करना उसे आता ही न था इससे कोई उसे न चाहता था। बलवा दबा दिया गया और कपट राजकुमार को यूरप महाद्वीप लौट जाना पड़ा।

राजशासन में ह्विगों ने जो चाहा सो कर डाला । रानी ऐन के समय में डिसेण्टरों के प्रतिकूल जो क़ानून बने थे सब रद्द कर दिये गये और बहुतेरे ह्विग टेस्ट एक्ट को भी इतना बदलना चाहते थे कि डिसेण्टर लोगों को सरकारी ओहदे मिल सकें । परन्तु जिन ह्विगों ने यह प्रस्ताव किया उन्हें विदित हो गया कि थोड़े ही दिनों में वे लोकविद्विष्ट हो जायंगे । अंगरेज़ी जनता अधिकांश न राजनीति जानती थी न उसकी परवाह करती थी परन्तु उसमें बड़ा दुराग्रह था और समझती थी कि डिसेण्टरों को अधिकार मिल गया तो उनका बर्त्ताव वैसा ही होगा जैसा क्राम्वेल के समय में प्युरिटनों का था । यह बातें हो ही रही थीं कि ह्विग मंत्रिमंडली एक ऐसी घटना से निकाली गई जिसका कि राजनीति से कोई सम्बन्ध न था ।

२ ।—दक्षिण समुद्र का मायाजाल (South Sea Bubble)—यूट्रेक्ट की सन्धि के कारण जो शान्ति हुई उसमें व्यापार बढ़ गया और जिस किसी के पास थोड़ा भी धन था वह यह समझने लगा कि इस धन को व्यापार में लगा दें तो बड़े धनी हो जायंगे । व्यापार की कंपनियां बनीं और किसी किसी कंपनी के हिस्सेदारों को लाभ भी हुआ । परन्तु बहुतेरी कंपनियां मूर्खों या धूर्त्तों की बनाई हुई थीं और उनका प्रयोजन इतना ही था कि जो लोग मूर्खता से उनका विश्वास करैं उनका धन उन धूर्त्तों को मिल जाय । इनमें एक कंपनी जो बड़ी लोकप्रिय हुई दक्षिण समुद्र की कंपनी थी । यह कंपनी दक्षिण अमरीका में व्यापार करने के लिये बनी थी और कुछ लाभ भी इससे हो जाता परन्तु लोगों को यह भ्रम था कि बिना प्रमाण लाभ होगा और कितनों ने इस कंपनी में हिस्सेदार होने के लिये बहुत धन दिया । सौ पौण्ड के हिस्से के लिये एक बार हज़ार पौण्ड देने को तैयार थे यद्यपि

हिस्सों का दाम कभी सौ पौण्ड से नहीं बढ़ा। परन्तु थोड़े ही दिनों में लोगों को विदित हो गया कि सब धोखा है और जिन हिस्सों के लिये उन्होंने बढ़कर दाम दिये थे उन्हें बड़े घाटे पर बेंचा। लोगों को बड़ा क्रोध हुआ। बहुत से मंत्रियों को कंपनी के संचालकों ने घूस देकर पार्लमिण्ट में अपना पक्ष साधन किया था उनपर लोग बहुत बिगड़े। एक मंत्री टावर में क़ैद कर लिया दूसरा लाज और शोक से विष खाकर मर गया।

३।—सर राबर्ट वालपोल (Sir Robert Walpole) का प्रधान मंत्री होना—एक नई मंत्रिमण्डली बनी जिसका मुखिया सर राबर्ट वालपोल था। पहिले मंत्रियों की भांति वह भी ह्विग था परन्तु उसमें इतनी चतुराई थी कि वह कोई काम न करता जिससे लोग विरोध करैं। इंग्लिस्तान में सब से पहिले वही प्रधान-मंत्री कहलाया। विलियम तृतीय और ऐन के समय में राजा या रानी कैबिनेट की बैठकों में उपस्थित रहते थे और मंत्रियों के विचार सुनते रहे। जार्ज प्रथम अच्छी तरह अंगरेज़ी बोल न सकता था और अपने मंत्रियों के वादविवाद में उसे कोई रस न मिलता था और न उसका कोई मंत्री जर्मन भाषा जानता था। इसलिये वह कैबिनेट में न जाता था और तब से कोई राजा न गया। परन्तु जब राजा ने वहां जाना छोड़ दिया तो किसी को उसकी जगह रहना अनिवार्य था और तब से एक मंत्री के रहने की रीति चल गई। यह मंत्री प्रधान मंत्री होता था और सब मंत्रियों से उसका पद ऊंचा रहता था।

४।—पार्लमिण्ट में घूस—वालपोल अपना काम बहुत समझता था और कामन सभा के सदस्यों को अपने रंग पर लाना जानता था। बहुतेरे मेम्बर बिना घूस लिये मंत्रियों की इच्छा के अनुसार वोट न देते और वालपोल उन्हें घूस देने को तैयार

रहता था। उन दिनों सभा के सदस्यों को छोड़ कर और कोई न बता सकता था कि किसी सदस्य ने क्या कहा और कैसा वोट दिया। समाचारपत्रों को आज्ञा न थी कि पार्लमेण्ट में जो व्याख्यान दिये जायं या वोट दिये जायं उन्हें छापें। इस कारण सदस्य अपना वोट बेंच सकता था क्योंकि जिन्हों ने उसे मेम्बर चुना था उन्हें उसकी करतूतों का ज्ञान ही न था और जानते भी थे तो बहुत कम लोग इसकी परवाह करते। जब चुनाव का दिन आता तो चुननेवाले जानते थे कि उम्मेदवार उन्हें वोट देने के लिये रुपये देंगे और बिना दाम की बहुत सी शराब पिलायेंगे। इन बातों को छोड़कर और कोई कुछ अपना कर्त्तव्य न समझता था।

५।—<u>वालपोल और माल पर महसूल (Excise) का मसौदा</u>—ई० १७२७ में जार्ज प्रथम की मृत्यु हो गई और उसका बेटा जार्ज द्वितीय के नाम से सिंहासन पर बैठा। वालपोल अपने पद पर रहा। कामन सभा में उससे विरोध होने लगा था। कुछ ऐसे सदस्यों ने उससे विरोध इस लिये किया कि वालपोल ने उन्हें पदच्युत कर दिया था और कुछ ऐसे थे जिन्हें भरपूर घूस न मिला था। कुछ ऐसे लोग भी उसके विरोधी हो गये जो घूस लेने की प्रथा उठा देना चाहते थे। बहुत दिनों तक वालपोल की जीत रही, कुछ तो इस कारण से कि उसके पास सरकारी रुपया था और कुछ उसकी चतुराई से क्योंकि वह कभी बिना आगा पीछा सोचे कोई काम न करता था। एक बार उसने एक ऐसा मसौदा पेश किया जिससे गवर्मेण्ट को कर द्वारा धन उस माल से मिला करे जो बिकने को तैयार है न कि राहदारी से जब माल देश में लाया जाय। इस रीति से वह चोरी से बिना महसूल दिये देश में माल लाने की रीति को बन्द करना चाहता

था। आजकल सब मान लेंगे कि इससे पुरानी रीति सुधर जाती। परन्तु लोगों के मन में यह समाया कि सरकारी नौकरों का उनकी दूकानों पर आना और उनके घरों में घुसकर देखना कि क्या क्या माल बिकने को रक्खा है बड़ा अत्याचार होगा और अपने माल पर पहिले से अधिक महसूल देना पड़ैगा। वालपोल जानता था कि यह ठीक नहीं है परन्तु जब उसने देखा कि लोग बिगड़े हुये हैं तो उससे खुल्लम खुल्ला विरोध से बचने के लिये अपना प्रस्ताव ही फेर लिया। उसने समझ लिया कि सुधार कैसा ही अच्छा क्यों न हो उसके लिये विद्रोह के जोखम में पड़ना न चाहिये।

६।—वालपोल और स्पेन के साथ लड़ाई—इसके कुछ दिन पीछे लोगों में फिर सनसनी फैली। इस बार स्पेन से झगड़ा हो गया था। उस दिनों कोई देश व्यापार की स्वतन्त्रता न चाहता था। उपनिवेशों को आज्ञा न थी कि किसी से कुछ मोल लें या किसी के हाथ कुछ बेचैं जब तक कि उनकी मातृभूमि से न आया हो। यूट्रेक्ट की सन्धि में स्पेन के साथ यह शर्त्त थी कि एक साल में एक अंगरेज़ी जहाज़ दक्षिण अमरीका में स्पेनी उपनिवेशों में जाकर अपना माल बेच सकैगा। परन्तु अंगरेज़ लोग इस बात पर दृढ़ न रहे। एक अंगरेज़ी जहाज़ समुद्र तट पर आकर दिन में अपना माल उतारता उसके साथ बहुत से छोटे छोटे जहाज़ रहते जो तट से दूर खड़े रहते थे जहां से दिखाई न दें। यह जहाज़ रात को आ जाते और बड़े जहाज़ में दिन को माल उतारने से जो जगह ख़ाली हो जाती उसमें अपना माल भर देते। इस चाल के अतिरिक्त बहुत सा माल बिना महसूल दिये चोरी से आने लगा। स्पेन के तट-रक्षकों की आंख बचाकर अंगरेज़ी जहाज़ वेस्ट इण्डीज़ में जाकर अपना माल उतार देते थे। तटरक्षकों

को क्रोध आया और जो लोग विना महसूल दिये चोरी से माल लाते थे उन्हें पकड़ पाते तो उनके साथ बहुत बुरा बर्त्ताव करते। एक दिन जेङ्किन्स (Jenkins) नाम का एक मनुष्य कामन सभा में आया और सन्दूक़ में से कपड़े में लिपटा हुआ अपना एक कान दिखा कर कहने लगा कि वेस्ट इण्डीज़ में स्पेनवालों ने काट लिया है और उससे कहा है कि अपने राजा के पास ले जाओ। बहुत लोगों को उसकी बात झूठी जंची और कहने लगे कि इसका कान पिलोरी यन्त्र में कटा था। झूठ हो या सच अंगरेज़ों को बड़ा क्रोध हुआ। जनता और पार्लमेण्ट दोनों ने वालपोल से कहा कि स्पेन से लड़ाई छेड़ दी जाय। वालपोल इसे अनुचित मानता था परन्तु दब गया और युद्ध की घोषणा कर दी। घोषणा सुन-कर लोग आनन्द से घंटे बजाने लगे। प्रधान मंत्री ने कहा "आज घंटे बजालें कल हाथ मलेंगे"।

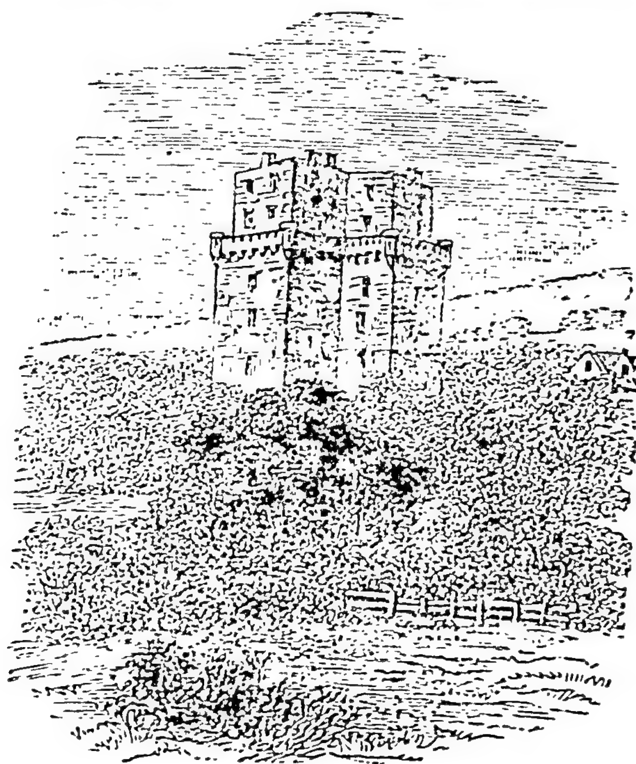
७।—वालपोल का पतन—अनुचित और अन्याय जानकर भी लड़ाई लड़नी वालपोल का सब से बुरा काम हुआ। उसके लिये भी बहुत बुरा हुआ। वह शुद्धचित्त रहता तो अच्छा होता। वह जो काम अनुचित समझता था उसे न करता और अपने मंत्री पद से इस्तीफ़ा दे देता तो कदाचित् थोड़े ही दिनों में फिर बुला लिया जाता। लड़ाई का परिणाम जैसा लोग चाहते थे वैसा न हुआ और लोगों ने वालपोल ही को दोष दिया। सब यही कहते थे कि वालपोल लड़ाई चाहता न था उसने असावधानी की। अन्त को उसके विरोधी प्रबल हो गये और उसे अपना पद त्याग देना पड़ा। उसी के साथ ई० १७४२ में उसके लंबे मंत्रित्व का भी अन्त हो गया।

८।—पेलहम का मंत्रित्व—वालपोल के निकल जाने पर नई मंत्रिमण्डली बनी परन्तु इसने भी वालपोल की भांति पार्लमेण्ट

के सदस्यों को घूस दिया। कुछ दिन बीतने पर मुख्य मंत्री दो भाई हुये जिनमें छोटा हेनरी पेलहम (Henry Pelham) प्रधान मन्त्री बनाया गया। वह अपना काम निकालने में बड़ा चतुर था और कामनसभा में जितने अच्छे बोलनेवाले थे उनको बिना विचारे कि उनके सिद्धान्त क्या हैं ओहदे देकर सभा को शान्त रखता था। इस कारण उसके मंत्रित्व को चौड़े पेंदे का शासन कहते थे। उसका बड़ा भाई ड्यूक न्यूकैसल (Newcastle) बड़ा मूर्ख था परन्तु पार्लामेण्ट में जिनलोगों के वोट थे उन्हें प्रसन्न रखता था। उसके यहां नित्य याचकों की भीड़ लगी रहती थी। कोई कहता था कि मेरा भाई बिशप कर दिया जाय। कोई कहता कि मेरा बेटा सेनानायक बना दिया जाय, कोई कहता कि मेरा एक ग़रीब मित्र है उसे दफ्तर में लेखक कर दीजिये या और कोई छोटी जगह दे दीजिये। न्यूकैसल किसी किसी को नौकरी देता और सब से मीठा बोलता। इस युक्ति से लोगों को कृतकार्य करके उसने गवर्मेण्ट के लिये बहुत से वोट ले लिये यद्यपि वह आप हास्यपद ही बना रहा। वह सदा व्यग्र रहता और उसके विषय में लोग कहा करते थे कि वह नित्य सवेरे आधा घंटा देर करके उठता और सारा दिन उस घंटे के पकड़ने को दौड़ता फिरता था।

९।—स्काटलैण्ड में छोटा कपट-राजकुमार (Young Pretender)—हेनरी पेलहम थोड़े ही दिन अपने पद पर रहा था कि ई० १७४५ में चार्लस एडवर्ड (Charles Edward) स्काटलैण्ड के हैलैण्डस में उतरा। वह बड़े कपट-राजकुमार का बेटा था जिसने अपने को इंग्लिस्तान का जेम्स तृतीय और स्काटलैण्ड का जेम्स अष्टम प्रसिद्ध किया था। बड़ा कपट-राजकुमार जीता था इसलिये इंग्लिस्तान में इसे छोटा कपट-राजकुमार कहते थे और यह आप अपने को प्रिंस अव वेल्स (युवराज) कहता था।

हैलैण्डस के रहनेवाले इसका साथ देने को तैयार हो गये और यह एडिन्बरा की ओर उनकी एक सेना बनाकर चला। बहुतेरे एडिन्बरा निवासी भी इसे देखकर बहुत प्रसन्न हुये। इंग्लिस्तान से संयोजन के पीछे स्काटलैण्ड ने बड़ी उन्नति की थी परन्तु एडिन्बरा के रहनेवाले न भूले थे कि उनके नगर में अब पार्लामेण्ट की बैठक नहीं होती और सदस्य अपना धन खर्च करके लन्दन जाते हैं; स्काटलैण्ड की राजधानी में नहीं आते। चार्ल्स एडवर्ड बड़ा चैतन्य सुन्दर जवान था और रूप में बड़े गुण होते हैं। परन्तु राजकुमार बहुत दिनों तक एडिन्बरा में न ठहर



समर भूमि के पास प्रेस्टन बुर्ज।

सका क्योंकि अंगरेज़ी सेना एडिन्बरा से थोड़ी दूर प्रेस्टन पैन्स (Preston Pans) में पहुंच गई थी। चार्ल्स अंगरेज़ी सेना पर आक्रमण करने को बढ़ा। हैलैण्डवाले वैसे ही लड़े जैसे

किलीक्रैंकी में लड़े थे। वह लोग अपने खांड़े ले ले कर अंगरेज़ी सिपाहियों पर टूट पड़े और उन्हें साफ़ कर दिया। थोड़ी ही देर में हैलैण्डरों की पूरी जीत हुई। उन्होंने मरे अंगरेज़ी सिपाहियों को लूटा और उनमें से कोई कोई यह भी न जानते थे कि अंगरेज़ों की जेबों में जो वस्तु मिलीं उनके क्या दाम थे। एक हैलैण्डर ने घड़ी निकाल ली और जब उसै टिक टिक करते सुना तो समझा कोई जीव है। फिर उसै बहुत कम दाम पर बेच डाला और समझा कि बड़ा माल मारा। वह कहता था "अजी हमने उस जीव से छुटकारा पाया। वह तो हमने जैसे उसे पकड़ा था वैसे ही मरने लगा"।

१०।—इंग्लिस्तान में छोटा कपट-राजकुमार—अब राजकुमार ने विचारा कि जैसे स्काटलैण्ड जीत लिया गया वैसे ही इंग्लिस्तान जीतने का भी प्रयत्न करना चाहिये। वह सिवाना पार करके दक्षिण की ओर दृढ़ता से कूच करता गया और उसै यह आशा थी कि उसके बाप के पुराने मित्र उससे मिल जायंगे। परन्तु बहुत थोड़े मित्र बचे थे और इंग्लिस्तान परिवर्त्तन चाहता ही न था। जार्ज द्वितीय के लिये या न्यूकैसल के लिये लोग बड़े उत्सुक न थे परन्तु जिन्हें राजनीति की परवाह न थी वह लोग भी जानते थे कि हनोवर कुल के शासन में देश की जैसी दशा अच्छी है वैसी जेम्स द्वितीय के समय में न थी। इससे तुरन्त प्रकट हो गया कि अंगरेज़ चार्ल्स एडवर्ड के लिये बलवा न करैंगे और उसै लौट जाना होगा। इंग्लिस्तान का जीतना उसके और उसके हैलैण्डरों के बस की बात न थी। वह डरबी तक तो पहुंच गया परन्तु वहीं उसको विदित हो गया कि आगे बढ़े और जार्ज की सेना उसे घेर लेगी। दुखी होकर वह फिर उलटे पांव उत्तर को चला और बड़ी बुरी दशा में स्काटलैण्ड पहुंचा।

११।—फ़ालकर्क (Falkirk) और कुलडुन (Culloden)—चार्ल्स एडवर्ड की एक और जीत हुई। उसने फ़ालकर्क में एक लड़ाई लड़ी। अंगरेज़ी सेनापति अपने वैरी को तुच्छ समझता था क्योंकि हैलैण्डवाले सिपाहियों की क़वायद न समझते थे, इसी से उस पर बड़ी मार पड़ी। तब राजा का बेटा ड्यूक कम्बरलैगड (Cumberland) स्काटलैगड भेजा गया। चार्ल्स की इच्छा थी कि युद्ध करने को ठहरा रहे परन्तु उसके मुख्य सेनानायकों ने उसे सलाह दी कि सेना कम है उत्तर की ओर हट चलो। कम्बरलैगड उनके पीछे पीछे चला। जब अंगरेज़ी सेना नेयर्न (Nairn) पहुंच गई तो चार्ल्स बारह मील आगे कुलडुन में था। हैलैगडरों ने यह निश्चय किया कि जब कम्बरलैगड की सेना सोती रहे तो उस पर छापा मार दो। वह लोग सन्ध्या समय चले और रात भर ढूंढ़ते फिरे। बीच में एक ऊबड़खाबड़ दलदल पड़ गया और सवेरा होने से पहिले वैरी के कटक पर पहुंचना असंभव जानकर फिर कुलडुन को लौट गये। दूसरे दिन कम्बरलैगड भी पहुंच गया। चार्ल्स एडवर्ड ने हैलैण्डरों से कहा कि चढ़ दौड़ो। हैलैण्डर वीरों ने अंगरेज़ों की पहिली पंक्ति पछाड़ दी। दूसरी पंक्ति जमी रही और हैलैण्डरों पर एक बाढ़ ऐसी छोड़ी कि पहाड़ी वीरों के छक्के छूट गये और तितर बितर भागे। यह सिद्ध हो गया कि शिक्षित सेना अशिक्षित वीरता से प्रबल होती है। कम्बरलैण्ड की जीत हुई। परन्तु उसने अपनी जीत का दुरुपयोग करके अंगरेज़ी नाम को कलंकित कर दिया। उसने हैलैगडरों के साथ ऐसा बुरा बर्त्ताव किया जैसा किसान कीड़े मकोड़ों के साथ भी नहीं करते। लड़ाई समाप्त होने पर सिपाहियों ने घायलों को मारा। बहुत से घायलों ने भागकर एक झोपड़ी में सरन ली थी। अंगरेज़ी सिपाहियों ने बाहर से किवाड़ बन्द कर दिये और झोपड़े

में आग लगा कर उन बेचारों को जीते जी भस्म कर दिया। जो हैलैण्डर पकड़ कर बन्दी कर लिये गये थे उनका सिर काटा गया। तीन स्काच सरदारों का टावरहिल पर बध किया गया। इंग्लिस्तान में यही अंतिम बार था जब गड़ासी और ठेहे का प्रयोग किया गया। जिस सेनानायक ने यह लड़ाई जीती वह जब तक जिया कसाई कम्बरलैण्ड कहलाता रहा।

१२।—चार्ल्स एडवर्ड का निकल भागना—राजकुमार आप निकल भागा। पांच महीने तक पश्चिमी हैलैण्ड की पहाड़ियों और टापुओं में मारा मारा फिरा। फ्लोरा मेकडोनल (Flora Macdonald) नाम की एक स्त्री ने उसको अपने पास बड़ी सावधानी से रक्खा; जब जोखम देख पड़ा तो उसे छिपाया और उसके भागने में सहायता की। राजकुमार कभी नौकर के भेस में रहता कभी स्त्री बन जाता था। उसे बहुत लोग मानते थे। किसी ने उसको न पकड़ाया। अन्त को वह एक फ्रान्सीसी जहाज़ में बैठकर निकल गया। वह कई बरस तक यूरप महाद्वीप में उदास जीता रहा न उसे कोई आशा थी न कोई अवसर मिला जिसमें अपने गुण दिखाता। उसका चरित बिगड़ गया परन्तु स्काटलैण्डवाले उसे आज तक नहीं भूले। एक स्त्री ने कई बरस पीछे उसपर कुछ गीत बनाये थे जो अब तक गाये जाते हैं और जिनसे उस समय के स्काट लोगों के हृदयों के भाव प्रकट होते हैं। आजकल स्काटलैण्ड निवासी सब अपने राजा और अपने देश के भक्त हैं परन्तु अब भी यह गीत गाते हैं।

चार्ली प्यारा, चार्ली प्यारा।
चार्ली प्यारा, देस-दुलारा।
चार्ली बांका, वीर हमारा।
चार्ली प्यारा, चार्ली प्यारा।

१३—हेनरी पेलहम की मृत्यु—कुलड्डन की लड़ाई के पीछे पेलहम आठ बरस तक जिया। वह अपना काम बड़ी धीरता के साथ करता रहा और उसने किसी को दुख न दिया। वह ई० १७५४ में मरा। उसके मरने का समाचार सुनकर बुड्ढा राजा बोला, "हमको अब शान्ति न मिलैगी" और उसने सच कहा।

## ॥ अध्याय ३६ ॥

### * जार्ज द्वितीय के शासन के पिछले छ बरस *

### (ई० १७५४ से १७६० तक)

१—अंगरेज़ों का सारी पृथिवी में फैलना—जितनी लड़ाइयां इंग्लिस्तान ने अब तक लड़ी थीं सब यूरप महाद्वीप में अपना सिक्का जमाने के लिये थीं। एडवर्ड तृतीय और हेनरी पंचम के समय में फ्रान्स जीतने के लिये, एलिज़बेथ के राज में स्पेन की बहुत बड़ी शक्ति रोकने के लिये, और विलियम तृतीय और ऐन के राज में फ्रान्स की बढ़ी शक्ति दबाने के लिये युद्ध किये गये। इधर थोड़े दिनों से अंगरेज़ पृथिवी भर में फैल रहे थे; जार्ज द्वितीय के राज के अन्त के पहिले व्यापार करने और उपनिवेश बसाने बाहर निकले थे। इन दिनों इंगलैण्ड और फ्रान्स की लड़ाई यूरप की किसी घटना के कारण न हुई थी; अमरीका और हिन्दुस्तान में ऐसी बातें हो गई जिनसे लड़ाई छिड़गई।

२।—अमरीका में अंगरेज़ और फ्रान्सीसी—जेम्स प्रथम और चार्ल्स प्रथम के राज में कुछ अंगरेज़ अमरीका महाद्वीप के उस भाग में बसने को गये थे जो अब संयुक्त राज्य के नाम से प्रसिद्ध है। कुछ लोग उसके दक्षिण को चले गये जहां उन्हें

खेती करने को धरती मिल जाय जैसे आज कल लोग आस्ट्रेलिया या कनाडा को जाते हैं। उत्तर में कुछ प्युरिटन गये थे क्योंकि वह लोग बिना रोक टोक के रहना और अपनी विधि से ईश्वर की उपासना करना चाहते थे। इनकी सन्तान बढ़ी और जार्ज द्वितीय के शासन काल के मध्य में समृद्ध लोगों से भरी तेरह बस्तियां थीं जो अपना प्रबन्ध आप करती थीं। केवल उनके गवर्नर को इंग्लिस्तान का राजा मुक़र्रर करता था। यह सारी बस्तियां अटलाण्टिक समुद्र तट पर थीं और कोई बिरली ही अलेघनी ( Alleghany ) पहाड़ के उस पार बसी थी। जो लोग पहाड़ की दूसरी ओर गये उन्हें एक बड़ा मैदान मिला जिसके उत्तर भाग में ओहियो ( Ohio ) और उसकी सहायक नदियां बहती थीं। सारे देश में बन था जिसके बीच बीच में रेड इंडियन * रहते थे और संबूर वाले जीवों का शिकार करके उनका संबूर यूरप वालों के हाथ बेंचते थे। अंगरेज़ इण्डियन लोगों के पेड़ काट डालते और बस चलता तो उनकी धरती जोत डालते थे। उस समय लोअर कनाडा फ़ान्सवालों के अधिकार में था और फ़ान्सवाले ओहियों के तट पर धरती जोतना न चाहते थे। इस कारण इंडियन लोगों का उनसे मेल था और उन्हीं के हाथ अपने संबूर बेचा करते थे। पेलहम के मरने से पहिले ही अंगरेज़ और फ़ान्सीसियों में कुछ लड़ाई होती रही और अंगरेज़ों की रक्षा के लिये जनरल ब्रैडक ( Braddock ) भेजा गया था। ब्रैडक वीर था परन्तु हार्ली ( Harley ) की भांति मन्दमति था। उन दिनों सेनानायक योग्यता देख कर अफ़सर मुक़र्रर न किये जाते थे। उनमें यही गुण था कि न्यूकैसल के दोस्त थे या और किसी के जिसका वोट न्यूकैसल लेना चाहता था। ब्रैडक आगे बढ़ते बढ़ते ऐसी जगह पहुंचा जहां बन में उसे फ़ान्सीसियों और

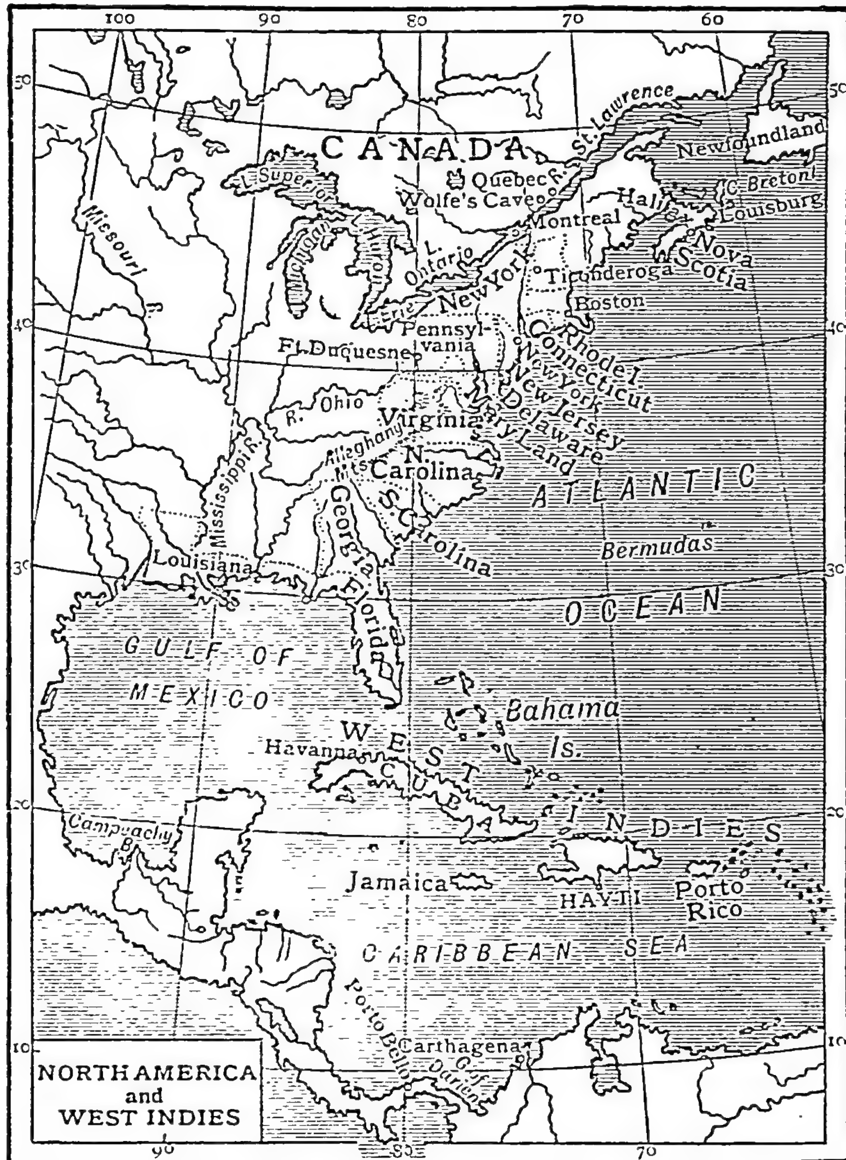
* अमरीका के मूलनिवासी; इनका रंग लाल था।

इण्डियन लोगों ने घेर लिया और पेड़ों की आड़ से गोली बरसा कर उसको और उसके बहुत से सिपाही मार डाले।

३।—<u>सात बरस की लड़ाई का आरम्भ</u>—इसके पीछे फिर फ़्रान्स से मेल न रहा। दोनों जातियां वास्तव में उस बड़े देश के लिये लड़ रहीं थी जो अलेघनी पहाड़ से पैसफ़िक महासागर तक फैला हुआ है। इस में जिसका मनोरथ सिद्ध हो जाता वह उस सारे देश का स्वामी बन जाता जो आजकल संयुक्त राज्यों के अधिकार में है। युद्ध ही से इस बात का निश्चय होता कि मिसीसिपी नदी के किनारों और केलिफ़ोर्निया के समुद्रतट पर फ़्रान्सीसी भाषा बोली जायगी या अंगरेज़ी। परन्तु इंग्लिस्तान और फ़्रान्स को इस बात का ज्ञान न था। दोनों इतना ही जानते थे कि ओहियो नदी के उद्गम के पास जंगलों के लिये लड़ रहे हैं। यह लड़ाई ई० १७५६ से ई० १७६३ तक रही और सात बरस की लड़ाई कहलाती है।

४।—<u>न्यूकैसल के मन्त्रित्व का अन्त</u>—इन दिनों न्यूकैसल प्रधानमंत्री था। वह लड़ाई का प्रबन्ध करना जानता न था। उस समय मध्यसागर का मिनार्का (Minorca) टापू इंग्लिस्तान के अधिकार में था। इसपर फ़्रान्सीसी सेना और फ़्रान्सीसी बेड़े ने आक्रमण किया। टापू को बचाने के लिये जलसेनापति बिंग (Byng) भेजा गया परन्तु उसने देखा कि फ़्रान्सीसी प्रबल हैं तो बिना युद्ध किये ही लौट आया और मिनार्का को बैरी ने ले लिया। इंग्लिस्तान में लोगों को बड़ा क्रोध हुआ और कहने लगे कि बिंग कायर है, उसको दण्ड देना चाहिये। न्यूकैसल बहुत डरा। वह समझा कि बिंग के पीछे कहीं मुझे भी दण्ड देने की न ठहरै। कुछ लोग उस से कहने आये कि सेनापति पर मुक़द्दमा चलाया जाय। वह बोला "अजी अभी मुक़द्दमा होता है और

उसे फांसी दी जाती है"। बिंग की रूबकारी हुई और उसे गोली मार दी गई। एक ठठोल फ़ान्सीसी ने कहा कि, "यह इंग्लिस्तान




उत्तर अमरीका और वेस्ट इन्डीज़ (पश्चमी हिन्द)।

की रीति है कि एक जलसेनापति को गोली मार दो जिसमें औरों का उत्साह बढ़े। न्यूकैसल ने अपना पद त्याग दिया। वह इसे बहुत चाहता था परन्तु इतना डर गया था कि उसे छोड़ना ही पड़ा।

५ ।—पिट (Pitt) का मंत्रित्व—उन्हीं दिनों कामन सभा में एक सदस्य था जिसे अपने ऊपर बड़ा भरोसा था। इसका नाम विलियम पिट था और उस मण्डली में जहां सब लोग रिश्वत लेते या देते थे वही अकेला शुद्ध था। उसे अपने देशी भाइयों पर बड़ा भरोसा था। वह जानता था कि अंगरेज़ बड़े वीर हैं और उन्हें अच्छे नायक मिल जायँ तो फ़ान्सीसीयों को परास्त कर देंगे। उसने एक बार यहां तक कह डाला कि, "मैं जानता हूं कि मैं इस देश को बचा सकता हूं। यह मेरा ही काम है, किसी दूसरे का नहीं"। वह तुरंत ही अत्यन्त लोकप्रिय मंत्री हो गया और उसे लोग बड़ा कामनर कहते थे परन्तु पार्लीमेण्ट के घूस लेनेवाले सदस्य ऐसा मंत्री चाहते थे जो उनके वोटों के दाम दे, उसको न चाहते थे और उसके विरुद्ध वोट देने लगे और उसे अपना पद छोड़ना पड़ा और कई सप्ताह तक कोई मंत्री न रहा। न्यूकैसल पिट को कब मंत्री होने देता और युद्ध का प्रबन्ध अपने हाथ में लेने से डरता था। अन्त को यह ठहरा कि न्यूकैसल और पिट दोनों मिलकर मंत्री का काम करें। पिट युद्ध का प्रबन्ध करे और न्यूकैसल घूस का।

६ ।—कनाडा में उल्फ़ (Wolfe) का यानासन—लड़ाई के प्रबन्ध करने में पिट को सफलता हुई क्योंकि उसने बड़ी सेनाओं की कमान ऐसे लोगों को दी जो छोटी सेना की कमान में अच्छा काम कर चुके थे। उसने सबको यह भी समझा दिया कि हमारे अनुग्रहपात्र बनना चाहो तो अपना काम पूरा करो। उसने केवल धनी होने या किसी बड़े आदमी का नातेदार होने के कारण किसीपर अनुग्रह न किया। उसने प्रशिया के राजा फ्रेडरिक महान (Frederick the Great) के पास धन भेजा क्योंकि वह फ़ान्स से और और देशों से लड़ रहा था। उसने फ़ान्स के अनेक स्थानों

पर आक्रमण करने को सेना भेज दी और अमरीका में फ्रान्सीसी बस्तियों पर सेना समेत बेड़ों से चढ़ाई कर दी। अन्त को उसने कनाडा की फ्रान्सीसी राजधानी क्विबेक (Quebec) पर अपना अधिकार जमाने को जनरल उल्फ़ को भेज दिया। क्विबेक नगर सेण्टचार्ल्स और सेण्ट लारेन्स नाम की दो नदियों के बीच में बसा हुआ है और नगर का अधिकांश पहाड़ी के एक टेकरे पर है जो दोनों ओर नदियों से सीधा सपाट उठा हुआ है। नगर के बाहर एक जगह है जिसे एब्रहम की ऊंची पहाड़ी (Heights of Abraham) कहते हैं। इसके भी तट ऐसे ही ऊंचे हैं जैसे नगर के टेकरे के हैं। फ्रान्सीसी सेनापति मोकाम (Montcalm) बड़ा वीर धीर नायक था। उसने लड़ाई तो न लड़ी परन्तु उसने अपने सिपाही ऐसे स्थानों में बिठा दिये जहां उल्फ़ न उनपर आक्रमण कर सकता न उनसे बचकर क्विबेक आ सकता। उल्फ़ निरास होकर लौट गया और समझ गया कि कुछ नहीं हो सकता।

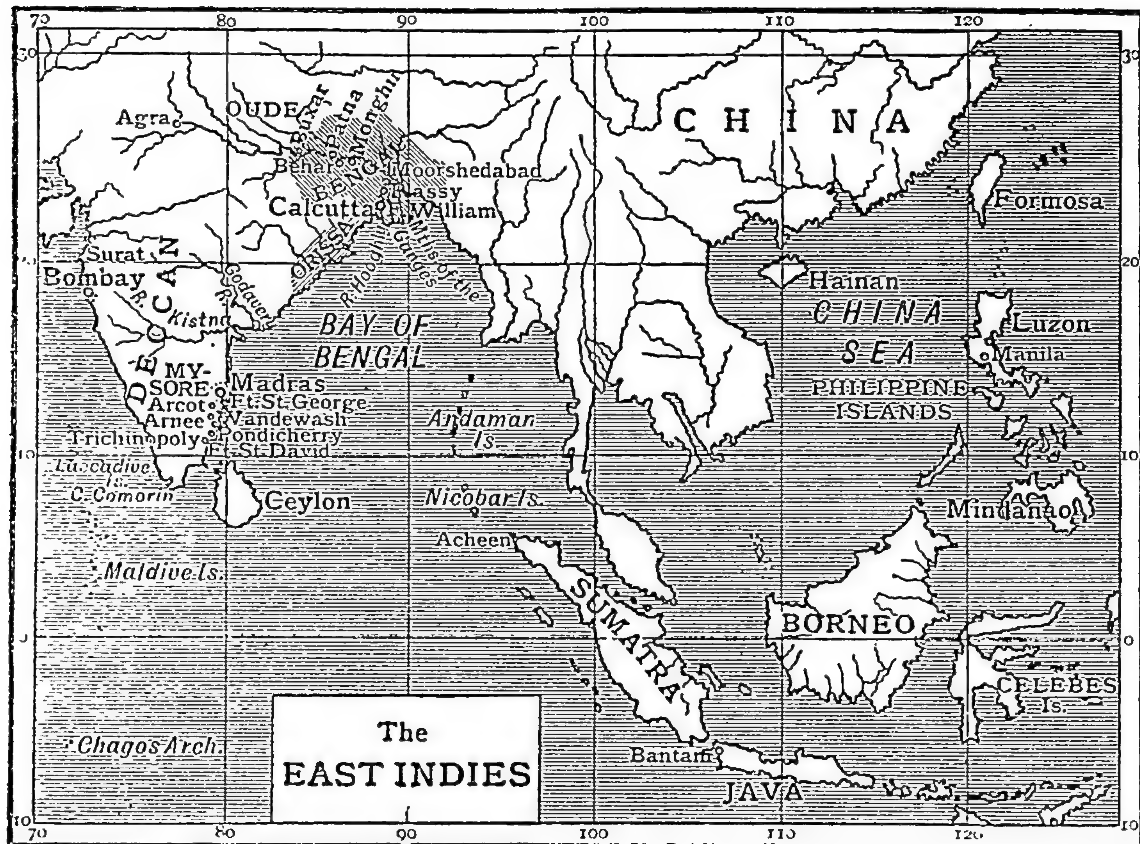
७।—क्विबेक पर अंगरेज़ों का अधिकार और उल्फ़ की मौत—इस विषय के पत्र लिखने के पांच दिन पीछे उसने एक उद्योग करना निश्चय कर लिया। रात के अंधेरे में उसने अपने सिपाही नावों पर चढ़ा दिये और चुपके से नदी में नावें बहा दीं। उसने अपने अफ़सरों को एक कविता की कुछ सुन्दर पंक्तियां सुना दीं जिसे कवि ग्रे (Gray) ने कई बरस पहिले रचा था। उनमें का एक पद यह है (अनुवाद)—

"खुले मृत्यु के द्वार घुसैं जो कीरति के अभिलाषी हैं।

उसने कहा—"मैं तो क्विबेक लेने से बढ़कर इस काव्य का रचने वाला होना समझता हूं।" नावें बहती बहती चटान के कोने तक पहुंची जा रही थीं। सिपाही किनारों पर कूद कूद कर खड़े हो

गये। उनके ऊपर एक संकड़ा पेचीला रास्ता ऊपर चढ़ने को था, कहीं कहीं इतना संकड़ा था कि दो मनुष्य एक साथ खड़े न हो सकते थे। सिपाही चढ़ गये। जब ऊपर पहुंचे तो फ़ान्सीसीयों को ऐसा आश्चर्य हुआ कि घबराकर भागे। इतने में जो अवकाश मिला तो अंगरेज़ी सेना मैदान में सजकर खड़ी हो गई। मोकाम भी अपनी फ़ान्सीसी सेना लेकर नगर से निकल आया। लड़ाई में उल्फ़ और मोकाम दोनों मारे गये। उल्फ़ के प्राण निकल रहे थे जब उसने एक अफ़सर को कहते सुना "देखो कैसे भाग रहे हैं" उल्फ़ ने सिर उठाकर पूछा "कौन भाग रहे हैं"। जब उसने सुना कि फ़ान्सीसी भाग रहे हैं तो बहुत प्रसन्न हुआ और कहने लगा "ईश्वर धन्य है अब मैं प्रसन्नमन हो कर मर रहा हूं"। यही उसके अंतिम वचन थे। क्विबेक ने आत्मसमर्पण कर दिया और थोड़े ही दिनों में सारा कनाडा अंगरेज़ों के हस्तगत हो गया। सौभाग्यवश आजकल अंगरेज़ और फ़ान्सीसी एक दूसरे के मित्र हो गये हैं। ऐब्रहम की ऊंचाई पर एक स्मारक बनाया गया है जिस पर दोनों सेनापतियों के नाम हैं जो अपने अपने देश के लिये लड़ते लड़ते मरे थे।

८।—<u>क्विबेरां (Quiberon) की खाड़ी में अंगरेज़ों की जीत</u>—पिट के समय में अंगरेज़ लोग जलयुद्ध और स्थलयुद्ध दोनों में प्रवीण थे। फ़ान्स के समुद्रतट पर क्विबेरां की खाड़ी में एक फ़ान्सीसी बेड़े पर आक्रमण करने को जलसेनापति हाक (Hawke) पहुंच गया। फ़ान्सीसी जहाज़ बचाव के लिये चट्टानों और खालों के बीच में खड़े थे। वायु बड़े वेग से चल रही थी। हाक के सारंग ने कहा कि ऐसे जोखम की जगह जाना अच्छा नहीं है। हाक ने उत्तर दिया, अजी तुम हमें फ़ान्सीसी सेनापति के पास पहुंचादो। तुम अपना कर्त्तव्य कर चुके, अब




ईस्ट इन्डीज़ ( पूर्वी हिन्द ) ।

हमारी आज्ञा मानो।" हाक चट्टानों के बीच में घुस पड़ा। फ्रान्स के चार जहाज़ डुबा दिये गये, दो पकड़ लिये गये और जो बचे उन्होंने नदी में भाग कर सरन ली।

९ ।—<u>अंगरेज़ों और फ़्रान्सीसियों की लड़ाई</u>—अमरीका में तो अंगरेज़ जीते ही, हिन्दुस्तान में भी उनकी जीत हुई। एलिज़बेथ के शासनकाल के अन्त में हिन्दुस्तान से व्यापार करने के लिये ईस्ट इंडिया कम्पनी ( East India Company ) बनी थी। चार्ल्स प्रथम के राज्य में इस कम्पनी ने मद्रास में कुछ धरती मोल ली और उसपर एक गढ़ी बनाई। चार्ल्स द्वितीय के समय

में इस कम्पनी को बम्बई का गांव राजा से मिला। राजा ने ब्रगैञ्ञा की कैथरीन के साथ विवाह किया तो पुर्तगाल के राजा ने इसे यौतुक में यह गावं दिया था। विलियम तृतीय के शासन-काल में हुगली नदी के तट पर एक क़िला बना जिसके पास कलकत्ता नगर बस गया। अंगरेज़ों के पास यही तीन नगर थे। अंगरेज़ व्यापार करने आये थे, देश जीतने नहीं। हिन्दुस्तान भर में देशी राजा राज करते थे। जिन दिनों छोटा कपट-राज-कुमार स्काटलैण्ड में लड़ रहा था उन्हीं दिनों मद्रास के पास हिन्दुस्तान में अंगरेज़ों और फ़ान्सीसियों में झगड़ा हो गया। पहिले फ़ान्सीसी चढ़े बढ़े रहे। फ़ान्सीसी गवर्नर डूपले (Dup-leix) बड़ा चतुर था और उसने कुछ देसी राजाओं को अपना मित्र बना लिया था और जो उसके विरोधी थे उन्हें हरा चुका था। सब से पहिले उसी ने हिन्दुस्तानी सिपाहियों को यूरपी क़वायद सिखाई। उसे इतना गर्व हो गया था कि उसने डूपले फ़तेहाबाद नाम का एक नगर बसाया।

१०।—आरकाट में क्लाइव (Clive)—मद्रास की कोठी में एक अंगरेज़ लेखक राबर्ट क्लाइव था। वह ऐसा न था कि उसे कोई सहज में डरा देता। एक दिन वह एक अफ़सरके साथ ताश खेल रहा था। उसने अफ़सर से कहा कि तुमने धोखा दिया। इस पर दोनों में लड़ाई हुई; क्लाइव का वार ख़ाली गया। उसका प्रतिद्वंद्वी उसके पास आ गया और उसके मत्थे पर अपना तमंचा रखकर बोला "कहो, हमने झूठा दोष लगाया"। क्लाइव के मत्थे पर बल न पड़ा और बोला "मारो, हमने कहा कि तुमने धोखा दिया सोई हम अब भी कहते हैं। हम तुम्हारा दांव न देंगे।" अफ़सर ने अपना तमंचा फेंक दिया और कहने लगा कि क्लाइव पागल हो गया है। क्लाइव पागल न था। थोड़े ही

दिनों में सिपाहियों की मांग हुई और क्लाइव ने कहा कि हम भी सिपाही का काम करेंगे। आरकाट नगर कोट से घिरा हुआ वहां से थोड़ी दूर फ़ान्सीसियों से मिले हुये एक देशी राजा के अधिकार में था। क्लाइव उसे सर करने भेजा गया। जब क्लाइव नगर के पास पहुंचा तो आंधी पानी आ गया। जब नगररक्षकोंने देखा कि वह रुकता ही नहीं तो सब को बड़ा आश्चर्य हुआ और भाग गये और आरकाट नगर क्लाइव के हाथ आ गया। परन्तु बहुत दिन न बीते थे कि उसके अवरोध करने को एक बड़ी सेना भेज दी गई। वह जी तोड़ कर लड़ा परन्तु उसकी सेना भूखों मरने लगी। खाने को केवल चावल था और वह भी बहुत न था। डूपले की भांति क्लाइव के साथ भी हिन्दुस्तानी सिपाही थे। इनमें कुछ उसके भक्त उसके पास आये और कहने लगे कि "सारा भात अंगरेज़ों को दे दिया जाय, हम हिन्दुस्तानियों को इतने भोजन का काम नहीं है जितना अंगरेज़ों को है। हमारे लिये चावल का मांड़ बहुत है"। क्लाइव की वीरता ने अन्त में उसे बचा लिया। एक हिन्दुस्तानी राजा को अंगरेज़ों की सहायता करने के लिये कुछ धन दिया गया था। वह बहुत दिनों तक न आया। जब उसने सुना कि आरकाट की इस दृढ़ता से रक्षा की जा रही है तो उसने अपने सिपाहियों से कहा "अब चलो, हमने अब जाना कि अंगरेज़ भी लड़ सकते हैं, अब हम उनकी मदद करेंगे"। इस सहायता से क्लाइव की जीत हो गई। घेरा करनेवाले आरकाट से हट गये। अंगरेज़ों ने फ़ान्सीसियों को दबा लिया। इसके कुछ पीछे क्लाइव इंग्लिस्तान को लौट गया।

११।—<u>कलकत्ते की काली कोठरी</u>—कुछ दिन तक अंगरेज़ों और फ़ान्सीसियों में सन्धि रही। जब सात बरस की लड़ाई छिड़ गई तो क्लाइव फिर हिन्दुस्तान को भेज दिया गया। यहां

पहुंचने पर उसे जो पहिला समाचार मिला वह बड़े दुख का था। बंगाले पर एक देसी शासक राज करता था। उसका नाम सिराजुद्दौला था। वह जानता था कि कलकत्ते के अंगरेज़ी सौदागर बड़े मालदार हैं और उसने कलकत्ता नगर पर अपना अधिकार कर लिया और जितने अंगरेज़ वहां थे सबको पकड़ लिया और उनको एक छोटी कोठरी में बन्द कर दिया जो केवल १५ फ़ुट चौड़ी और १८ फ़ुट लंबी थी। इस कोठरी में जो पीछे से कलकत्ते की काली कोठरी के नाम से प्रसिद्ध हुई एक मेम और १४५ अंगरेज़ भर दिये गये। गर्मी का दिन था और हिन्दुस्तान में गर्मी साधारण-रीति से ऐसी पड़ती है जैसी इंग्लिस्तान में कड़ी गर्मी नहीं पड़ती। कोठरी में इतनी गर्मी थी और लोग इतने कसे थे कि उनका जीना कठिन हो गया। उन्होंने पानी मांगा परन्तु मशकें खिड़कियों की छड़ों में होकर भीतर न आ सकीं। क़ैदी एक एक बूंद पानी को तरस रहे थे और एक दूसरे को कुचले डालते थे। उनके रखवारे सिपाही उनकी दशा देख कर हंसते थे। सारा दिन और सारी रात लोग तड़प तड़प कर मर गये। सवेरा होने पर जब किवाड़ खोले गये तो १४६ में से केवल २३ अधमरे बाहर निकले।

१२।—पलासी की लड़ाई—क्लाइव भी अपने देसी भाइयों का बदला लेने झटपट पहुंच गया। उसके साथ केवल तीन हज़ार सिपाही थे और सिराजुद्दौला के पास पचास हज़ार थे। इतनी बड़ी सेना सामने होने पर भी क्लाइव ने उस पर पलासी के मैदान में आक्रमण कर दिया। युद्ध छिड़ते ही बैरी की कुछ सेना अंगरेज़ों से मिल गई। जो बची वह भी नाममात्र को युद्ध कर के भाग खड़ी हुई। उस दिन से अंगरेज़ों ने कितनी ही बड़ी हिन्दुस्तानी सेना क्यों न हो उस से भिड़ जाना सीख लिया।

धीरे धीरे उनका कोई रोकने टोकने वाला न रह गया और कई बरस में हिन्दुस्तान अंगरेज़ी शासन में आ गया और इसको शान्ति मिल गई। कहीं कहीं अब भी देसी राजा हैं परन्तु अब वह लोग अपने पड़ोसियों को न मार सकते हैं न उनको लूट सकते हैं। हिन्दुस्तान के अंगरेज़ शासकों के सामने बड़ा कठिन काम यह है कि वहां के रहनेवालों पर बुद्धिमानी से और न्याय से शासन करें जिससे उनका भला हो और हो सके तो उन्हें अपना शासन आप करना सिखादें।

## ॥ अध्याय ३७ ॥

### जार्ज तृतीय के सिंहासन पर बैठने से अमरीका की युद्ध के अन्त तक।

### (ई० १७६० से १७८३ तक)

१।—<u>फ़ान्स के साथ सन्धि</u>—जार्ज द्वितीय की मृत्यु अकस्मात् हो गई और उसका पोता जार्ज तृतीय सिंहासन पर बैठा। इसको फ़ान्स से सन्धि करने की बड़ी चिन्ता रही। पिट को यह विदित हो गया कि स्पेनवाले फ़ान्सीसियों से मेल करना चाहते हैं और उसने यह प्रस्ताव किया कि स्पेन के साथ युद्ध छेड़ दिया जाय। राजा और उसके मन्त्रियों ने न माना और पिट ने इस्तीफ़ा दे दिया। स्पेन फ़ान्स से न मिला और लड़ाई हो गई। इसमें स्पेनवाले ऐसे पिटे जैसे पहिले फ़ान्सवाले पीटे गये थे। इसके थोड़े दिन बाद ई० १७६३ में लड़ाई आरम्भ होने से सात बरस पीछे सन्धि हो गई और कनाडा इंग्लिस्तान के पास रह गया।

२।—स्टाम्प का क़ानून—सन्धि के पहिले ही से जार्ज तृतीय ह्विगों से अपना पीछा छुड़ाना चाहता था। उसने पहिले ऐसे मंत्री निर्वाचित किये जिन्हें वह आप चाहता था न कि जिनको ह्विग सरदारों ने बताया। उसने यह देख लिया कि ओहदे देने से वोट मिल जाते हैं, विशेष करके जब उनकी तनख़ाहें अच्छी होती हैं और जैसा कि बहुधा होता है, कुछ काम नहीं करना पड़ता। परन्तु इस रीति से अपना काम चलाने में बड़ी बेर लगी। उसे एक ह्विग जार्ज ग्रेनविल (George Grenville) को अपना प्रधान मंत्री बनाना पड़ा। वह ग्रेनविल को न चाहता था। ग्रेनविल बड़े शुद्ध अन्तःकरण का था परन्तु बुद्धिमान् न था। पिछली लड़ाई में बहुत सा धन ख़र्च हो गया था इससे ग्रेनविल ने सोचा कि कुछ अमरीकावालों से मिलना चाहिये। इसलिये उसने पार्लमिण्ट में स्टाम्प का क़ानून पास कराया जिसके अनुसार अमरीकावालों को हुकुम हो गया कि अपने अदालती क़ाग़ज़ों पर दाम देकर स्टाम्प लगाया करें जैसा कि इंग्लिस्तान में आजकल होता है। अमरीकावाले बहुत बिगड़े और कहने लगे कि अंगरेज़ी पार्लमिण्ट को हमसे कर लेने का कोई हक़ नहीं है। परन्तु उनका असन्तोष इंग्लिस्तानवाले जानने न पाये थे कि राजा ने ग्रेनविल को निकाल दिया। उसके पीछे लार्ड राकिंघम (Rockingham) प्रधानमंत्री हुआ। राकिंघम ह्विगों के एक दल का मुखिया था। परन्तु उसके दल के ह्विग कभी लोकप्रिय न हुये। वहलोग घूस न देते थे, इससे घूस के भूखे उनके विरोधी हो गये। कुछ और लोग उनसे इसलिये बुरा मानते थे कि ह्विग किसी से मिलते न थे और बड़े बड़े परिवर्त्तनों से दूर रहते थे। राकिंघम आप भलामानुस था और एडमंड बर्क (Edmund Burke) की बातें बड़े आदर से सुनता था। उस समय इंग्लिस्तान में बर्क के समान बुद्धिमान् न था। अमरीका

के असन्तोष का समाचार ज्योंही इंग्लिस्तान पहुंचा त्योंही राकिंघम की मंत्रिमण्डली ने यह प्रस्ताव किया कि स्टाम्प का क़ानून रद कर दिया जाय। जैसे ही अंगरेज़ी पार्लामेण्ट ने अमरीकावालों पर कर लगाना छोड़ दिया, अमरीकावाले फिर शान्त और अनुरक्त हो गये।

३।—चाह पर महसूल—ग्रेनविल की भांति राकिंघम को भी राजा न चाहता था और उसे भी हटा कर पिट को अर्ल चैथम (Earl of Chatham) की पदवी देकर प्रधानमंत्री बनाया। चैथम का मंत्रित्व बहुत ही अच्छा होता जो वह स्वस्थ रहता परन्तु वह बीमार पड़ गया और अपना कामकाज न देख सका। और मंत्री अपनी मनमानी करते रहे और मूढ़ता से अमरीकावालों पर फिर कर लगा दिया। इस बार उन्होंने पार्लामेण्ट को सुझाया कि अमरीका को जो चाह और और वस्तु जाती हैं उनपर महसूल लगा करै। पार्लामेण्ट को बहुत समझाने बुझाने का काम न था। बहुत से अंगरेज़ समझते थे कि अमरीकावाले मानैं या न मानैं उन्हें और महसूल देना चाहिये और देने के लिये उन्हें बाध्य करना चाहिये। अमरीकावाले फिर बिगड़ गये परन्तु इन दिनों राकिंघम का मंत्रित्व न था जो बुद्धिमानी से कर उठा देता।

४।—विल्कीज़ (Wilkes) और मिडलसेक्स का चुनाव—बात यह थी कि कामन सभा लोगों से वही काम कराना चाहती थी जो उसै अच्छा लगता था जैसे चार्ल्स प्रथम की इच्छा थी कि जैसा वह चाहता वैसा लोग किया करैं। मिडिलसेक्स के वोट देनेवालों ने विल्कीज़ नाम के एक मनुष्य को पार्लामेण्ट का मेम्बर चुना। उसका चालचलन अच्छा न था और कई बरस पहिले उसने पार्लामेण्ट के खोले जाने के समय राजा के

व्याख्यान में दोष निकाल कर राजा को भी रुष्ट कर दिया था। जैसे ही उसका चुनाव हुआ कामन सभा ने उसे निकाल दिया। मिडलसेक्सवालों ने उसे दूसरी बार चुना और सभा ने उसे फिर निकाल दिया। मिडलसेक्सवालों ने जब उसे तीसरी बार फिर चुना तो कामन सभा ने एक दूसरे उम्मेदवार को जिसे बहुत थोड़े वोट मिले थे क़ायदे से चुना हुआ सदस्य मान लिया और विल्कीज़ के बदले उसे पार्लमेण्ट में बैठाया। इतने में चैथम भी स्वस्थ हो गया। उसने लार्ड सभा में कह दिया कि कामनसभा ने जो कुछ किया उसका उसे अधिकार न था और अंगरेज़ी पार्लामेण्ट अमरीकावालों पर महसूल नहीं लगा सकती।

५।—बोस्टन के बन्दरगाह में चाह का फेंका जाना—राजा ने चैथम की अच्छी सलाह न मानी और लार्ड नार्थ (North) को



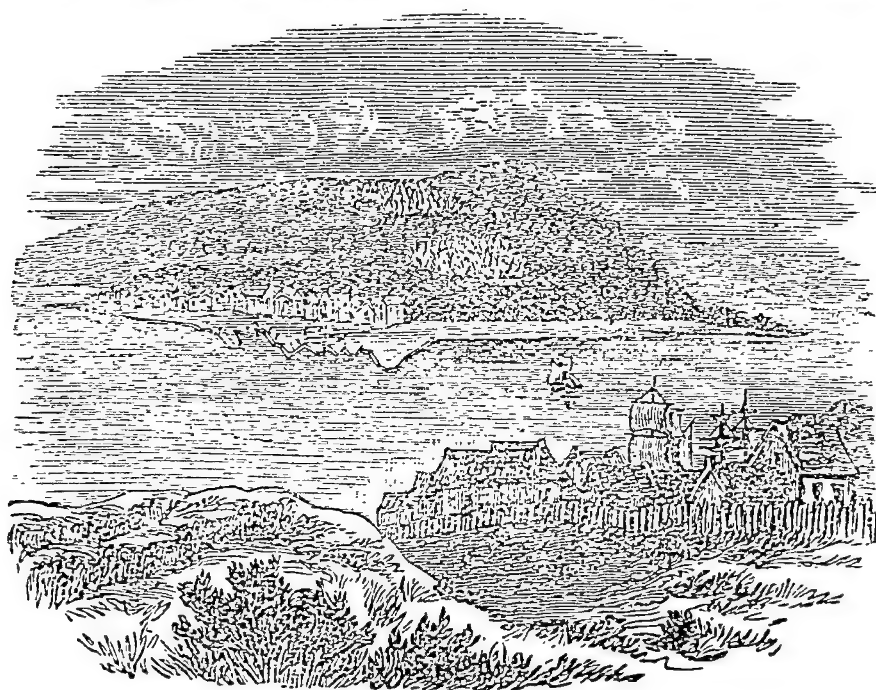
लार्ड नार्थ।

प्रधान मंत्री बना दिया। नार्थ उस दल का था जो अब टोरी कहलाता हैं। परन्तु यह लोग रानी ऐन के टोरियों से कई बातों

में भिन्न थे। उनका यह मत था कि मंत्रियों का निर्वाचन राजा करै न कि बड़े ह्विग सरदार। लार्ड नार्थ बड़ा समझदार था परन्तु जो कुछ राजा उससे करने को कहता उसे उचित मान लेता था। वह बड़ा मोटा था और जब कामन सभा के सदस्य अपने व्याख्यानों में उसे बुरा भला कहते थे तो वह सोया करता था। जागने पर वह दिल्लगी किया करता और कभी क्रुद्ध न होता। कुछ दिन पीछे बहुत सी चाह बोस्टन को भेजी गई। बोस्टन-निवासियों ने यह निश्चय किया कि यह चाह उतरने न पाये, क्यों कि उतरी और किनारे पर आई तो लोग इसै मोल लेंगे और अंगरेज़ी गवर्मेण्ट को महसूल देंगे। उन्होंने गवर्नर से कहा कि जहाज़ को इंग्लिस्तान लौटा दीजिये। गवर्नर ने न माना। तब चालीस पचास मनुष्य लाल इण्डियन का रूप बनाये चह पर चले गये और जहाज़ पर कूद कूद कर चाह की पेटियों को खोल डाला और चाह पानी में फेंक दी। इंग्लिस्तान में यह समाचार पहुंचा तो मंत्री और राजा बहुत ही रुष्ट हुये। उन्होंने पार्लामेण्ट से एक यह क़ानून पास कराया कि बोस्टन बन्दरगाह में न कोई जहाज़ माल लादै न माल उतारै और दूसरा यह कि मसाचुसेट्स (Massachusetts) उपनिवेश पर जिसके अन्तर्गत बोस्टन नगर है, राजा के मुक़र्रर किये हुये गवर्नर शासन करैं। चैथम और बर्क ने इन क़ानूनों के न पास कराने का भरपूर उद्योग किया परन्तु उनकी न चली, और अंगरेज़ी पार्लामेण्ट की आज्ञा मानने के लिये उपनिवेश-वालों को बाध्य करने को सेना भेज दी गई।

६।—<u>अमरीका के युद्ध का आरम्भ</u>—अमरीकावालों ने भी लड़ने की तैयारी की। उन्होंने एक कांगरेस चुनी जिसमें भिन्न भिन्न उपनिवेशों के चुने हुये सदस्य मिलकर इस बात पर विचार करैं कि क्या करना चाहिये। ई० १७७५ में लड़ाई छिड़ गई।

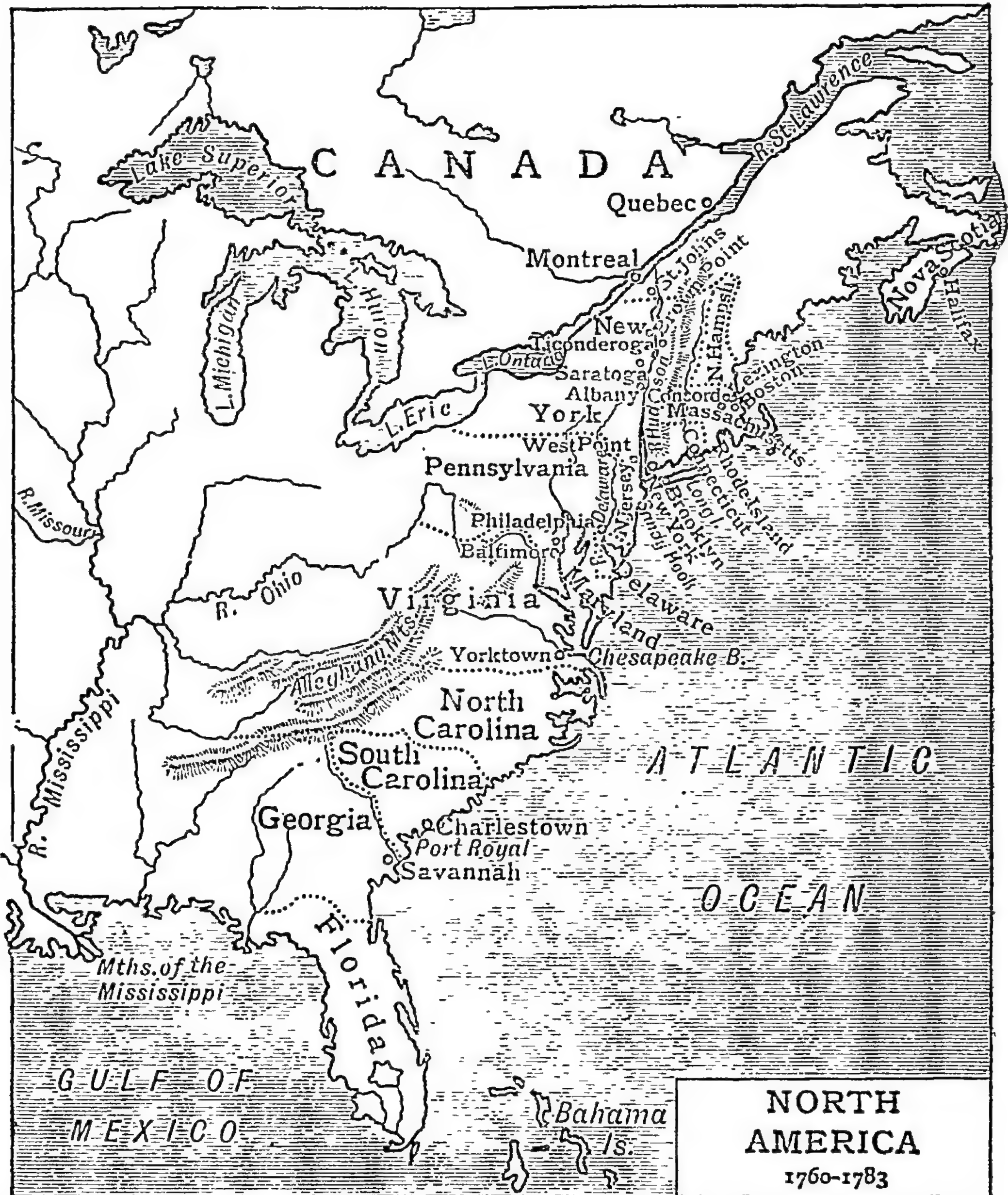
कुछ हथियार ज़ब्त करने को एक अंगरेज़ी पलटन जा रही थी उसपर आक्रमण किया गया और कई सिपाही मारे गये । पहिली लड़ाई जम कर बोस्टन के पास ब्रेडस हिल (Braid's Hill) पर हुई । यह लड़ाई बंकर्स हिल (Bunker's Hill) की लड़ाई के



बंकर की पहाड़ी ।

नाम से प्रसिद्ध है जो उसी पर्वतश्रेणी का एक शिखर है । अंगरेज़ी सेना ने दो बार पहाड़ी पर चढ़ने का प्रयत्न किया और दोनों बार बहुत से सिपाही कटा कर पीछे हटी । तीसरी बार अमरीकावालों का गोला बारूद घट गया था और वे पीछे हट गये । अंगरेज़ी सेनापति ने इंग्लिस्तान को चिट्ठी भेजी जिसमें उसने लिखा कि "राजद्रोही ऐसे तुच्छ नहीं हैं जैसा बहुतों ने उन्हें समझ रक्खा है" । इसपर अंगरेज़ समझते थे कि लड़ाई थोड़े ही दिनों में समाप्त हो जायगी । अंगरेज़ बहुत थे और अमरीका वाले थोड़े । अंगरेज़ी सिपाही क़वायद सीखे थे और अमरीका

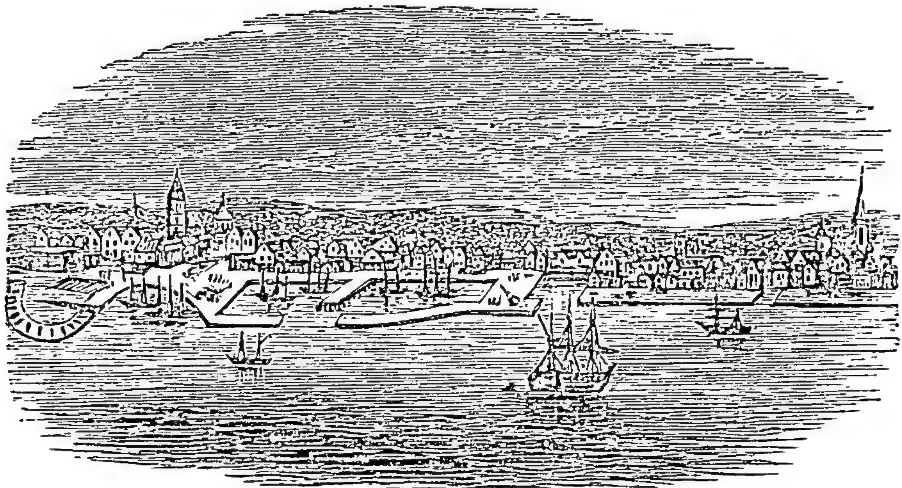
में शिक्षित सिपाही थे ही नहीं। परन्तु अमरीकावाले अपने देश और अपनी स्वतन्त्रता के लिये लड़ रहे थे। और कुछ ही काल




उत्तर अमरीका (१७६० ई० से १७८३ ई० तक)

बीते उन्हों ने स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी और कहा कि हम लोग स्वतन्त्र हैं और राजा जार्ज का शासन न मानेंगे। अमरीका

वालों को कठिन लड़ाई लड़नी पड़ी, कभी हारते कभी जीतते। अंगरेज़ी सेना ने न्यूयार्क नगर ले लिया और युद्ध के अन्त तक उसे अपने पास रक्खा। उसके बाद अमरीकावालों ने साराटोगा (Saratoga) स्थान पर जनरल बरग्वाइन (Burgoyne) की कमान में एक अंगरेज़ सेना को घेर लिया और उसे आत्मसमर्पण करने को बाध्य किया। अमरीकावालों का सेनानायक जार्ज वाशिंग्टन (George Washington) अद्वितीय वीर था। वह केवल अच्छा सेनापति ही न था बरन् अत्यन्त धीर और



न्यूयार्क।

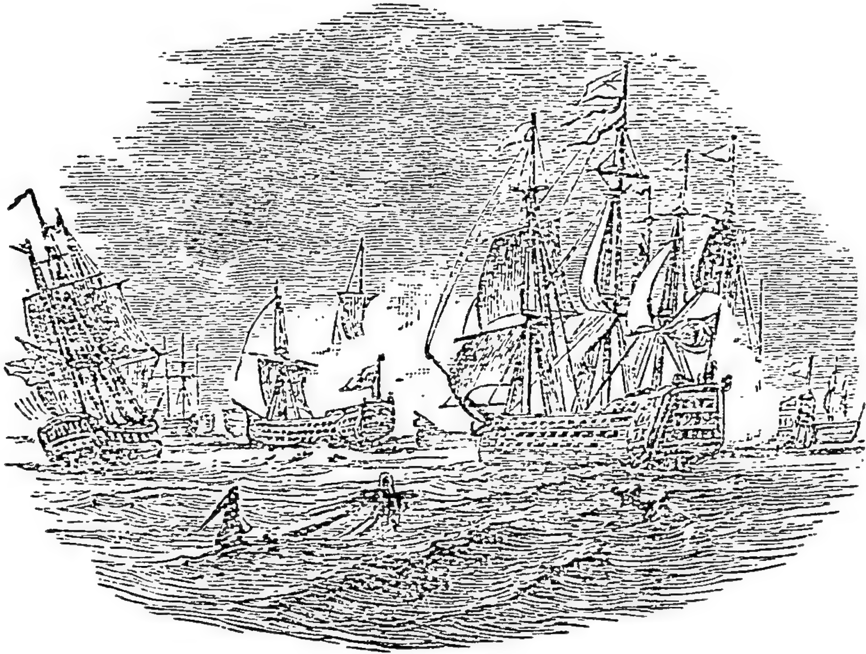
सरल स्वभाव का था। उसे अपनी कुछ भी परवाह न थी और अपने देश को बचाने के लिये सारे संकट सहने को तैयार रहता था। तो भी दो बरस युद्ध करने पर वाशिंग्टन के सब कुछ करने पर भी अमरीका की सेना भूखों मरने लगी। घोड़े बिना घास के मर गये और सिपाहियों को छः दिन तक मांस खाने को न मिला। सारे कटक में एक जोड़ा जूता न था।

७।—अमरीका और फ़्रान्स का मेल—अमरीकावालों को फ़्रान्स से मदद मिल गई। पिछली लड़ाई में फ़्रान्सीसी अंगरेज़ों

का बर्त्ताव न भूले थे और बदला लेने का अवसर पा कर बहुत प्रसन्न हुये। उन्होंने यह प्रतिज्ञा की कि जब तक अमरीका स्वतन्त्र न हो जायगा अंगरेज़ों से लड़ते रहेंगे। लार्ड नार्थ डर गया और उसनें कहा कि अमरीका-वाले स्वतन्त्रता न मांगे तो हम उनके लिये सब कुछ करने को तैयार हैं। चैथम इस बात पर सहमत न हुआ। वह बुढ्ढा हो गया था और बीमार भी था। उसी दशा में वह लार्ड सभा में गया और कहने लगा कि "अंगरेज़ लोग फ्रान्स से हार न मानें। जब तक मैं रेंग कर इस सभा में आ सकता हूं और मुझमें इतना बल है कि बैसाखी के सहारे खड़ा हो जाऊं मैं कभी अपना वोट न दूंगा कि ग्रेटब्रिटन के शासन से अमरीका के उपनिवेश निकल जायं"। सभ्यों ने उसके बचन बड़े आदर से सुनने का प्रयत्न किया परन्तु उसकी बोली धीमी थी और कुछ सुनाई न दिया। उसने वही बात दुहराई परन्तु और जो कुछ कहना चाहता था उसै भूल गया। एक ने उत्तर दिया और वह फिर बोलने को उठने लगा कि उसका पांव लड़खड़ाया और वह मूर्छित हो कर गिर पड़ा। उसके बेटे विलियम पिट जो पीछे से प्रधान मंत्री हुआ और उसके दामाद ने उसै उठा लिया और घर ले गये जहां दो तीन दिन में उसकी मृत्यु हो गई।

८।—लड़ाई का अन्त—चैथम जीता रहता और इंग्लिस्तान का शासन करता होता तो भी वह अमरीका की स्वतन्त्रता को रोक न सकता। लड़ाई जारी रही। स्पेन भी अमरीका से मिल गया। अन्त को कार्नवालिस (Cornwallis) की आधीनता में एक अंगरेज़ी सेना यार्कटाउन (Yorktown) में घिर गई। अमरीकावालों ने उसै स्थल की ओर दबाया और फ्रान्सीसी जल की ओर से बढ़े। कार्नवालिस आत्मसमर्पण करने को बाध्य हो गया। जब यह बुरा समाचार इंग्लिस्तान पहुंचा तो सब ने जान

लिया कि झगड़ा करना व्यर्थ है। लार्ड नार्थ ने इस्तीफ़ा दे दिया और राकिंघम फिर प्रधान मंत्री हुआ। उसने अपने अनुयायियों को तो ओहदे दिये ही उसने चैथम के अनुयायियों को भी कुछ पद दिये। इनमें लार्ड शेलबर्न (Shelburne) मुख्य था। सन्धि होने से पहिले जल-सेनापति राडनी (Rodney) ने जलयुद्ध में



सेण्ट विन्सेण्ठ अन्तरीप की लड़ाई।

फ्रान्सीसियों को परास्त कर दिया और एक बड़ा फ्रान्सीसी और स्पेनी बेड़ा जो जिब्राल्टर (Gibraltar) लेने गया था निरास होकर लौट गया। जिब्राल्टर का घेरा टूटने से पहिले ही राकिंघम मर गया और राजा ने शेलबर्न (Shelburne) को प्रधान मंत्री बनाया। शेलबर्न ने सन्धि का प्रबन्ध किया परन्तु सन्धिपत्र पर उसके पद-त्याग के पीछे हस्ताक्षर किये गये। ई० १७८३ में इस सन्धि के अनुसार अमरीका की स्वतन्त्रता मान ली गई।

## ॥ अध्याय ३८ ॥

### * अमरीका के युद्ध के अन्त से फ्रान्स की राज्यक्रान्ति तक *

### (ई० १७८३ से १७८९ तक)

१।—शेलबर्न का पदत्याग—शेलबर्न बहुत दिनों तक प्रधानमंत्री न रहा। मंत्रिमंडली में राकिंघम के मित्र उसे चाहते न थे और यह भी कहते थे कि राजा को अपना प्रधानमंत्री चुनने का हक़ नहीं है। राकिंघम मर चुका था और चार्ल्स जेम्स फ़ाक्स (Charles James Fox) मंत्रिमंडली का मुखिया था। शेलबर्न के मंत्रिदल में फ़ाक्स भी एक मंत्री था। फ़ाक्स बड़ा बोलनेवाला और बड़ा मिलनसार था। परन्तु उसकी और शेलबर्न की अनबन हो गई थी और उसने और उसके मित्रों ने उसकी आधीनता में काम करना न चाहा। इस कारण उन सब ने इस्तीफ़ा दे दिया। परन्तु पद छोड़ते ही उनको फिर लालसा हुई कि मंत्री बनें और ह्विग होने पर भी उन्होंने शेलबर्न से विरोध करने के लिये टोरीदल के लार्ड नार्थ और उसके मित्रों से मेल कर लिया। जब तक अमरीका का युद्ध रहा, फ़ाक्स नार्थ की बुराई करता था। ऐसी मित्रता कब तक रह सकती है। परन्तु फ़ाक्स और नार्थ के अनुयायी मिलकर शेलबर्न के पक्षपातियों से अधिक थे। इससे दोनों मिलकर शेलबर्न को निकालने में सफल हुये। एक नयी मंत्रिमण्डली बनी जिसका नाम संश्लिष्ट मंत्रिमण्डली था क्योंकि इसमें फ़ाक्स के मित्र नार्थ के मित्रों से मिले हुये थे।

२।—पिट और संश्लिष्ट मंत्रिमण्डली का झगड़ा—संश्लिष्ट-मंत्रिमण्डली बहुत दिनों तक न चली। इसने हिन्दुस्तान के

शासन के विषय में एक क़ानून बनाने का प्रस्ताव किया जिससे बहुत लोग बुरा मान गये और राजा ने इसे निकाल दिया और चैथम के जवान बेटे विलियम पिट को प्रधानमंत्री बनाया। इतनी थोड़ी उमर का प्रधान मंत्री अबतक मुक़र्रर न हुआ था। वह केवल चौबीस बरस का था। कामनसभा में उसके वोटों से फ़ाक्स (Fox) और नार्थ के वोट अधिक थे और सभा ने निश्चय किया कि पिट को इस्तीफ़ा देना चाहिये। पिट बोला "जब तक आपलोग मुझे यह न बतायेंगे कि मैं ने कोई अनुचित काम किया है, मैं इस्तीफ़ा न दूंगा"। दिन दिन सभा में उसके वोट बढ़ते गये और उसके विरोधियों के घटते रहे। उन दिनों पार्लमिण्ट में बहुत से ऐसे मेम्बर थे जो उसी को वोट देते जिसके अपने पद पर रहने की आशा थी क्योंकि वहलोग अपने लिये और अपने मित्रों के लिये ओहदे चाहते थे, जिससे कुछ धन मिल जाता और उन्हें इस बात की परवाह न थी कि जिस बात के लिये वोट दे रहे हैं वह उचित है या अनुचित। वह लोग समझने लगे कि पिट की जीत होगी और इसका एक कारण यह भी था कि कुछ ऐसे लोग भी पिट को मानने लगे जो पार्लमिण्ट के सदस्य न थे। सीधे सादे लोग जिन्हें राजनीति की परवाह न थी समझे कि फ़ाक्स और नार्थ में थोड़े दिन हुये आपस में लड़ाई थी अब मिल गये हैं तो उनकी मित्रता बहुत दिनों तक ठहर नहीं सकती और ऐसी मित्रता से उन्हीं का लाभ है किसी दूसरे का नहीं। पिट ने राजा को सलाह दी कि पार्लमिण्ट तोड़ दी जाय। एक नई पार्लमिण्ट चुनी गई जिसमें पिट के वोट बहुत हो गये।

३।—पिट और लोकमत—जवान मंत्री को वोट देनेवालों ने जो सहायता दी वह तीस बरस पहिले न मिल सकती थी। जो लोग राजनीति समझते थे उनका पक्षपात जैसा सात बरस

की लड़ाई से पहिले चैथम की ओर था वैसा ही अब उसके बेटे की ओर हो गया। परन्तु चैथम ने देखा कि जब तक न्यूकैसल से मेल करके उसके मोल लिये हुये वोट न ले ले तब तक वह अपने पद पर नहीं ठहर सकता। इसका कारण यह था कि चैथम के समय की अपेक्षा पिट के समय में राजनीति समझनेवाले बहुत हो गये थे। अमरीका की लड़ाई छिड़ने से पहिले कामन सभा ने यह आज्ञा दे दी थी कि सदस्यों के व्याख्यान समाचारपत्रों में छाप दिये जायं। इससे बहुतेरे ऐसे राजनीति समझने लगे जो पहिले इसकी परवाह न करते थे। कुछ लोग व्यापार करके धनी हो गये थे और यह न चाहते थे कि इंग्लिस्तान का शासन कुछ थोड़े से बड़े आदमी और उनके मित्र ही करैं। बहुत से गांवों के ज़िमींदार भी अब राजा और पिट के पक्षपाती हो गये। आजकल गांववालों में वालपोल के समय से राजनीति और राष्ट्रीय आन्दोलनों में काम करने की योग्यता अधिक हो गई थी। वालपोल के समय में जो लोग अपने घर पर रहते थे सब बड़े मूर्ख थे और जो पार्लामेण्ट के सदस्य हो जाते थे उन्हें बहुधा अपने वोटों के लिये कुछ पाने की चिन्ता रहती थी। अब उनकी शिक्षा अधिक हो गई थी, अधिक पढ़ते और अधिक विचार करते थे और उन्हें अपने कर्त्तव्य पालन का विचार था। पिट टोरी-दल का मुखिया था और इस दल का मत था कि प्रधान मंत्री चुनने का अधिकार राजा को है।

४।—सुधार का मसौदा और फ्रान्स के साथ व्यापारिक सन्धि—पिट की इच्छा थी कि बहुत से सुधार किये जायं। इनमें से बहुतेरे क़ानून के रूप में परिणत हो गये और कुछ सुधारों को कामन सभा ने नामंजूर कर दिया। उसने सुधार का एक मसौदा पेश किया जिसके अनुसार पार्लामेण्ट के सदस्यों के चुनाव

में पहिले से अधिक लोगों को चुनने का अधिकार मिल जाता परन्तु कामन सभा ने उसे नामंज़ूर कर दिया। फ्रान्स के साथ सन्धि करने में अधिक सफलता हुई। इस सन्धि से एक देश का माल दूसरे देश में बिना कड़ा महसूल दिये लाया जा सकता था। उस समय तक एक देश के रहनेवाले अपने बनाये माल से कम दाम देकर दूसरे देश का माल लेने में अपनी हानि समझते थे। एक बड़े विद्वान् ने जिसका नाम एडम स्मिथ (Adam Smith) था "वेल्थ अफ़ नेशन्स (Wealth of Nations) (जातियों का धन) नामक पुस्तक लिख कर सिद्ध कर दिया कि यह बड़ी भूल है। पिट ने भी उससे बहुत कुछ सीखा और उसने अंगरेज़ी पार्लमेण्ट को समझा दिया कि ऐडम स्मिथ की बात सच्ची है। जातियां भी मनुष्य की भांति अपने पड़ोसियों के बढ़ने से बढ़ती हैं। इसकी सत्यता सिद्ध करने में पिट को बड़ी कठिनाई पड़ी। सैंकड़ों बरस से इंगलिस्तान और फ्रान्स आपस में लड़ते रहे और कितने यही जानते थे कि सदा लड़ते ही रहेंगे। पिट ने अपने श्रोतागणों से कहा कि एक जाति सदा दूसरी जाति की बैरी नहीं रह सकती। जिन लोगों के ऐसे विचार हैं उनकी भूल है। उसने कहा कि अंगरेज़ों और फ़ान्सीसियों को मिलकर व्यापार करना चाहिये, इस से दोनों को लाभ होगा और दोनों में मेल बढ़ जायगा।

५।—दास-व्यापार—व्यापार की सन्धि के अतिरिक्त और भी बड़े उपयोगी काम करने के विचार पिट के उदार चित्त में उठे। एलिज़बेथ के समय से अंगरेज़ लोग और अनेक जातियों की भांति अफ़्रीका के हबशी पकड़ ले आते थे और उन्हें दास बनाकर अमरीका के वेस्ट इण्डीज़ और और प्रान्तों में मज़दूरी कराते थे। हिसाब लगाकर देखा गया कि जार्ज तृतीय के शासन के आरम्भ में

हर साल पचास हज़ार अभागे काले पकड़ पकड़ कर ब्रिस्टल और लिवर्पूल के व्यापारियों के जहाज़ों में भर कर बाहर भेजे जाते थे। पिट के प्रधानमंत्री होते ही "किसी को उसकी इच्छा के प्रतिकूल दास बनाना उचित है या अनुचित" इस विषय पर एक लेख लिखने के लिये केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में टामस क्लार्कसन (Thomas Clarkson) नाम एक नवयुवक को पुरस्कार मिला। पुरस्कार पाकर बहुधा नवयुवक ऐसी बातों को भूल जाते हैं परन्तु क्लार्कसन के चित्त से न उतरी। एक दिन क्लार्कसन अपने घर जा रहा था। वह घोड़े से उतर कर सड़क के किनारे घास पर बैठ गया और सोचने लगा कि जिस बुरी प्रथा के विषय में मैंने लेख लिखा है उसके बन्द करने को क्या करना चाहिये और उसने यह निश्चय किया कि सब से अच्छी रीति यही होगी कि दासप्रथा और दासों के विषय में जो कुछ ज्ञान होसकै उसै अंगरेज़ी जनता को बता देना चाहिये जिससे सब समझ जायं कि कैसा निष्ठुर व्यवहार किया जा रहा है। इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिये वह बरसों तक लिवर्पूल के मांझियों के पास गया और उनसे पूछता रहा। इसमें उसै दुख होता था क्योंकि मांझी उसके साथ कभी कभी बड़ी रुखाई करते और उसै दिक़ करते थे। परन्तु उसने बहुत सी बातैं जान लीं और सब को छपा दिया। कुछ दिनों में और लोगों को भी जिज्ञासा हुई और भयानक घटनायें सुनी गईं। अफ्रीका में अभागे हबशी पकड़ पकड़ कर खुली अल्मारियों में भर दिये जाते थे, सांस लेने तक को जगह न थी और एटलाण्टिक महासागर के गरम प्रान्तों में हो कर जाते थे। उन्हें पेट भर खाने को भी न मिलता था। बैठे बैठे उनके हाथ पांव जकड़ जाते थे इस लिये उन्हें जहाज़ की छत पर लाकर कोड़े मारते थे जिससे भागते फिरते थे। जब कभी, और बहुधा ऐसा होता भी था कि जलयात्रा की जितनी आशा की गई थी उससे

ख़रबी हो गई और जहाज़ पर खाने पीने का सामान कम रहा तो दुबले पतलों को जहाज़ का सारंग समुद्र में फेंक देता था जहां अभागे डूब जाते या उन्हें जलजन्तु खा जाते थे। कामन-सभा में पिट का एक मित्र विलबरफ़ोर्स (Wilberforce) था। उसने इस बुरे दास-व्यापार को बन्द करने के लिये पार्लमेण्ट में बड़ा उद्योग किया। पिट ने भी इस व्यापार का कड़ा प्रतिवाद किया परन्तु इसके रोकने के लिये मेम्बरों को राज़ी न कर सका।

६।—राजा की बीमारी और उसका अच्छा हो जाना—पिट के प्रधानमंत्रित्व को पांच बरस बीते थे कि राजा विक्षिप्त हो गया। सब लोगों ने यही सलाह की कि एक प्रतीनिधि होना चाहिये और राजा का बड़ा बेटा जो उसके पीछे जार्ज चतुर्थ के नाम से सिंहासन पर बैठा इस पद पर नियुक्त किया जाय। राजकुमार का चालचलन बहुत बुरा था। इस से जब लोगों ने सुना कि राजा अच्छा हो गया और राजकुमार प्रतिनिधि न रह जायगा तो बहुत प्रसन्न हुये। जार्ज तृतीय ठाट बाट से सेण्टपाल के गिरजाघर को अपने स्वस्थ होने के लिये ईश्वर को धन्यवाद देने गया। सड़क पर दर्शकों की भीड़ लगी थी; रात को सारे लन्दन नगर में रोशनी की गई। जार्ज तृतीय बहुत ही लोकप्रिय हो गया। उसके एक मंत्री था जिसे अच्छा शासन करना आता था और जिसने इस राज के आरम्भ के मंत्रियों की भांति लोगों का अपमान न किया था। लोग बुड्ढे राजा की सादी चाल सुनकर बड़ा सुख मानते थे। वह अपने भोजन में भेड़ की एक टांग पर सन्तुष्ट रहता और स्वादिष्ट पदार्थों से उसे अच्छा समझता। राजा के विषय में एक झूठी बात कही जाती थी। एक दिन उसके आगे एक गुलगुले में सेब भर दिया गया था। राजा की समझ में न आया कि गुलगुले के भीतर सेब कैसे घुस गया।

इस कथा को सुनकर कोई राजा को बुरा न कहता। राजा का खेती में जी लगता था इस कारण भी लोग उसे चाहते थे।

७।—खेती में उन्नति—अच्छे शासन के अतिरिक्त और बातें भी देश को समृद्ध कर रही थीं। लोग खेती करना, खाद डालना, खेत में से पानी काट देना सीख रहे थे और जहां पहिले ऊसर था वहां नाज पैदा होने लगा। बेकवल (Bakewell) नाम के एक साधारण किसान ने भेड़ों की जाति में उन्नति करना सिखा दिया जिससे पहिले एक भेड़ से जितना मांस निकलता था उससे दूना निकलने लगा। जब धरती से अच्छा अन्न उत्पन्न हुआ तो अधिक लोगों का पेट भरा और जनसंख्या भी बढ़ने लगी।

८।—बृज वाटर (Bridgewater) की नहर—भोजन की सामग्री बढ़ने से जनता की दशा अच्छी हो जाती ही है, व्यापार बढ़ने से भी बहुत सुधरती है। जार्ज तृतीय के राज्य से पहिले अंगरेज़ी व्यापार बहुत बढ़ गया था परन्तु अब भी कुछ कठिनाइयां थीं। जो लोग समुद्र से दूर रहते थे और ऐसी वस्तु बना सकते थे जो देसावर में जाकर अच्छे दामों बिक जायं उनका माल भारी हुआ तो जहाज़ों पर लादने के लिये बन्दरगाहों में पहुंचाने के खर्च में सारा नफ़ा डूब जाता और अच्छे दामों से भी पूरा न पड़ता। जब तक थोड़े खर्च से माल पहुंचाने की रीति न निकलती हज़ारों कारीगर काम न कर सकते क्योंकि माल या तो गाड़ीवानों की गाड़ियों पर जाता या घोड़ों की पीठ पर। इससे काम करके अच्छी मज़दूरी कमानेवालों की बड़ी हानि हुई। इन लोगों की सहायता जेम्स ब्रिंडले (James Brindley) ने की जो चक्की बनाया करता था। मेंचेस्टर से छः मील दूर वर्ज़ले (Worseley) में ड्यूक ब्रिजवाटर (Duke of Bridgewater) की

कुछ धरती पड़ी थी। इस धरती में पत्थर के कोयले की खान थी और मैञ्चेस्टरवालों को कोयले की बड़ी ज़रूरत थी क्योंकि कोयला बहुत महंगा था। कोयला महंगा होने पर गाड़ियों पर लाद लाद कर मैञ्चेस्टर भेजने का ख़र्चा इतना पड़ता था कि वर्झ़ले से मैञ्चेस्टर भेजने से कुछ लाभ न था। ड्यूक ब्रिजवाटर ने ब्रिंडले से सलाह ली और ब्रिंडले ने उसे सुझाया कि एक नहर बना दी जाय जो पहाड़ियों में सुरंग काट कर और नदियों पर ऊंचे पुल बांध कर मैञ्चेस्टर तक जाय। यह नियम है कि जब कोई नई युक्ति निकाली जाती है तो लोग उस पर हंसते हैं। एक प्रसिद्ध इञ्जीनियर को वह स्थान दिखाया गया जहां एक घाटी में होकर नहर निकलने को थी। जब उसने देखा कि पानी उसके सिर से ऊंची नहर में हो कर जायगा तो वह कहने लगा कि हमने सुना है कि * हवा में महल बनते हैं पर कभी हमको इससे पहिले वह स्थान नहीं देखाया गया जहां बन सकते हैं। ब्रिंडले ने साहस न छोड़ा और अन्त को नहर बन ही गई। मैञ्चेस्टरवालों को कोयला मिला और ड्यूक को कोयले का दाम मिल गया। कुछ दिनों में उसका अनुकरण किया गया। इंग्लिस्तान के एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त तक नहरें बन गईं और भारी माल नावों पर थोड़े ख़र्चे में बड़ी सुगमता से जाने लगा।

६।—<u>सूतकातने की कलों में उन्नति</u>—दूसरा उपयोगी काम यह हुआ कि सूत कातने की कल बनी। जार्ज तृतीय के सिंहासन पर बैठने के थोड़े ही दिन पीछे हारग्रीवज (Hargreaves) ने सूतकातने की एक कल बनाई जिसका नाम स्पिनिंग जेनी

---

* अंगरेज़ी में हवा में महल या किला उसी अर्थ में हैं जो हमारे देश में शेखचिल्ली के मकान का है।

(Spinning Jenny) रक्खा। उस समय कल का आविष्कार करना आजकल की अपेक्षा बड़े जोखम का था। कारीगर समझते थे कि ऐसी कल बनने से जो कई कारीगरों का काम कर सकती है बहुत से कारीगरों के पास काम न रह जायगा। उन्हें इस बात का ज्ञान न हुआ कि कलों से माल सस्ता बन जायगा और उसके ग्राहक बहुत हो जायंगे और उसकी मांग इतनी बढ़ जायगी कि इन्हीं कलों में हज़ारों कारीगर मज़दूर लगाये जायंगे। हारग्रीवज के पड़ोसी उसके घर पर चढ़ आये, उसकी कल तोड़ डाली और वह भाग न जाता तो उसे जान से मार डालते। उसके बाद आर्करैट (Arkwright) ने कातने के काम में कुछ उन्नति की। उसको भी दुख उठाना पड़ा। उसके कारख़ाने में लोग घुस गये और उसकी कल तोड़ दी। परन्तु उसका संकल्प दृढ़ था और अन्त को लोगों ने उसे छोड़ दिया और वह अपना काम करने लगा। फिर क्राम्पटन (Crompton) ने और भी उन्नति की और वह यन्त्र निकाला जिसे मूल (Mule) कहते हैं। वह एक ग़रीब जुलाहा था। जब उसकी कल बनकर तैयार हो गई तो उसने सुना कि लोग उसके तोड़ने को इकट्ठे हो रहे हैं। उसने अपनी कल को उखाड़ पुखाड़ कर छिपा दिया। शान्ति होने पर वह सूत कातने लगा। जो सूत उसने बेचा वैसा पहिले किसी ने न देखा था न सुना था। कारख़ानेवाले उसके पास पूछने दौड़े कि यह सूत तुमने कैसे बनाया। यहलोग भी ऐसे ही दुष्ट थे जैसे मज़दूर और कारीगर थे। इन्होंने खिड़कियों में से झांक कर उसकी युक्ति देखी। बिचारे क्राम्पटन के पास पेटेन्ट कराने के लिये धन न था जिससे उसके मूल की कोई नक़ल न कर सकता। उसने कारख़ाने वालों से कहा कि सब लोग चन्दा करके मुझे कुछ इनाम दें तो मैं भेद बता दूं। चन्दा जो कारख़ाने वालों ने दिया सब जोड़ कर ६८ पौंड से कुछ कम था।

इस ग़रीब जुलाहे के आविष्कार से कारख़ानेवालों को हज़ारों पौंड का लाभ हुआ।

१० ।—भाप का इञ्जन (Steam Engine)—सूत कातने की कल के आविष्कार के साथ ही साथ और कारख़ानों में भी आविष्कार हुये इनमें सब से उपयोगी आविष्कार स्टीम इञ्जन का हुआ। इससे पहिले पहिये चलाने और कुछ और कामों में स्टीम इञ्जन का प्रयोग किया जाता था परन्तु भाप गरम करने में बड़ा इन्धन लगता था और ख़र्च इतना पड़ जाता था कि उससे कुछ लाभ न था। ग्लासगो के जेम्स वाट (James Watt) ने बड़े परिश्रम से अभ्यास करते करते इस कठिनाई को दूर करने की एक रीति निकाली और थोड़े ही दिनों में वाट के इञ्जिन देश में फैल गये और कारख़ानेवालों का उनके बिना काम ही न चला। स्टीम इञ्जिन के आविष्कार से एक ऐसा परिवर्तन हो गया जिसका वाट को ध्यान भी न था। अब तक इंग्लिस्तान के उत्तर का भाग देश में सब भागों से निर्धन था और दक्षिण की अपेक्षा इसमें ऊसर और दलदल अधिक था। जनसंख्या थोड़ी थी और दक्षिणवालों से इनकी स्थिति भी भिन्न थी। लोगों के चित्त में जो नई नई बातों का संचार हुआ वह सदा दक्षिण में हुआ; वहां से उत्तर में आया। हेनरी षष्ठ के राज में उत्तरप्रान्तवाले यार्कवालों से लड़े थे। हेनरी अष्टम के समय में मठों का तोड़ना रोकने के लिये लड़े और एलिज़बेथ के राज में प्रोटेस्टैण्ट धर्म के विरुद्ध इन्हीं ने युद्ध किया। जार्ज प्रथम के समय में कपट राजकुमार के लिये येही लोग लड़े। अब सब बदल गया। जहां पत्थर का कोयला सस्ता मिलता है वहीं कल कारख़ाने बनाये जाते और स्टीम इञ्जन चलते हैं और उत्तर में कोयला सस्ता है क्योंकि वहीं खानों से निकलता है। कारख़ानों के खुलने से उनमें काम

करने को वहुत से मज़दूर कारीगर पहुंच गये और उनके खाने पीने आदि के प्रवन्ध करने को और लोग भी वस गये। इन कामों के करने के लिये चतुराई और समझ की आवश्यकता है। इसका परिणाम यह हुआ कि उत्तर की जनसंख्या वढ़ गई और वहां के रहनेवाले वड़े समझदार और विवेकी हो गये। किसी ने यहां तक कहा है कि लंकाशायर के जो आज विचार हैं वही कल सारे इंग्लिस्तान के होंगे। यह कहना सदा ठीक न उतरै परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि दो तीन सौ वरस पहिले ऐसी वात का कहनेवाला भी कोई न था।

## ॥ अध्याय ३९ ॥

### * फ़्रान्स की राज्यक्रान्ति के आरम्भ से अमीन्स की सन्धि तक *

( ई० १७८९ से १८०२ तक )

१।—फ़्रान्स की राज्यक्रान्ति का आरम्भ—ई० १७८९ में जव राजा सेण्टपाल के गिरजाघर से अपने स्वस्थ होने के लिये ईश्वर को धन्यवाद देकर लौटा उसके कुछ ही दिन पीछे फ़्रान्स में राज्य-क्रान्ति हो गई। वरसों से फ़्रान्स का शासन वहुत विगड़ा हुआ था। लोगों पर भारी भारी कर लगाये जाते तो थे ही, लगाने की रीति में भी अन्याय होता था। धनीलोग वचे रहते और ग़रीव कर के वोझ से पिसे जाते थे। धनियों के साथ तरह तरह की रियायतें होती थीं। देश में किसानलोग राजा को तो कर देते ही थे, सरदारों और वड़े आदमियों को भी वहुत कुछ दिया करते थे। यहलोग अंगरेज़ी ज़िमींदारों की भांति उनके वीच में कोठियां वनाकर रहते थे परन्तु उनका कुछ भी भला न करते थे। फ़्रान्स-राज लुइ षोडशम नेकनियत था परन्तु उसै विगड़े

को चलाना न आता था। वह अपनी आमदनी से बहुत ही अधिक खर्च करता और ऋणी होगया था। उसने अपनी प्रजा की भिन्न भिन्न श्रेणियों के चुने हुये मेम्बरों की एक सभा की जिसने आते ही अपना नाम जातीय सभा (National Assembly) रक्खा। थोड़े ही दिनों में इस सभा ने ऐसे काम किये जो राजा को न रुचे। तब राजा ने सभा को ऐसे काम करने के लिये बाध्य किया जिन्हें वह आप उचित समझता था। पैरिस के निवासियों ने जब यह जाना तो बिगड़ खड़े हुये और बैस्टील (Bastille) नाम के एक बड़े क़िले को सर कर लिया। राजा डर गया और उसने जातीय सभा को अपनी मनमानी करने दिया। दो तीन महीने में पैरिस के लोग वहां पहुंचे जहां लुई रहता था और उसै फिर पैरिस लाये। तब से वह नाममात्र का राजा था, वास्तव में वह वन्दी बनाकर रक्खा गया। जातीय सभा ने बहुत से नये क़ानून बनाये और जो कर किसान लोग ज़िमींदारों को देते थे उनमें से बहुतेरे उठा दिये। कितने ज़िमींदारों के साथ बड़ा बुरा बर्त्ताव किया गया और बहुतेरे देश छोड़कर चले गये। राजा ने भी देश छोड़ कर भाग जाना चाहा परन्तु उसे फिर पैरिस को पकड़ लाये और उसके साथ और भी कड़ाई होने लगी। ई० १७९२ में क्रान्ति के तीसरे बरस ऐसा जान पड़ा कि प्रशिया और आस्ट्रियावाले राजा और ज़िमींदारों की सहायता करैंगे। फ्रान्स ने उनसे युद्ध की घोषणा कर दी और दोनों ने फ्रान्स पर चढ़ाई कर दी। पैरिसवाले समझे कि राजा इन वैरियों की जय चाहता है और इस में सन्देह नहीं कि वह चाहता भी था। उन्हों ने बलवा करके उसै अपने महल से निकाल दिया। एक नई पार्लामेण्ट, जिसको जातीय समिति (National Convention) कहते थे, बैठी और उसने राजा को सिंहासन पर से उतार कर प्रजातंत्र राज्य स्थापित कर दिया।

इस समिति ने राजा को बन्दीघर भेज दिया और ई० १७९३ के आरम्भ में फ्रान्स के बैरियों पर अनुग्रह करने का अपराध लगाकर उसे प्राणदंड दिया और गिलोटीन (guillotine)* यंत्र पर उसका सिर काट लिया गया ।

२ ।—इंग्लिस्तान और फ़्रान्स की लड़ाई—फ़्रान्स में राज्य-क्रान्ति होने से इंग्लिस्तान की जनता बहुत प्रसन्न हुई । अंगरेज़ समझे कि अब फ्रान्स में भी अपने यहां का सा पार्लमेण्टी शासन होगा परन्तु उन्हें इस बात का ज्ञान न था कि फ्रान्स में एक श्रेणी के लोग दूसरी श्रेणीवालों से बहुत रुष्ट हैं और जिस देश में कभी पार्लमेण्टी शासन न था वहां के लोग ऐसा शासन पाकर कैसे रहेंगे । जब दंगा, बखेड़ा, बलवा, और बध के समाचार आये तब इंगिलस्तान में बहुधा लोग समझे कि फ्रान्स की क्रान्ति बहुत बुरी हुई, और जब बहुत से फ़्रान्सीसी अपना सर्वस्व खोकर इंग्लिस्तान में सरन लेने आये तो अगरेज़ों ने उनके साथ बड़ी सहानुभूति दिखाई और कितने उनके लिये फ़्रान्स से लड़ने को तैयार हो गये । बहुत दिनों तक पिट ने शान्त रहने का भरपूर उद्योग किया और कहता रहा कि और देशवाले ऐसा शासन करें जो हमें नहीं रुचता तो हम उनसे क्यों लड़ने जायं । परन्तु जब प्रशिया और आस्ट्रिया ने फ़्रान्स पर चढ़ाई कर दी और फ़्रान्स ने उन्हें परास्त करके उस देश पर चढ़ाई कर दी जो तब आस्ट्रियन नेदरलैण्डस (Austrian Netherlands) कहलाता था और आजकल बेलजियम है तब, पिट ने सोचा कि इंग्लिस्तान के समीप इस देश को फ़्रान्स अपने राज में मिला लेगा तो हमलोगों को उससे डरना पड़ेगा । वह इस विचार ही में था कि फ़्रान्सीसी बढ़ने न पायें कि उसे फ़्रान्सराज

* यह यन्त्र फ्रान्स में प्रयुक्त होता था और इससे बहुत जल्द सिर कट जाता था।

के वध का समाचार मिला। सारे देश में हाहाकार मच गया और लोगों को इतना क्रोध हुआ कि तुरंत ही इंग्लिस्तान और फ़्रान्स में युद्ध छिड़ गया।

३।—क्रान्ति करनेवालों के विरुद्ध अंगरेज़ों के विचार—इंग्लिस्तान के रहनेवाले क्या धनी क्या दरिद्र न चाहते थे कि फ़्रान्स के क्रान्तिकारों के से अत्याचार उनके देश में भी होने लगें। यहां फ़्रान्स की अपेक्षा जनता की दशा अच्छी थी और जब लोग सुखी रहते हैं तो बहुधा बलवा नहीं करते। तौभी नगरों में विशेष करके ऐसे कुछ लोग थे जो कहते थे कि इंग्लिस्तान की गवर्मेण्ट में भी कुछ परिवर्त्तन किये जायं और पार्लामेण्ट के सदस्य चुनने में अबसे अधिक लोगों को वोट मिलने चाहियें। इसमें सन्देह नहीं कि बहुत लोगों ने कड़ी कड़ी बातें कहीं और यहां तक कह डाला कि फ़्रान्स के क्रान्तिकारों ने जो कुछ किया है, हम भी वही करेंगे। इन बातों को सुनकर ऊंची और मध्यम श्रेणी के लोग बहुत घबड़ा गये और कामन सभा में अंगरेज़ी जनता के अधिकांश के अनुमोदन से यह निश्चय किया गया कि कोई परिवर्त्तन न किया जायगा और जो लोग उनको मांगने के लिये संघट्टन करेंगे उनको दंड दिया जायगा। इस भाव ने सारे यूरप में सनसनी फैला दी। सारे यूरपी राज फ़्रान्स से लड़ने को मिल गये। फ़्रान्स पर फिर चढ़ाई कर दी गई और फ़्रान्सवाले जिस किसी पर बैरी की सहायता करने या बैरी को हटाने में उपेक्षा करने का सन्देह करते उससे डरने लगे। सैकड़ों बिना अदालती रूबकारी के गिलोटीन पर चढ़ा दिये गये। यह "भय का राज" कहलाता था और साल भर तक रहा। इंग्लिस्तान और स्काटलैण्ड में जो लोग पार्लामेण्ट में सुधार मांगने के लिये औरों को भड़काते उनको जूरी "दोषी" का निर्णय सुनाने को तैयार रहती थी और

जज लोग भी कड़ा दंड देने को प्रस्तुत थे । सब यही समझते थे कि प्रार्थना करने ही से फ़्रान्स के सारे उपद्रव यहां भी होने लगेंगे । पिट के प्रस्ताव से पार्लामेण्ट ने एक क़ानून बना कर राजा को यह अख़्तियार दे दिया कि जिसपर उसको राजविद्रोह की योजना करने का सन्देह हो उसे बिना रूबकारी के क़ैद करले । कितनों पर बहुत कच्चे प्रमाणों पर राजविद्रोह का दोष लगाया गया परन्तु सौभाग्य से उनकी रूबकारी फ्रान्स में "भय की राज" की समाप्ति पर हुई । उस समय जूरियों की भी घबड़ाहट वैसी न थी जैसी कुछ महीने पहिले थी और वहलोग निर्दोष कहे गये । कुछ दिनों में सब के चित्त शान्त हो गये ।

४ ।—युद्ध की गति—स्थल में फ़्रान्सीसियों के साथ युद्ध में सफलता न हुई । फ़्रान्सीसी सेना ने आस्ट्रिया का नेदरलैण्डस फिर जीत लिया और हालैण्ड को अपने अधिकार में कर लिया । जलयुद्ध में लार्ड हो (Howe) ने चैनल के सिरे पर फ़्रान्सीसियों को परास्त कर दिया । इस युद्ध का नाम पहिली जून की लड़ाई है । प्रशिया ने फ़्रान्स के साथ सन्धि कर ली । इसके कुछ दिन पीछे एक नवयुवक फ़्रान्सीसी सेनापति जिसका नाम नेपोलियन बोनापार्ट (Napoleon Bonaparte) था इटली को भेजा गया । उसने कई लड़ाइयां जीतीं और आस्ट्रियावालों को इटली से निकाल दिया । फ़्रान्स के विजयों को रोकने का प्रयत्न निष्फल प्रतीत होने लगा और पिट ने सन्धि का प्रस्ताव किया । परन्तु पिट और फ़्रान्सीसी सहमत न हो सके और लड़ाई बन्द न हुई ।

५ ।—सेण्ट विनसेण्ट (St. Vincent) की लड़ाई—ई० सन १७९७ अंगरेजों के लिये बड़े संकट का था । डच और स्पेनवाले फ़्रान्स से मिल गये थे और लोग यह समझते थे कि दोनों के

जंगी बेड़े फ़ान्सीसी बेड़े से मिल कर इंग्लिस्तान पर चढ़ाई कर देंगे। अंगरेज़ी जलसेनापतियों को आज्ञा दी गई कि तीनों को मिलने न दें। सेण्ट विनसेण्ट अन्तरीप के पास जलसेनापति जार्विस (Jarvis) स्पेनी बेड़े से भिड़ गया। स्पेनी बेड़े में पचीस जहाज़ थे और अंगरेज़ी में केवल पन्द्रह थे। कुछ स्पेनी जहाज़ वहुत वड़े थे जैसे कि आर्मेडा के दिनों में आये थे और एक चार खंड का था और सव खंडों पर तोपें चढ़ी थीं। अंगरेज़ी जहाज़ इतने वड़े न थे परन्तु उनकी जंगी सजावट अच्छी थी और मांझी अपना काम समझते थे। स्पेनी मांझी वहुतेरे ऐसे थे जो कभी समुद्र में निकले ही न थे। तोभी स्पेनी वीर थे और जी तोड़ कर लड़े। अंगरेज़ी कप्तान वड़ी वीरता से लड़े परन्तु नेलसन का युद्ध सव से वढ़ कर रहा। उसका जहाज़ वड़ी भयानक रीति से इधर उधर ठेला जाता था परन्तु वह एक स्पेनी जहाज़ के पास दौड़ गया, अपने सैनिकों के साथ उसपर कूद पड़ा और उसे ले लिया। उसने जैसेही जहाज़ को पकड़ा वैसेही स्पेनी जलसेनापति के जहाज़ ने उस पकड़े हुये जहाज़ पर गोला मारा। नेलसन झटपट सेनापति के जहाज़ पर पहुंच गया। स्पेनी अफ़सरों ने आत्मसमर्पण कर दिया और अपनी अपनी तलवारें उसे दे दीं। तलवारें इतनी थीं कि नेलसन ने उनको अपने एक मांझी को दे दिया और मांझी ने वड़ी धीरता से उन्हें इकट्ठा करके वग़ल में दाव लिया मानों छड़ियां थीं।

६।—स्पिट हेड (Spithead) में सैनिक विद्रोह—स्पेनी वेड़े से जो कुछ डर हो सकता था उससे वढ़ कर शंका का कारण देश ही में उठ खड़ा हुआ। जिन मांझियों ने इंग्लिस्तान की लड़ाइयां लड़ी थीं वेही असन्तुष्ट थे और उनके असन्तोष का कारण भी था। उनको उसी शरह से तनख़ाह मिलती थी जो चार्ल्स

द्वितीय के समय में मुक़र्रर की गई थी और जो खाने पीने की वस्तु उन्हें मोल लेनी पड़ती थी उनके दाम तब से बहुत बढ़ गये थे। उन्हें बहुत बुरा भोजन दिया जाता था। बीमार पड़ जाते या युद्ध में घायल हो जाते तो जब तक अच्छे न हो जाते उनकी तनख़ाह कटा करती थी और उन्हें काम पर चौकस रखने के लिये कोड़े मारे जाते थे। छोटे छोटे अपराधों के लिये कोड़ा पड़ता और कभी कभी बिना अपराध भी कोड़े लगते। स्पिटहेड के बेड़े के मांझियों ने गवर्मेंट के जलसेना-विभाग में अरज़ी दी कि हमारे साथ अच्छा बर्त्ताव होना चाहिये। इस पर कुछ ध्यान न दिया गया तो उन्हों ने ग़दर मचा दिया और जब उन्हें बाहर जाने की आज्ञा दी गई तो न गये और कहने लगे कि जब तक हमारी प्रार्थना स्वीकार न की जायगी हम अपने अफ़सरों का हुकुम न मानेंगे। परन्तु उन्हों ने अपने अफ़सरों को मारा पीटा नहीं। केवल जिन्हों ने उनके साथ क्रूरता का बर्त्ताव किया था उन्हें ज़हाज पर से उतार दिया। जलसेना विभाग के मंत्रियों ने बड़ी चतुराई की। उन्हों ने देखा कि मांझी वही बातें मांगते हैं जो उन्हें पहिले मिल जानी चाहिये थीं और उन्हों ने लार्ड हो (Howe) को उनसे कहने को भेज दिया कि तुम्हारा अपराध क्षमा कर दिया जायगा और तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार की जायगी जो तुम अपने अपने काम पर आजाओ। लार्ड हो पहिली जून की लड़ाई में सेनानायक था और उसे मांझी बहुत मानते थे। मांझी उसकी बात मान गये, उनकी शिकायतें दूर कर दी गईं। परन्तु कुछ ही दिन बीतने पर उन्हें यह सन्देह हो गया कि हमारे साथ उचित बर्त्ताव नहीं हो रहा है और वहलोग फिर बिगड़ने लगे। परन्तु जब उनको यह विदित हो गया कि जलसेनाविभाग शुद्धअंतःकरण से उनके हित की करना चाहता है तो फिर उन्होंने ग़दर मचाने का बिचार छोड़ दिया।

७।—नोर (Nore) में ग़दर—स्पिटहेड का ग़दर बन्द न हुआ था कि टेम्स नदी के मुहाने पर नोर में जहाज़ी बेड़ेवालों ने ग़दर मचा दिया। नोर के मांझियों ने कहा कि स्पिटहेड के मांझियों की जो शिकायतें हैं उनपर तो विचार होना ही चाहिये, (यद्यपि उनपर बिचार हो चुका था) हमलोगों को अपने जहाज़ों पर आप कमान करने का अधिकार मिले। उनकी बातें मान ली जातीं तो जहाज़ किसी काम के न रह जाते। उन्हीं दिनों जलसेनापति डंकन (Duncan) टेक्सेल (Texel) में डच बेड़े की ताक में खड़ा था कि डच फ्रान्सीसियों की मदद को न आ सकें। यह ग़दर डंकन के बेड़े तक पहुंच गया। डंकन के कई जहाज़ नोरवालों के पास चले गये और डंकन आप ही एक जहाज़ लिये खड़ा रह गया। परन्तु वह बड़ा वीर था और बड़ी दृढ़ता से उस बन्दरगाह के सामने खड़ा रहा जिसमें सारा डच बेड़ा था और इधर उधर झंडियां घुमाता रहा मानो अपने जहाज़ों को संकेत कर रहा है। इस युक्ति से उसने डच बेड़े को धोखे में रक्खा और डच समझते रहे कि अंगरेज़ी बेड़ा दूर खड़ा है जहां से दिखाई नहीं देता और अपने बन्दरगाह में चुपचाप खड़े रहे। इतने में डंकन के पास इतने जहाज़ आगये कि डच निकलें तो उनसे लड़ सकें। इधर गवर्मेण्ट ने ग़दर करनेवालों को दबा लिया। उन्हीं के कुछ जहाज़ उनका साथ छोड़ कर चले गये और कुछने आत्मसमर्पण कर दिया। इस ग़दर के मुखिया को फांसी दी गई, मांझी अपने अपने कामों पर आगये और पीछे बड़ा करतब दिखाया। डच बेड़ा निकला तो उसे डंकन ने कैम्परडाउन (Camperdown) की लड़ाई में परास्त कर दिया।

८।—मिस्र में बोनापार्ट—इस लड़ाई के थोड़े ही दिन पीछे फ्रान्स ने आस्ट्रिया के साथ संधि कर ली। पिट ने भी फ्रान्स

के साथ सन्धि करने का उद्योग किया परन्तु दोनों सहमत न हो सके और लड़ाई जारी रही। वोनापार्ट एक सेना लेकर मिस्र पहुंचा। रास्ते में उसने माल्टा टापू ले लिया। मिस्र उन दिनों रूम के सुलतान के राज का एक अंश माना जाता था। वास्तव में उनका शासन कुछ सिपाही करते थे जो ममलूक कहलाते थे। वोनापार्ट ने उन्हें यह कहकर मिला लेना चाहा कि फ्रान्सीसी पक्के मुसल्मान हैं। पर उन्हों ने उसकी वात सच न मानी और अपनी स्वतंत्रता के लिये जी तोड़ कर लड़े। परन्तु क्रूर ममलूक सवार शिक्षित फ्रान्सीसी सेना की तोपों के आगे ठहर न सके और उनके वहुत से सैनिक मारे गये और वहलोग हार गये। इस लड़ाई का नाम पिरामिडों की लड़ाई है क्योंकि जहां लड़ाई हुई थी उसी के पास ऊंचे ऊंचे पिरामिड* (Pyramid) खड़े थे। एक फ्रान्सीसी सेनापति ने अपने सैनिकों से कहा "पिरामिडों के शिखरों से चालीस शताब्दियां तुमको देख रही हैं"।

६।—<u>नील नदी की लड़ाई</u>—नेलसन सेण्ट विन्सेण्ट की लड़ाई से जलसेनापति हो गया था। जव नेपोलियन मिस्र में था उसी समय नेलसन रूमसागर में अपना वेड़ा लिये उसे ढूंढ़ता फिरता था। जव वह मिस्र पहुंचा तो उसने देखा कि फ्रान्सीसी सेना जिन जहाज़ों पर आई थी सव किनारे पर एक लंवी पंक्ति में खड़े थे और उन पर सैनिक न थे। नेलसन ने उनपर आक्रमण कर दिया, उनकी पंक्ति तोड़ कर अपने आधे जहाज़ उनके और समुद्रतट के वीच में खड़े कर दिये और आधे वाहर रक्खे। दिन भर लड़ाई होती रही और रात हो गई। नेलसन घायल हो गया और उसे नीचे उतार ले गये।

* पिरामिड वहुत ऊंची ऊंची सूच्याकार मिस्र के पुराने राजाओं की पक्की समाधियां है। यहां के पुराने राजा फेरो (फ़रऊन) कहलाते थे।

उसकी मरहम पट्टी करने को एक डाक्टर दौड़ा। सेनापति ने कहा, "हमारे वीर साथी जो घायल पड़े हैं उनकी मरहम पट्टी पहिले करो। हमारी वारी आयेगी तब हमारे पास आना।" उसका घाव वहुत छोटा था। वह अपने कमरे में पड़ा था कि उसने ऊपर से मांझियों को चिल्लाते सुना कि फ्रान्सीसी जहाज़ जल रहे हैं। नेलसन घायल होने पर भी ऊपर चला गया और हुकुम दिया कि जलते जहाज़ों पर से फ्रान्सीसियों के उतारने के लिये नावें भेज दी जायं। अन्त में फ्रान्सीसियों की पूरी हार हो गई।

१० ।—ऐरलैण्ड में झगड़े बखेड़े—इंग्लिस्तान समुद्र में फ्रान्सीसियों को परास्त कर सकता था परन्तु एक देश ऐसा था जिसे दवाये रखना सुगम न था परन्तु जिसमें प्रजा का हित करना कठिन काम था। विलियम तृतीय के समय से ऐरलैण्ड के मूलनिवासियों के साथ वड़ी निठुराई की जाती थी। एक ऐरलैण्डी पार्लामेण्ट डब्लिन में वैठा करती थी परन्तु जो प्रोटेस्टैण्ट न था वह उसमें सदस्य न हो सकता था। इस पार्लामेण्ट ने जो क़ानून वनाये उनसे ऐरलैण्ड के कैथोलिक लोगों पर वड़ा अत्याचार होता था और इसी से ऐरलैण्डवासी अपने ऊपर वुरा शासन करनेवालों से वड़ा द्वेष रखते थे। ऐसे क़ानून धीरे धीरे रद होते जाते थे परन्तु अंगरेज़ी जाति के प्रोटेस्टैण्टों को जो ऐरलैण्ड का शासन करते थे ऐरलैण्ड के कैथोलिकों के साथ कोई सहानुभूति न थी और उनके हित की कोई वात करना न चाहते थे। अमरीका के युद्ध के समाप्त होने पर डब्लिन की पार्लामेण्ट ने इंग्लिस्तान से अलग हो कर स्वतंत्र होने का प्रयत्न किया जैसी वह पहिले कभी न थी। जब पिट प्रधान मंत्री हो गया तो उसने सोचा कि ऐरलैण्डवासियों के लिये सब से अच्छी वात यह होगी

कि उनके धन की वृद्धि कर दी जाय। ऐरलैण्डवाले बिना महसूल दिये इंग्लिस्तान के साथ परदेसियों की भांति व्यापार न कर सकते थे। पिट ने इसलिये ऐरलैण्ड को व्यापार की स्वतंत्रता देने का प्रस्ताव किया जिससे उनकी दशा पहिले से अच्छी हो जाय परन्तु जो कुछ ऐरलैण्डवासियों को पाना चाहिये था उसै पिट न दे सका और ऐरलैण्ड की पार्लामेण्ट ने उसका प्रस्ताव स्वीकार न किया। ऐरलैण्ड को वह कहावत न सूझी कि भागे भूत की लंगोटी भली होती है। फ्रान्सीसी क्रान्ति के छिड़ने पर पिट ने भरपूर प्रयत्न किया कि ऐरलैण्ड के हित की कोई बात हो जाय। कैथोलिक लोग पार्लामेण्ट के सदस्य चुनने के लिये वोट दे सकते थे परन्तु इंग्लिस्तान की भांति अपने देश में भी सदस्य न हो सकते थे। अन्त को पिट ने लार्ड फ़िट्ज़ विलियम (Fitz William) को लार्ड लेफ़टेनेण्ट * (Lord Lieutenant) बना कर भेज दिया और उसको यह आज्ञा दी गई कि ऐरलैण्ड की पार्लामेण्ट में ऐसे क़ानून बनाने को कहै जिससे कैथोलिक लोग पार्लामेण्ट के सदस्य हो सकैं और सरकारी ओहदे पा सकैं। अभाग्यबस ऐरलैण्ड के कुछ प्रोटेस्टैण्ट इंग्लिस्तान पहुंचे और राजा से शिकायत की। जार्ज तृतीय के मन में यह समाई थी कि कैथोलिक लोगों को अधिकार देना बहुत बुरी बात है और उनको अख्तियार मिला तो प्रोटेस्टैण्ट धर्मसंघ की हानि करने में उसका प्रयोग करैंगे। इंग्लिस्तान में उसकी बहुतेरी प्रजा के भी यही विचार थे। पिट ने विवश हो कर फ़िट्ज़ विलियम को बुला लिया और कैथोलिक लोगों के हित की युक्ति उठा कर रख दी गई।

---

* यह पद ऐरलैंड में वैसाही है जैसे हिन्दूस्तान में बड़े लाट का है।

११।—<u>ऐरलैण्डवालों का बलवा</u>—ऐरलैण्ड के हित करने का पिट का पहिला उद्योग निष्फल होना बड़ी बुरी बात हुई। पिट अंगरेज़ी राजा और जनता दोनों से बढ़कर बुद्धिमान था। ऐरलैण्डवाले भी समझे हुये थे कि इंग्लिस्तान से भलाई की आशा करनी व्यर्थ है। ऐरलैण्ड के कुछ प्रोटेस्टैण्ट भी वहां कैथोलिकों का साथ देने को तैयार थे और सम्मिलित ऐरिश (United Irishmen) के नाम की समिति बनी। इन लोगों ने अपनी सहायता के लिये एक फ्रान्सीसी सेना और एक फ्रान्सीसी बेड़ा बुलवाया। बेड़ा और सेना दोनों पहुंच गये परन्तु सेना-नायक न आया। उसके साथ के यानासनवाले बैण्ट्री की खाड़ी (Bantry) में उसकी राह देखते रहे। इतने में आंधी आई और बेड़ा समुद्र में बह गया। एक भी फ्रान्सीसी सिपाही टापू में न उतरा। ई० १७९८ में ऐरलैण्डवासी बिगड़ गये। बलवाइयों ने बड़ा उपद्रव किया, घर जलाये, मनुष्य मार डाले। ऐरलैण्ड के प्रोटेस्टैण्ट जो अंगरेज़ी गवर्मेण्ट के पक्षपाती थे क्रूरता में बलवाइयों से घट कर न थे; जिसे पाते उसे निठुराई से मारडालते थे। देश की स्थिति ऐसी बिगड़ी जैसी लम्बी पार्लामेण्ट के समय में थी। बलवाइयों ने विनेगार पहाड़ी (Vinegar Hill) पर अपना डेरा डाला। परन्तु अंगरेज़ी सेना पहुंच गई और उनका डेरा ले लिया गया। दोनों ओर से बड़ी मार काट हुई और बलवाई दबा दिये गये। इसके पीछे बड़ा भयंकर हत्याकांड हुआ, सिपाहियों, अफ़सरों और हाकिमों ने जो चाहा सो किया। बलवाइयों से थोड़ा भी लगाव रखने के सन्देह पर ऐरलैंडवालों के साथ बड़ी निष्ठुरता की गई। एक हाकिम का नाम कोड़े मारनेवाला फ़िट्ज़जिरल्ड (Fitzgerald) था और वह उस उपाधि के योग्य भी था। इंग्लिस्तान की गवमेंण्ट यह दुष्ट व्यवहार देखना न चाहती थी।

पिट ने लार्ड कार्नवालिस को लार्ड लिफ़टेनैण्ट बना कर भेज दिया और उसने यह अत्याचार रोक दिया ।

१२ ।—ऐरलैण्ड के साथ मेल—ऐरलैण्ड इस समय दो दलों में बंटा हुआ था जो एक दूसरे के कट्टर वैरी थे । पिट ने इस बुरी स्थिति के अन्त करने का यह उपाय सोचा कि दोनों पार्लामेण्टों को एक करके ग्रेटब्रिटेन और ऐरलैण्ड मिला दिये जायं । इसी परिवर्त्तन के साथ साथ उसकी यह भी इच्छा थी कि ऐरलैण्ड के कैथोलिक लोग सरकारी ओहदे और पार्लामेण्ट की मेम्बरी भी पाने के अधिकारी हो जायं । ऐरलैण्ड की पार्लामेण्ट ने इस मिलाप को न माना । परन्तु बहुतेरे सदस्य अपने वोटों के लिये धन या ओहदे लेने को तैयार थे और पिट ने उनके वोट मोल ले लिये और पार्लामेण्टें मिल गईं, परन्तु कैथोलिक लोगों के हित की युक्ति की बात उठी तो राजा ने उस परिवर्त्तन करने की आज्ञा न दी । इस पर पिट ने इस्तीफ़ा दे दिया । अंगरेज़ी जनता राजा के पक्ष में थी और पिट भी कुछ न कर सका ।

१३ ।—एडिंग्टन (Addington) का मंत्रित्व और अमीन्स (Amiens) की सन्धि—पिट के पीछे एडिंग्टन प्रधान मंत्री हुआ । उसके विचार अच्छे थे परन्तु वह बड़ा बुद्धिमान न था । पिट के इस्तीफ़ा देने से पहिले बड़े बड़े परिवर्त्तन हो चुके थे । जब बोनापार्ट मिस्र में था, यूरप महाद्वीप में फिर लड़ाई छिड़ गई थी और रूस और आस्ट्रिया ने मिलकर फ़्रान्स की सेना को परास्त कर दिया था । बोनापार्ट मिस्र से फ़्रान्स लौट गया और अपनी सेना की सहायता से उसने उन सभाओं को निकाल दिया जो देश का शासन करती थीं । उसने फ़्रान्स की जनता को शासन की ऐसी युक्ति बताई जिसका नेपोलियन आप पहिले

कान्सल (First Consul) के नाम से नायक हो। यह युक्ति सब ने मान ली और तब से फ़्रान्सवालों ने नेपोलियन को अपने ऊपर शासन करने का पूरा अधिकार दे दिया और उसने जो चाहा सो किया। वह सेना लेकर इटली पहुंचा और वहां उसने आस्ट्रियावालों को हरा कर एक सन्धि की जिससे फ़्रान्सराज्य राइन (Rhine) नदी तक हो गया। इस समय इंग्लिस्तान अकेला फ़्रान्स से लड़ रहा था। वाल्टिक समुद्रतट के छोटे छोटे राज्य भी अंगरेज़ों से लड़ने की तैयारी कर रहे थे क्योंकि अंगरेज़ी जंगी जहाज़ों ने उनके व्यापारी जहाज़ यह जांचने को रोक लिये थे कि उनमें फ़्रान्सीसी गवर्मेण्ट के लिये कोई माल तो नहीं है। इस से स्थिति और भी बिगड़ गई। जलसेनापति हैड पार्कर (Hyde Parker) एक जंगी वेड़े के साथ वाल्टिक सागर में भेजा गया। नेलसन उसके नीचे अफ़सर था। जब वेड़ा कोपनहैगन पहुंचा तो हैड ने नेलसन को आज्ञा दे दी कि डेनी वेड़े पर आक्रमण कर दो। इस घटना का वर्णन कवि कैम्बेल (Campbell) ने यों किया है। (अनुवाद):—

नेलसन का और उत्तरपथ का
संगर आज वखानेंगे।
विजयकीर्ति जिसने पाई थी
उसै यशस्वी मानेंगे॥
डेनमार्क के वली पोत जब
जल में लड़ने आये थे।
एक एक में प्रवल भुसुंडी
गोले भरे सजाये थे॥
लिये फ़लीते हाथ सुलगते
गुलन्दाज़ थे पास खड़े।

पानी में झलमला रहे थे
डेनराज के चिह्न जड़े ॥
उनके उत्साहित करने को
उनका नायक राजकुमार ।
उनके बीच प्रधान पोत पर
वीरभाव से रहा सवार ॥
जल में डेनमार्क के चलते
अस्त्र शस्त्र लिये पोत महान ।
सूं सूं करते जी डरपाते
महाकाय जलजन्तु समान ॥
ऊंचे अंगरेज़ी जहाज़ पर
हुआ लड़ाई का संकेत ।
दसवीं थी अप्रैल मास की
बढ़े युद्ध करने के हेत ॥
थोड़ी बेर वहां सन्नाटा
बेड़े भर में छाया था ।
सांस रोक कर वीर खड़े, ज्यों
यम ने उन्हें दबाया था ॥

कई घंटों तक भयंकर युद्ध हुआ । डेनमार्कवाले बड़ी वीरता से लड़े । सेनापति पार्कर दूर खड़ा था । उसने समझा कि डेनों का जीतना कठिन है । उसने झंडा उठा कर नेलसन को संकेत किया कि लड़ाई बन्द कर दी जाय । कई बरस पहिले नेलसन की एक आंख जाती रही थी । उसने उसी फूटी आंख में दूरबीन लगाया और कहने लगा कि हमने संकेत नहीं देखा और अपने जहाज़ों को हुकुम दिया कि लड़ाई जारी रहै ।

बार बार और बार बार
बैरी पर बरसे थे गोले ।

हम लोगों के चिल्लाने पर
डेन बहुत धीरे बोले ॥
उनकी एक तोप कुछ गरजी
पीछे सो भी बन्द हुई ।
पालें फटीं लगीं सब जलने
तुरत लड़ाई बन्द हुई ॥
उन्हें टेर कर विजयी बोला
"आओ, हम सब हैं भाई ।
"इस जय का उद्देश यही है
इसी लिये कीरति पाई ॥
"कुशल छेम से सुखी रहैं सब
सब का सदा होय कल्यान ।
"तुम ने जो परन्तु भ्रम में पड़
हमसे व्यर्थ किया अभिमान ॥
"इसका प्रायश्चित्त यही है
अपना बेड़ा साथ लिये ।
"गर्व छोड़ कर हाथ जोड़ कर
महादीन का भाव किये ॥
"साथ हमारे होकर झटपट
चलो हमारे विजयी देश ।
"पावं पड़ो राजा के बोलो
"जय जय इंग्लिस्तान-नरेश" ॥

नेलसन ने घायलों को समुद्रतट पर पहुंचा दिया और युवराज से जो अपने बाप की ओर से देश का शासन करता था, बोला, "हम इसै अपनी बड़ी जीत जब समझैंगे जो इससे डेनमार्क और इंग्लिस्तान में मित्रता हो जाय।" जब नेलसन डेनमार्क में उतरा

तो लोगों ने घायलों पर कृपा करने से प्रसन्न हो कर उसका स्वागत किया ।

१४ ।—मिस्र में शासन और अमीन्स की सन्धि—इधर कोपेनहैगन की लड़ाई हो रही थी, उधर उन फ्रान्सीसियों को मिस्र से निकालने के लिये जिन्हें बोनापार्ट वहां छोड़ आया था एक सेना भेजी गई थी । फ्रान्सीसी परास्त हुये और अपने देश भेज दिये गये । उसके थोड़ेही दिन पीछे ई० १८०२ में अमीन्स में इंग्लिस्तान और फ्रान्स के बीच में एक सन्धि हुई जिससे कुछ दिनों तक लड़ाई बन्द रही ।

## ॥ अध्याय ४० ॥

### * अमीन्स की सन्धि से प्रायद्वीप की लड़ाई के आरम्भ तक *

### (ई० १८०२ से १८०८ तक)

१ ।—अमीन्स की सन्धि का अन्त—अमीन्स की सन्धि बहुत दिनों तक न रही । बोनापार्ट फ्रान्स पर और उन देशों पर जो उसने फ्रान्स में मिला लिये थे शासन करने से सन्तुष्ट न था । उसने इटली का एक भाग ले लिया, स्विट्ज़रलैण्ड में सेना भेजी और हालैण्ड पर भी हस्तक्षेप किया । अंगरेज़ी गवर्मेण्ट ने नैटों (Knights)* को माल्टाद्वीप लौटा देने की प्रतिज्ञा की थी परन्तु अब कहने लगा कि जब तक फ्रान्सीसी और देसों पर हस्तक्षेप करना न छोड़ देंगे माल्टा न दिया जायगा । बोनापार्ट बहुत बिगड़ा और अंगरेज़ी राजदूत को फटकार दिया । लड़ाई फिर छिड़ गई ।

* माल्टा द्वीप बहुत दिनों से नैटस टेम्पलर्स (Knights Templars) के आधीन था ।

२ ।—इंग्लिस्तान पर आक्रमण करने का विचार—अमीन्स की सन्धि से पहिले इंग्लिस्तान के बहुत लोग फ़ान्स से लड़ना न चाहते थे । परन्तु अब बोनापार्ट को सब बुरा कहने लगे । दस हज़ार अंगरेज़ फ़ान्स में सैर करने गये थे । बोनापार्ट ने उन्हें पकड़ लिया और बरसों तक क़ैद रक्खा । फिर वह इंग्लिस्तान पर आक्रमण करने की तैयारी करने लगा । इस पर इंग्लिस्तान के सब छोटे बड़े उसको रोकने के लिये तैयार हो गये । लंदन के व्यापारी और उद्यमी अपने देश की रक्षा के लिये जो कुछ उनसे हो सकता था सब करने की इच्छा प्रकट करने लगे और गवर्मेण्ट की सहायता करने की उत्सुकता सारे देश में फैल गई । जब बुलोन (Boulogne) में फ़ान्सीसी सेना इकट्ठी होने का समाचार मिला और यह सुना गया कि उन्हें डोवर जलसंयोजक पार करने के लिये नावें बन रही हैं तो अपने घरों की रक्षा करने को साठ हज़ार वलुमटेर उठ खड़े हुये । दो चार अठवारों में इनकी संख्या तीन लाख हो गई । और कुछ दिन बीतने पर तीन लाख अस्सी हज़ार हुई । बोनापार्ट अपनी सेना देखने को बुलोन पहुंचा । वहां से उसने चैनल को देखकर कहा अजी हमलोग साहस करें तो यह नाली फांद सकते हैं । परन्तु उसने अपने सिपाही नावों पर लाद कर समुद्र पार बिना उनकी रक्षा का प्रबन्ध किये न भेजे । उसने चैनल में एक जंगी बेड़ा रखने की युक्ति सोची थी । इधर अंगरेज़ी वलुमटेर भी क़वायद सीखने में व्यग्र थे । राजा ने अपनी लंदन की पल्टनें हाइडपार्क (Hyde Park) में देखीं । पिट भी वलुमटेरों का अफ़सर बना और बड़ी सावधानी से उनको युद्ध के काम का अभ्यास कराता रहा ।

३ ।—पिट का दूसरा मंत्रित्व—इस स्थिति में यह स्वाभाविक बात थी कि अडिंग्टन से बढ़कर बली प्रधान मंत्री बनाने की

इच्छा देश में उत्पन्न हो जाय। अडिंग्टन ने इस्तीफ़ा दे दिया और राजा ने पिट को बुलाया। पिट ने यह प्रस्ताव किया कि मंत्रिमंडली में दोनों दल के अच्छे से अच्छे योग्य पुरुष हों। इंग्लिस्तान को आक्रमण से बचाने के लिये ह्विग और टोरी दोनो एक भाव से तैयार थे तो दोनों मिलकर क्यों न काम करते। पिट ने कहा कि फ़ाक्स भी एक मन्त्री बनाया जाय। फ़ाक्स पिट का कट्टर बैरी था परन्तु पिट उससे मेल करने को तैयार था। राजा फ़ाक्स को रखना न चाहता क्यों कि संश्लिष्ट मंत्रिमंडली में नार्थ का साथ देने के लिये राजा ने उसका अपराध क्षमा न किया था। परन्तु फ़ाक्स न आया तो जो लोग पिछली मंत्रिमंडली में पिट के साथ थे उन्होंने अब काम करना स्वीकार न किया। इन में एक लार्ड ग्रेनविल (Grenville) था। पिट ने कहा "हम उस अभिमानी को दिखा देंगे कि उसके बिना हमारा काम चल सकता है।" पिट प्रधान मंत्री हो गया परन्तु उसे और ओहदे ऐसों को देने पड़े जो उनके योग्य न थे।

४।—<u>इंग्लिस्तान पर चढ़ाई करने के लिये नेपोलियन की युक्ति</u>—पिट के प्रधानमंत्री होने के थोड़े ही दिन पीछे नेपोलियन ने अपनी उपाधि बदल दी और फ़्रान्स का सम्राट् हो गया। पोप उसके सिर पर मुकुट रखने को पैरिस आया। नेपोलियन ने मुकुट अपने हाथ में ले लिया और आप अपने सिर पर रक्खा। चैनल में जंगी बेड़ा लाने की युक्ति भी ठीक हो गई। उसने स्पेनराज से कहलाया कि इंग्लिस्तान के साथ युद्ध करने में हमारा साथ दो। नेपोलियन के हुकुम से एक फ़्रान्सीसी बेड़ा टुलोन से निकला और जिब्राल्टर जलसंयोजक पार करता हुआ केडिज़ पहुंचा और वहां से एक स्पेनी बेड़े को साथ लेकर वेस्ट इंडीज़ की ओर बढ़ा। नेपोलियन को यह आशा थी कि अंगरेज़ी

बेड़ा चटपट उसके पीछे जायगा और अपना समय नष्ट करेगा और फ्रान्सीसी और स्पेनी बेड़े यूरप को लौटकर ब्रेस्ट (Brest) के पास एक दूसरे फ्रान्सीसी बेड़े से मिल जायंगे। फिर सब चैनल में पहुंच जायंगे और जब तक नेपोलियन की सेना इंग्लिस्तान में उतरैगी, उसकी रक्षा करैंगे। उसकी पहिली आशा पूरी हुई। नेलसन केवल तेरह जहाज़ लेकर वैरी के तीस जहाज़ों का पीछा करने को अटलाण्टिक पार पहुंच गया। जब उसने सुना कि वैरी वेस्ट इण्डीज़ से लौट आया तो उनके पीछे वह भी लौटा। नेलसन तो उनको पकड़ न सका परन्तु एक और अंगरेज़ी जलसेनापति पन्द्रह जहाज़ों का बेड़ा लिये हुये उससे भिड़ गया। दो स्पेनी जहाज़ पकड़ लिये गये और उनके मन में ऐसा डर समा गया कि बचे बचाये जहाज़ केडिज़ को भाग गये और फिर चैनल के पास न फटके।

५।—ट्राफ़लगार (Trafalgar) की लड़ाई—नेपोलियन निरास हो गया। उसने यह समझा कि उसका जलसेनापति कायर है इससे प्रयत्न निष्फल हुआ और उसको हुकुम दिया कि फिर वहीं जाओ। बेचारे जल-सेनापति ने सम्राट् को विश्वास दिलाया कि "मैं फिर हार जाऊंगा। मेरे मांझी बहुत दिनों से बन्दरगाह में पड़े रहे हैं और लहराते समुद्र में जहाज़ संभालने का उनको इतना अभ्यास नहीं है जितना अंगरेज़ी मांझियों को है।" नेपोलियन ने एक न माना और सेनापति उदास होकर चला गया। ट्राफ़लगार अन्तरीप के पास नेलसन उससे भिड़ गया। उसने अपने जहाज़ों पर एक फलक लगवाया जिसपर यह लिखा था "इंग्लिस्तान को यह आशा है कि सबलोग अपना कर्त्तव्य पालन करैं।" फ्रान्सीसी और स्पेनी दोनों जी तोड़ कर लड़े परन्तु शिक्षित अंगरेज़ी सिपाहियों के आगे ठहर न सकने

थे। नेलसन को एक फ़्रान्सीसी ने जहाज़ की रस्सी पर से गोली मार दी। उसे लोग मरने को नीचे उठा ले गये। वैरी का बेड़ा नष्ट हो गया। जब तक इंग्लिस्तान और फ़्रान्स में लड़ाई जारी रही फिर कभी फ़्रान्सीसी और स्पेनी जलयुद्ध करने न निकले। इंग्लिस्तान में नेलसन पर लोगों का इतना प्रेम था कि जब लोगों को उसके मरने का समाचार मिला तो विजय का आनन्द इतना न हुआ जितना उसके मरने का शोक मनाया गया। इंग्लिस्तान के ट्राफ़लगर की लड़ाई ऐसी हुई जिसको क्रास्वेल "ईश्वर की बड़ी दया" कहता। यूरपी बेड़े से फिर अंगरेज़ी बेड़े को लड़ाई लड़नी न पड़ी। हमारे पुरखे इसीलिये लड़े और मरे थे कि इंग्लिस्तान पराधीन न हो और अजेय रहै।

६।—पिट के अन्तिम दिन—इंग्लिस्तान के सब से बड़े जलसेनानायक के मरने के थोड़े ही दिन पीछे उसका सब से बड़ा नीतिज्ञ भी मर गया। नेपोलियन ने जब जाना कि इंग्लिस्तान पर चढ़ाई नहीं हो सकती तो वह अपनी सेना रूस और आस्ट्रिया पर आक्रमण करने को ले गया। उसने उल्म (Ulm) में आस्ट्रिया की एक सेना को आत्मसमर्पण करने के लिये बाध्य किया, विजय पताका फहराता वेइना (Vienna) में प्रवेश किया, और सम्मिलित रूसी और आस्ट्रियन सेना को आस्टरलिट्ज़ (Austerlitz) में परास्त करके आस्ट्रियावालों को सन्धि करने के लिये बाध्य किया। पिट को इस संघट्टन से बड़ी आशा थी। उसका स्वास्थ्य अब पहिले का सा न था। इस समाचार से उसके हृदय पर बड़ी चोट लगी और ई० १८०१ के जनवरी महीने में वह मर गया।

७।—सब दलों के बुद्धिमानों की मंत्रिमंडली—सब दलों की मंत्रिमंडली जिसकी पिट को बड़ी लालसा थी उसके मरने पर

बनी। राजा ने फ़ाक्स को मंत्री बनाने की अनुमति दे दी। लार्ड ग्रेनविल प्रधानमन्त्री बनाया गया। इस गवर्मेण्ट का नाम 'सब बुद्धिमानों की मंत्रिमंडली' है। यह मंत्रित्व बहुत दिनों तक न रहा परन्तु इसने एक बड़ा काम कर डाला। जहां तक कि इंग्लिस्तान का लगाव था दास-व्यापार उठा दिया गया जिसको पिट और विल्बफ़ोर्स दोनों ने बुरा कहा था। पिट के कुछ महीने पीछे फ़ाक्स भी मर गया परन्तु उसने अपने जीते जी जान लिया कि अब अंगरेज़ी जहाज़ अटलाण्टिक पार काले दास न ले जायंगे। और मंत्रियों को सफलता न हुई। नेपोलियन प्रशिया से लड़ा और उसकी जय हुई जिससे सारा प्रशिया उसके आधीन हो गया। फिर उसने रूस पर चढ़ाई कर दी। कुछ दिनों तक उसके विजयी होने में सन्देह रहा। रूसियों ने इंग्लिस्तान से सहायता मांगी परन्तु यहां मंत्रियों ने व्यर्थ यानासनों में सेना भेज दी थी और रूस को कोई सहायता न पहुंच सकी। रूसी सेना की हार हो गई और रूसी सम्राट् ने तुरन्त नेपोलियन के साथ सन्धि करली। यह सन्धि टिलसिट (Tilsit) की सन्धि कहलाती है। परन्तु इससे पहिले ही सब बुद्धिमानों की मंत्रिमंडली निकल गई थी। स्थलसेना और जलसेना में कैथोलिक लोगों को ओहदे देने का प्रस्ताव किया गया था। राजा ने इसे न माना और मंत्रियों से कहा कि तुमलोग प्रतिज्ञा करो कि कभी कैथोलिक सम्प्रदायवालों के लिये कोई प्रस्ताव न करेंगे। मंत्रियों ने उसे स्वीकार न किया तब राजा ने उनको निकाल दिया।

८।—टिलसिट की सन्धि के पीछे यूरप महाद्वीप की दशा—दूसरी मंत्रिमंडली का मुखिया ड्यूक पोर्टलैण्ड (Duke of Portland) एक रोगी था। इससे वास्तव में मिस्टर पार्सिवाल (Perceval) उसका मुखिया था। पार्सिवाल ने

निश्चय कर लिया था कि कैथोलिक लोगों को कोई ओहदा न दिया जायगा। अंगरेज़ी जनता भी उससे इस बात में सहमत थी इससे उसने जो चाहा, किया। नये मंत्रियों में एक जार्ज कैनिंग (George Canning) था। कैनिंग पिट को बहुत मानता था। उसने इस बात का दृढ़ संकल्प कर लिया था कि नेपोलियन की शक्ति दबाने के लिये भरपूर उद्योग किया जायगा। नेपोलियन ने रूस के साथ सन्धि कर ली थी। इससे महाद्वीप भर में कोई बोल न सकता था, उसने जो चाहा सो किया, जिसको चाहा सिंहासन से उतार दिया, जिसे चाहा राजा बनाया और जिस देश को जीता उसके रहनेवालों को दबा कर उनसे बहुत सा धन ले लिया। उसे इंग्लिस्तान पर आक्रमण करने की आशा न रही थी इसलिये उसने उसके व्यापार को नष्ट करके उसे दबाना चाहा। उसने यह आज्ञा दी कि जहां तक फ़्रान्स का अधिकार है (और यह अधिकार रूस के सिवाने तक फैला हुआ था) कोई अंगरेज़ी जहाज़ों का लाया हुआ माल न ले। परन्तु अंगरेज़ी जहाज़ सबसे अच्छे थे इससे यूरप के पश्चिम और मध्य के रहनेवाले समुद्रपार का माल अंगरेज़ों ही के जहाज़ों के लाने से पा सकते थे, क्योंकि अंगरेज़ी जहाज़ उनके जहाज़ों को रोक लेते थे। इन देशों में चाय, क़हवा, शक्कर और रुई आदि वस्तु न पहुंच सकीं और बहुत मंहगी हो गईं। अंगरेज़ी सौदागरों ने उन्हें चुरा छिपाकर पहुंचाना चाहा और नेपोलियन के कर्मचारियों ने देख लिया तो उनको पकड़ा। परिणाम यह हुआ कि राजा और बड़े बड़े लोग नेपोलियन से बुरा मानते ही थे साधारण जनता उससे और रुष्ट हो गई। जिस ग़रीब ने देखा कि एक प्याला क़हवा या एक कुरते के लिये जो दाम वह पहिले दिया करता था उससे अधिक देना पड़ता है तो वह नेपोलियन को कोसने लगा। यह घृणा अनेक देशों में फैली और कई बरस

जीतने न पाये कि यूरप के करोड़ों रहनेवाले नेपोलियन के विरुद्ध उठ खड़े हुये और उसे नीचे गिरा दिया ।

६ ।—डेनी बेड़े का पकड़ा जाना—डेनी बेड़ा बहुत अच्छा था नेपोलियन की एक युक्ति यह भी थी कि डेनी बेड़े को पकड़ कर इंग्लिस्तान पर चढ़ाई करने को भेज दें । कैनिंग ने सुना तो तुरंत सेना भर कर एक बेड़ा कोपेनहैगन ( Copenhagen ) को भेज दिया । अंगरेज़ी बेड़े ने पहुंचते ही राजा के बड़े बेटे से कहला भेजा कि अपना बेड़ा हमारे हवाले कर दो । लड़ाई समाप्त होने पर तुमको लौटा दिया जायगा । राजकुमार ने न माना और कोपेनहैगन पर आक्रमण कर दिया गया । डेन अपने जहाज़ देने को बाध्य हो गये । नेपोलियन बहुत बिगड़ा । उसकी समझ में न आया कि कैनिंग ने उसका भेद कैसे जाना । इंग्लिस्तान के बहुत लोगों को इस बात का ज्ञान न था जो कैनिंग जान गया था और उससे रुष्ट हो गये और कहने लगे कि डेन लोगों से उनका बेड़ा छीन लेना बड़ा अन्याय है । जब बेड़ा लौटा तो जो मनुष्य राजकुमार के पास सन्देसा ले गया उससे जार्ज तृतीय ने पूछा कि राजकुमार तुमसे मिला तो कोठे पर था या नीचे । उसने उत्तर दिया, "श्रीमान्, राजकुमार नीचे था" । राजा ने कहा, "तुम्हारे लिये बहुत अच्छा हुआ क्योंकि उसमें हमारा आधा तेज होता तो तुम्हें लात मार कर नीचे गिरा देता ।"

## ॥ अध्याय ४१ ॥

### * प्रायद्वीप की लड़ाई के आरम्भ से पैरिस की सन्धि तक *

### ( ई० १८०८ से १८१४ तक )

१ ।—स्पेन और पुर्तगाल—इतनी जीतों पर भी नेपोलियन को सन्तोष न हुआ । उसकी सेना अभीतक पिरनीस

(Pyrenees) के उस पार न गई थी और शान्त रहना उसे रुचता ही न था। पहिले उसने पुर्त्तगाल से छेड़ छाड़ की और एक सेना भेज कर लिस्बन (Lisbon) नगर लेलिया और स्पेन लेने का अवसर ताकने लगा। संयोगबस स्पेनराज और उसके बेटे फ़र्डिनण्ड (Ferdinand) में अनबन हो गई। नेपोलियन ने इस बहाने से कि दोनों में मेल करा दिया जायगा, दोनों को बेयोन (Bayonne) में बुलाया। जब दोनों आ गये तो उसने राजा से तो कहा कि राज छोड़ दो और बेटे को बन्दी करके फ़ान्स के सुदूर प्रान्त में भेज दिया। फिर अपने भाई जोज़फ़ (Joseph) को स्पेन का राजा बना कर भेजा। इस बर्त्ताव से स्पेनवालों को बड़ी घृणा हो गई और बलवा करके उन्हों ने फ़र्डिनण्ड को राजा मानकर घोषणा कर दी। इंग्लिस्तान से सहायता मांगने को भी दूत भेजे। कैनिंग ने तुरन्त उनकी सहायता करना स्वीकार किया और तोपें बारूद और बहुतसा धन भेज दिया। सर आर्थर वेलेज़ली (Sir Arthur Wellesley) की कमान में एक सेना भी पुर्त्तगाल भेजी गई। यही वेलेज़ली पीछे से ड्यूक वेलिङ्गटन् (Duke of Wellington) हो गया था। उसने हिन्दुस्तान में अच्छी लड़ाइयां लड़ी थीं परन्तु उस समय यह कोई न जानता था कि कितना बड़ा वीर है। यह लड़ाई ई० १८०८ में छिड़ी और प्रायद्वीप की लड़ाई के नाम से प्रसिद्ध है क्योंकि उस प्रायद्वीप में लड़ी गई थी जो स्पेन और पुर्त्तगाल दो देशों से मिल कर बना है। वेलेज़ली ने पुर्त्तगाल के अन्तर्गत विमियेरा (Vimiero) में फ़ान्सीसियों को परास्त करके उन्हें लिस्बन से भगा दिया। इसपर ऐसा समझौता किया गया कि फ़ान्स की सेना पुर्त्तगाल छोड़ कर अपने देश को चली जाय। वेलेज़ली इंग्लिस्तान को लौट गया और उसकी सेना का एक अंश यहीं रह गया। उन्हीं दिनों बेलन (Baylen) में जो स्पेन

के दक्षिण में है, एक फ्रान्सीसी सेना ने स्पेनवालों को आत्म-समर्पण कर दिया। स्पेनवाले समझे कि उनकी विपत्ति का अन्त हो गया।

२।—स्पेन में नेपोलियन—परन्तु अभी स्पेन के दुख का अन्त न हुआ था। एक एक स्पेनवासी अपने देश के लिये लड़ने मरने को तैयार था परन्तु एक जगह जमकर लड़ाई न लड़ते थे। उन्हों ने क़वायद न सीखी थी और अपने सेनानायकों का विश्वास न करते थे। सेनानायक भी विश्वास करने के योग्य न थे। वह लोग समझते थे कि लड़ाई जीत लेना खेल है और जीतने का उद्योग न करते थे। परिणाम यह होता था कि लड़ाई में पिट जाते थे। नेपोलियन ने ज्यों ही सुना कि फ्रान्सीसी सिपाही क़ैद हो गये, उसने आप स्पेन जाना निश्चय कर लिया और एक सेना लेकर स्पेन पहुंच गया। वहां स्पेनवालों को परास्त करके जयध्वजा फहराता हुआ मैड्रिड गया। अंगरेज़ी सेनापति सर जान मूर (Sir John Moore) स्पेन के दक्षिण से बढ़ा आ रहा था। उसे यह आशा थी कि फ्रान्सीसियों से लड़ने को स्पेनवाले भी उससे मिल जायंगे परन्तु स्पेनी न मिले। जब मूर सहगुन (Sahagun) पहुंचा तो उसको यह समाचार मिला कि नेपोलियन उससे लड़ने को एक बहुत बड़ी सेना लिये बढ़ा आ रहा है। सर जान मूर हट गया। नेपोलियन भी अंगरेज़ों का पीछा करने को एक सेनापति छोड़कर फ्रान्स को चला गया।

३।—कोरुना (Corunna) की लड़ाई—सर जान मूर ज्यों त्यों करके कोरुना पहुंचा। वह समझा था कि वहां अंगरेज़ी बेड़ा मिल जायगा जिसपर उसकी सेना सवार हो जायगी। परन्तु एक भूल हो गई थी और बेड़ा ईले बन्दरगाह को चलागया

था। जब तक बेड़ा लौटै, फ़ान्सीसी सेना पहुंच गई और उसको हटाने के लिये एक लड़ाई लड़नी पड़ी जिससे कि हारे मांदे सिपाही कुशल से जहाज़ों पर चढ़ जायं। फ़ान्सीसी हार गये पर अंगरेज़ी वीर सेनापति मारा गया और उसके दुखी साथियों ने उसे रणभूमि ही में गाड़ दिया। उल्फ़ कवि ने उसका बड़ा रोचक वर्णन किया है (अनुवाद)—

समर भूमि में घायल होकर
जब मर गया हमारा वीर।
बजा न बाजा, कोट पास जब
ले गये उसका मृतक शरीर॥
उसको गाड़ा जब समाधि में,
दागी गई नहीं गोली।
सन्नाटे में अर्धरात्रि के
थी उदास सारी टोली॥
रात अंधेरी थी हिलता था
नहीं नाम को भी पत्ता।
संगीनों से झटपट हमने
खोद लिया छिछला खत्ता॥
कुहरे में छन छन कर शशि की
कुछ कुछ किरनें आती थीं।
कन्दीलें भी हमलोगों की
टिमटिमाय बुझ जाती थीं॥
नहीं व्यर्थ ताबूत बना औ,
न था कफ़न का भी कुछ काम।
पहिने कवच वीर वह अपना
करता था मानो विश्राम॥

ईश्वर की थोड़ी बिनती की,
दुख न सोच की बात कही ।
देख वीर का मुख सब के मन
कल की चिन्ता छाय रही ॥
तकिया सी मिट्टी सँवार के
जब खोदी थी उसकी गोर ।
सोचे, हाय ! चलैंगे इसपर
चढ़ चढ़ कर मानुस औ ढोर ॥
आधा ही यह काम हुआ था
हटने की घंटी बाजी ।
सुनी दूर की तोप चौंक कर
आता है बैरी पाजी ॥
धीरे धीरे गोर में उसका
घायल लोहू लगा शरीर ।
रखकर तोप दिया मिट्टी से,
थे हम सब के चित्त अधीर ॥
वहां न कोई लेख खुदा था
पत्थर भी ना खड़ा रहा ।*
विजयकीर्ति सँग वीर हमारा
वहीं अकेला पड़ा रहा ॥

४।—ओपोर्टो (Oporto) और टालावेरा (Talavera)—दूसरे बरस वेलेज़ली फिर एक नई सेना के साथ पुर्तगाल भेजा गया। वह लिस्बन में उतरकर झटपट ओपोर्टो पहुंचा और वहांसे उसने फ़ान्सीसियों को निकाल दिया। ओपोर्टो से

* अंगरेज़ी कृबरों के सिरहाने एक पत्थर खड़ा किया जाता है जिसपर क्रूश बना रहता है ।

मैड्रिड की ओर चला। टालावेरा में उसे फ्रान्सीसी सेना मिली। वेलेज़ली के साथ अंगरेज़ी सेना के अतिरिक्त एक बहुत बड़ी स्पेनी सेना भी थी परन्तु स्पेनवाले उससे जलते थे और लड़ना न चाहते थे। अंगरेज़ी सिपाहियों को सब कुछ आप करना पड़ा और उनकी जय हुई। स्पेनवालों ने उनकी मदद न की। बहुत दिन न बीते थे कि और भी फ्रान्सीसी पल्टनें पहुंच गईं और वेलेज़ली जो विजयी होने पर लार्ड वेलिंग्टन बना दिया गया था, पुर्तगाल को लौट गया। उस समय ऐसा जान पड़ता था कि सारी लड़ाई व्यर्थ हुई परन्तु इससे एक बड़ा लाभ हुआ। वेलिंग्टन सीख गया कि स्पेनवालों का विश्वास न करना चाहिये और उस दिन से उनकी प्रतिज्ञा की भी प्रतीत न की और न कहीं उनके कहने से गया।

५।—<u>वालचेरन (Walcheren)</u>—इस समय नेपोलियन आस्ट्रिया के साथ एक और युद्ध में लगा हुआ था। उत्तर जर्मनी के रहनेवाले उसके अत्याचार से दुखी होकर उससे लड़ना चाहते थे परन्तु उसकी सेना प्रबल थी और उसने उनके सुदृढ़ दुर्गों में फ्रान्सीसी सिपाही भर दिये थे। अंगरेज़ी गवर्मेण्ट के पास एक सेना थी और यह सेना उत्तर जर्मनी को भेज दी जाती तो जर्मनों को बड़ी सहायता मिल जाती। परन्तु लार्ड कैसलरी (Castlereagh) युद्ध-मंत्री ने उसे ऐण्ट्वर्प पर आक्रमण करने के लिये शेल्ट (Scheldt) नदी में भेज दिया और चैथम महा-मंत्री का बेटा लार्ड चैथम उसका नायक बनाया गया। वह न योद्धा था न बुद्धिमान था। जलसेना की कमान सर रिचर्ड स्ट्रेहन (Sir Richard Strahan) को मिली। जल सेनापति सीधा ऐण्ट्वर्प तो न गया, नदी के मुहाने पर ठहर कर वाल-चेरन टापू में अपनी सेना उतार दी। चारों ओर से फ्रान्सीसी

सिपाही ऐण्ट्वर्प पहुंच गये और उसे ऐसा दृढ़ सुरक्षित कर दिया कि उसे कोई ले न सके। वालचेरन एक नीचा चौरस टापू है। अंगरेज़ी सेना में ज्वर फैल गया और बहुतेरे सैनिक मर गये। अन्त को सब लोग बिना कुछ किये ही लौट आये और जनता ने सारा दोष जलसेनापति और स्थलसेनापति के मत्थे मढ़ा। एक चतुर कवि ने लिखा है:—

चैथम जी तलवार निकाले
देखैं इस्ट्रेहन की राह।
वैरी पर चढ़ने इस्ट्रेहन
चैथम पर थे किये निगाह।

६।—स्पेन में वेलिंग्टन की कठिनाइयां—वेलिंग्टन को स्पेन में बड़ी कठिनाइयां पड़ीं। फ़ान्सीसियों की भारी सेना से लड़ने को उसके पास बहुत थोड़े सैनिक थे। फ़ान्स की सारी सेनायें मिल जातीं तो उसे स्पेन प्रायद्वीप से निकाल देतीं। परन्तु वह निरास न हुआ। उसको अपने युद्धकौशल का भरोसा था और यह भी जानता था कि धर्म हमारे पक्ष में है। वह जानता था कि नेपोलियन बड़ा दुष्ट और अत्याचारी है और उसकी क्रूरता एक न एक दिन सारे यूरप को उससे लड़ने के लिये खड़ा कर देगी। वह यह नहीं कह सकता था कि वह दिन कब आयेगा, परन्तु वह यह जानता था कि उस दिन का आसरा देखना अपना कर्तव्य है। स्पेन में फ़ान्सीसी सेना बहुत थी परन्तु संकट में थी। स्पेनवाले बड़ी लड़ाई न लड़ सकते थे परन्तु बन्दूक़ हाथ में लिये छोटी छोटी टोलियां बनाये फिरते थे और जहां कहीं थोड़े से फ़ान्सीसी देख पड़ते उन पर गोली चलाते थे। स्पेन में बहुत से फ़ान्सीसी सेनापति भी थे जो नेपोलियन के बनाये स्पेन के राजा जोज़फ़ की अवहेलना करते

क्यों कि वह योद्धा न था और उसका कहना न मानते थे। वहलोग एक दूसरे से जलते और एक दूसरे की मदद न करते थे। उन्हें यह डर लगा रहता था कि जय होने पर कहीं दूसरे का नाम न हो जाय। इससे वेलिंग्टन को बड़ी सहायता मिली क्योंकि उसके सामने दो फ्रान्सीसी सेनापति आते तो वह जान लेता था कि दोनों में मत भेद रहैगा। परन्तु इंग्लिस्तान के मंत्रियों ने वेलिंग्टन के साथ जो बर्त्ताव किया वह उसके वैरियों के विरोध से भी विशेष दुखदायी था। कैनिङ्ग मंत्री न रह गया था और मिस्टर पर्सिवाल (Perceval) प्रधान मंत्री हो गया था। मंत्रियों ने सोचा कि वेलिंग्टन के लिये स्पेन जीत लेना असम्भव है और सदा यही सोचा करते थे कि उसै घर बुलालें। इतने पर भी उसै बहुत धीर रहने की आवश्यकता थी। वह वाशिंग्टन की भांति धीर था और इसी धीरता के कारण न कि उसके युद्धकौशल से अन्त में उसकी जीत हुई।

७।—टॉरेस वेडरास (Torres Vedras)—जिस साल टलावेरा का युद्ध हुआ था उसी साल नेपोलियन ने आस्ट्रिया-वालों को परास्त किया। वह दूसरी गर्मी में प्रायद्वीप न गया परन्तु उसने सब से अच्छे सेनापति मसेना (Massena) को भेज दिया कि अंगरेज़ों को देश से निकाल दे। वेलिंग्टन जानता था कि मसेना से लड़ने के लिये सेना कम है परन्तु बहुत से पुर्तगालवाले अंगरेज़ी अफ़सरों की कमान में रख लिये गये थे और बहुत अच्छे योद्धा थे। वेलिंग्टन ने मसेना को रोकने के लिये चुप चाप सामान तैयार किये। लिस्बन में बहुत अच्छा बन्दरगाह था जहां अंगरेज़ी जहाज़ आ सकते थे और उसै देश छोड़ने को बाध्य होना पड़ता तो उसकी सेना को अपने

देश लेजा सकते थे और जबतक वहां रहना चाहता उसके लिये खाने पीने की वस्तु पहुंचा सकते थे। इस बिचार से उसने टेगस नदी से समुद्र तक मोरचों की तीन पंक्तियां बनाईं। पहिली पंक्ति मसेना को थोड़ी देर के लिये रोकने के लिये थी। पहिली उसै न रोक सकती तो दूसरी रोकती और तीसरी सिपाहियों की रक्षा करती जब वहलोग जहाज़ पर चढ़ते। परन्तु वेलिंग्टन को आशा न थी कि कभी ऐसा अवसर पड़ैगा। वहीं टोरेस वेड्रस नाम का एक गांव था इसलिये इन पंक्तियों का नाम 'टोरेस वेड्रस की पंक्तियां' पड़ गया। जब मसेना पुर्तगाल पहुंचा तो वेलिंग्टन उसै सिवाने पर मिला और धीरे धीरे पीछे हटा। उसने यह हुकुम दिया था कि पशु सब हांक दिये जायं और खेत नष्ट कर दिये जायं जिसमें फ्रान्सीसी सिपाहियों को खाने को न मिलै। जब मसेना ने देखा कि वेलिंग्टन पीछे हटा जा रहा था तो उसने समझा कि काम सिद्ध हो गया और अंगरेज़ों को वह देश से तुरन्त ही निकाल देगा। उसै इस बात का ध्यान न था कि रास्ते में मोर्चेबन्दी हुई है। परन्तु जब वेलिंग्टन की सेना पहिली पंक्ति के पीछे चली गई तब तो फ्रान्सवालों के छक्के छूट गये। मसेना सोचने लगा कि मोरचों पर आक्रमण करना उचित भी होगा या नहीं। जितनाही उसने सोचा उतनाही उसै ठीक न जंचा। सप्ताह पर सप्ताह बीत गये और आक्रमण करने का उसै साहस न हुआ। इधर फ्रान्सीसी कटक में अन्न भी घट रहा था। अगत्या भूख से व्याकुल होकर फ्रान्सवालों को पीछे हटना पड़ा! पैंतालीस हज़ार सिपाही भूख और रोग से मर गये या सेना से इधर उधर भटकते पुर्तगालवालों के हाथों से काट डाले गये। वेलिंग्टन ने भागते बैरी का पीछा किया और दूसरे बसन्त ऋतु में पुर्तगाल के भीतर एक भी फ्रान्सीसी न रह गया।

८।—राजप्रतिनिधि—जब वेलिंग्टन फ़्रान्सवालों से लड़ रहा था, इंग्लिस्तान में बुड्ढे राजा जार्ज को सुख दुख का ज्ञान न रह गया। वह अपने शासनकाल के बीच बीच में भी पागल हो जाया करता था परन्तु ई० १८११ में वह पूर्ण रूप से विक्षिप्त हो गया और जबतक जिया विक्षिप्तही बना रहा। उसकी आंखें भी जाती रहीं और वह नौ बरस और जिया। उसकी प्रजा उसको बड़े प्रेम और करुणा से देखती रही। उसके चित्त की दृढ़ता सदा के लिये नष्ट हो गई। उसके पद पर उसका बड़ा बेटा नियुक्त हुआ। वह बड़ा स्वार्थी था और उचित अनुचित का विचार न करता था। पहिले वह युवराज राजप्रतिनिधि रहा, पीछे जार्ज चतुर्थ के नाम से राजा हुआ। इस साल स्पेन में कुछ लड़ाई हुई। बसन्तऋतु में बरोसा (Barossa) में और फुइण्टीज़ डोनोरो (Fuentes d'Onoro) के मैदान में और गर्मी में अलबुयरा (Albuera) में अंगरेज़ों की जीत हुई। परन्तु वेलिंग्टन का मुख्य प्रयोजन यह था कि दो सुदृढ़ दुर्ग उत्तर में सिउडाड राडरिगो (Ciudad Roderigo) और दक्षिण में बडाजोज़ (Badajoz) ले लिये जायं जिससे पुर्तगाल और स्पेन के बीच की दो प्रधान सड़कें बन्द हो जांय। दोनों गढ़ फ़्रान्स-वालों के पास रहते तो वहलोग फिर पुर्तगाल पर चढ़ाई कर सकते थे। वेलिंग्टन इन्हें लेले तो स्पेन पर चढ़ाई कर सकैगा। और स्पेन पर चढ़ाई करना उसे संभव जान पड़ा। इधर नेपो-लियन को पश्चिमीय यूरप पर अपनी अपरिमित प्रभुता पर सन्तोष न हुआ और वह रूस को धमका रहा था। वेलिंग्टन भी समझ गया कि नेपोलिन रूस से भिड़ गया तो उसके पास स्पेन भेजने को सेना न बचैगी।

९।—गुरिल्ला—ई० १८१२ से इस बड़े अत्याचारी के बुरे दिन आने लगे। स्पेन में लाखों हथियारबन्द मनुष्य अलग अलग

या छोटी छोटी टोलियों में फिरने लगे। इनका नाम गुरिल्ला इस कारण पड़ा कि स्पेनी भाषा में गुरिल्ला का अर्थ है छोटी छोटी टोलियों में लड़नेवाले, बड़ी सेना में इकट्ठे हो कर नहीं। यह लोग जहां कहीं अकेले भटकते फ्रान्सीसी पाते उन्हें गोली मार देते और भाग कर बड़ी सुगमता से पहाड़ियों या झाड़ियों में छिप जाते क्योंकि वहां की राहों से परिचित थे। उनका पकड़ना फ्रान्सीसियों के लिये ऐसाही कठिन हो गया जैसे काटनेवाले कीड़ों का होता है। किसी फ्रान्सीसी सिपाही को थोड़ी दूर भी एक चिट्ठी पहुचानी पड़ती थी तो उसके साथ कम से कम दो सौ सिपाही चलते थे। सम्राट् को कोई उपयोगी पत्र भेजा जाता तो उसके साथ एक हज़ार सवार चलते थे। गुरिल्ला लोग बैरी के पास कोई धन या रसद ले जाता तो उसे छीन लेते, तोपें खींच ले जाते और घोड़े चुरा लेते थे। वेलिंग्टन ने यह भी देख लिया कि फ्रान्सीसी सेना का अधिकांश गुरिल्लों के पीछे लगा रहैगा तो उससे लड़ने की सारी सेना एक स्थान पर इकट्ठी नहीं हो सकती।

१०।—सिउडाड राडरिगो और बडाजोज़ दुर्गों का सर हो जाना—अब वेलिंग्टन को अवसर मिल सका कि उन दोनों गढ़ों पर आक्रमण कर दे जो उसे स्पेन जाने से रोक रहे थे। साल लगते ही पहिले महीने में उसने सिउडाड राडरिगो की ओर प्रस्थान किया। वह यह भी जानता था कि यह गढ़ झटपट न लिया गया तो इसका लेना असम्भव हो जायगा क्योंकि उसको हटाने के लिये एक बड़ी फ्रान्सीसी सेना आ जायगी। उसके पास खाई खोदने के हथियार भी न थे। अंगरेज़ी गवर्मेण्ट ने अपने सेना-पति को आवश्यक वस्तु भेजने में बड़ी कसर की थी फिर भी मार काट के पीछे नगर ले लिया गया और सैनिक उसमें घुसे तो

अपने पाशविक आचार से अंगरेज़ी नाम को कलंकित कर दिया। यहां भी अंगरेज़ी सिपाहियों को मौत के मुंह में कूदना पड़ा, क्योंकि ठहरने का अवसर न था। कोट में जो छिद्र हो गया था उसमें फिसलन थी और जब अंगरेज़ी सिपाही धावा मारते थे तो उनके रोकने को एक बल्ली में तलवारें बंधी थीं और फ्रान्स की तोपें उन्हें धरती पर बिछा देती थीं। भयंकर नरबलि के पीछे नगर ले लिया गया। जब वेलिंग्टन को विदित हो गया कि उसके बहुत से सैनिक काम आये तो विजय का गर्व सेना की हानि के लिये करुणा में परिणत हो गया। जो सिपाही बचे थे उनकी भी बुरी गति थी; मद पिये पागल की भांति गलियों में अभागे निवासियों को मारते काटते लूटते पाटते और जो कुछ सामने आता उसे नष्ट करते फिरते थे।

११।—<u>सालामंका (Salamanca) की लड़ाई</u>—बड़े आनन्द की बात है कि आज कल अंगरेज़ी सैनिक जंगली जानवरों की भांति पाशविक व्यापार नहीं करते। परन्तु वेलिंग्टन के पास ऐसे ही लोग थे। थोड़े दिनों में सालामैङ्का में वह एक फ्रान्सीसी सेना से भिड़ गया। फ्रान्सीसी सेनापति ने बड़ी भद्दी रीति से अपनी सेना को घुसाया। वेलिंग्टन ने देखते ही कहा "मार-लिया" उसने अपने सैनिक बढ़ा दिये और उसकी पूरी जीत हुई। ऐसी जीत उसकी कभी न हुई थी। यहां से वह मैड्रिड गया जहां स्पेनवालों ने उसका बड़ा आदर किया। राजा जोज़फ़ उसे देखते ही भाग खड़ा हुआ परन्तु इस साल वेलिंग्टन स्पेन को पूरा पूरा न जीत सका। उसने अपनी सेना बुरगोस (Burgos) तक बढ़ा दी और नगर को घेर लिया। परन्तु फ्रान्सीसी सेना ने उसे घेर लिया और उसे पुर्तगाल लौट जाना पड़ा। यह हार भी सफलता की जड़ थी। फ्रान्स की सेनाओं

को उत्तर में वेलिंग्टन से लड़ने को दक्षिण छोड़ना पड़ा और दक्षिण उनके उपद्रव से बच गया ।

१२ ।—नेपोलियन की रूस पर चढ़ाई—इधर वेलिंग्टन सालामेंका और बुरगोस में लड़ रहा था उधर नेपोलियन रूस पर चढ़ा जा रहा था । रूसी उसके आगे ठहर न सके । एक भयंकर युद्ध हुआ जिसमें विजयी होकर नेपोलियन मास्को पहुंचा । उसे यह आशा थी कि मास्को पहुंचने पर रूसी उसके साथ संधि करलेंगे परन्तु सन्धि के बदले रूसियों ने नगर में आग लगा दी । जाड़ा आ रहा था और नेपोलियन और उसके सैनिकों को कठिन ठंडक में कहीं सरन लेने का ठिकाना न था । मास्को में जाड़े से बचने के लिये रह जाते तो गरमी में खाने पीने का उनके पास पूरा सामान न था । उन्हें रूसियों के हार मानने का पूरा विश्वास था और अपने साथ पूरी रसद न लाये थे । अब कोई उपाय न था । उन्हें सैकड़ों कोस चलकर घर पहुंचना था । इतने में पाला पड़ने लगा और चटियल मैदान में ठंढी हवा चली । कुछ दिनों तक तो ज्यों त्यों सेना चली, पीछे साहस छूट गया । कूच करते समय पाला असह्य हो रहा था परन्तु रात को दशा भयंकर हो जाती थी । सिपाहियों को बरफ़ पर लेटना पड़ता था और लकड़ी के बड़े बड़े कुंदे जलाने से जो गरमी पहुंचती थी उससे ठरन न जाती थी । नित्य जब आगे को प्रस्थान करते उनके कुछ साथी पाले से मरे हुये पीछे छूट जाते थे । कुछ साथ न चलते और हारे मांदे बरफ़ पर गिर कर मर जाते थे । सरदी और भूख से उनके चेहरे पीले पड़ रहे थे और दिन दिन उनकी संख्या घटती जाती थी । रूस में प्रवेश करते समय चार लाख सैनिक थे । उन में से केवल बीस हज़ार निकले । नेपोलियन की विशाल सेना नष्ट हो गई ।

१३।—प्रशिया का उत्पात और विट्टोरिया (Vittoria) की लड़ाई—रूसी सेना फ्रान्सीसियों का पीछा करती हुई प्रशिया में चली गई। प्रशिया और उसके राजा ने भी नेपोलियन से लड़ना निश्चय कर लिया। देश के उद्धार का शोर प्रशिया के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैल गया। नगरों और गावों से वलुमटेर निकल पड़े और अपने देश के लिये लड़ने मरने को क़वायद सीखने और युद्ध की शिक्षा पाने को तैयार हो गये। नेपोलियन एक नई सेना लेकर वहां पहुंचा जिसमें अधिकतर लड़के थे परन्तु उसका युद्धकौशल अपूर्व था और उसने वड़ी वड़ी लड़ाइयों में रूसियों और प्रशिया-वालों को परास्त कर दिया। इस के पीछे आस्ट्रियावाले भी उसके वैरियों से मिल गये। उसने एक और लड़ाई जीती। परन्तु उसके वैरियों की संख्या और उनका विद्वेष दोनो उसके वस के न थे। लीपज़िग में तीन दिन तक भयंकर युद्ध हुआ जिस में उसकी पूरी हार हो गई और साल वीतने से पहिले वह अपनी वची वचाई सेना लेकर फ्रान्स को लौट गया। जर्मनी स्वतंत्र हो गया। उसी साल वेलिंग्टन ने स्पेन में भी नेपोलियन के कर्मचारियों को ऐसे ही मार गिराया जैसे उनका स्वामी उत्तर जर्मनी में पिट गया था। वेलिंग्टन के पास अव पहिले से अच्छी और वड़ी सेना थी। जव उसने स्पेन और पुर्तगाल के वीच की नदी पार की तो रिकाव पर खड़ा होकर उसने अपना हाथ उठाकर कहा "पुर्त्तगाल, हम तुम से विदा होते हैं ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे"। यहां से वह फ्रान्स की सड़क पर चला। रास्ते में उसे फ्रान्सीसी सेना मिली जिसके साथ राजा जोज़फ़ भी था। जोज़फ़ मैड्रिड छोड़ कर राज के लिये अन्तिम लड़ाई लड़ने आया यद्यपि राजा होने से उसे कोई सुख न मिला था। जोज़फ़ हार गया और सेण्ट सिवास्टियन (St. Sebastian) नगर वहुत दिनों तक घिरा रहा। अंत को वह भी सर हो गया और जर्मनी की भांति स्पेन भी स्वतंत्र हुआ।

१४ ।—<u>नेपोलियन का अन्तिम प्रयास</u>—ई० १८१४ में फ़ान्स में अपनी प्रभुता स्थिर रखने को नेपोलियन ने कठिन प्रयत्न किया। उसने बहुत हाथ पांव मारे और बड़े युद्ध कौशल से लड़ता रहा। उत्तर से रूस प्रशिया और आस्ट्रिया की सेनायें उसे दबाये आती थीं। कभी कभी उनकी हार हो जाती परन्तु रुकीं नहीं। उनकी संख्या इतनी न थी कि उनको कोई परास्त कर सकता। सेनायें बढ़ते बढ़ते पेरिस पहुंच गई। नेपोलियन सिंहासन पर से उतार दिया गया और इटली के पास एल्बा (Elba) टापू में भेज दिया



ड्यूक वेलिंग्टन।

गया। यहां वह अपने को सम्राट कह सकता था। पैरिस की सन्धि से सारे यूरप को शान्ति मिली। राजा लुई जिसका सिर काटा गया था उसका भाई लुई अष्टादशम फ़ान्स का राजा हुआ। दक्षिण में वेलिंग्टन अनेक विजय पाता हुआ वोर्डो नगर पहुंचा। टूलोस (Toulose) में उसने अन्तिम लड़ाई लड़ी थी जिसमें फ़ान्सीसी हार गये थे

१५ ।—वेलिंग्टन का वीर चरित—ड्यूक वेलिंग्टन, इस समय, अंगरेज़ी सेनापति था। उसने अपने देश की ऐसी सेवा की थी जिसका पुरस्कार मान प्रतिष्ठा से न हो सकता था। जब यूरप में सब निरास हो गये थे तबभी उसका उत्साह मंद न हुआ। वह जानता था कि निष्ठुरता और अन्याय दोनों कभी चल नहीं सकते। उसने अपना कर्त्तव्य समझ कर युद्ध किया था, विजयकीर्ति के लिये नहीं।

## ॥ अध्याय ४२ ॥

### * पैरिस की सन्धि से जार्ज तृतीय की मृत्यु तक *

(ई० १८१४ से १८२० तक)

१ ।—अमरीका की लड़ाई और नेपोलियन का लौटना—जिस सेना ने वेलिंग्टन के साथ ऐसे ऐसे काम किये और जिसके विषय में वह कहा करता था कि सब जगह जा सकती है और सब कुछ कर सकती है, उसे विश्राम न मिला। उसे अमरीका जाना पड़ा। क्योंकि अभाग्यवश उन दिनों संयुक्त राज्यों से लड़ाई हो रही थी। ई० १८१५ में जिस साल महायुद्ध का अन्त हुआ, महाद्वीपवाली सेना का यूरप में काम था और वह यहां थी ही नहीं। नेपोलियन एल्बा से निकल भागा और फ्रान्स में उतरा। नये राजा ने ऐसा बुरा शासन किया था कि इससे सिपाहियों और अधिकांश जनता ने नेपोलियन का स्वागत किया। वह पैरिस में धूमधाम से आया और फिर फ्रान्सीसियों का सम्राट् हो गया।

२ ।—वाटरलू की लड़ाई—परन्तु यूरप की और जातियों को ऐसा आनन्द न हुआ। वह सब जानते थे कि नेपोलियन ने

पहिले उनसे छेड़कर लड़ाई लड़ी थी और जो इसै वड़ी सेना इकट्ठी करने का अवसर मिला तो उनसे फिर लड़ैगा। किसी की इच्छा न थी कि नेपोलियन उन्हें फिर जीत ले और सब यह भी जानते थे कि परास्त हो गये तो फिर नेपोलियन से दया की आशा न रहैगी। इस विचार से उन्होंने तुरंत यह घोषणा कर दी कि नेपोलियन के साथ किसी का भी मेल नहीं है। यह घोषणा इंग्लिस्तान, प्रशिया, आस्ट्रिया और रूस की ओर से की गई थी। इन चारों में इंग्लिस्तान और प्रशिया सबसे पहिले तैयार हो गये। वेलिंग्टन की आधीनता में एक अंगरेज़ी सेना और ब्लूकर (Blucher) की आधीनता में प्रशिया की सेना दोनों नेदरलैण्डस पहुंच गईं। नेपोलियन झटपट फ्रान्सीसी सीमा पार कर के उनपर आक्रमण करने को चला। दोनों सेनायें अलग अलग थीं जबकि उसने प्रशियावालों को मार भगाया। नेपोलियन समझा था कि प्रशियावाले अपने घर चले जायंगे और अंगरेज़ जिनके पास उसके बराबर सेना न थी उससे भिड़ने को अकेले रह जायेंगे। उसने वाटरलू के मैदान में वेलिंग्टन पर आक्रमण कर दिया। कई घंटे तक अंगरेज़ फ्रान्सीसियों के वार रोकते रहे। उन्होंने बड़ी वीरता दिखाई यद्यपि उनमें बहुतेरे सिपाही नौसिखिये थे। परन्तु सहायता न मिलती तो ठहर न सकते थे। तीसरे पहर सहायता पहुंच गई और प्रशिया की सेना बढ़ती देख पड़ी। अब तो नेपोलियन ने देखा कि दो सेनाओं का सामना करना पड़ेगा। फ्रान्सीसी सेना तितर बितर होकर भागी। नेपोलियन सिंहासन से उतार दिया गया और उसने एक अंगरेज़ी जहाज़ के कप्तान को आत्मसमर्पण कर दिया। वह सेण्ट हेलीना (St. Helena) द्वीप को पहुंचा दिया गया और जब तक जिया वहीं रक्खा गया जिससे कि जिन देशों को उसने सताया था उन्हें फिर दुख न दे सकै। लुई अष्टादशम फिर फ़ान्स के सिंहासन पर बैठा दिया गया।

३।—देश में संकट—इंग्लिस्तान को अब शान्ति मिली। उसने यूरप के साथ अपना कर्त्तव्य पालन कर दिया परन्तु कर्त्तव्य पालन करनेवालों को यह न समझना चाहिये कि इसके साथ दुख न होगा। कर्त्तव्य पालन करनेवालों को बहुत सी वस्तु त्याग देनी पड़ती हैं जिनसे सुख होता है और बहुत से दुख उठाने पड़ते हैं। यही गति देश की भी होती है। युद्ध समाप्त होने पर भयंकर कष्ट हुआ। लड़ाई का ख़र्चा देने में करोड़ों पौंड नष्ट हुये और देश की हानि हुई। इससे और और कारणों से किसान और कारख़ानेवाले चौपट होगये। किसानों और कारख़ानेवालों के चौपट होने से मज़दूर कारीगर भूखों मरने लगे। ग़रीब कंगाल आजकल की अपेक्षा अधिक मूर्ख थे और बलवा कर बैठे मानों बलवे से काम निकल आता है और धन मिल जाता है।

४।—रोमिली (Romilly) और फ़ौजदारी के क़ानून का सुधार—गवर्मेण्ट डर गई। कई बरस पहिले प्रधानमंत्री पर्सिवाल मार डाला गया था और उसकी जगह लार्ड लिवर्पूल (Liverpool) प्रधान मंत्री हुआ। लिवर्पूल बड़ा दयालु था और उसने शासन का काम और मंत्रियों के सिर डाल दिया। और मंत्री अब तक डरे हुये थे कि जो बातें क्रान्ति के समय फ़्रान्स में हुई थीं वेही इंग्लिस्तान में न होने लगें। इस डर से उन्होंने कोई परिवर्त्तन न किया और यही चाहते थे कि सारी बातें ज्यों की त्यों बनी रहैं परन्तु कामन सभा में एक सदस्य सर सैम्यु-अल रामिली (Sir Samuel Romilly) था। उसके मन में यह आया कि प्लैण्टेजनेट और ट्यूडरों के समय से इंग्लिस्तान में जो निष्ठुर क़ानून बने थे उनको बदलना चाहिये। इस क़ानून के अनुसार पांच शिलिंग से अधिक के जेब से निकालनेवाले

या इतने ही दाम का माल किसी दूकान से चुरानेवाले को फांसी दी जाती थी। कई बरस पहिले रोमिली ने पार्लामेण्ट से जेब-कतरों को फांसी देने का क़ानून रद्द करा दिया था परन्तु लार्डसभा दूकान से चोरी करनेवालों की सज़ा घटाना न चाहती थी। रोमिली ने फिर लार्डसभा से दया करने को कहा परन्तु लार्ड बड़े कट्टर थे और फांसी बन्द न हुई।

५।—देश में हलचल—इंग्लिस्तान के उत्तर कारीगरों में पार्लामेण्ट में सुधार की वासना उठी। उन्होंने अनेक त्रुटियां देखीं और यह विचारा कि सब को वोट मिल जाय और पार्लामेण्ट हर साल नई हो तो बहुत कुछ सुधर जाय। उन्हें यह भूल गया कि इंग्लिस्तान की जनता अधिकांश पढ़ लिख न सकती थी और गवर्मेण्ट को ऐसे मूर्खों के वशीभूत करने में बड़ा जोखम है। लंदन में एक भीड़ नगर में निकली परन्तु बड़ी सुगमता से हटा दी गई और लार्ड मेयर और कुछ नगर निवासियों ने मुखियों को पकड़ लिया। इससे गवर्मेण्ट बहुत डरी और बलवा दबाने के लिये पार्लामेण्ट से नये क़ानून बनवाये। बलवे का कोई डर न था। मज़दूर कारीगर यही समझते थे कि हम दुखी हैं, हमारी दशा सुधरनी चाहिये। मेञ्चेस्टर में बहुत से इकट्ठे हुये और न्याय मांगने लंदन को चले। इनमें से कुछ लोगों के पास कदाचित् सरदी में रात को ओढ़ने के लिये कम्मल थे इससे उनकी बरात को कम्मलवालों की यात्रा कहते हैं। यह लोग मेकल्स फ़ील्ड (Macclesfield) के आगे न बढ़े। कुछ घर भगा दिये गये कुछ थक गये और कुछ आप से आप लौट गये। डरबीशायर में एक मनुष्य जिसका नाम ब्रेण्डरथ (Brandreth) था और कुछ सिड़ी भी था गैंते और बन्दूक़ लिये बीस मनुष्यों के साथ हथियार ढूंढता हुआ कई घरों में घुस गया और एक

मनुष्य को गोली मारदी। बढ़ते बढ़ते उसके साथियों की संख्या एक सौ हो गई। इनको कुछ सिपाही मिल गये। कुछ भाग गये, कुछ पकड़ लिये गये। तीन को फांसी दी गई औरों को भिन्न भिन्न दंड मिले। गवर्मेण्ट और पार्लामेण्ट ने इन बलवों को दबाने का भरपूर उद्योग किया परन्तु किसी ने इस बात का विचार न किया कि इस असन्तोष का कारण क्या है और जनता का दुख दूर करना चाहिये।

६।—मैञ्चेस्टर नरबलि—कुछ दिनों तक उत्तर के मज़दूरों और गवर्मेण्ट का विवाद जारी रहा। मैञ्चेस्टर नगर के सेण्ट-पिटर्सि फ़ील्ड में एक बड़ी सभा की घोषणा की गई जो पार्लामेण्ट में सुधार की प्रार्थना करे। गवर्मेण्ट को यह शंका हुई कि हज़ारों की भीड़ इकट्ठा होगी तो केवल प्रार्थनापत्र तैयार करने पर सन्तोष न करैगी। यह भी विदित था कि इतने में कितने ऐसे हैं जिन्हें पुराने सिपाहियों ने युद्ध की शिक्षा दी है। मैञ्चेस्टरवाले यह कहते थे कि हम केवल स्वास्थ्यकारक व्यायाम करैंगे और सभा में सेना की भांति कूच करते जायंगे और कूच करते आयेंगे परन्तु गवर्मेण्ट का समझना कि वह लोग लड़ना चाहते हैं कोई आश्चर्य की बात नहीं। इस समाज में हण्ट (Hunt) व्याख्यान देता था। हण्ट मृत्पिंडबुद्धि था केवल बोलना जानता था और उनदिनों बड़ा लोकप्रिय था। मैजिस्ट्रेट ने हण्ट को पकड़ना निश्चित किया परन्तु सभा के समाप्त होने का आसरा न देख कर उसने उसी भीड़ में उसके पकड़ने को सिपाही भेज दिये। सिपाही स्थायी-सेना के सैनिक न थे बरन् बड़े बड़े कारखानेवाले बलूमटेर थे और भीड़ में न घुस सके। उन्होंने अपनी तलवारें निकाल लीं और मारते काटते आगे बढ़े। इसके पीछे स्थायी सेनावालों को जो हुस्सार (Hussar) कहलाते थे धावा मारने

की आज्ञा दी गई। भीड़ घबरा कर गिरती पड़ती भागी और घायल छोड़ गई। छः मनुष्य मारे गये और बहुत से घायल हुये। यह घटना ई० १८१९ में हुई और इसे मैञ्चेस्टर नरबलि कहते हैं। उस समय तक शिक्षित समाज में कारीगरों की मांग की उपेक्षा की जाती थी। जो मनुष्य राजनीति का थोड़ा भी ज्ञान रखता था उसके मन में यह बात आही न सकती थी कि ऐसी मूर्खता के समय में सब को वोट मिले। परन्तु विचारशील मनुष्य के मन में सन्देह न रहा कि मैञ्चेस्टरवालों के साथ बड़ा अन्याय किया गया। जब उनपर सिपाहियों ने आक्रमण किया उन्होंने कोई अपराध न किया था और शान्ति के साथ व्याख्यान सुनने आये थे। विना पूरी जांच किये मैजिस्ट्रेट के काम को उचित कह कर गवर्मेण्ट ने बड़ी नासमझी की। पार्लमेण्ट गवर्मेण्ट के साथ थी और राजविद्रोही सभा बन्द करने के लिये ६ क़ानून बनाये परन्तु बहुतेरे जो अब तक गवर्मेण्ट के सहायक थे उससे घृणा करने लगे और सोचने लगे कि कोई ऐसा उपाय करना चाहिये जिससे स्थिति सुधर जाय।

७।—जार्ज तृतीय की मौत—मैञ्चेस्टर नरबलि के दूसरे बरस अन्धा विक्षिप्त बुड्ढा राजा मर गया और उसका बेटा राज-प्रतिनिधि जार्ज चतुर्थ के नाम से राजा हुआ।

## ॥ अध्याय ४३ ॥

### * जार्ज चतुर्थ *

(ई० १८२० से १८३० तक)

१।—केटो (Cato) की गली का षड़यन्त्र—जब बहुत लोग असन्तुष्ट हो जाते हैं तो उनमें से कुछ ऐसा समझने लगते

हैं कि जो दोषी हैं उन्हें मार डालने से सब सुधर जायगा। यही बारूद के षड़यन्त्र में हुआ और यही अब भी होनेवाला था। थिसलउड (Thistlewood) नाम के एक मनुष्य ने एक ऐसी युक्ति की कि जब सब मंत्री इकट्ठा खाना खाने बैठें तो सब मार डाले जायं। इस षड़यन्त्र का नाम केटो-गली का षड़यन्त्र है क्योंकि षड़यन्त्री केटो गली में इकट्ठा हुये थे जो एजवेर (Edgeware) सड़क से मिली हुइ एक गली है। भेद खुल गया और षड़यन्त्री पकड़ लिये गये। जो पुलिसवाले उनको पकड़ने गये थे उनमें से एक मारा गया और तीन घायल हो गये।

२।—<u>जार्ज कैनिंग (George Canning) परराष्ट्रीय नीति</u>—ई० १८२२ में गवर्मेण्ट में दो मंत्री ऐसे आये जिन्हों ने पद्धति बहुत बदल दी और इसे अच्छी राह लगा दिया। यह दोनों जार्ज कैनिंग और राबर्ट पील (Robert Peel) थे। कैनिंग परराष्ट्रीय मंत्री था जिसका काम परराज्यों के कार्यों का संभालना है। यूरप महाद्वीप के राजा और सम्राट् अपने अपने राज्य में बलवा होने के डर से अंगरेज़ी गवर्मेण्ट से भी अधिक डर गये थे इसलिये उन्होंने पराये राज्यों में बलवा दबाने को अपनी अपनी सेना भेजना स्वीकार किया। इटली में कुछ लोगों ने बलवा करके नेपल्स में पार्लामेण्ट स्थापन कर दी थी। उनके दमन करने को आस्ट्रिया ने अपनी सेना इटली भेज दी और कैनिंग के मंत्री होते ही फ्रान्स की सेना ऐसा ही एक बलवा दबाने को स्पेन पहुंची जहां बलवाइयों ने मैड्रिड में वही काम किया था। फ्रान्सवालों ने निर्दयी फ़र्डिनण्ड सप्तम (Ferdinand VII) को फिर राजा बना दिया। फ़र्डिनण्ड चाहता था कि पुर्तगाल को स्पेनी सैनिक भेज दें क्योंकि पुर्तगाल ने भी पार्लामेण्ट स्थापित की थी। कैनिंग ने पुर्तगालवालों की

मदद को अंगरेज़ी सैनिक भेज दिये तब तो स्पेनवाले पुर्तगाल से हट गये। बिना युद्ध किये भी कैनिंग ने सबलों से निर्बलों की रक्षा की। अमरीका में बहुत दिनों से झगड़ा हो रहा था और स्पेनी उपनिवेश मेक्सिको, पिरु और चिली आदि अपने को स्पेन से अलग करके स्वतन्त्र करना चाहते थे। वह लोग बास्तव में स्वतन्त्र थे और कैनिंग ने भी उन्हें स्वतन्त्र मान लिया। यूरप के पूर्व में बहुत दिनों से बड़ी लड़ाई हो रही थी। यूनानवाले क्रूर तुर्कों से छुटकारा चाहते थे। बहुतेरे यूरपी राज्यों ने इसे बुरा कहा और यूनानियों को विद्रोही माना। कैनिंग भी यूनानियों के लिये कुछ कर न सका परन्तु उनको यह प्रकट कर दिया कि हम तुम्हारे हितैषी हैं।

३।—पील और फ़ौजदारी क़ानून में सुधार—जब कैनिंग पर-राष्ट्रीय मंत्री था उसी समय पील देशीय मंत्री रहा। उसका काम इंग्लिस्तान की जनता का कामकाज देखने का था। उसने तुरन्त एक उपयोगी काम अपने हाथ में ले लिया। रामिली मर गया था। पिट ने जो काम रामिली ने उठाया था उसमें फिर हाथ लगाया और पार्लामेण्ट से बहुत से ऐसे क़ानून रद्द करा दिये जिनसे छोटे छोटे अपराधों के लिये फांसी दी जाती थी। इस शताब्दी के आरम्भ में दो सौ अपराधी ऐसे थे जिनके लिये फांसी की सज़ा थी। नाले में मछली चुरानेवाला, राजा के बनों में अहेर करनेवाला, या वेस्टमिनस्टर पुल को हानि करनेवाला सब के लिये फांसी की सज़ा थी। कामन सभा ने बार बार अपनी यह सम्मति प्रकट की कि ऐसे अपराधों के लिये वध अनुचित है परन्तु लार्डसभा न मानती थी। पील ने आग्रह के साथ कहा कि ऐसे छोटे छोटे सौ अपराधों के लिये सज़ा घटा दी जाय। इस पर लार्डसभा सहमत हो गई और यह सिद्ध हो

गया कि गवर्मेण्ट में एक मनुष्य ऐसा है जो चतुराई के सुधार करने के योग्य है ।

४ ।—हस्किसन (Huskisson) के व्यापारिक सुधार—एक दूसरे मंत्री मिस्टर हस्किसन ने देश के भीतर आनेवाले परदेसी माल पर महसूल घटाने का प्रयत्न किया । यह व्यापारिक स्वतन्त्रता का आरंभ था । लोग अब समझने लगे थे कि और देशों से व्यापार की सुगमता करने में उन्हीं की भलाई है ; कठिनाई में नहीं । जो कुछ किया गया वह बहुत थोड़ा ही था परन्तु इससे और और उपयोगी कामों से जनता का वह असन्तोष दब गया जिससे कई बरस पहिले इतना संकट पड़ गया था । अब न मैञ्चेस्टर की सी नरबलि हुई न केटो गली का सा षड़यन्त्र रचा गया क्योंकि गवर्मेण्ट और पार्लमिण्ट दोनों जनता को दबाने का भरपूर उद्योग करने के बदले अब उनके हित के कामों में लगे हुये थे ।

५ ।—कैथोलिक समाज (Catholic Association)—ऐरलैण्ड में कैथोलिक-समाज नाम की एक सभा बनी थी । इसका उद्देश यह था कि कैथोलिक लोगों को पार्लमिण्ट में सदस्य होने का हक़ मिले और सरकारी उहदे पा सकें । डैनियल ओकानल (Daniel O'Connel) इसका मुखिया था । वह बहुत अच्छा बोलनेवाला था और उसका कार्य बहुत अच्छा था । ऐरलैण्ड में यह समाज ऐसा प्रबल हो गया कि इंग्लिस्तान में बहुतों को इससे बलवे की संभावना देख पड़ी और इसके दमन का एक क़ानून बनाया गया । परन्तु यह क़ानून ऐसा कच्चा था कि समाज अपना काम करता रहा मानों कोई क़ानून बना ही न था । सौभाग्य से पार्लमिण्ट में कुछ ऐसे लोग भी थे जो समझते थे कि समाज की प्रार्थना स्वीकार करने योग्य है और कैथोलिक लोगों को अपने हक़ पाने के लिये कामन सभा ने एक मसौदा पास कर

दिया। कैनिंग इसके पक्ष में था और पिट इसका विरोधी था। लार्डसभा ने मसौदा नामंजूर कर दिया और कई बरस तक कुछ न हुआ।

६।—प्रतिनिधि चुनने की युक्ति—पार्लामेण्ट में सुधार के विषय पर भी बहुत वाद विवाद हुआ। इंग्लिस्तान में बहुत से ऐसे नगर थे जैसे बर्मिङ्घम, मैञ्चेस्टर, लीडस जो पार्लामेण्ट में कोई सदस्य न भेजते थे और कई छोटे छोटे गांव दो दो सदस्य भेजा करते थे। इसमें सन्देह नहीं कि गांववाले अपना चित्त प्रसन्न करने को सदस्य न चुनते थे वरन् अपने वोट उसको देते थे जिसकी सिफ़ारिश उनका ज़िमींदार करता था जिसके गांव में वह लोग बसते थे। कभी कभी वोट देने को कोई गांववाले भी न होते थे। एक बरो * (borough) जिसै पार्लामेण्ट में सदस्य भेजने का अधिकार था एक भले मानस के बाग़ में एक टूटी दीवार थी। दूसरा एक मिट्टी का धुस था जिसपर घास जमी थी। एक बरो कई सौ बरस पहिले समुद्र में डूब गया था। स्काटलैण्ड की स्थिति इससे भी बुरी थी। बूट (Bute) कौण्टी में केवल इक्कीस वोट देने वाले थे। उनमें एक बार चुनाव के समय एक ही वोटर आया उसने अपने लिये वोट दिया और पार्लामेण्ट का सदस्य हो गया। ज़िमींदार और भले मानस जो अपने मनचाहे मनुष्य को वोटरों से वोट दिलवा सकते थे इनके वोटों को अपना माल समझते थे। उन्हें धन की आकांक्षा होती तो जो धन देता उसके हाथ पार्लामेण्ट की मेम्बरी बेच डालते। जहां चुननेवालों की संख्या अधिक होती थी वहीं वास्तव में जिसै लोग चाहते थे उसका चुनाव होता था।

* एक गांव या छोटा नगर जिसे पार्लामेण्ट में सदस्य भेजने का अधिकार है बरो कहलाता है।

परन्तु बहुधा वही चुना जाता था जो सब से बढ़कर घूस देता था ।

७।—पार्लामेण्ट में सुधार—फ़्रान्सीसी राज्यक्रान्ति से पहिले इस स्थिति के बदलने के लिये प्रयत्न किये गये थे । जब फ़्रान्सीसी राज्यक्रान्ति हो गई तो पार्लामेण्ट-सुधार की बात सुनने को लोगों ने अपने कान बन्द कर लिये । फ़्रान्सवालों ने लड़ाई दंगा करके अपने बुरे शासन को दूर कर दिया था इसलिये अंगरेज़ों को अपने अच्छे शासन के सुधारने में डर लगा । उनकी घबराहट इतनी बढ़ी थी कि ऐसे छोटे छोटे बरोओं को तोड़ने को जो वास्तव में छोटे छोटे गांव थे, राजा का सिंहासन उलटने या देश में भय का राज लाने के बराबर मानते थे । परन्तु इस समय ऐसी स्थिति न रही थी । पढ़े लिखे योग्य पुरुष यह पूछने को तैयार थे कि बुरी बातें क्यों न सुधार दी जायं । कामन सभा में अधिकांश सदस्यों ने कैथोलिक लोगों के साथ न्याय करने का संकल्प किया था और पार्लामेण्ट के सुधार की अपेक्षा कैथोलिक लोगों के साथ न्याय करना सुगम था । किसी ड्यूक या लार्ड को प्रसन्न करके पार्लामेण्ट का सदस्य बन जाना बहुतों के लिये सुगम था । किसी बड़े नगर के रहनेवालों के वोट पाने में उन्हें बड़ी कठिनाई पड़ती । इनके अतिरिक्त ऐसे सदस्य भी थे जिनके पास विरोध करने के अच्छे प्रमाण थे । कैनिंग कैथोलिकलोगों का पक्षपाती था और सुधार से विरोध करता था । उसका विचार यह था कि ज़िमींदार और भले मानस पार्लामेण्ट के सदस्य निर्वाचित न करेंगे तो योग्य और समझदार सदस्य बहुत थोड़े आयेंगे । ऐसे विचार रहने पर पार्लामेण्ट से सुधार की आशा तभी हो सकती थी जब कोई बहुत थोड़ा अदल बदल मांगता । जो मनुष्य सब के लिये

वोट देने का अधिकार या वैसा ही कुछ और मांगता उसे कोई अनुमोदन करनेवाला न मिलता। सौभाग्य से एक नवयुवक लार्ड जान रसल ने इस काम के करने का बीड़ा उठाया। जार्ज तृतीय के मरने से पहिले उसने कामन सभा से कहकर चार ऐसे बरोओं के अधिकार ले लिये थे जिनमें वोट खुल्लमखुल्ला बेंचे जाते थे। उनको पार्लामेण्ट में सदस्य भेजने का हक्क न रह गया। लार्डसभा ने इसै नामंजूर किया। इसके पीछे रसल ने कार्नवाल के एक छोटे से गांव के अधिकार छिनवाये और यह प्रस्ताव किया कि यह जगह लीड्स को दी जाय। लार्डसभा ने इसै यार्कशायर को दिया। इसके पीछे बहुत दिनों तक कुछ न हुआ।

८।—कैनिंग और गाडरिच (Canning and God-rich) के मंत्रित्व—ई० १८२८ में लार्ड लिवर्पूल मर गया। उसने जैसे जाना कि बीमारी के कारण काम नहीं हो सकता तुरन्त इस्तीफ़ा दे दिया और कैनिंग प्रधान मंत्री हो गया। कैनिंग से लोगों को बड़ी बड़ी आशायें थीं परन्तु वह अपने ओहदे पर तीन ही महीने रहकर बीमार पड़ गया और मर गया। उसके पीछे लार्ड गाडरिच प्रधान मंत्री हुआ परन्तु उसका मंत्रित्व बहुत थोड़े दिन चला। इस थोड़े दिन में पूर्व से बड़े बड़े समाचार आये। यूनानी लोग बरसों से स्वतन्त्र होने के लिये तुरकों से लड़ रहे थे। कुछ अंगरेज़ भी उनकी सहायता के लिये गये। उनमें अंगरेज़ी महाकवि लार्ड बैरन (Byron) भी था। बैरन एक रोगी स्थान में ज्वर से पीड़ित होकर मर गया। तुर्क आप यूनानियों को न जीत सके और मिस्रवालों से मदद मांगी। एक मिस्री सेना यूनान में उतरी और उसने बड़े अत्याचार किये, लोगों का बध किया और जो कुछ उनसे नष्ट हो सका नष्ट कर दिया।

अंगरेज़ी, फ्रान्सीसी, रूसी और आस्ट्रियावालों का मिला हुआ एक जहाज़ी बेड़ा यूनान को भेज दिया गया और उसने नवारिनो (Navarino) में तुर्की बेड़े को नष्टभ्रष्ट कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि मिस्री सेना यूनान से चली गई और युद्ध का अन्त हो गया। कुछ ही दिन बीते थे कि यूनान स्वतन्त्र हो गया।

९।—वेलिंग्टन का मन्त्रित्व और टेस्ट (Test जांच) और कारपोरेशन (Corporation) क़ानूनों का रद् हो जाना—गाडरिच के पीछे ड्यूक वेलिंग्टन प्रधान मन्त्री हुआ। पील फिर देशी-सेक्रेटरी बना। पील पहिले भी इसी पद पर था परन्तु लिवर्पूल ने जब इस्तीफ़ा दिया तो उसने भी छोड़ दिया था। डिसन्टरों का दुख दूर करने के लिये लार्ड जान रसल ने एक मसौदा पेश किया, उसपर नये मन्त्री भी सहमत हो गये। चार्ल्स द्वितीय के समय में कुछ ऐसे क़ानून बने थे जिनके अनुसार डिसन्टर नगरों में या गवर्मेण्ट में कोई ओहदे न पा सकते थे। लार्ड जान रसल ने उनका पक्ष लिया और यह प्रस्ताव किया कि क़ानून रद् कर दिये जायं और बड़ी सुगमता से उसका काम पूरा हो गया।

१०।—क्लेयर (Clare) का चुनाव—मन्त्रियों ने डिसन्टरों के लिये तो राह खोल दी परन्तु कैथोलिक-सम्प्रदायवालों को रोकने के लिये उनका संकल्प दृढ़ रहा। परन्तु वहलोग अपने ओहदे पर थोड़े ही दिन रहे थे तो उन्होंने जान लिया कि अब हठ करने में बड़ी कठिनाई है। क्लेयर की कौण्टी में चुनाव हो रहा था। कैथोलिक-सम्प्रदायवाले पार्लमिण्ट में न बैठ सकते थे परन्तु सदस्यों के लिये वोट दे सकते थे। ओकानल (O'Connel) सदस्य चुना गया। वह रोमन कैथोलिक था और शासन सभा

में न बैठ सकता था। परन्तु यह भी निश्चित था कि जब कभी पार्लामेण्ट टूटैगी तीन सूबों लीन्सर, मंस्टर और कनाट की सारी कौण्टियां कैथोलिक सदस्य चुनैंगी। चौथे सूबे अलस्टर में प्रोटेस्टैण्टों की संख्या अधिक थी और ऐसा अनुमान किया जाता था कि कैथोलिकों से भी अधिक थी। प्रोटेस्टैण्ट और कैथोलिक दोनों एक दूसरे को बुरा कहते थे और ऐसा जान पड़ता था कि दोनों में लड़ाई हो जायगी। नरबलि और लूटमार जिनसे कि ई० १७९८ में आयरलैण्ड उजाड़ हो गया था, फिर होती जान पड़ती थीं।

११।—कैथोलिक लोगों का उद्धार—वेलिंग्टन और पील दोनों यावज्जीवन कैथोलिकों के विरोधी रहे। कदाचित् अधिकांश अंगरेज़ी जनता भी उनसे सहमत थी। उनको यह डर लगा था कि कैथोलिक लोगों को अधिकार मिले तो प्रोटेस्टैण्टों की हानि करैंगे। परन्तु वेलिंग्टन को युद्ध का बड़ा अनुभव था और उसकी इच्छा न थी कि आयरलैण्ड में प्रजा आपस में लड़ने लगै। इससे तो जो कुछ हो जाय वही अच्छा है। उसने भी मान लेने की ठान ली। पार्लामेण्ट में एक मसौदा पेश किया गया और क़ानून बन गया और उस दिन से कैथोलिक-सम्प्रदाय-वालों को प्रोटेस्टैण्टों के बराबर हक़ मिल गये। यह सुधार इंग्लिस्तान की जनता के विचार के प्रतिकूल किया गया। पार्लामेण्ट में सुधार हो गया होता और बड़े नगरों को वोट देने का अधिकार मिल जाता तो यह परिवर्त्तन इतनी सुगमता से न होता।

१२।—नई पुलिस—एक दूसरे प्रकार का सुधार पील के उद्योग से हुआ। लन्दन की पुलिस जिसका काम था कि चोरों और अपराधियों को पकड़े अपना कर्त्तव्य पालन न करती थी।

पील ने सुशिक्षित अच्छी पुलिस भर्त्ती की। इंग्लिस्तान के और भागों में भी इसका अनुकरण किया गया। अंगरेज़ी में कहीं कहीं पुलिसवालों को पीलर (Peeler) और बाबी (Bobby) कहते हैं। पीलर इसी पील से निकला है और बाबी उसके ईसाई नाम राबर्ट का अपभ्रंश है। ई० १८३० में राजा जार्ज चतुर्थ की मृत्यु हो गई।

१३।—सड़कें और घोड़े गाड़ियां—राष्ट्रीय उन्नतियों के साथ ही साथ और भी उन्नतियां की गईं जिनसे दूसरे प्रकार के बड़े बड़े लाभ हुये। व्यापार और कल कारख़ाने इतने बढ़ गये थे कि जार्ज तृतीय के राज्य के आरम्भ में जो नहरें बनीं थीं उनसे देश के एक भाग से दूसरे भाग तक माल पूरा पूरा न जा सकता था। इसमें सन्देह नहीं कि साधारण सड़कें पहिले से बहुत अच्छी थीं। टेलफ़ोर्ड (Telford) ने सड़क-बनानेवालों को सिखा दिया था कि पहाड़ी के उपर चढ़कर दूसरी ओर जाने से पहाड़ी का चक्कर करके जाने में सुगमता है। मकाडम (Macadam) ने यह रीति निकाली कि पत्थर की गिट्टी तोड़कर कूट देने से एक कड़ी सड़क बन सकती है जिसपर गाड़ियां कीचड़ में धुरी तक धंसे हुये विना, दौड़ सकती हैं। इससे पहिले की अपेक्षा यात्रा बड़े सुख से होने लगी थी। उन दिनों घोड़-गाड़ी को एक घंटे में १० मील जाना बड़े अचम्भे की बात थी। घोड़े गाड़ियां भी धीरे धीरे चला करती थीं परन्तु नई घोड़े-गाड़ियों पर भारी माल न लद सकता था। कई आदमियों ने यह सोच लिया था कि यह काम धुयें की गाड़ी कर सकती है परन्तु बहुतेरों के उद्योग निष्फल हुये जब तक कि जार्ज स्टिविनसन (Stephenson) ने इस काम को अपने हाथ में न लिया।

१४।—रेल की सड़क और धुयें की गाड़ी—जार्ज स्टीवेन्सन का जन्म एक ग़रीब कोयलेवाले के घर नार्थम्बरलैण्ड में हुआ था। वह कोयले की एक खदान में नौकर था। वहीं उसने कलों का काम सीखा। जब वह सयाना हुआ तो उसने पढ़ना लिखना सीखने के लिये कुछ धन बचाया। पहिले उसने पानी खींचने के इंजन की मरम्मत की फिर कुछ और इंजन बना कर उसने चलनेवाले इंजन बनाने का उद्योग किया। नया इंजन पहिले काम न कर सका परन्तु स्टीवेन्सन ने उसमें कुछ और घटाया बढ़ाया और जो काम उससे लेने को था वह करने लगा। इस इंजन ने कोयले की खदानों से कोयले की भरी गाड़ियां खींचीं और इसमें घोड़े गाड़ियों से कम खरचा पड़ा। कई बरस पीछे स्टाकटन (Stockton) और डार्लिंग्टन (Darlington) के बीच में पहिली रेल की सड़क बनी। परन्तु अबतक स्टीवेन्सन के इंजन धीरे धीरे चलते थे। दूसरी रेल की सड़क लिवर्पूल और मैञ्चेस्टर के बीच में बनाने का विचार किया गया। स्टीवेन्सन ने इसे चैट मास (Chat Moss) के ऊपर चलाया। यह एक दलदल था जिसपर कोई पैदल न जा सकता था। जब रेल की सड़क बनी तो मालिकों को इस पर धुयें की गाड़ी चलाने में बड़ा डर लगा। स्टीवेन्सन ने उनको सुझाया कि सब से अच्छी धुयें की गाड़ी के लिये इनाम दो। चार कारीगरों ने अपने अपने इंजन भेजे। स्टीवेन्सन का राकेट (Rocket) नाम का इंजन था। वही चल सका; और कारीगरों ने कहा कि हमें दूसरे दिन फिर चलाने का अवसर मिले परन्तु पहिले दिन की भांति दूसरे दिन भी कृतकार्य न हुये। राकेट घंटे में ३५ मील की चाल से चलने लगा। तब तो किसी को सन्देह न रह गया कि रेल की सड़क पर धुयें की गाड़ी चल सकती है और थोड़े ही दिनों में इंग्लिस्तान में ऐसा कोई नगर न बचा जिसे

रेल की सड़क बनाने की चाह न हुई। परन्तु कुछ लोगों के ऐसे विचार न हुये जैसे कि नारथैम्पटन के रहनेवालों ने अपनी पुरानी सड़क न छोड़ी और इसी कारण लन्दन से नारथैम्पटन जानेवाले मुसाफ़िरों को ब्लिसवर्थ (Blissworth) में गाड़ी बदलनी पड़ती थी और जब नारथैम्पटनवालों को अपनी भूल पर पछतावा हुआ तो एक शाखा निकाली गई जिससे लोग जाने लगे। अन्त को लन्दन और नार्थवेस्टर्न रेलवे (London and North-western Railway) की बड़ी सड़क हटा कर उस नगर में लाई गई।

## ॥ अध्याय ४४ ॥

### * विलियम चतुर्थ *

### (ई० १८३० से १८३७ तक)

१।—वेलिंग्टन के मंत्रित्व का अंत—जार्ज चतुर्थ ई० १८३० में मर गया। उसका भाई विलियम चतुर्थ सिंहासन पर बैठा। उसके राजा होने के दोही चार सप्ताह के भीतर फ़्रान्स में दूसरी राज्यक्रान्ति हो गई। राजा चार्ल्स दशम प्रजा की इच्छा के प्रतिकूल शासन करना चाहता था। इस पर पेरिस में बलवा हो गया और राजा देश छोड़ कर भाग गया। उसका दूर का भाई लुई फ़िलिप (Louis Philippe) फ़्रान्स का राजा हो गया। इस समाचार से इंगलिस्तान में भी सनसनी फैली। जनता यह सोचने लगी कि दूसरी जातिवाले इतना कर सकते हैं तो हम लोग भी दरिद्र "बरोओं" को क्यों न तोड़ दें और पार्लामेण्ट में बड़े ज़िमींदारों के प्रतिनिधियों के बदले जनता के सच्चे प्रतिनिधि क्यों न भेजें। ह्विगलोग पार्लामेण्ट के इस

सुधार के पक्षपाती थे। उनमें से कितने "बरोओं" के स्वामी थे परन्तु जनता के कल्याण के लिये अपना अधिकार त्याग देने को तैयार थे। नये चुनाव में पार्लमेण्ट में पुरानी की अपेक्षा अधिक ह्विग सदस्य आ गये। ड्यूक कुछ करना मान जाता तो सदस्य भी कोई परिवर्त्तन न करके संतुष्ट रहते। परन्तु ड्यूक ने कहा कि सुधार होनाही न चाहिये। इधर तो ह्विग उससे प्रसन्न न हुये उधर टोरीदल उससे बिगड़ गया क्योंकि उसने कैथोलिकलोगों के लिये बहुत कुछ किया था। कामन सभा के बहुत से सदस्यों ने उसका विरोध किया और उसने इस्तीफ़ा दे दिया।

२।—<u>सुधार का मसौदा</u>—दूसरी मंत्रिमंडली में कुछ ह्विग और कुछ कैनिंग के अनुयायी आ गये और लार्ड ग्रे (Lord Gray) प्रधान मंत्री हो गया। उसने और उसके साथियों ने एक नया सुधार-मसौदा पेश करने का संकल्प किया और कामन सभा में लार्ड जान रसल (Lord John Russell) ने उसे पेश कर दिया। इतने बड़े परिवर्त्तन का प्रस्ताव करने की मित्र शत्रु किसी को उससे आशा न थी। इसके अनुसार ६० बरोओं के अधिकार ले लिये गये जिनमें से ११९ सदस्य आते थे और ४६ में से दो सदस्य के बदले एक ही का आना ठहरा। इस युक्ति से जो मेम्बरियां बचीं उन्हें मंत्रियों ने छोटाई बड़ाई के क्रम से बड़ी कौण्टियों और बड़े नगरों में बांट दिया और कुछ थोड़ी सी स्काटलैण्ड और ऐरलैण्ड को दे दी गईं। नगरों और कौण्टियों में पहिले की अपेक्षा अधिक लोगों को वोट देने का अधिकार मिल गया। यह मसौदा पास हो जाता तो देश का शासन मध्य-श्रेणीवालों के हाथ में आ जाता और पहिले की भांति बड़े ज़िमींदारों के हाथ से निकल जाता। कामन सभा में टोरीदल प्रबल

था। जब सभा की अनुमति मांगी गई तो इसके अनुमोदन करनेवालों की संख्या, इसके विरोधियों से एक ही अधिक थी और इसके बाद अधिक संख्यावालों ने इस मसौदे को एक उपयोगी विषय में बदलने का प्रस्ताव किया। गवर्मेण्ट ने मसौदा लौटा लिया और पार्लामेण्ट भी तोड़ दी जिससे देश में वोट देनेवालों को अपने विचार प्रकट करने का अवसर मिल जाय।

३।—सुधार के मसौदे की लार्ड सभा से नामंज़ूरी—परन्तु वोट देनेवालों के विचार में सन्देह न था। पुरानी प्रथा में भी कौण्टी और बड़े बड़े नगर जैसा चाहते थे वैसा वोट देते थे और जब उद्वेग अधिक होता था तो मध्यम श्रेणी के नगर वोट देते ही न थे जैसा कि उनसे कहा जाता था और छोटे नगरों के वोट देनेवाले ह्विग ज़िमींदारों के बस में थे। देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लोग यही चिल्लाते थे "मसौदा, पूरा मसौदा और मसौदे को छोड़ दूसरी बात नहीं"। नई कामन सभा में ह्विगदल प्रबल था। सुधार का मसौदा पेश किया गया और कामन सभा में पास हो गया। लार्ड सभा ने उसे नामंज़ूर कर दिया।

४।—जनता में आन्दोलन—यह समाचार सुनते ही लोग आगबगूला हो गये। गवर्मेण्ट के अनुमोदन करने को ठांव ठांव सभायें की गईं और किसी किसी नगर में दंगा और बलवा भी हो गया। कामन सभा में मकाले (Macaulay) नाम एक नवयुवक सदस्य था जो पीछे से जेम्स द्वितीय और विलियम तृतीय के समय का इतिहास लिखने के लिये प्रसिद्ध हो गया। उसने सभा से कहा, "इस सभा को दृढ़ता से यह उद्योग करना चाहिये कि यह हलचल बढ़ते बढ़ते उग्र मारपीट का रूप न धारण करे।

...वाले दिनों में जब अत्याचार सहते सहते घबरा कर किसानों ने बलवा किया, एक लाख किसान हथियार बांधे ब्लैकहीथ में इकट्ठा हुये थे तो राजा उनके पास घोड़े पर सवार चला गया और कहने लगा मैं तुम्हारा मुखिया बना जाता हूं और तुरंत बिगड़ी भीड़ ने अपने हथियार डाल दिये और राजा की आज्ञा से अपने अपने घर चले गये। इस समय हम लोग भी उसी का अनुकरण करें और अपने देशी भाइयों से कहें कि हम तुम्हारे मुखिया हैं। जो कुछ क़ानून का बल हमारे पास है सब तुम्हारे लिये प्रयुक्त होगा और यह बल ऐसा है कि अंत में इसी की जीत होगी"। पार्लामेण्ट के बाहर ऐसे लोग बहुत थे जो समझते थे कि लार्ड सभा का आग्रह मारपीट ही से मिटेगा। बर्मिंघम नगर में एक बर्मिंघम राष्ट्रीय समिति (Birmingham Political Union) बनी। इस सभा में जो लोग उपस्थित थे उन्हों ने यह संकल्प किया कि सुधार का क़ानून नामंज़ूर किया गया तो सरकारी महसूल न देंगे। ब्रिस्टल में भयंकर बलवे हुये, घर जला दिये गये और मनुष्य मारे गये।

५।—<u>सुधार के मसौदे का क़ानून बन जाना</u>—सौभाग्य वश गवर्मेण्ट और कामन सभा दोनों के जी से सुधार ऐसाही लगा हुआ था जैसे जनता इसे चाहती थी। इस कारण थोड़ा ही विलंब करके कुछ बदल कर तीसरा सुधार का मसौदा पेश किया गया और कामन सभा में पास हो गया। कुछ लार्डों के भी समझ में आ गया कि बहुत हठ कर चुके। यह भी लोग जानते थे कि जो लोग सुधार के मसौदे को पास करने का वोट देंगे उन्हें राजा लार्ड बना देंगे। इसपर कुछ लार्ड घर बैठ रहे और सभा में न आये। ई० १८३२ में लार्ड सभा ने मसौदे को मंज़ूर कर लिया और वह क़ानून बन गया।

६।—दास प्रथा का उठा दिया जाना और कंगालों के लिये नया क़ानून (New Poor Law)—इतने बड़े परिवर्त्तन होने पर दोनों दलों ने अपने अपने नाम बदल दिये और ह्विग और टोरी के बदले लिबरल और कन्सर्वेटिव कहलाने लगे। लिबरल दलवालों के पास बड़ा काम रहा। दास-व्यापार उठा देने पर भी जो दास वेस्ट इंडीज़ के उपनिवेशों में थे, दास बने रहे। उनको स्वतन्त्र करने के लिये एक क़ानून बना और उनके स्वामियों की घटी पूरी करने को बहुत सा धन ("Grant ग्राण्ट") मंजूर किया गया। देश के भीतर भी कंगालों के क़ानून में परिवर्त्तन हुआ जिससे आलसियों को सहायता न दी जाय। इसमें सन्देह नहीं कि किसी को भूखा मरने देना अनुचित है परन्तु जो काम कर सकते हैं और काम न करैं उन्हें परिश्रमी लोगों के धन से जीविकानिर्वाह का हक़ नहीं है।

७।—गवर्मेण्ट का पदत्याग और पील का पहिला मंत्रित्व—इनके अतिरिक्त और भी अनेक उचित और अच्छे काम हुये। विचित्र यह है कि इसी कारण से गवर्मेण्ट लोकप्रिय न रह गई। संसार में सदा ऐसे मनुष्य बहुत रहते हैं जो चाहते हैं कि जो बात जैसी होती आई है वैसी ही बनी रहै और जहां उसमें उन्नति की गई रुष्ट हो जाते हैं। गवर्मेण्ट के उचित करने से जो उसके विरोधी बने उनके अतिरिक्त ऐसे भी लोग थे जो गवर्मेण्ट की भूल चूक देख कर उससे बिगड़े हुये थे। कन्सर्वेटिव-दलवाले भी लोकप्रिय हुये जाते थे। कामन सभा में उनका मुखिया पील (Peel) बड़ा आगमसोची था और बहुतेरे यह समझने लगे कि मंत्रियों की अपेक्षा वह राजकाज अच्छा करैगा। मंत्री आपस में एकमत न थे। दो चार ने इस्तीफ़ा दे दिया। अन्त को लार्ड ग्रे ने भी इस्तीफ़ा दिया और लार्ड मेलबोर्न (Melbourne)

जो पहिले एक मंत्री था अब प्रधान मंत्री हो गया। परन्तु थोड़े ही दिनों में राजा ने मेलबोर्न को निकाल दिया और सर राबर्ट पील (Sir Robert Peel) को प्रधानमंत्री बनाया। पील ने पार्लमेण्ट तोड़ दी। नई पार्लमेण्ट में पहिले की अपेक्षा अधिक कन्सर्वेटिव सदस्य आ गये। परन्तु उनका पक्ष प्रबल न रहा और पील को इस्तीफ़ा देना पड़ा। लार्ड मेलबोर्न फिर प्रधान मंत्री हो गया।

८।—लार्ड मेलबोर्न का मंत्रित्व बहुत सफल न हुआ—इसमें काम करनेवाले काम निकालना न जानते थे। कामनसभा में कन्सर्वेटिव और लिबरल बराबर थे और लार्डसभा में उनकी संख्या अधिक थी। जनता में भी इस मंत्रिमंडली का पक्षपात न था तो भी इसने कुछ अच्छे काम किये। नगरों के म्युनिसिपल शासन में सुधार किया गया जिससे मेयर (Mayor) और अल्डरमैन (Aldermen) के चुननेवालों की संख्या बढ़ा दी गई। और भी कुछ काम हुआ। कन्सर्वेटिव समझे कि मंत्रियों ने बहुत कुछ किया और लिबरल कहते थे कि बहुत थोड़ा काम हुआ। ई० १८३७ में विलियम चतुर्थ मर गया।

## ॥ अध्याय ४५ ॥

### * विक्टोरिया के राज्याभिषेक से मेलबोर्न-मंत्रित्व के पतन तक *

(ई० १८३७ से १८४१ तक)

१।—देश की दशा—विलियम चतुर्थ के कोई बेटा न था जो उसके मरने पर राजा होता। इस कारण उसकी भतीजी महारानी विक्टोरिया सिंहासन पर बैठी। उसकी अवस्था कम थी परन्तु आरम्भ ही से वह लोकप्रिय हो गई। गवर्मेण्ट के

सामने बड़ी बड़ी कठिनाईयां थीं और गवर्मेण्ट उनके निवारण करने में समर्थ न थी। लार्ड मेलबोर्न झगड़े में पड़ना न चाहता था। जब कभी उससे किसी ने कहा कि यह कठिन काम कैसे किया जाय तो वह बोलता, "अजी रहने भी दो"। इंग्लिस्तान में लाखों को बड़ा कष्ट था। मज़दूरी कम थी और खाने पीने की चीज़ों के दाम बढ़े हुये थे। फ़्रान्स के युद्ध के समाप्त होते ही पार्लमिण्ट में एक अनाज का क़ानून (Corn Law) पास हो गया जिससे बाहर के अनाज पर बड़ा कड़ा कर लग गया। यह समझा गया था कि बाहर का अनाज यहां आया और सस्ते दामों में बिका तो किसानों और ज़िमींदारों को अपने घर के अनाज का दाम इतना न मिलैगा कि जीविका निर्वाह हो सकै और फिर कोई खेती न करैगा और धरती परती पड़ जायगी। इस युक्ति से रोटी के दाम इतने बढ़ जायंगे जितने परदेशी अन्न के आने से न बढ़ते। कारख़ानों में यह देखने को कि कुली मज़दूरों को सुगमता से सांस लेने के लिये जगह है या नहीं इसकी जांच को सरकारी कर्मचारी न थे। मज़दूरों को बड़ी बेर तक काम करना पड़ता था और स्त्रियों और बालकों को अपने बल से अधिक काम करना पड़ता था। कोयले की खदानों में विशेष करके स्त्रियों और बच्चों को भारी गाड़ियां खींचनी पड़ती थी। गावों में मज़दूरों के झोपड़े छोटे रहते जिनमें बहुत से मनुष्य इकट्ठा रहते थे और स्वस्थ न रह सकते थे। पढ़ना लिखना भी बहुत कम लोगों को आता था और सब मिलकर अपने कष्टों का निवारण करना सीखने का उन्हें अवसर न मिला था।

२।—<u>जनता की सनद (People's Charter)</u>—जब जनता असन्तुष्ट रहती है तो साधारण रीति से वह समझती है कि शासन का अधिकार मिल जाय तो सब सुधर जायगा। यही दशा

अब भी थी। सैंकड़ों मनुष्यों ने "जनता की (चार्टर) सनद" का अनुमोदन किया और चार्टिस्ट (Chartist) कहलाये। इसमें छः बातें थीं।

[ १ ] सब को वोट (Vote) देने का अधिकार
[ २ ] राज का बराबर ऐसे ज़िलों में बंटना जिनको सदस्य भेजने का अधिकार हो।
[ ३ ] बैलट से वोट (गुप्त वोट)
[ ४ ] साल भर की पार्लमेण्ट
[ ५ ] किसी के पास ज़िमींदारी हो या न हो वह सदस्य हो सके।
[ ६ ] पार्लमेण्ट के सदस्यों को तनख़ाहैं दी जायं।

इनमें से दो अर्थात् तीसरे और पांचवीं के क़ानून बन गये। उस समय चार्टिस्टों की संख्या सुनकर भले मानस और दुकानदार दोनों घबरा गये थे। बहुतेरे चार्टिस्ट यह कहते थे कि जो हम चाहते हैं उसै बल से ले लेंगे, इससे बहुत लोग डर गये। इसमें सन्देह नहीं कि चार्टिस्टों की पार्लमेण्ट में प्रतिनिधि भेजने की प्रार्थना न्यायसंगत थी। सुधार के क़ानून ने दुकानदारों को वोट देने का अधिकार दे दिया था परन्तु यह अधिकार बहुत थोड़े से कारीगर मज़दूरों को मिला था। परन्तु यह भी उचित था कि मज़दूर कुछ दिन और अपने वोटों के आसरे में रहैं और पहिले और बहुत सी अन्याय की बातें दूर कर दी जायं और जब उनको अधिकार मिलैं तो उनका चित्त शान्त रहै न कि उस समय की भांति क्रोध और असन्तोष से परिपूर्ण।

३।—<u>डाकख़ाने का सुधार</u>—लार्ड मेलबोर्न के मंत्रित्व से जनता के दुख दूर करने की विशेष आशा न थी, तौ भी उसने एक ऐसा सुधार कर दिया जिससे करोड़ों को सुख हुआ। एक दिन

अंगरेज़ी का महाकवि कोलरिज (Coleridge) इंग्लिस्तान के उत्तर में जा रहा था। जब वह एक झोंपड़े के पास पहुंचा तो डाकिया एक चिट्ठी लिये आया। एक लड़की निकली और उसने चिट्ठी लेकर डाकियेको लौटा दी। उन दिनों डाकमहसूल बहुत बढ़ा हुता था, एक शिलिंग या दो शिलिंग डाकमहसूल था और ज्यों ज्यों पत्र दूर ले जाना पड़ता था त्यों त्यों महसूल बढ़ताजाता था। यह महसूल चिट्ठी पानेवाले को देना पड़ता था। परन्तु उसका जी न चाहै तो चिट्ठी न ले। कोलरिज को लड़की पर दया आई और उसने महसूल देकर चिट्ठी लड़की को दे दी। डाकिया चला गया तो लड़की बोली कि आपने नाहक़ महसूल दिया, चिट्ठी में कुछ लिखा न था। उसका भाई लन्दन गया हुआ था और भाई से यह निश्चय हुआ था कि हमलोग डाक महसूल तो दे सकते नहीं, भाई एक तख़्ता कोरा काग़ज़ मोड़कर भेज दियाकरै, बहिन उसे लौटा दे और जबतक ऐसे काग़ज़ बराबर आते रहैंगे यह समझ लिया जायगा कि भाई कुशल से है। कोलरिज ने यह घटना रोलैण्ड हिल (Roland Hill) को सुनाई जो डाकख़ाने का एक अफ़सर था। रोलैण्ड ने यह निश्चय किया कि दूरी का विचार छोड़ कर डाकमहसूल घटा कर एक पेनी कर दिया जाय तो लोगों को बड़ा आनन्द हो। चिट्ठियों की संख्या इतनी बढ़ जायगी कि एक पेनी महसूल से जो आय होगी वह एक शिलिंग महसूल से अधिक होगी। यह पेनी का महसूल चिट्ठी भेजनेवाले को इस युक्ति से देना पड़े कि भेजनेवाला टिकट मोल लेकर उसपर लगा दे। इस से डाकिये को घर घर पेनी वसूल करना न पड़ेगा विशेष कर के जब चिट्ठियां बहुत होंगी। पहिले इस युक्ति पर लोग बहुत हँसे परन्तु गवर्मेण्ट ने इसे मान लिया। पहिले डाक महसूल घटा कर चार पेन्स किया गया, पीछे से एक

पेनी रह गया। आजकल थोड़ा महसूल और डाक के टिकट की रीति सारे सभ्यसंसार में प्रचलित है।

४।—शिक्षा—सुधार के क़ानून के पीछे, देश के धन से शिक्षाप्रचार में हाथ लगाया गया। दो ग़ैर-सरकारी समाज शिक्षा पढ़ाने में जी जान से लगे थे उनको बीस हज़ार पौण्ड दिया गया। महाराणी के राज्याभिषेक के दो बरस पीछे यह धन तीस हज़ार पौण्ड कर दिया गया और यह प्रस्ताव किया गया कि इस धन का प्रयोग कुछ सरकारी कर्मचारियों की समीक्षा में हो और शिक्षकों को सिखाने के लिये भी एक स्कूल खोला जाय। इस प्रस्ताव का इतना विरोध हुआ कि इसको बहुत बदल देना पड़ा तोभी बहुत कुछ हो गया और तब से यह समझा जाने लगा कि प्रजा को शिक्षा देना गवर्मेण्ट का धर्म है।

५।—महाराणी का विवाह—महाराणी के विवाह के अवसर पर उसके राज्य के प्रत्येक भाग से उसकी भक्ति अनुरक्ति प्रकट की गई। उसका मौसेरा भाई सैक्स कोबर्ग का राजा अलबर्ट (Duke of Saxe Coburg) बड़ा विद्वान और गुणी था। वही उसका पति हुआ। उसमें सब से बड़ी बात यह थी कि वह अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता था और इसी प्रेम के कारण उसने जब तक जिया अपनी बड़ाई या उन्नति का विचार छोड़ दिया। वह बड़ा चतुर आगमसोची था जिससे वह महाराणी का सब से बुद्धिमान् मंत्र देनेवाला बना रहा। किसी बात को तुच्छ समझ कर उसकी ओर ध्यान न देना वह जानता ही न था और जो बात समझने योग्य थी उसका भरपूर ज्ञान प्राप्त करने का उद्योग करता था। एक दिन एक मनुष्य राजभवन में एक नया शीशे का झाड़ लगाने आया। राजा अलबर्ट उससे

मिला और बातचीत की। जब वह मनुष्य बाहर निकला तो कहने लगा कि राजा झाड़ों का विषय मुझसे अधिक समझते हैं। राजा को बहुतेरी बातों का इतना ज्ञान था जितना किसी अंगरेज़ को भी न था और जिस काम से वह समझता कि देश का कल्याण होगा उसको उत्साह देने के लिये कोई बात उठा न रखता।



राजकुमार अलबर्ट।

६।—लार्ड पामर्स्टन (Palmerston) और यूरप के पूर्व की समस्या—महाराणी के विवाह को बहुत दिन न बीते थे कि इंग्लिस्तान और फ़ान्स में फिर लड़ाई छिड़ने की सम्भावना हो गई। लार्ड पामर्स्टन उन दिनों पर-राष्ट्रीय कार्यों का मंत्री था*। लार्ड ग्रे (Gray) की मन्त्रिमंडली में भी उसका वही पद था और उसने यूरप के ऐसे देशों की यथाशक्ति सहायता की थी जो

* ऐसे मंत्री को हिन्दुओं के राज में सन्धिविग्रही कहते थे।

पार्लमेण्ट समेत राजा का शासन पाने का उद्योग कर रहे थे और बिना पार्लमेण्ट के राजा के शासन में रहना न चाहते थे। इधर उसका ध्यान यूरप के पूर्व में गया। यूरप के इस भाग को चार सौ बरस हुये तुर्कों ने जीत लिया था जैसे कि बहुत दिन हुये नार्मनलोगों ने इंग्लिस्तान को जीता था। टरकी (रूम) दिन दिन निर्बल हो रहा था क्योंकि सुलतान को समुचित शासन करना आता न था। परन्तु तुर्कलोग अपनी प्रजा से ऐसे न मिले जैसे कि नार्मन अंगरेज़ों से मिल गये। तुर्क आप मुसलमान थे और उनकी प्रजा ईसाई थी। ग़रीब तुर्क ईमानदार और बहादुर थे और दुख सहने में ऐसे धीर रहते थे कि जो यूरपवाले उनके बीच में गये उनको बड़ा अचम्भा होता था। परन्तु धनी तुर्क जो उनपर शासन करते थे केवल धन लेना चाहते थे और धन बढ़ाने के लिये उचित अनुचित कामों का विचार न करते थे। तुर्क मूर्ख भी थे और अच्छा शासन करना सीखने की उन्हें परवाह न थी। रूस उनका बड़ा बैरी था। लार्ड पामर्स्टन को यह शंका हुई कि रूस कहीं सारा टर्की न जीत ले और यूरपी देशों को उससे खटका हो जाय। इसका उसने एक यही उपाय सोचा कि टर्की के पास जो कुछ है वह उसी का होकर रहै और यह आशा की कि कभी न कभी उसकी आंख खुलैगी और वह समझ जायगा कि अच्छा शासन करने में उसी का कल्याण है।

७।—मुहम्मद अली का सिरिया (शाम) से निकाला जाना—इधर तो टर्की निर्बल हो रहा था उधर मिस्र का शासक मुहम्मद अली शक्तिमान् होता जाता था। वह बड़े दृढ़ संकल्प का था और उसके पास शिक्षित सेना थी। कई बरस पहिले उसने सिरिया को तुर्कों से जीत लिया था। सुल्तान ने उसे निकाल देने को एक सेना भेजी परन्तु उसने तुर्कों को मार भगाया

और वह रोका न जाता तो कुस्तुनतुनिया पर चढ़ाई कर देता। लार्ड पामर्स्टन को ऐसी चिन्ता हुई कि उसने रूस, आस्ट्रिया और प्रशिया से मिस्रवालों को रोकने के लिये एक सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर करा लिये। फ्रान्स ने न माना और अलग छोड़ दिया गया। इस पर फ्रान्स बहुत बिगड़ा और फ्रान्स और इंग्लिस्तान में युद्ध छिड़ने की संभावना हो गई। परन्तु सौभाग्य से यह वैमनस्य जाता रहा। मुहम्मद अली सिरिया से निकाल दिया गया और तुर्कों को फिर अच्छा शासन करने का अवसर मिला।

८।—मेलबोर्न मंत्रित्व का पतन—ई० १८४१ में मेलबोर्न-मंत्रित्व का अन्त हो गया। इतने दिनों तक तो उसने कुछ किया न था एकाएकी उसने यह प्रकाश कर दिया कि बड़े बड़े काम किये जायंगे। पहिला काम यह बतलाया कि अनाज पर महसूल घटा दिया जायगा। परन्तु मंत्रियों को इससे कुछ लाभ न हुआ। लोग समझे कि यह भी एक चाल है जिससे मंत्री अपने अपने पद पर बने रहैं, अनाज सस्ता करना एक बहाना है। पार्लमिण्ट टूट गई और नई पार्लमेण्ट में इनके विरोधी बहुत से आ गये। मंत्रियों ने इस्तीफ़ा दे दिया और सर राबर्ट पील (Sir Robert Peel) प्रधान मंत्री हो गया।

## ॥ अध्याय ४६ ॥

### * सर राबर्ट पील का मंत्रित्व *

### (ई० १८४१ से १८४६ तक)

१।—व्यापारिक स्वतन्त्रता—पील कन्सर्वेटिव दल का मुखिया था परन्तु उसने संकल्प कर लिया था जो बात बिगड़ी है

उसमें सुधार अवश्य किया जायगा। परन्तु सारी बिगड़ी बातें जानने में उसे देर लगी। उसका और उसके अनुयायियों का यह दृढ़ निश्चय था कि अनाज का कर बन्द न किया जाय। उस कर के वसूल करने की विधि में कुछ परिवर्त्तन कर दिये गये परन्तु उसका विचार और कुछ करने का न था। वह यह समझता था कि व्यापार की वस्तुओं पर कर कम कर देने या उठा देने से व्यापार में उन्नति होगी। हर साल उसने कुछ कर उठा दिये। इससे यह बात देखी गई कि जितने ही कर उठा दिये गये उतना धन बचे हुये करों से आ गया। अपने कारख़ानों में जिन वस्तुओं का प्रयोग किया जाता था उनपर महसूल न देने से कारख़ानेवाले धनी हो गये। देश पहिले की अपेक्षा समृद्ध हो गया और जैसा पहिले कष्ट हुआ करता था वैसा कष्ट न रह गया।

२।—अफ़ग़ानिस्तान पर चढ़ाई—पील बहुत दिनों तक अपने पद पर न रहा था कि हिन्दुस्तान से बुरा समाचार पहुंचा। जब से क्लाइव ने पलासी की लड़ाई जीती थी अंगरेज़ों ने अधिकांश हिन्दुस्तान जीत लिया था। उनका राज सतलज नदी तक हो गया था। सतलज उन पांच नदियों में से एक है जो सिन्धु महानद में गिरती हैं। इसके कुछ पश्चिम अफ़ग़ानिस्तान एक पहाड़ी देश है। इसमें अफ़ग़ान जाति के लोग रहते हैं और अफ़ग़ान बड़े साहसी और बड़े लड़ाके होते हैं। हिन्दुस्तान के अंगरेज़ों में यह घबराहट फैली थी कि रूसवाले जो मध्य एशिया में देश जीतते हुये बढ़े आते थे कहीं हिन्दुस्तान पर चढ़ाई न कर दें और अफ़ग़ानिस्तान का शासक रूसियों का मित्र था। इस लिये उसके राज पर आक्रमण करके उसको सिंहासन से उतार कर दूसरा शासक बनाना निश्चय किया गया। अंगरेज़ी सेना ने

अफ़ग़ानों को परास्त कर दिया, उनके गढ़ ले लिये और कुशल समेत काबुल पहुंच गई। दोस्त मुहम्मद ने भी एक अंगरेज़ी सवारों की पल्टन को हटा दिया और फिर आत्मसमर्पण करके बन्दी हो गया।

२।—अफ़ग़ानों का बलवा—काबुल में दखल किये हुये एक अंगरेज़ी सेना पड़ी रही। राष्ट्रीय प्रबन्धों का काम सर फ़िलिप मैकनाटन (Sir Philip Macnaughten) के हाथ में था। वह समझा कि कोई कठिनाई न रह गई। एकाएक काबुल में बलवा हो गया और बड़े बड़े प्रसिद्ध अंगरेज़ी अफ़सर मार डाले गये। तोभी वहां अंगरेज़ी सिपाही इतने थे जो अफ़ग़ानों के सर करने में सफल होते। परन्तु उनके सेनानायक जनरल एलफ़िन्सटोन (Elphinstone) ने जोखम में पड़ना उचित न समझा। वह देखता ही रहा कि आगे क्या होता है और कुछ ही दिनों में उसकी दशा बहुत बिगड़ गई। भोजन की सामग्री घटती जाती थी और बैरियों की संख्या बढ़ती जाती थी। मैकनाटन और एलफ़िन्सटन दोनों ने अफ़ग़ानों से सन्धि का प्रस्ताव किया। अफ़ग़ानों ने कहा कि अंगरेज़ जिन गढ़ों की रक्षा में हैं उन्हें छोड़ दें तो हम उन्हें खाने को दें। गढ़ छोड़ दिये गये और तब से अफ़ग़ान अपने बैरियों को तुच्छ समझने लगे। दोस्त मुहम्मद खां के बेटे अकबर खां ने उसी मैकनाटन को बातचीत करने के लिये बुलाया और उसै धोखे से तमंचे से मार डाला जिसै मैकनाटन ने उसै एक दिन पहिले दिया था। अंगरेज़ी अफ़सरों ने लड़ने मरने के बदले घातक से सन्धि कर ली और उसने प्रतिज्ञा की कि अंगरेज़ी सेना हिन्दुस्तान को लौट जाय तो राह भर में उसकी रक्षा की जायगी।

४।—काबुल से सेना का लौटना—सेना दुखी होकर हिन्दुस्तान को लौटी। जाड़े के दिन थे और ऊंचे ऊंचे पहाड़ों के बीच में सड़क पर मोटी बरफ़ पड़ी थी। अकबर खां ने उस सेना की रक्षा का बहुत कुछ उद्योग किया परन्तु जो बात उसके बस की न थी उसमें वह क्या कर सकता था। जिन पहाड़ियों के बीच में होकर हमारी सेना बड़ी कठिनाई से आ रही थी उसके पठारों और चट्टानों पर क्रूर अफ़ग़ानों की भीड़ बैठी थी और यही लोग भागते अंगरेज़ी सिपाहियों को गोली मारते थे। दर्रे के दूसरे सिरे तक बहुत कम लोग बचे। यहलोग झपटे हुये जलालाबाद की ओर बढ़े जहां क़िले में एक अंगरेज़ी सेना थी। जलालाबाद सोलह मील रह गया था उस समय केवल छः मनुष्य जीते बचे थे। इनमें एक डाक्टर ब्राइडन (Brydon) था। उसका घोड़ा बहुत थक गया था और वह भी बेदम हो रहा था; इससे बहुत पीछे रह गया। उसके पांचों साथी आगे बढ़े और अफ़ग़ानों के हाथ से मारे गये। हारा मांदा ब्राइडन उनकी आंख बचाकर चला आया। अफ़ग़ान समझे कि अंगरेज़ कोई जीता न बचा और अपने अपने घर चले गये। ब्राइडन जलालाबाद पहुंच गया। इस बड़ी विपत्ति का ब्योरा सुनाने को वही अकेला बचा था।

५।—काबुल में पोलक (Pollock) का प्रवेश—अफ़ग़ानी सेना बहुत आई परन्तु जलालाबाद न टूटा और उसकी सहायता को जनरल पोलक एक नई सेना लेकर पहुंच गया। यहां से पोलक ने काबुल को कूच किया। क़ैदी सब छुड़ा लिये गये। जिस मकान में मैकनाटन मारा गया था वह खोद डाला गया और पोलक फिर हिन्दुस्तान को लौट आया। दोस्त मुहम्मद फिर काबुल भेज दिया गया और वहां उसे निर्विघ्न राज करने की आज्ञा दी गई।

६।—अनाज के क़ानून के विरुद्ध समिति—इंग्लिस्तान में उन लोगों का काम हल्का करने के लिये भी कुछ उद्यम किये गये जो कठिन परिश्रम न कर सकते थे। स्त्रियों और बच्चों को खानों और कोयले की खदानों में काम करने से रोकने के लिये एक क़ानून बन गया। एक और क़ानून बना जिससे बालक कारख़ानों में साढ़े छः घंटे से अधिक काम न करें। फिर भी एक बड़ा दोष रह गया। परदेश से आये हुये अनाज पर महसूल लगने से रोटी महंगी थी। लंकाशायर में कुछ लोग ऐसे थे जिन्होंने अनाज के क़ानून को रद्द कराने के लिये उद्योग करने का संकल्प किया था जिससे बिना महसूल के जनता को अनाज मिला करे। इनमें पहिला मनुष्य रिचर्ड काब्डन (Richard Cobden) था। काब्डन ससेक्स का रहनेवाला था और मैञ्चेस्टर में बस गया था। उसने अपने मित्रों के साथ एक "अनाज के क़ानून के विरुद्ध समिति" बनाई। इन मित्रों में मुख्य जान ब्रैट (John Bright) था। इस समिति का उद्देश यह था कि अनाज के क़ानून के दोष दिखाने के लिये देश में व्याख्यान दिये जायं और पत्र छापकर बांटे जायं जिससे जनता इससे जो हानि होती है उसे समझ जाय। समिति का काम बहुत बढ़ गया परन्तु इसे बड़ी कठिनाइयां झेलनी पड़ीं। बहुतेरे कारीगर मज़दूर समझे कि यह कारख़ानेवालों की चाल है, जिस से लोग जनता की सनद को भूल जायं। बहुत से ज़िमींदार भी इसके विरोधी हो गये क्योंकि परदेशी अन्न बिना महसूल आने से उनकी बड़ी हानि होगी और उनकी हानि से सारे देश को धक्का पहुंचेगा। किसान भी उनके साथ हो गये। परन्तु कुछ ज़िमींदार ऐसे भी थे जिन्होंने जब समझ लिया कि अनाज के क़ानून के रहने से सारे देश को और विशेष करके ग़रीबों को दुख होता है तो अपनी हानि सह लेने को तैयार हो गये। परन्तु समिति अपना

काम करती रही। इसका उद्देश अच्छा था और इसने अपने अभिप्राय को ऐसी तर्कों से सिद्ध कर दिया जिसै सब मान लें। इसने बहुतों को अपने पक्ष में कर लिया और पील भी कुछ कुछ इनकी ओर हो गया। परन्तु ऐरलैण्ड के अकाल से पील उनका पूरा पक्षपाती हो गया।

७।—ऐरलेण्ड का अकाल—ऐरलैण्ड में जनता अधिकांश आलू से अपनी प्राणयात्रा करती है। उस साल आलू में एक ऐसा रोग लग गया जिसै पहिले कोई जानता न था और आलू खाने योग्य न रह गया। ऐरलैण्ड की जनता भूखों मरने लगी। गवर्मेण्ट ने लाखों मनुष्यों के लिये मज़दूरी और भोजन का प्रबन्ध जहांतक हो सका किया। बड़ी उदारता से चन्दा किया गया और देश में बांटा गया। फिर भी पूरा न पड़ा। हज़ारों ऐरलैण्डवासी अमरीका को चले गये। ऐसी विपत्ति देख कर पील ने भी समझ लिया कि अन्न को कर लगा कर महंगा करना उचित नहीं है और उसने अपने साथी मंत्रियों से यह प्रस्ताव किया कि अब बिना महसूल के अन्न देश में आना चाहिये। परन्तु और मंत्रियों ने न माना। गवर्मेण्ट के विरोधियों की ओर से लार्ड जान रसल ने एक पत्र लिखा कि अनाज का क़ानून रद्द कर दिया जाय। इस पर पील ने अपने साथियों से कहा कि थोड़े दिनों के लिये ऐरलैण्ड में बिना महसूल के अन्न आया करै और पीछे से पार्लमेण्ट से क़ानून ही रद्द करने का प्रस्ताव किया गया। जब पार्लमेण्ट की बैठक हुई तो पील ने इस क़ानून के रद्द करने का प्रस्ताव किया। पील ही के बहुत से अनुयायी उससे बिगड़ गये। एक नया दल बना जिसने अपना नाम प्रोटेक्शनिस्ट (Protectionist)* रक्खा। इन

* प्रोटेक्शन का अर्थ है रक्षा और यहां बाहर के माल पर कर लगाकर अपने देश के माल की रक्षा करना प्रोटेक्शन हैं।

लोगों ने पील को वंचक भगोड़ा कहा जो अनाज के क़ानून के समर्थन से मंत्री बना था और अब उसी को रद् करना चाहता है। परन्तु प्रोटेक्शनिस्टों को सभा में बहुत वोट न मिले। पील के कुछ अनुयायी लोगों ने उसके तर्कों से उसकी बात मान ली और लिबरल दलवालों ने जो अब तक उसके विरोधी थे उसका साथ दिया। अनाज का क़ानून रद् कर दिया गया और अनाज का स्वतन्त्र व्यापार स्थापित हो गया। जनता के अन्न पर से महसूल उठ गया।

८।—पील के मंत्रित्व का अन्त—पील का मंत्रित्व इसके पीछे बहुत दिनों तक न चला। जैसे ही लिबरल दलवालों का उससे मतभेद हुआ प्रोटेक्शनिस्ट उनके साथ हो गये और पील का पक्ष निर्बल हो गया। पील ने इस्तीफ़ा दे दिया। उसने बहुत ही अच्छा काम किया और उसने उदारता से यह स्मरण रक्खा कि यद्यपि उसी के उद्योग से सफलता हुई परन्तु उसे दूसरे ही ने सुझाया था; और प्रधान मंत्री के पद से उसने जो अन्तिम व्याख्यान दिया उसमें कामन सभा को बता दिया कि रिचर्ड काब्डन के कारण उसको यह कीर्ति मिली।

## ॥ अध्याय ४७ ॥

### लार्ड जान रसल के मंत्रित्व के आरम्भ से क्रिमिया के युद्ध के अन्त तक।

(ई० १८४६ से १८५६ तक)

१।—यूरप की राज्यक्रान्तियां—लार्ड जान रसल (John Russell) नया प्रधान मंत्री बना। उसको अपने पद पर बहुत

दिन न बीते थे कि सारे यूरपी महाद्वीप में उपद्रव मच गया। ई० १८४६ में लोग बहुत डरे हुये थे। पहिले फ्रान्स में राज्य-क्रान्ति हुई राजा लूइ फ़िलिप (Louis Philippe) भाग गया और फ्रान्स में प्रजातन्त्र राज्य स्थापित किया गया। इटली में राजा और राय पार्लामेण्ट सभा करने को बाध्य किये गये और उन्हें आस्ट्रिया से भी लड़ना पड़ा जो इटली के उत्तर प्रान्त के अधिकांश पर शासन करता था। आस्ट्रिया और प्रशिया में भी बलवे हुये जिनसे पार्लामेण्ट स्थापित हो गई।

२।—लन्दन की सनदवाले (Chartists)—इंग्लिस्तान में सनदवालों ने यह समझा कि जो वस्तु हम बहुत दिनों से मांग रहे थे उसके पाने का अवसर आ गया है। फ़िरगस ओकानर (Feargus O'Connor) पार्लामेण्ट का एक सदस्य उनका मुखिया था। उसने और मुख्य मुख्य सनदवालों ने यह निश्चय किया कि केनिङ्गटन (Kennington) मैदान में जहां अब केनिङ्गटन पार्क (Kennington Park) है बहुत बड़ी संख्या के लोग इकट्ठे हों और सनद के लिये एक प्रार्थनापत्र सब मिलकर पार्लामेण्ट को ले जायं। वह लोग समझे थे कि इतने मनुष्य एक साथ प्रार्थना करैंगे तो पार्लामेण्ट को अस्वीकार करने का साहस न होगा; परन्तु दो बातें भूल गये थे, पहिली यह कि इतनी भीड़ लेकर पार्लामेण्ट को जाना क़ानून के विरुद्ध था और दूसरी यह कि अंगरेज़ी जनता अधिकांश का यह दृढ़ निश्चय था कि क़ानून बदलने के लिये पार्लामेण्ट धमकाई न जाय। गवर्मेण्ट ने सनदवालों की युक्ति को 'ख़िलाफ़ क़ानून' कह दिया और 'स्पेशल' पुलिस बनने के लिये लोगों को बुलाया जिसका अर्थ यह है कि उस दिन के लिये पुलिस के सिपाही बन जाओ। हज़ारों, गवर्मेण्ट का कहना मान गये और सनदवालों ने देखा कि

उनके विरोधियों की संख्या बहुत बढ़ गई। अनुमान से दो लाख स्पेशल पुलिस बनी। इनके अतिरिक्त ड्यूक वेलिंग्टन ने आवश्यकता पड़ने पर काम करने को सिपाही भी तैयार रक्खे थे। केनिंग्टन में पचीस हज़ार मनुष्यों से अधिक न थे और कितने उनमें से तमाशा देखने आये थे और उन्हें सनद की परवाह न थी। सनदियों की जमात ने कभी वेस्टमिंनस्टर ब्रिज पार करने का उद्योग न किया। बड़ी अर्ज़ी एक गाड़ी में रखकर कामन सभा में पहुंचाई गई। फ़ियरगज ओकानर (Feargus O'Connor) ने सभा में कहा कि इस अर्ज़ी पर सत्तावन लाख मनुष्यों के दस्तात्तर हैं। सभा ने दस्तात्तर गिने तो २० लाख भी न थे। दस्तात्तरों की जांच से यह भेद खुला कि सफ़े के सफ़े एक ही लिखाई के हस्तात्तरों से भरे हैं और कितने लोगों ने अपने नामों के बदले राजा अलबर्ट, ड्यूक वेलिंग्टन, और और प्रसिद्ध पुरुषों के नाम लिख दिये थे। कुछ नाम ऐसे थे जिनके पढ़ने से हंसी आती थी जैसे पगनोज़ (Pugnose=बन्दर की सी चिपटी नाक वाला), ऊडेन लेग्ज़ (Woodenlegs=लकड़ी की टांग वाला) और ब्रेड ऐण्ड चीज़ (Bread and Cheese=रोटी और पनीर)। इससे प्रकट है कि इन लोगों को सनद की परवाह न थी। परन्तु इसमें भी सन्देह नहीं कि हज़ारों को इसकी परवाह भी थी। मज़दूर कारीगरों ने शान्ति से कार्रवाई करके पार्लामेण्ट में सदस्य चुनने का अधिकार मांगने की योग्यता प्राप्त कर ली थी और देश के शासन के विषय में उनकी राय सुनने योग्य थी।

३।—पील की मृत्यु, बड़ी नुमाइश, रसल की गवर्मेण्ट—परन्तु मज़दूर कारीगरों को वोट मिलने का समय न आया था। अंगरेज़ों के चित्त व्याकुल हो रहे थे कि कहीं प्रोटेक्शनिस्ट लोग

फिर अनाज के क़ानून न जारी करालें। लोगों की दशा पहिले से सुधर गई थी और पिट के एक अनुयायी ने यहां तक कह डाला "वह लोग इसका कारण जानते हैं"। परन्तु उनको गवर्मेण्ट का पक्षपात बहुत न था और यह भी संभव है कि पील जीता रहता तो फिर प्रधानमंत्री बनाया जाता। दुर्भाग्य से वह एक दिन पार्क में घोड़े पर से गिर पड़ा और उसके ऐसी चोट लगी कि वह थोड़े ही दिनों में मर गया। उसके मरने के दूसरे बरस अंगरेज़ों पर हैडपार्क में बड़ी नुमाइश की धुन सवार हुई जहां संसार भर की वस्तु एक बहुत बड़े शीशे के घर में दिखाई गई। यह घर कुछ बढ़ा कर पेञ्जहिल (Penge Hill) में खड़ा किया गया। यह बड़ा उपयोगी काम था और सब से पहिले राजा अलबर्ट को सूझा था; और यह यों सफल हुआ कि परदेसियों का काम देखकर अंगरेज़ी कारख़ानेवालों ने अपने कामों में उन्नति करना सीख लिया। कितनों ने समझा कि इससे और भी बड़े बड़े लाभ होंगे। उनके विचार में यह आया कि लन्दन और नुमाइश देखने हज़ारों परदेसी आयेंगे तो लड़ाइयां बन्द हो जायंगी। परन्तु इसमें उन्हें निरास होना पड़ा। दो तीन बरस पहिले यूरप के छोटे बड़े राजाओं ने अपने देश के विद्रोहियों का दमन कर लिया था और कहीं कहीं जो उन लोगों ने पार्लामेण्टें स्थापित की थीं उनको उठा दिया था। कुछ ही दिन पीछे नुमाइश भी बन्द हो गई। पहिले सम्राट् के भतीजे लुइ नेपोलियन ने, जो फ्रान्सीसी प्रजातन्त्र-समिति का सभापति निर्वाचित किया गया था, समिति तोड़ दी और पैरिस में सिपाही भेज दिये कि जो उसके विरोधी हों उनको गोली मार दें। उसने फ्रान्स की जनता से कहा कि हमको दस बरस के लिये सभापति बना दो। जनता ने वैसा ही किया और कुछ ही समय बीतने पर उसे सम्राट् की पदवी दी। उसने उनसे एक

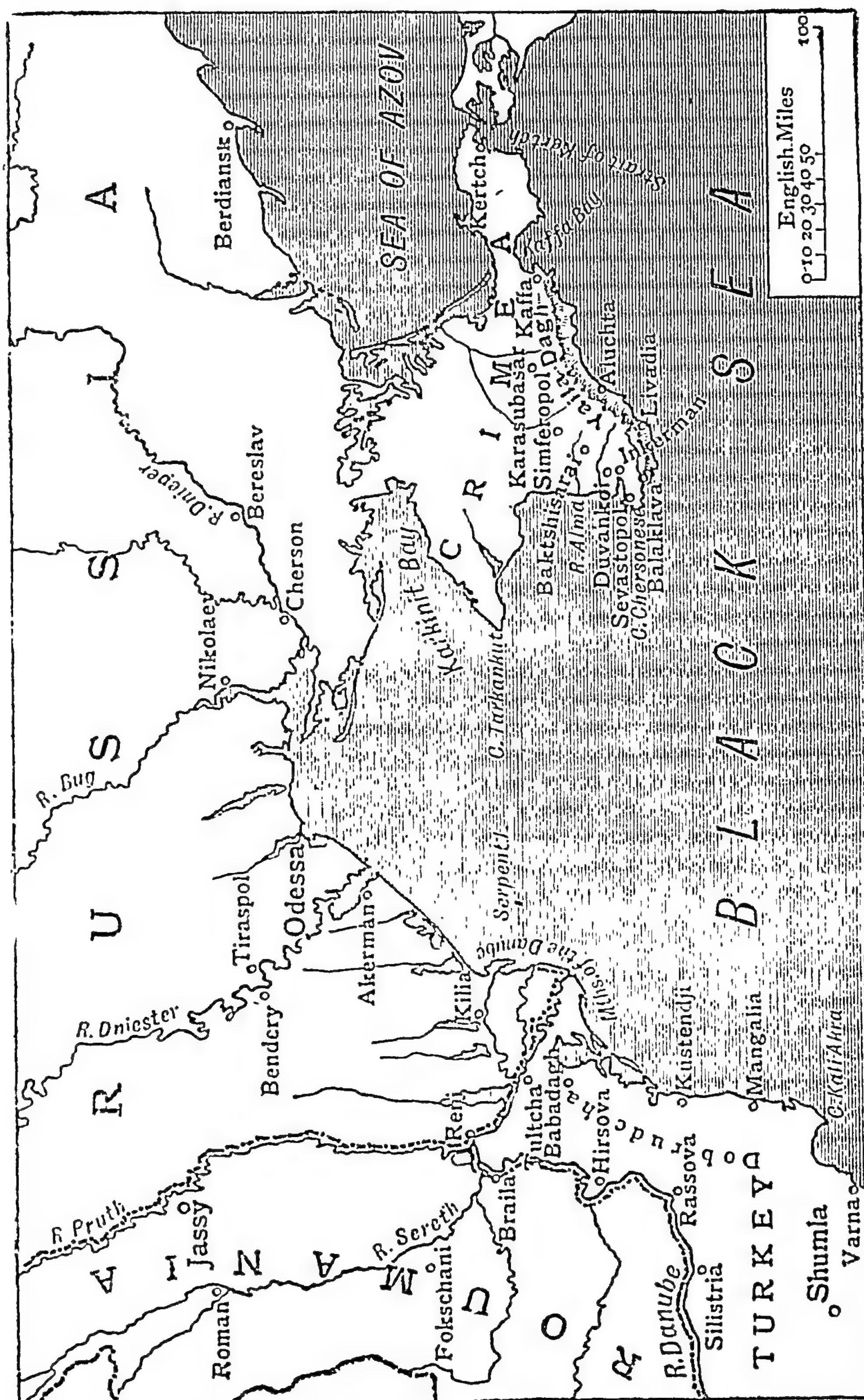
पार्लमेण्ट भी चुनने को कहा परन्तु यह भी आज्ञा दी कि समाचारपत्रवाले कोई ऐसी बात न छापें जिसे वह न चाहे और मूर्ख अनपढ़ों से कहा जाय कि सम्राट् बड़े महापुरुष हैं और बड़े बुद्धिमान् हैं। इस रीति से उसने कई बरस तक जो चाहा सो किया।

४।—डरबी (Derby) का मंत्रित्व—बड़ी नुमाइश बन्द होने को बहुत दिन न बीते थे कि लार्ड जान रसल की मंत्रिमंडली ने इस्तीफ़ा दे दिया और प्रोटेक्शनिस्ट लोग उस पद पर नियुक्त हुये। अर्ल डरबी उनका नायक था और कामन सभा में मिस्टर डिज़रेली (Disraeli) उनका मुखिया था। उन्होंने पार्लमेण्ट तोड़ दी परन्तु नई पार्लमेण्ट में उनके विरोधी बहुत थे। उन लोगों ने प्रोटेक्शन छोड़ दिया और कहा कि हम व्यापार की स्वतन्त्रता मानते हैं, परन्तु इससे काम न चला। सभा से उनको सहायता न मिली और उन्हें अपना पद त्याग देना पड़ा।

५।—संश्लिष्ट मंत्रिमण्डली (Coalition Ministry) और पूर्व का संकट—उनके जाने पर जो मंत्रिमंडली बनी उसका नाम संश्लिष्ट मंत्रिमंडली रक्खा गया क्योंकि इसमें कुछ लिबरल और कुछ सर राबर्ट पील के अनुयायी थे। अर्ल अबर्डीन (Earl Aberdeen) प्रधान मंत्री हुआ। उनके पद पर आते ही पूर्व में उपद्रव मचा। रूस का सम्राट् निकलस (Nicholas) ईसाई धर्म के उसी सम्प्रदाय का था जिस सम्प्रदाय के ईसाई बहुधा टर्की में रहते थे। सम्राट् और उसकी प्रजा दोनों को उन्हें सुल्तान के शासन से छुड़ाने में बड़ा आनन्द था। निकलस बड़े दृढ़ संकल्प का था; बड़ी क्रूरता के साथ अपनी प्रजा पर शासन करता और यह चाहता था कि रूस के बाहर भी लोग उसकी

शक्ति को मानैं। अपने दरबार के अंगरेज़ी राजदूत से उसने यह प्रस्ताव किया कि टर्की के कुछ ईसाई सूबों को स्वतन्त्र करके रूस की रक्षा में कर देना चाहिये और इंग्लिस्तान चाहै तो मिस्र और कैण्डिया टापू ले ले। ऐसे प्रस्ताव को अंगरेज़ मंत्री सुन कर चौंक पड़े। मंत्री न चाहते थे कि रूस को टर्की में पहिले से कुछ अधिक अधिकार मिल जायं और इस झगड़े को निपटाने के लिये ऐसा समझौता किया जाय जिस से रूस टर्की से उत्तर के प्रान्त छीन ले और उन्हें दक्षिन के अंश छीनने का अवसर मिल जाय।

६।—<u>रूस और टर्की (रूम) की लड़ाई</u>—जब निकलस ने देखा कि अंगरेज़ उसकी सहायता नहीं करते तो उसने आप अपना संकल्प पूरा करना निश्चय किया और सुलतान से कहा कि टर्की के ईसाई रहनेवालों की रक्षा का अधिकार हमैं दिया जाय। यह अधिकार मिल जाता तो निकलस की शक्ति पहिले से बढ़ जाती। ज्यों ही सुलतान और उसकी ईसाई प्रजा में अनबन होती ईसाइयों के अनुमोदन को रूसी सेना पहुंच जाती। तुर्क इसै कब मानने लगे और रूस ने डान्यूब नदी के तटपर जो छोटे छोटे राज्य थे और जो सब मिलकर रूमानियां कहलाते हैं उनपर दख़ल करने को सेना भेज दी। इंग्लिस्तान, फ़्रान्स, आस्ट्रिया और प्रशिया ने टर्की का साथ दिया यद्यपि सब की यह इच्छा थी कि जहां तक होसकै लड़ाई न हो। निकलस अपनी मांग पर दृढ़ रहा। टर्की ने भी न माना और रूस के साथ युद्ध की घोषणा कर दी। तुर्कों ने स्थल में अपनी पूरी रक्षा की परन्तु काले सागर में उसके जहाज़ी बेड़े को रूसियों ने नष्ट कर दिया। इसपर तुर्कों की रक्षा करने को अंगरेज़ी और फ़्रान्सीसी बेड़ा कालेसागर में पहुंचा। उस समय से यह प्रकट




क्रिमिया और उसके पास का देश ।

हुआ कि इंग्लिस्तान और फ्रान्स मिल कर रूस से युद्ध करेंगे। ई० १८५४ के आरम्भ में युद्ध की घोषणा कर दी गई। आस्ट्रिया और प्रशिया उदासीन रहे।

७।—क्रिमिया (Crimea) पर आक्रमण और अल्मा (Alma) की लड़ाई—अंगरेज़ी और फ्रान्सीसी सेना बलगेरिया के वारना (Varna) नगर में भेजी गई। डान्यूब-तट पर तुर्क ऐसी वीरता से लड़े कि इस सेना की आवश्यकता न रही और थोड़े ही दिन में रूसी सेना रूमानिया से चली गई। अंगरेज़ी मंत्रिमंडली में एक मनुष्य ऐसा था जो इतनी सफलता से सन्तुष्ट न था। लार्ड पामर्स्टन (Palmerston) ने अपने साथियों से कहा कि कालेसागर में रूस की शक्ति नष्ट कर दी जाय। फ्रान्स-सम्राट् ने भी उसका अनुमोदन किया; इसपर क्रिमिया टापू में सिबास्टपोल (Sebastopol) के बड़े गढ़ पर आक्रमण करना निश्चय किया गया जहां रूसी जहाज़ तोपों की रक्षा में रहते थे। अंगरेज़ी सेनापति लार्ड रगलन (Raglan) और फ्रान्सीसी सेनापति मार्शल सेण्ट आर्नो (Marshal St. Arnaud) को आज्ञा दी गई कि एक छोटी सी तुर्की सेना लेकर क्रिमिया पर चढ़ाई कर दी जाय। दोनों सेनापति चौंसठ हज़ार सैनिक साथ लेकर सिबास्टपोल के उत्तर उतरे और दक्षिण को चले। आलमा नदी के उसपार रूसी सेना एक पहाड़ी के उपर सजी खड़ी थी। नदी पार करके संमिलित सैनिक पहाड़ी तक चले गये। दोनों ओर सेनापतियों ने कोई रणकौशल न दिखाया परन्तु रूसी भगा दिये गये और अंगरेज़ों की जय हुई।

८।—सिबास्टपोल के घेरे का आरम्भ—कुछ लोग कहने लगे कि विजयी अंगरेज़ और फ्रान्सीसी झटपट सिबास्टपोल को पहुंच जाते तो सिबास्टपोल पर भी दख़ल हो जाता। ऐसा तो

किया नहीं गया और बन्दरगाह की परिक्रमा करके दक्षिण की ओर से सिबास्टपोल पर धावा मार दिया गया। तबभी कुछ समझे कि सम्मिलित सेनाओं को चटपट नगर में घुस पड़ना था। परन्तु उन लोगों ने पूरे घेरे का प्रबन्ध किया। इस रीति से सिबास्टपोल लेना सुगम न था। इसके भीतर तोपें भरी थीं और रक्षा का पूरा सामान था। सब से बढ़ कर बात यह थी कि एक बड़ा चतुर सेनापति टोडलबेन (Todleben) भी नगर के भीतर था। उसने तुरन्त मोर्चों पर तोपें चढ़ा दीं और स्थान को दृढ़ कर लिया। कोट का तोड़ना आक्रमण करनेवालों के वस की बात न थी।

६।—बलकलावा (Balaclava) का धावा और इङ्कर्मेन (Inkermann) की लड़ाई—इसके पीछे बलकलावा में युद्ध हुआ। रूसियों ने आक्रमण किया और हटा दिये गये। लार्ड कार्डिगन (Cardigan) घुड़सवार पल्टन का नायक था। उसको आज्ञा दी गई कि जो तोपें रूसी छीन ले गये थे उन्हें फेर लेने का उद्योग करे। उसने आज्ञा को यों समझा कि रूसी सेना के मध्य भाग पर आक्रमण करने का हुकुम हुआ है। महाकवि टेनिसन ने इसका वर्णन किया है। कार्डिगन की आज्ञा पाकर वीरलोग अपना परिश्रम व्यर्थ जानते हुये भी मौत के मुंह में कूद पड़े। नायक की आज्ञा मानना उनका धर्म था। बहुत कम बचे। एक फ्रान्सीसी सेनापति जो यह चरित्र देख रहा था कहने लगा "है तो बहुत अच्छा, परन्तु इसे लड़ाई नहीं कहते"। सेनापति सेनानायक का काम न जानता था और इंग्लिस्तान के मंत्री सेना के खाने पीने का प्रबन्ध न करते थे। इससे हज़ारों और मरे। इङ्करमैन में बड़ी लड़ाई हुई। बड़े सवेरे एक थोड़ी सी अंगरेज़ी सेना पर एकाएक रूसियों का दल टूट पड़ा। कुछ देर तक

लड़ाई हुई और फ्रान्सीसी भी पहुंच गये और रूसी भगा दिये गये। इससे दोनों सेनायें नष्ट होने से बच गईं।

१०।—क्रिमिया में जाड़ा—इङ्करमैन की लड़ाई नवम्बर मास लगते ही हुई थी। यह सिपाहियों की लड़ाई कहलाती है। अंगरेज़ी सैनिक और अंगरेज़ी पल्टनों के अफ़सर रूसियों की अपेक्षा बड़े चतुर थे और अपना कर्तव्य समझ कर काम करते थे। उनके सेनानायक में चतुराई न थी। उसने न आगम सोचा न आगम का कोई प्रबन्ध किया। इंग्लिस्तान के मंत्रियों ने भी जाड़े का कोई प्रबन्ध न किया। उन्हें आशा थी कि जाड़ा आने से पहिले ही सिबास्टपोल पर दख़ल हो जायगा। परन्तु जाड़ा सिर पर पहुंचा और सेना निचाट पहाड़ी के नीचे पड़ी थी। इसमें न मंत्रियों का दोष था न सेनापतियों का। बहुत दिनों से इंग्लिस्तान ने कोई बड़ी लड़ाई न लड़ी थी और पिछली लड़ाई से जो बातें सीखीं थीं सब भूल गई थीं। वेलिंग्टन का युद्धकौशल और उसके सैनिकों की वीरता का सब को स्मरण था परन्तु सेना के खाने पहिनने के प्रबन्ध करने में उसने जो धैर्य के साथ परिश्रम किया था उसे कोई न जानता था। इसमें सन्देह नहीं कि मंत्रियों ने बहुत सा सामान भेजा था परन्तु वह पूरा न पड़ा। काले सागर में आंधी आई और जिन जहाज़ों पर सिपाहियों के सुख की सामग्री रक्खी थी सब पहाड़ से टकरा कर टूट गये। इस आंधी पानी से तरपर पड़े सिपाहियों को ठंढक भी लगी। पाले से बचने के लिये उनके पास केवल पालें थीं। पालें भी आंधी में उड़ गईं तो उनको कोई सरन न रही। सैंकड़ों बीमार पड़ गये और उनके लिये दवा और सुख का सामान इंग्लिस्तान से भेजा गया। भूल पर भूल हुई। रोगी और घायल एक जगह भेजे गये और दवायें दूसरी जगह पहुंचीं। इंग्लिस्तान में

लोग सामान भेजने में इतने व्याकुल थे कि घबराहट में सीधे का उलटा कर बैठते थे। एक बार सिपाहियों को गरम रखने के लिये कुछ क़हवा भेजी गई। भेजनेवाले उसे भूनना भूल गये और न कोई कल भेजी जिससे क्रिमियां में भूनी जा सके। एक बार बहुत से जूते भेजे गये। क्रिमियां में पहुंचने पर देखे गये तो सब बायें पावँ के थे।

११।—स्कूटरी (Scutari) का अस्पताल—बड़ी कठिनाई से ज्यों त्यों करके रोगी कुस्तुनतुनिया के पास स्कूटरी (Scutari) के अस्पताल में भेज दिये गये। वहां पहुंचने पर उनकी चिकित्सा करने को डाक्टर तो मिले परन्तु उनकी सेवा शुश्रूषा को स्त्रियां (नर्सें Nurses) न थीं। प्रायद्वीप की लड़ाई में भी नर्सें न थी। युद्ध के मंत्री सिडनी हर्बर्ट (Sidney Herbert) ने देखा कि बिना स्त्रियों की सहायता के अच्छे से अच्छे डाक्टर कुछ नहीं कर सकते और उसने मिस फ़्लारेन्स नैटिंगेल (Miss Florence Nightingale) से कहा। नैटिंगेल ने रोगीयों और घायलों की सेवा शुश्रूषा का काम अपने आप सीख लिया था। नैटिंगेल मान गई और कुछ और स्त्रियों को साथ लेकर जो उसके साथ बिना वेतन के काम करने को राज़ी हो गई थीं स्कूटरी पहुंची। उसकी सहायता से अस्पताल का काम समुचित रीति से होने लगा। बहुतेरे रोगियों की जान बच गई और स्त्रियों की सेवा में मरनेवाले बड़ी शान्ति के साथ परलोक को चले गये। उसने जो काम किया वह सब तरह से अच्छा था। आजकल जो अच्छी बातें हो रही हैं उनमें एक यह भी है कि स्त्रियां पुरुषों के जीवन संग्राम में अनेक प्रकार से सहायता कर सकती हैं। रानी एलिज़बेथ के समय में महाकवि शेक्सपियर ने बहुत सी उदार और सुन्दर स्त्रियों के चरित बखाने थे।

परन्तु शेक्सपियर के ध्यान में फ़्लारेन्स ऐसी उदार स्त्री न आई थी। उन दिनों की अच्छी स्त्रियां अपने पति, और अपने भाइयों की सेवा करती थीं। अब स्त्रियां घर के बाहर निकलकर कंगालों, दीनदुखियों और रोगीयों की सेवा करती हैं।

१२।—पामर्स्टन का मंत्रित्व—अपने देश में अंगरेज़ क्रिमिया में विपत्ति और संकट सुन कर बहुत रुष्ट हो गये थे। उनके विचार में इसमें किसी का दोष अवश्य था परन्तु यह निर्णय करना कठिन था कि किसका दोष था। पार्लामेण्ट की बैठक होते ही गवर्मेण्ट पर आक्षेप किया गया और मंत्रिमंडली ने इस्तीफ़ा दे दिया। चारों ओर से लोग चिल्लाने लगे कि लार्ड पामर्स्टन प्रधानमंत्री बनाया जाय क्योंकि सब जानते थे कि लड़ाई उसके जी जान से लगी है और वह बड़ा समझदार और दृढ़-संकल्प है। सेना के प्रबन्ध सब धीरे धीरे ठीक कर दिये गये। कदाचित् पामर्स्टन न भी होता तोभी दशा सुधर जाती। सरकारी अफ़सर खो खो कर अपना कर्त्तव्य सीख रहे थे। जाड़ा बीत रहा था और उनका काम भी हलका हो रहा था। परन्तु यह भी अच्छा हुआ कि शासन का प्रधान अधिकारी ऐसा आ गया जो आप काम करना जानता था और दूसरों से काम ले सकता था।

१३।—सिवास्टपोल का पतन और युद्ध का अन्त—गरमी की ऋतु आते ही सिवास्टपोल का अवरोध किया गया। अंगरेज़ी सेना की दशा अच्छी थी और अफ़सर और सिपाही अपना अपना काम सीख रहे थे। परन्तु फ़्रान्सीसी सेना हमारी सेना से बड़ी थी। उसके मोरचे बहुत अच्छे थे जहां से नगर पर बड़ी सुगमता से आक्रमण हो सकता था। एक धावे में अंगरेज़ और फ़्रान्सीसी दोनों को पीछे लौटना पड़ा, दूसरे में अंगरेज़ हारे परन्तु फ़्रान्सीसी कृतकार्य हुये और सिबास्टपोल ले

लिया गया। दूसरे जाड़े में अंगरेज़ी सेना की संख्या बढ़ गई और शिक्षा में भी उन्नति कर दी गई। परन्तु फिर लड़ाई न हुई। जिस कठिन जाड़े में अंगरेज़ी और फ्रान्सीसी सेना की इतनी हानि हुई थी उसी में सम्राट् निकलस भी मर गया। सिबास्ट-पोल के पतन पर उसका उत्तराधिकारी अलेक्ज़ैण्डर द्वितीय (Alexander II) सन्धि करने को तैयार हो गया और ई० १८५६ के बसन्त ऋतु में सन्धि हो गई। सिबास्टपोल के कोट गिरा दिये गये और रूस से प्रतिज्ञा कराई गई कि काले सागर में जंगी बेड़ा न रक्खे। युद्ध का मुख्य उद्देश यह था कि रूस सुलतान के शासित देशों के मामलों में जैसा आप चाहै वैसा न कर सकै और यह प्रयोजन सिद्ध हो गया। इंग्लिस्तान में लोग समझे थे कि तुर्की गवर्मेण्ट भी सुधर जायगी और उन प्रान्तों पर अच्छा शासन होगा। परन्तु यह भूल निकली। सुलतान और उसके मंत्री ज्यों के त्यों बने रहे, न सुधरे न शासन करना सीखा और दोही चार बरस पीछे टर्की में फिर उपद्रव होने लगा।

## ॥ अध्याय ४८ ॥

### ❊ हिन्दुस्तान का बलवा ❊

(ई० १८५७, १८५८)

१।—हिन्दुस्तान में उपद्रव—क्रिमिया की लड़ाई बन्द होने के साल लोगों का ध्यान टर्की से भी पूर्व के दूर देश पर गया। ई० १८५७ में क्लाइव को पलासी युद्ध जीते हुये सौ बरस हो चुके थे। हिन्दुस्तान के रहनेवाले अधिकतर हिन्दू हैं उनका धर्म उन्हें कुछ ऐसी बातें सिखाता है जो अंगरेज़ों को विचित्र जान

पड़ैंगी। उनमें एक बात यह है कि गाय के अंग का कोई अंश खाने से हिन्दू दूषित हो जाता है। दूषित होने से उसके साथी उससे घृणा करते और मरने के पीछे परलोक में उसे दण्ड मिलता है। हिन्दुस्तान की सरकारी सेना में अधिकतर हिन्दू ही थे। उन दिनों सिपाहियों के लिये एक विशेष प्रकार की बन्दूक़ बनी थी और नली में कारतूसों को भरने के लिये उनमें चिकनाई लगाई जाती थी। लोग यह समझे कि उनमें गाय की चर्बी लगी हुई है। वास्तव में ऐसी बात न थी। इस भ्रम के कारण हिन्दुस्तानी सिपाहियों में बड़ा असन्तोष फैल गया। कुछ लोग समझे कि गवर्मेण्ट हमारा धर्म बिगाड़ना चाहती है और बिगड़ गये। जब मूर्ख लोगों को सन्देह के साथ साथ क्रोध आ जाता है तो बड़े अनर्थ कर बैठते हैं। बहुतेरे हिन्दुस्तानी राजा लोग भी असन्तुष्ट थे। इससे आपत्ति बढ़ गई। इन राजाओं के छोटे छोटे राज्य सारे हिन्दुस्तान में फैले हुये थे और कोई राजा दूसरे से युद्ध नहीं कर सकता था। कितनों का शासन बहुत बुरा था। बड़े बड़े कर लगा कर उन्हों ने अपनी प्रजा को नष्ट कर दिया था और कर का धन बुरे व्यसनों में उड़ाया करते थे। हिन्दुस्तान में अंगरेज़ी गवर्मेण्ट ने हस्तक्षेप करके बहुतों को सिंहासन से उतार कर उनका राज अपने राज में मिला लिया था और अपने हाकिमों से उनका शासन करती थी। इससे जो राजा लोग अधिकार-रहित नहीं हुये थे उन्होंने भी समझा कि हमारी बारी आना चाहती है और हम भी कुछ दिन में निकाले जायंगे। ऐसे लोग सफलता की सम्भावना देख कर अंगरेज़ों के विरोधियों की सहायता करने को तैयार थे।

२।—बलवे का उभाड़—सब से पहिले सिपाहियों ने मेरठ में खुल्लम खुल्ला ग़दर मचा दिया, अपने अंगरेज़ी अफ़सरों पर गोली चलाई; दो चार को मार डाला और जो अंगरेज़ उनके

आगे आये उनका वध करके दिल्ली को चले। दिल्ली में एक बुड्ढा रहता था जिसके पुरखे हिन्दुस्तान जीतनेवाले मुसलमानों के सरदार थे और जिन्हों ने मुग़ल बादशाहों के नाम से कई पीढ़ी तक हिन्दुस्तान का शासन किया था। परन्तु उनके वंश में जो आजकल बादशाह कहलाता था उसके न बल था और न प्रभुता थी परन्तु वह एक बड़े महल में राजसी ठाट बाट से रहता था और उसके सुख भोग के लिये उसे एक बहुत बड़ी पिनशन दी जाती थी। बलवाइयों ने उसे हिन्दुस्तान के बादशाह की पदवी देकर उसे अपना स्वामी और नायक बनाया। सौभाग्य वश उन दिनों जार्ज कैनिंग का बेटा लार्ड कैनिंग गवर्नर जनरल था। उसे बलवाइयों को दबाना आता था और उसने तुरन्त एक अंगरेज़ी सेना को जो चीन को जा रही थी हिन्दुस्तान में उतारने का प्रबन्ध किया। उसके आने से पहिले उसे अपनी सहायता के लिये हिन्दुस्तान ही में सामग्री ढूंढनी पड़ी। हिन्दुस्तान के पश्चिमोत्तर का पंजाब प्रान्त थोड़े ही दिन पहिले जीता गया था और सब से अच्छी अंगरेज़ी सेना भी वहीं थी। पंजाब का शासक सर जान लारेन्स भी हिन्दुस्तान के अंगरेज़ी नीतिज्ञों में बड़ा चतुर था। उसने पंजाब के हिन्दुस्तानी सिपाहियों के हथियार रखवा लिये और दिल्ली का अवरोध करने के लिये एक सेना भेज दी। इस सेना में केवल अंगरेज़ ही सिपाही न थे। पंजाब के रहनेवाले सिक्ख लोग बड़े क्रूर योद्धा होते हैं। कई बरस पहिले उन्होंने अपनी स्वतन्त्रता के लिये बड़ी लड़ाई लड़ी थी परन्तु आजकल लारेन्स और उसके मातहतों के अच्छे शासन से सिक्ख लोग अंगरेज़ों के भक्त और अनुरक्त हो गये थे। यह लोग गंगा की तरेटी में रहनेवालों को तुच्छ समझते थे और बलवाइयों से लड़ने को तैयार हो गये। लारेन्स ने दिल्ली को जो सेना भेजी थी उसमें सिक्ख बहुत थे। सिक्ख

और अंगरेज़ दोनों बहुत लड़े परन्तु दिल्ली बहुत बड़ा नगर है। उसके लेने में बहुत समय लग गया।

२।—कानपूर—बलवा अवध की राजधानी लखनऊ तक फैल गया। अवध थोड़े ही दिन पहिले अंगरेज़ी राज में मिलाया गया था। इस नगर में थोड़े से अंगरेज़ थे जिन्होंने बेली गारद में भाग कर शरण ली, जिसे उन बलवाइयों की एक क्रोधी भीड़ घेरे हुये थी। परन्तु यहलोग सहायता आने तक वहीं अड़े रहे। कानपूर में इससे भी बढ़ कर बुरी बातें हुईं। वहां स्त्री पुरुष और बच्चे मिलाकर एक हज़ार अंगरेज़ थे। उनके बुड्ढे सेनानायक सर ह्यू ह्वीलर (Sir Hugh Wheeler) ने नाना साहब का विश्वास करना उचित समझा क्योंकि नाना साहब थोड़ी दूर पर रहता था और ह्वीलर से बड़ा मित्रभाव दिखाता था। सर ह्यू क्या जानता था कि नाना सारी अंगरेज़ी जाति का वैरी हो गया है क्योंकि अंगरेज़ी गवर्मेण्ट ने उसकी वरासत के हक़ को नहीं माना। ह्वीलर एक अस्पताल में चला गया जिसके चारों ओर एक नीची कच्ची दीवार थी। उसके साथ पांच सौ से कुछ अधिक स्त्री बच्चे और पांच सौ से कुछ कम मर्द थे। नाना साहब आ गया परन्तु ह्वीलर की सहायता करने को नहीं; वह बलवाइयों से मिल गया। बलवाई बार बार उस नीची दीवार पर धावा मारते रहे परन्तु बार बार मार कर भगा दिये गये। सारे दिन गोलियां चलीं और कितने अंगरेज़ मारे गये। स्त्री और बच्चे अपने प्राण बचाने को दीवार के पीछे रेंगकर दुबक रहे। धूप से बचने के लिये ऊपर छत न थी। पानी भरने को एक ही कुआं था और जो लोग भरने जाते थे उनके प्राण जोखिम में पड़ जाते थे। बलवाइयों ने उसी कुएं पर गोलियां चलाईं और कई मनुष्य अपने प्यासे बच्चे या स्त्री के लिये पानी

लाने के उद्योग में मरे या घायल होकर गिर पड़े। नाना साहब ने देखा कि बल से अस्पताल नहीं मिल सकता तो उसने कहा कि इसे छोड़ दो तो सब लोग कुशल से निकल जाओ। अंगरेज़ मान गये और जो बचे थे वे सब नदी के किनारे ले जाकर बड़ी बड़ी नावों में सवार कराये गये जिससे बहाव में कहीं दूसरी जगह चले जायं। परन्तु बलवाइयों ने उनको धोखा दिया। बलवाई चाहते न थे कि अंगरेज़ यहां से बचकर जायं और नदी के तीर पर इकट्ठा होकर उनपर गोलियां चलाईं। कुछ स्त्री और बच्चे जो जीते बचे थे एक मकान में ले जाकर कुछ दिन तक जीते रक्खे गये और पीछे घातक भेजकर मार डाले गये, और उनकी लाशें उसी कुएं में डाल दी गईं जिसमें से घेरे के दिनों में उनके पति और उनके भाई उनके लिये पानी लेने गये थे। ह्वीलर के साथ आरम्भ में जितने मनुष्य थे उनमें से अपनी विपत्ति की कहानी कहने को केवल चार बचे।

४।—दयालु कैनिंग—ऐसे समाचार पाकर हिन्दुस्तान में अंगरेज़ क्रोध से पागल हो गये हों तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। घटनायें बुरी थी पर इनसे बढ़कर भयंकर बातें कही गईं और सच्ची मानी गईं। अबतो चारों ओर "बदला, बदला" की चर्चा होने लगी। इंग्लिस्तान के ऐसे लोग भी, जिन्होंने दया के कामों में अपना जीवन बिताया था, निष्ठुरता से कहने लगे कि घातक तो मारे ही जायं परन्तु नगर उजाड़ दिये जायं और उनके ऐसे हज़ारों बच्चे तक मारे जायं जो दहिने और बायें हाथ में भेद न बता सकते थे। हिन्दुस्तान के अंगरेज़ तो उनसे भी अधिक बिगड़े हुये थे। इस हुल्लड़ से एक मनुष्य शान्त रहा और वह लार्ड कैनिंग था। उसे लोग उपहास से दयालु कैनिंग कहने लगे। उसने संकल्प किया कि केवल दण्ड देना चाहिये और

जहां तक हो सकै अपराधियों के साथ निरपराध लोग न सताये जायं। उसै हज़ारों ने धिक्कारा परन्तु उसका नाम सदा आदरणीय रहेगा। अनर्थ करने पर तुली हुई भीड़ को रोकना उससे बढ़कर वीरता है जो कानपुर में दीवार के पीछे खड़े होकर मरने को तैयार रहने में दिखाई गई थी।

५।—<u>दिल्ली का फिर से ले लिया जाना और लखनऊ का उद्धार होना</u>—थोड़े ही दिन पीछे दशा सुधर गई। हिन्दुस्तान के दक्षिण में ग़दर न हुआ। अन्त को दिल्ली ले ली गई और सहायक पल्टनें आने लगीं। जो अंगरेज़ लखनऊ में बन्द थे उनकी दशा शोचनीय थी। सर जान लारेन्स का वीर और सुजन भाई सर हेनरी लारेन्स मारा गया। सहायता न पहुंचती तो भूख से व्याकुल होकर आत्मसमर्पण हो जाता और कानपूर का सा दूसरा संहार होता। वेली गारद में रहनेवालों पर गोलियां बरसती थीं और अस्पताल के रोगी भी घायल हुये या मारे गये। रक्षकों के पांवों के नीचे सुरगें उड़ीं और बैरी दल बादल की भांति उमड़ आया; परन्तु बड़ी वीरता से हटा दिया गया। थोड़े से रक्षकों पर बैरी की गोलियां तो बरसती ही थीं, रोग और मृत्यु ने अपने उपद्रव का यही अवसर देखा। परन्तु सहायता आ रही थी जिसका उनको ज्ञान न था। हैवलक एक वीर और धार्मिक योद्धा था। वह क्राम्वेल के समय के प्युरिटन सिपाहियों की भांति आप ईश्वर का भजन करता और अपने सिपाहियों को भजन करना सिखाता था। वही लखनऊ को बढ़ा आ रहा था। उसके साथ थोड़े से सिपाही थे परन्तु काम भर को बहुत थे। यह राह भर लड़ता भिड़ता दृढ़ता से चला आता था। रास्ते में दूसरा योद्धा

सर जान अउटराम (Sir John Outram) उसे मिल गया। अउटराम हैवलक का अफ़सर था और चाहता तो उससे कमान ले लेता। परन्तु उसने उदारता से कहा "लखनऊ के उद्धार का जस तुम्हीं को मिलना चाहिये। तुमने इसके लिये इतना परिश्रम किया है। मैं तुम्हारे साथ रहूंगा तुम चाहो तो मेरे साथ जो युद्ध की सामग्री है मुझसे ले लो। मैं तुम्हारे संग वलंमटेर वन कर काम करूंगा"। दोनों वीर अपने दया के काम के लिये लड़ते रहे। लखनऊवालों को समाचार मिल गया कि दोनों आ रहे हैं परन्तु यह कोई न मानता था कि ठीक समय पर पहुंच जायंगे। अन्त को आनन्द का समाचार मिल ही गया। किसी ने वैरी के पीछे हैलैन्डर (Highlanders) सिपाहियों का देसी वाजा सुना। हैवलक और अउटराम दोनों पहुंच गये और संकट में पड़े हुये रक्षकों के प्राण वचे।

६।—<u>हिन्दुस्तान में सर कालिन केम्बेल (Sir Colin Campbell)</u>—हैवलक ने लखनऊ के रक्षकों की सहायता की परन्तु वैरी के मार भगाने को उसके पास पूरी सेना न थी और वह वीमार होकर मर गया। इससे पहिले एक पुराना स्काट सेनापति सर कालिन केम्वेल हिन्दुस्तान का प्रधान सेनापति मुक़र्रर हो चुका था। केम्वेल के पास हैवलक की अपेक्षा कुछ अधिक सेना थी। उसने टुकड़े टुकड़े करके सारा भारत जीत लिया। दुष्टों को भयानक दण्ड दिया गया और शान्ति स्थापित हो गई। हिन्दुस्तान के शासन का काम पहिले से भी कठिन हो गया। अव हमारे वेटे पोते यह वता सकते हैं कि यह काम कैसे पूरा हुआ है।

## ॥ अध्याय ४९ ॥

### हिन्दुस्तान के बलवे के अन्त से दूसरे सुधार के क़ानून (Reform Bill) के पास होने तक ।

### (ई० १८५८ से १८६७ तक)

१।—सुधार के मसौदे जो पास न हुये—हिन्दुस्तान का बलवा दबने से पहिले ही लार्ड पामर्स्टन के मंत्रित्व का अन्त हो गया। पैरिस में सम्राट् नेपोलियन के मार डालने का यत्न किया गया और एक परदेसी पर जो इंग्लिस्तान में रहता था इस षड़यन्त्र से सम्बन्ध रखने का सन्देह किया गया। उसने कुछ किया हो या न किया हो अंगरेज़ी जुरी ने उसे निर्दोष ठहराया। इस पर फ़्रान्सवाले अंगरेज़ों से बहुत बिगड़े और अंगरेज़ों से कहने लगे कि अपने क़ानून बदल दो। संसार में कोई जाति नहीं चाहती कि उसे कोई और उसका कर्त्तव्य बताये और लार्ड पामर्स्टन पर फ़्रान्स की गवर्मेण्ट पर बड़ी अनुवृत्ति का दोष लगा। कामन सभा में वह पिटा और उसने इस्तीफ़ा दे दिया। उसके निकल जाने पर कन्सर्वेटिव-दल का अधिकार हुआ। लार्ड डर्बी प्रधान मंत्री बनाया गया। मिस्टर डिज़रेली कामन सभा का नेता हो गया। यह मंत्रित्व बहुत दिनों तक न चला। कई बरस से लिबरल दल के बहुतेरे नीतिज्ञों की यह इच्छा हो रही थी कि सुधार (Reform) का एक नया मसौदा बनना चाहिये जिससे मज़दूरों को भी वोट देने का अधिकार मिले और ऐसे मसौदे के पास कराने के लिये अनेक बार प्रयत्न किये गये। परन्तु कामन सभा में बहुतों को ऐसे मसौदे की परवाह न थी और सभा के बाहर भी लोग इससे उपेक्षा ही करते थे। उनके

चित्त और विषयों में लगे थे। उन्हें यूरप के राज्य-विप्लवों पर विचार करना था। उन्ही दिनों फ्रान्स में साम्राज्य स्थापित किया गया, क्रिमिया की लड़ाई हुई और हिन्दुस्तान में बलवा हो गया। जब यह सब हो चुका तो कन्सर्वेटिव दल ने दूसरा सुधारमसौदा बनाया परन्तु उनको भी सफलता न हुई। लिबरल दल ने इसे बुरा मसौदा कहा और उन्हें कामन सभा में हराया। इस पर नई पार्लामेण्ट बनी और नई कामन सभा ने उनसे विरोध किया। लार्ड पामर्स्टन दूसरी बार प्रधानमंत्री हुआ। पामर्स्टन को सुधारमसौदे की परवाह न थी परन्तु उसके कुछ साथी चाहते थे इससे उसने उन्हें एक नया मसौदा पेश करने दिया। नई कामन सभा ने भी पहिले की भांति इससे उपेक्षा की इससे कुछ न हुआ और जब तक लार्ड पामर्स्टन जिया दूसरा मसौदा पेश न हुआ।

२।—इटली में फ्रान्सवालों की लड़ाई—सुधार के मसौदे से उपेक्षा का कदाचित् यह कारण था कि लोग इटली की घटनाओं को बड़े ध्यान से देख रहे थे। यह देश छोटी छोटी रियासतों में बंटा हुआ था और बहुतेरे ड्यूक और राजा जो इन पर शासन करते थे उनका शासन प्रजा की इच्छा के प्रतिकूल था। इटली के पूर्वोत्तर प्रान्त पर मिलान से वीनिस तक आस्ट्रिया का राज्य था और आस्ट्रिया की सेना राजाओं और ड्यूकों (रायों) की सहायता अपनी ही प्रजा के दबाने में करने को तैयार थी। इस स्थिति में कोई आश्चर्य नहीं जो इटलीवालों के जीमें यह बात आ गई कि सब मिलकर एक जाति बन जायं और आस्ट्रियावालों के हस्तक्षेप के बिना अपना काम आप करें। बहुत दिनों से इटली के वीरों का विचार था कि अपने देश को स्वतन्त्र कर दें परन्तु आस्ट्रियावाले बड़े बली थे और उनसे कुछ न हो सका।

ई० १८४८ में जिस साल यूरप में अनेक राजविप्लव हुये, सार्डिनिया का राजा चार्ल्स आलबर्ट जो इटली के पश्चिमोत्तर प्रान्त का शासक था इटली की स्वतन्त्रता के लिये लड़ने को तैयार हो गया। उसने आस्ट्रियावालों पर आक्रमण कर दिया। परन्तु आस्ट्रियावालों का बल अधिक था इससे वह मार खा गया और उसे अपना सिंहासन छोड़ देना पड़ा। उसका उत्तराधिकारी उसका बेटा विक्टर इमानुयल ( Victor Emanuel ) बहुत दिनों तक अपने पिता की आकाङ्क्षा पूरी करने का अवसर देखता रहा। अन्त को ई० १८५९ में हिन्दुस्तानी बलवे के दो बरस पीछे वह अपना मनोरथ सिद्ध कर सका। नेपोलियन ने उसे सहायता देने की प्रतिज्ञा की और एक फ्रान्सीसी सेना सम्राट् ही के नायकत्व में इटली में पहुंच गई और मजेण्टा (Magenta) और सोलफेरैनो (Solferino) की दो बड़ी बड़ी लड़ाइयों में आस्ट्रियावालों को परास्त किया। इटलीवाले समझे थे कि आस्ट्रियावाले इटली से निकाल दिये जायंगे। परन्तु विलम्ब में उन्हीं का भला था। नेपोलियन का कोई विश्वास न करता था। उसने अपने जी में समझा हो कि इटलीवालों की सहायता करना बड़ी उदारता का काम है परन्तु वह अपनी घात में भी था। प्रशियावालों ने आस्ट्रिया की सहायता करने की धमकी दी और सम्राट् ने सन्धि कर ली जिससे मिलान ( Milan ) के आस पास का देश विक्टर इमानुयल को मिल गया और वीनिस के आस पास का देश जो विनीशिया (Venetia) कहलाता था आस्ट्रियावालों के हाथ में रह गया।

२।—इटली का राज्य—इटली के शेष भागों की समस्या बड़ी कठिन थी। सम्राट् की युक्ति यह थी कि सब ड्यूक ज्यों के त्यों बने रहें और विक्टर इमानुयल के साथ मित्रभाव रक्खें

परन्तु ड्यूक सब भाग गये थे और उनकी प्रजा न चाहती थी कि फिर आकर उनका शासन करें। उन्हों ने यह प्रार्थना की कि विक्टर इमानुयल ही उनके भी राजा हों। इससे इटली का मध्य भाग भी पश्चिमोत्तर प्रान्त से मिल गया। बरस दो बरस पीछे नया राज्य कुछ और भी बढ़ गया। नेपल्स राज्य पर चढ़ाई करने को गेरीबाल्डी (Garibaldi) एक हज़ार सिपाही साथ लेकर सिसिली में उतरा। नेपल्स का राजा अपने को प्रजाप्रिय बनाना जानता ही न था और उसका राज्य नष्ट हो गया। इससे विक्टर इमानुयल ट्यूरिन का राजा तो था ही नेपल्स का भी राजा हो गया। दूसरा प्रश्न यह उठा कि पोप की रियासत इस नये राज्य का अंश बन जाय। और देशों से बहुत से कैथोलिक, विशेष करके फ्रान्स और ऐरलैण्ड से पोप की ओर से लड़ने आये परन्तु इटली की सेना ने उन को हरा दिया। फ्रान्स के सम्राट् ने बीच में पड़कर रोम नगर और उसके आस पास का प्रान्त पोप को दिला दिया परन्तु यह शर्त की कि रोम की रक्षा के लिये एक फ्रान्सीसी सेना नगर में रहे। विक्टर इमानुयल रोम और विनीशिया छोड़ कर सारी इटली का शासक हो गया।

४।—<u>वल्सटर</u>—इन परिवर्तनों में अंगरेज़ी गवर्मेण्ट इटली का भला चाहती रही। बहुतेरे अंगरेज़ इस बात को सुन कर बहुत प्रसन्न हुए कि यूरप में एक और स्वतन्त्र राज्य हो गया। कम से कम उनको यह बहुत भाया कि फ्रान्सवालों को इटली का कोई अंश न मिला। अंगरेज़ फ्रान्स के सम्राट् से बहुत चौंके रहते थे। उसके अनेक मनसूबे थे और कोई यह न बता सकता था कि आगे क्या करेगा। लार्ड पामर्स्टन ने सोचा कि जो कुछ भी बुरा से बुरा करे उसके लिये सावधान रहना चाहिये। लार्ड

पामर्स्टन के मन्त्री होने के पहिले से ही सारे काम धंधे करनेवाले जवानों में वलूमटेर पल्टन बनाने को तैयार हो गये थे जो कि देश पर वैरी की चढ़ाई को रोकें। इन लोगों को पूरा पूरा उत्साह दिया गया और बन्दूकची वलूमटेरी-पल्टन अंगरेज़ी सेना का स्थायी अंग बन गई।

५ —फ़ान्स के साथ व्यापारिक सन्धि—पामर्स्टन के मंत्रिदल में मिस्टर ग्लैड्स्टोन कोशमंत्री (Chancellor of the Exchequer) था और कर का प्रबन्ध करना उसी का काम था। वह निरन्तर उस काम के पूरा करने का उद्योग करता रहा जिसे पील ने अधूरा छोड़ दिया था और वह काम यह था कि कर लगाने की युक्ति सुधार दी जाय और असह्य कर उठा दिये जायं। इंग्लिस्तान और फ़ान्स में युद्ध का जोखम उठाना उसे अच्छा न लगता था और उसने बड़ी प्रसन्नता से फ़ान्स के सम्राट् के पास व्यापारिक सन्धि स्वीकार करने का प्रस्ताव भेज दिया। इस सन्धि के अनुसार अंगरेज़ी माल फ़ान्स में बहुत थोड़ा महसूल देकर भेजा जा सकता और फ़ान्स की शराबें और वहां का और माल इसी भांति इंग्लिस्तान में आ सकता। इस सन्धि का प्रबन्ध काब्डन (Cobden) ने किया और सम्राट् से इस विषय में बात चीत करने को पैरिस गया। काब्डन और ग्लैड्स्टोन दोनों ने समझा कि दोनों जातियों में व्यापार बढ़जाने से लड़ाई की संभावना घट जायगी।

६।—अमरीका में आपस की लड़ाई—यहां तो फ़ान्स के साथ सन्धि हो रही थी उधर अटलाण्टिक पार की घटनाओं पर सारे यूरप का ध्यान चला गया। अमरीका के संयुक्त राज्य दो खंडों में बंटे हुये थे। दक्षिण के राज्यों में करोड़ों हबशी दास अपने मालिकों का काम करते थे। यह काम अधिकतर ईख और

कपास की खेती का था। उत्तर में दास न थे। स्वतन्त्र राज्य सम्वृद्ध हो गये उनकी संपत्ति और उनकी जनसंख्या दोनों बढ़ गई। दासोंवाले राज्यों की उन्नति न हुई। दासों के स्वामियों ने समझा कि अपने अपने दास लेकर पश्चिम को चले जायं और नई धरती जोतें तो हमारी दशा सुधर जायगी। स्वतन्त्र राज्यों ने कहा कि तुम अपने दास जहां हैं वहीं रक्खो परन्तु दास राज्यों के बाहर उनको कहीं न लेजाओ। ई० १८६० में एक नये सभापति का चुनाव हुआ। यह सभापति चार बरस तक प्रजातन्त्र शासन का अधिष्ठाता रहता है। इस बार अब्रहम लिंकन (Abraham Lincoln) चुना गया और उसका दृढ़ संकल्प था कि दास-राज्यों के बाहर दास नई धरती जोतने बोने न पायेंगे। दक्षिण के राज्यों ने अपनी स्वतन्त्रा की घोषणा कर दी और सम्मिलित राज्यों (Confederate States) के नाम से अपना अलग गवर्मेण्ट बना लिया। उत्तर के राज्यों ने अपना पुराना नाम संयुक्त राज्य (United States) रहने दिया और दृढ़ संकल्प कर लिया कि सम्मिलित राज्य अलग न होने पायंगे। इस पर युद्ध छिड़ गया जो चार बरस तक जारी रहा।

७।—<u>राह रोकनेवाले जहाज़ (Blockade Runners)</u>—अंगरेज़ लोग कुछ इधर हो गये कुछ उधर। सौदागर और ऊंची श्रेणीवाले अधिकतर दक्षिणवालों के पक्ष में रहे। उत्तर-वालों का जहाज़ी बेड़ा प्रबल था उसने माल का आना बन्द करने के लिये दक्षिण के बन्दरगाह रोक दिये। इंग्लिस्तान के बहुत से सौदागरों ने अपने तेज़ चलनेवाले धुआंकश सजा दिये जो सम्मिलित राज्यों में अस्त्र शस्त्र गोला बारूद और और सामान पहुंचा दें। कुछ दिन बाद सम्मिलित राज्यों को यह सूझा कि अपने अंगरेज़ी मित्रों से जंगी जहाज़ मोल लेकर अंगरेज़ी

बन्दूकसाज़ों से मंगवालें। अंगरेज़ी सौदागरों ने उनकी बात मान ली और धन लेकर अपने जहाज़ संयुक्त राज्यों के व्यापारी जहाज़ों को लूटने और जलाने को भेज दिये। इन में अलबामा (Alabama) नाम जहाज़ बहुत प्रसिद्ध था। इसने बहुत बड़ी हानि की परन्तु अंगरेज़ी गवर्मेण्ट ने उसको अनुचित रीति न रोकी थी इस कारण सब अंगरेज़ी गवर्मेण्ट को हानि भर देनी पड़ी।

८।—<u>रूई का काल</u>—इंग्लिस्तान के एक भाग में अमरीका की लड़ाई से बड़ी विपत्ति पड़ी। उत्तर के बड़े बड़े नगरों में लाखों मनुष्य रूई के कपड़े बनाकर अपना पेट पालते थे और कपड़े बनाने की रूई अधिकतर दक्षिण के राज्यों से आती थी। उत्तर के जहाज़ इनकी राह बन्द किये हुये थे इससे दक्षिण राज्यों से रूई का आना असम्भव हो गया। अब यही गति रह गई कि मिस्र, हिन्दुस्तान और पृथिवी के और प्रान्तों से रूई मंगाई जाय। परन्तु यह रूई अमरीका की रूई से घट कर थी और वह भी पूरी न पड़ी। रूई के तोड़े से कल कारख़ाने कुछ तो बन्द हो गये और कुछ में थोड़ी ही देर तक काम होने लगा। हज़ारों मनुष्य जो अपनी जीविका निर्वाह के लिये काम करने को तैयार थे बिना अपराध ही के ख़ाली बैठ गये। कितने भूखों मरने लगे। परन्तु सब ने अपनी विपत्ति बड़े धैर्य के साथ झेल ली। ऐसे संकट में पड़ने पर भी सब शान्त रहे और उत्तर के राज्यों को किसी ने भी न कोसा यद्यपि उन्हीं के राह रोकने से उनपर यह विपत्ति पड़ी थी। उनका यह विश्वास था कि दक्षिण के दास-स्वामियों का ही दोष है और लड़ाई कुछ दिन और चली तो उत्तरवाले जीत जायंगे और जीतने पर दासों को मुक्त कर देंगे। इंग्लिस्तान के उत्तर के मज़दूरों के विचार ठीक थे। चार बरस

की कठीन लड़ाई पर उत्तर के राज्य जीत गये और दास स्वतन्त्र कर दिये गये। अंगरेज़ मज़दूरों ने अपना कुछ विचार न किया था तौ भी उन्हों ने अपना गौरव बढ़ा दिया और यह दिखा दिया कि अपने सिर कुछ ही बीते, अंगरेज़लोग उस काम के लिये संकट सहने को तैयार हैं जिसे उचित समझते हैं। ऐसे लोगों को अपने कर्त्तव्य पालन करनेवाले नागरिकों के अधिकार कौन न देगा। जब उन्होंने दिखा दिया कि बड़े संकट पड़ने पर भी उन्होंने क़ानून के प्रतिकूल कोई काम न किया तो वह लोग क़ानून बनाने के लिये पार्लामेण्ट में सदस्य भेजने को वोट पाने के योग्य हैं। उनको इस योग्य बनाने के लिये पार्लामेण्ट के सुधार में अब विलम्ब न होना चाहिये।

९।—लार्ड पामर्स्टन के अन्तिम दिन—यह सब जानते थे कि लार्ड पामर्स्टन पार्लामेण्ट के सुधार का विरोधी है। परन्तु मिस्टर ग्लैड्स्टोन ने इसका समर्थन किया और उसका प्रभाव बढ़ता जाता था। ई० १८६५ में नई पार्लामेण्ट चुनी गई परन्तु इसकी बैठक होने से पहिले ही लार्ड पामर्स्टन मर गया। वह अस्सी बरस का था और मरते मरते काम करता रहा। इंग्लिस्तान में वह अत्यन्त लोकप्रिय था। वह सदा प्रसन्न चित्त रहता और सब से मीठी बातें बोलता था। परन्तु अब एक ऐसा काम आ गया जिसके करने को एक जवान की आवश्यकता थी।

१०।—अर्ल रसल का मंत्रित्व—लार्ड पामर्स्टन का उत्तराधिकारी जवान न था। वाटर्लू की लड़ाई के कुछ ही दिन पीछे लार्ड जान रसल (John Russell) ने पार्लामेण्ट में सुधार का समर्थन किया और पहिले सुधार मसौदे से उसने बहुत काम किया था वही अब अर्ल रसल के नाम से प्रधान मंत्री हुआ। उसने एक दूसरे सुधार मसौदे का समर्थन किया जिसके अनुसार

मज़दूरों को भी वोट मिलें, जैसे पहिले मसौदे ने व्यापारियों को वोट दिये थे। इस समय कामन सभा में मिस्टर ग्लैड्स्टोन मुखिया माना जाता था। एक सुधार का मसौदा उपस्थित किया गया परन्तु कामन सभा ने उसे मंजूर न किया। मंत्रिदल ने तुरन्त इस्तीफ़ा दे दिया उन्होंने यह सोचा कि पार्लामेण्ट में सुधार का काम बड़े गौरव का है और हम इसे नहीं कर सकते तो हमारा मंत्री होना व्यर्थ है। लार्ड पामर्स्टन भी एक सुधार का एक मसौदा पेश करके मंत्री बना रहा परन्तु उसको सुधार की परवाह न थी और यह मंत्रिमण्डली उसे जी जान से चाहती थी।

११।—कन्सर्वेटिव मंत्रिमंडल और सुधार का दूसरा मसौदा—इसके अनंतर कन्सर्वेटिव मंत्री हुए। लार्ड डरबी (Lord Derby) प्रधान मंत्री हुआ परन्तु सब से अधिक आदर मिस्टर डिज़रेली का था। कामन सभा के बहुत से सदस्य सुधार की परवाह न करते थे परन्तु यह सब को विदित हो गया कि मज़दूर इसे बहुत चाहते थे। इसके समर्थन में देश में कई जगह सभायें हुईं। लन्दन में बहुत लोगों ने सुधार पर व्याख्यान देने के लिये हैड पार्क (Hyde Park) में एक सभा करना निश्चित किया। गवर्मेण्ट ने उन्हें रोकना चाहा। लोग कटहरे तोड़ कर घुस गये और सभा की। गवर्मेण्ट को विदित हो गया कि उनको पार्क में जाने से रोकना अनुचित था। मिस्टर डिज़रेली ने भी देखा कि मज़दूर भी सुधार के लिये तुले हुये हैं और यह निश्चय किया कि हम यह काम कर डालेंगे। जब पार्लामेण्ट की बैठक हुई तो उसने एक सुधार मसौदा पेश किया जो किसी को अच्छा न लगा। तब उसने दूसरा मसौदा पेश किया और वह मंजूर होकर क़ानून बन गया, और जिस किसी के पास किसी नगर में कैसा ही मकान था उसे, और जिनके

पास गांवों में अच्छे घर थे उनमें से बहुतों को वोट देने का अधिकार मिल गया। मज़दूरों की मनोकामना पूरी हो गई और क़ानून बनाने में उनकी सलाह ली जाने लगी।

## ॥ अध्याय ५० ॥

### दूसरे सुधार मसौदे के पास होने के समय से बीकन्सफ़ील्ड के मंत्रित्व के अन्त तक।

### (ई० १८६७ से १८८० तक)

१।—<u>ऐरलैण्ड में गड़बड़</u>—सुधार के मसौदे के पास होने के साल ऐरलैण्ड में बड़ा उपद्रव मचा हुआ था। वहां एक समिति बनी जिसके सदस्य फ़ेनियन (Fenian) कहलाते थे। उसका उद्देश यह था कि ऐरलैण्ड इंग्लिस्तान से अलग हो जाय। अमरीका में इस समिति के बहुतेरे सहायक थे क्योंकि बहुत से ऐरिश वहां बस गये थे। ऐरलैण्ड में विद्रोह करने का प्रयत्न किया गया। इस विद्रोह के सफलता की आशा न थी क्योंकि विद्रोहियों के पास हथियार न थे। जब ऐरिश लोग पहाड़ियों पर इकट्ठे हुए तो बरफ़ गिरने लगी और बलवाई खुले मैदान में न रह सके। विद्रोह बड़ी सुगमता से दबा दिया गया। मैञ्चेस्टर में कुछ फ़ेनियन क़ैदी एक बन्द गाड़ी में जा रहे थे। कुछ ऐरिश उस गाड़ी पर दौड़ पड़े और क़ैदियों को छुड़ाने के लिये गोली चलाई जिससे एक पुलीस का सिपाही मर गया। इस पर कुछ ऐरिश लोगों पर क़तल का मुक़द्दमा चला और उन्हें फांसी दी गई।

२।—<u>ऐरिश धर्मसंघ और ग्लैड्स्टोन की मंत्रिमण्डली</u>—लिबरल दल पर इन बातों का बड़ा असर हुआ और विशेष करके

मिस्टर ग्लैड्स्टोन पर। उसने विचार किया कि ऐरिश लोगों को बल से दबाने से काम न चलेगा। उचित यह है कि उनकी शिकायतों की जांच करके उनके दूर करने का उपाय किया जाय। पहिला प्रस्ताव उसने यह किया कि प्रोटेस्टैण्ट धर्मसंघ की आमदनी बन्द कर दी जाय। ऐरिश लोग अधिकांश रोमन कैथोलिक थे और उन्हें अपने पादरियों की तनख़ाहें अपने पास से देनी पड़ती थीं और प्रोटेस्टैण्ट पादरियों की तनख़ाह एक ऐसे कर से दी जाती थी जो क़ानून से सारे ऐरलैण्डवालों को देना पड़ता था उनका धर्म कुछ ही क्यों न हो और गवर्मेण्ट कैथोलिक पादरियों की अपेक्षा उनका आदर मान भी बहुत करती थी, मानों उनका धर्मसंघ सारे देश का धर्मसंघ था। मिस्टर ग्लैड्स्टोन ने प्रस्ताव किया कि यह प्रथा बन्द करदी जाय और पादरी कैथोलिक हो या प्रोटेस्टैण्ट सब अपनी अपनी जमाअत से तनख़ाह पायें। प्रधानमंत्री लार्ड डर्बी की बीमारी के कारण मिस्टर डिज़रेली उनका काम करते थे। मिस्टर डिज़रेली ने इसका प्रतिवाद किया परन्तु कामन सभा मान गई। पार्लामेण्ट टूट गई और नई पार्लामेण्ट मिस्टर ग्लैड्स्टोन के पक्ष में थी। इस कारण मिस्टर ग्लैड्स्टोन प्रधानमंत्री हो गया।

२।—<u>ऐरिश धर्मसंघ का क़ानून और ऐरिश अराज़ी का क़ानून</u>—नई मंत्रिमंडली ने पहिला काम यह किया कि ऐरिश प्रोटेस्टैण्ट धर्मसंघ की आमदनी बन्द करदी। दूसरा काम यह किया कि ऐरिश धरती का एक क़ानून बनाया और ज़िमींदारों और काश्तकारों के साथ न्याय करने का प्रयत्न किया। इस पर भी ऐरलैण्ड में कई बरस पीछे शिकायत हुई कि पूरा न्याय न हुआ। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि जो क़ानून बना था वह अनरीति के निवारण करने का अच्छा प्रयत्न था।

४ ।—शिक्षा का क़ानून—इंग्लिस्तान में भी बहुत से परिवर्त्तन किये गये। सब से बड़ा परिवर्त्तन शिक्षाप्रणाली में था। बरसों तक गवर्मेण्ट को पार्लामेण्ट ने शिक्षाप्रचार में उत्तरोत्तर उन्नति करने का अवसर दिया। देश में कुछ समितियां थीं जो पाठशालाओं को इस शर्त पर चन्दा दिया करती थीं कि लड़कों को समुचित रीति से शिक्षा दी जाय। उनको गवर्मेण्ट ने बहुत सा धन दिया। एक क़ानून ऐसा बना जिससे ज़िले के रहनेवालों को अपने ख़र्चे से पाठशाला स्थापित करने का अख्तियार मिल गया। ये पाठशाला बोर्ड के स्कूल कहलाते थे और इनमें समितियों से अधिक लड़के शिक्षा पाते थे। जो माता पिता अपने बच्चों को पाठशाला न भेजते थे वे भी भेजने को बाध्य किये गये।

५ ।—गोली (Ballot) का क़ानून—दूसरी नई बात चुनावों में बैलट के द्वारा वोट देने की रीति थी। इससे पहिले वोट देनेवाले अपना वोट खुल्लम खुल्ला देते थे। इस प्रथा में कितने ऐसे भी रहते थे जो अपने मालिकों या पड़ोसियों को नाराज़ करने के डर से वोट ही न देते थे। बैलट की रीति चलने से कोई यह नहीं जान सकता कि किसको वोट दिया गया। उस समय यह समझा गया था कि बैलट से वोटरों को रिशवत देना बन्द हो जायगा। परन्तु यह बात न हुई। हमको यही आशा करनी चाहिये कि एक दिन ऐसा होगा जब वोट के लिये रुपया लेना बड़ी लज्जा की बात समझी जायगी। सौ बरस पहिले ज़िमींदार और भले मानस जिस बात में धन का लाभ होता उसके लिये पार्लामेण्ट में वोट देने को रिशवत लिया करते थे और संभव है कि आज से सौ बरस आगे कोई लेखक इसै एक आश्चर्य की बात लिखैगा कि चुनाव में कुछ लोग अपने वोटों के लिये रुपया लेते थे।

६ ।—फ्रान्स और जर्मनी की लड़ाई—जिस समय इंग्लिस्तान में यह सब हो रहा था, यूरप महाद्वीप में बड़ी बड़ी घटनायें हो रही थीं । ई० १८६६ में प्रशिया और आस्ट्रिया के बीच में एक लड़ाई हुई जिसमें प्रशिया की पूरी जीत हो गई । इटली ने प्रशिया की सहायता की थी । इससे लड़ाई के अन्त होने पर उसै वीनिस के आस पास का प्रान्त मिल गया और आस्ट्रिया इटली से अलग हो गया । फ्रान्स प्रशिया से जलने लगा और ई० १८७० में सम्राट् नेपोलियन प्रशिया के राजा से लड़ बैठा । इस युद्ध में सारी जर्मनी ने प्रशिया का साथ दिया । जर्मन लोगों ने फ्रान्स पर आक्रमण कर दिया और फ्रान्सीसियों को कई युद्धों में परास्त कर दिया । सम्राट् नेपोलियन क़ैद कर लिया गया और फ्रान्स में फिर प्रजातन्त्र स्थापित हो गया । इसके बाद पैरिस नगर को जर्मन सेना ने घेर लिया । बड़ी बड़ी कठिनाई झेलने पर इस बड़े नगर में जब लोग भूखों मरने लगे तो आत्म-समर्पण कर दिया । फ्रान्स को अपने कुछ सूबे जर्मनी को देने पड़े । प्रशिया का राजा जर्मन सम्राट् हो गया और जर्मनी की छोटी छोटी रियासतें मिल गईं, जिनसे जर्मन साम्राज्य बन गया । इटलीवालों ने भी रोम नगर ले लिया और अन्त को संयुक्त इटली एक राजा के आधीन हो गई ।

७ ।—पहिले ग्लैड्स्टोन-मंत्रित्व का अन्त—अपने देश में ग्लैड्स्टोन की मंत्रिमण्डली बहुत व्यग्र रही और अनेक परिवर्त्तन देखते देखते लोग घबरा गये । जिन्होंने मंत्रिमण्डली की सहायता की थी वह लोग भी इस काम से असन्तुष्ट हो गये; इससे जब ई० १८७४ में नया चुनाव हुआ तो उसमें कन्सर्वेटिवदल के बहुत से सदस्य आ गये । मिस्टर डिज़रेली प्रधान मंत्री बना और इस पद पर छः बरस तक रहा ।

८।—मिस्टर डिज़रेली का मंत्रित्व और तुर्की बखेड़े—कुछ दिन बीते, टर्की में फिर बखेड़ा हुआ। टर्की में बहुत से ईसाई रहते थे जिनपर तुर्क अत्याचार करते थे। इससे घबरा कर ईसाइयों ने बलवा कर दिया। एक स्थान पर तुर्कों ने ईसाई स्त्री पुरुष और बच्चे बड़ी निठुराई से मार डाले। यूरपी राज्यों ने यह विचारने के लिये कि क्या करना चाहिये कुस्तुन्तुनिया में अपने दूत भेजे और उन लोगों ने सुल्तान को बहुत अच्छी सलाह दी परन्तु सुल्तान ने न कभी मानी थी न अब मानी। इस पर रूस के अतिरिक्त सब राज्य चुप बैठ रहे। रूस ने सुलतान के साथ लड़ाई की घोषणा कर दी जिससे वह सब की सलाह के अनुसार काम करे। यह लड़ाई साल भर तक होती रही। रूस-वालों को बड़ी कठिनाइयां झेलनी पड़ीं और उनके बहुत से सिपाही मारे गये परन्तु अन्त में उन्हों ने टर्की को कड़ी मार मारी। इस पर सुलतान के साथ एक सन्धि की गई जिससे यूरपी टर्की का बहुत बड़ा हिस्सा सुलतान से ले लिया गया और जो लोग वहां रहते थे उन्हीं को दे दिया गया। मिस्टर डिज़-रेली अब अर्ल बीकन्सफ़ील्ड हो गया था। उसने सोचा कि रूस इन सूबों के रहनेवालों को अपने शासन में रक्खेगा और बड़ा शक्तिमान हो जायगा। इस विचार से उसने और अंगरेज़ी गवर्मेण्ट ने इस बात पर हठ किया कि रूस और राज्यों से भी सलाह ले और एक नया सन्धिपत्र लिखा जाय और न मानै तो उसके साथ युद्ध किया जाय। इससे वह इंग्लिस्तान में बहुत ही लोकप्रिय हो गया जहां कुछ ऐसे लोग भी थे जो रूस से लड़ना न चाहते थे। अन्त को रूस भी मान गया और और राज्यों ने अपने दूत बर्लिन को भेजे। यहां एक नया सन्धिपत्र लिखा गया जिससे कुछ ईसाई जातियां स्वतन्त्र कर दी गईं और कुछ जो रूसी सन्धि के अनुसार सुलतान के शासन से निकाल ली

गई थीं फिर उसे दे दी गईं। तब से और भी झगड़े बखेड़े हुये हैं और जब तक सुलतान का राज्य रहेगा बन्द न होंगे क्योंकि उसे अच्छा शासन करने की शिक्षा देना संभव नहीं है और न वह सीखने की परवाह ही करता है।

६।—कन्सर्वेटिव मन्त्रिमंडली का अन्त—कुछ दिन बीतने पर पृथिवी के और भागों में भी लड़ाइयां हुईं। अफ़ग़ानिस्तान पर दूसरा आक्रमण हुआ और ज़ूलू देश में लड़ाई हुई। ई० १८८० में दूसरी पार्लमेण्ट बैठी। अब लोगों ने यह समझा कि कन्सर्वेटिव मंत्रिदल को युद्ध करने की बड़ी रुचि है इससे पार्लामेण्ट में लिबरल बहुत आ गये और मिस्टर ग्लैड्स्टोन दूसरी बार प्रधान मंत्री हो गया।

## ॥ अध्याय ५१ ॥

### ग्लैड्स्टोन का दूसरा मन्त्रित्व और सैलिसबरी का पहिला मंत्रित्व।

१।—बेदख़ली का मुआवज़ा—नई मन्त्रिमण्डली को पहिले उन झगड़ों पर विचार करना पड़ा जो ऐरलैण्ड के ज़िमींदार और काश्तकारों के बीच में उठ खड़े हुये थे। फ़सिल अच्छी न होने के कारण बहुतेरे किसान अपना लगान न दे सके थे। उनमें से बहुत से बेदख़ल कर दिये गये। इससे किसानों में बड़ा वैमनस्य फैला क्योंकि किसानों ने ही न कि ज़िमींदारों ने अराज़ी की हैसियत में तरक्की की थी। बेदख़ल किसान धरती तो खोही बैठा, जिसके विषय में यह कहा जा सकता है कि उसकी न थी, वरन उसके हाथ से वह वस्तु भी निकल गई जिसकी क़ीमत उसी की मेहनत से बढ़ गई थी। नये गवर्मेण्ट में

मिस्टर फ़ार्स्टर (Forster) ऐरिश सेक्रेटरी था। उसने किसानों के फ़ायदे का एक मसौदा पेश करना चाहा। परन्तु ऐसी कठीन अवस्था पर झटपट विचार करने का समय न था इसलिये उसने एक ऐसा मसौदा पेश करने पर सन्तोष किया जिसमें वेदख़ली के लिये मुआवज़ा दिया जाय। इसका अभिप्राय यह था कि जो किसान ऐसे कारण से वेदख़ल हो जाय जिसमें उसका दोष नहीं है तो उसे ज़िमींदार मुआवज़ा दे। इस मसौदे को लार्ड सभा ने नामंज़ूर कर दिया और मिस्टर फ़ार्स्टर और गवर्मेण्ट दोनों को जाड़े की ऋतु में ऐरलैण्ड में शान्ति रखनी पड़ी। दोनों जानते थे की प्रजा को संकट है परन्तु उसके दूर करने का उपाय न किया। उन्होंने ज़िमींदारों से कहा कि किसानों पर दया करनी चाहिये परन्तु ज़िमींदारों का जो क़ानूनी हक़ था उसके दिलाने में उनकी सहायता करना अपना कर्त्तव्य माना। ऐरलैण्ड के वहुत से ज़िमींदार दया करना चाहते थे परन्तु कुछ ऐसे भी थे जो ऐसे काश्तकारों को वेदख़ल करना चाहते थे जो लगान न दे सकते थे।

२।—गवर्मेण्ट और लैण्ड लीग (Land League)—इन दिनों कानूनसभा में ऐरलैण्ड के कुछ सदस्य होमरूलर कहलाते थे। यह लोग समझे थे कि ऐरलैण्ड की कठिनाइयों का वास्तव में तब तक अन्त न होगा जब तक उस देश के मामिलों पर क़ानून बनाने के लिये वहीं एक पार्लामेण्ट बैठा न करे। इस दल का मुखिया मिस्टर पार्नेल (Parnell) था। मिस्टर पार्नेल ने किसानों का पक्ष लिया और उनको यह सलाह दी कि तुम केवल उन्हीं ज़िमींदारों के विरुद्ध न खड़े हो जाओ जो तुम्हें वेदख़ल करैं वरन् उन किसानों से भी विरोध करो जो वेदख़ली की ज़मीन ले लें। इस सलाह पर "वाइकाट" करने की रीति

निकली। इसका नाम यों पड़ा कि पहिले पहिल इसका प्रयोग कप्तान बाइकाट (Boycott) पर किया गया था। जो मनुष्य ऐसी काश्तकारी लेता या उसके लेने से कोई सम्बन्ध रखता उसे उसके पड़ोसी त्याग देते थे, न उससे कोई बोलता न उसके हाथ कुछ बेचता और न उससे कुछ मोल लेता था। लैण्ड लीग (धरती-समिति) के नाम की एक समिति बनी, जिसकी शाखायें ऐरलैण्ड के कोने कोने में फैली थीं। यही समिति पड़ोसियों को सिखाती थी कि अमुक अवसर पर बाइकाट करना चाहिये। थोड़े ही दिनों में बाइकाट के साथ मारपीट और बध भी होने लगे। ऐरलैण्ड के कई प्रान्तों में अन्धेर मचा हुआ था। कितने बेचारे जिनका इतना ही अपराध था कि उन्होंने बेदख़ली की धरती ले ली थी या लगान दिया था गोली मार दिये गये या कड़ी चोट खा गये। इन लोगों के निरपराध गाय बैल मार डाले जाते या बेदर्दी से घायल कर दिये जाते थे। गवर्मेण्ट को यह विश्वास हो गया कि यह काम कुछ थोड़े से बदमाशों का है, और ई० १८८१ में प्राणरक्षा के लिये एक क़ानून पास किया जिसमें गवर्मेण्ट को यह भी अधिकार मिला कि जिसपर सन्देह हो उसे बिना अदालती कार्रवाई के जेलख़ाने में बन्द करदे।

२।—ऐरलैण्ड की धरती का क़ानून (Land Act)—उन्हीं दिनों गवर्मेण्ट ने एक धरती का क़ानून पास किया जिसके अनुसार ऐरलैण्ड में लगानों का फ़ैसला सरकारी कमिशनर करें। इसमें किसानों के लाभ की कुछ बातें थीं। मिस्टर पार्नल ने विचारा कि इससे भी किसान का पूरा हित नहीं हो सकता और उसने किसानों को सलाह दी कि जब तक कमिशनरलोग कुछ मुक़द्मे न कर लें और उनके फ़ैसलों से यह न देखा जाय कि किसानों के साथ न्याय करते हैं तब तक लगानों का फ़ैसला न

करायें। गवर्मेंएट ने समझा कि पार्नेल किसानों को इस क़ानून से फ़ायदा उठाने से रोक रहा है और उसे क़ैद कर रक्खा जब तक कि क़ानून के फ़ायदे सब न जान लें।

४।—ऐर्लैएड में धीरे धीरे शान्ति—ई० १८८२ में मिस्टर पार्नेल ने गवर्मेंएट से यह सन्देसा कहला भेजा कि मैं छोड़ दिया जाऊं और किसानों को कुछ और सहायता देने के लिये एक क़ानून पास कर दिया जाय तो मैं जहांतक मुझसे हो सकेगा 'जुर्म'* रोकने का प्रयत्न करूंगा। इसको गवर्मेंएट ने मान लिया परन्तु मिस्टर फ़ौर्स्टर ने ऐसे मनुष्य से वचन हारना जो सारे अनर्थ का कारण समझा जाता था अनुचित समझा और अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया। उसका उत्तराधिकारी लार्ड फ्रेडरिक कवेण्डिश (Lord Frederick Cavendish) ज्यों ही ऐर्लैएड पहुंचा कि वह और एक और कर्मचारी मिस्टर बर्क (Burke) दोनों दिन दिहाड़े मार डाले गये। इसपर एक नया क़ानून बनाया गया जिससे अपराधों का दमन सुगम हो गया और एक और क़ानून पास हो गया जिससे किसानों की दशा सुधरी। इतना किये जाने पर किसानों को सन्तोष होने लगा और अपराधों की संख्या बहुत घट गई।

५।—मिस्र देश पर चढ़ाई—ई० १८८२ में अरबी नाम का एक मिस्री अफ़सर सेना की सहायता से देश में सब से प्रबल हो गया और उसने तौफ़ीक़ पाशा को जो उनदिनों मिस्र का खदेव अर्थात् शासक था निपट शक्तिहीन कर दिया। यूरप के कुछ लोगों को यह डर लगा कि कहीं ईसाई न मार डाले जायं, इसलिये अरबी का दमन होना चाहिये। कुछ ने यह समझा कि जो रुपया मिस्र की सरकार को उधार दिया गया है उसके मिलने

* अपराध, लूट मार इत्यादि।

में बाधा पड़ जायगी। अरबी के दमन की चर्चा फैल गई और अंगरेज़ी गवर्मेंट ने यह काम अपने हाथ में ले लिया। सिकन्दरिया नगर आक्रमण करके ले लिया और तलउल-कबीर की लड़ाई में अरबी हार गया। अरबी लंका भेज दिया गया और तौफ़ीक़ का राज्य फिर संस्थापित कर दिया गया। परन्तु तौफ़ीक़ में अंगरेज़ों की सहायता के बिना शासन करने की शक्ति न थी। तब से मिस्रदेश में अंगरेज़ी सिपाही रहते हैं और अंगरेज़ी सलाहकारों ने तौफ़ीक़ और उसके उत्तराधिकारी अब्बास को प्रजा की दशा सुधारने में सहायता दी है।

६।—सूदान और मेंहदी—अफ़्रीका का वह प्रान्त जो मिस्र के दक्षिण में है सूदान कहलाता है जिसका अर्थ है कालों का देश। पहिले इसपर मिस्र की गवर्मेंट शासन करती थी परन्तु कुछ दिनों से यह प्रान्त एक मनुष्य के अधिकार में था जो अपने को मेंहदी बतलाता था। मुसलमानों का विश्वास है कि इस्लाम धर्म का प्रचार सारे संसार में करने को एक मेंहदी उत्पन्न होगा। ई० १८८३ में हिक्स पाशा की कमान में एक सेना भेजी गई थी जिसे मेंहदी ने नष्ट कर दिया। हिक्स एक अंगरेज़ मिस्र गवर्मेंट का नौकर था। इसपर अंगरेज़ी सरकार ने तौफ़ीक़ पाशा को सलाह दी कि सूदान जीतने का विचार छोड़ दिया जाय।

७।—गार्डन और सूदान—सूदान के कई भागों में अब भी मिस्री सेना रहती थी और अंगरेज़ों ने यह समझा कि मेंहदी ने उनको जीत लिया तो स्त्री बच्चों तक को मार डालेगा। अंगरेज़ों को उनके बचाने की बड़ी चिन्ता हुई परन्तु विना बड़ी सेना के यह काम असम्भव था और ऐसे गरम देश में बड़ी सेना भेजना भी कठिन काम था। जनरल (सेनापति) गार्डन (Gordon)

ने कहा कि मैं बिना किसी सेना के, मिस्री सेना को, बचाने का प्रयत्न करूंगा। वह बड़ा बांका वीर था और मनुष्य जाति के उपकार करने को वह अपने तन प्राण की भी परवाह न करता था। उसने एक बार सूदान पर बड़े न्याय के साथ अच्छा शासन किया था और उसे प्रजा बहुत मानती थी क्योंकि उसने उसे बड़ी विपत्ति से बचाया था। ई० १८८४ में वह सूदान की राजधानी ख़ार्तूम में बहुत थोड़े से सिपाही लेकर गया परन्तु उसे तुरन्त विदित हो गया कि मेंहदी का दमन करना उसके बस की बात नहीं है। अंगरेज़ी सरकार ने बड़े संकोच के साथ उसकी सहायता को सेना भेज दी। यह सेना जब ख़ार्तूम पहुंची तो एक वंचक देशी ने फाटक खोल दिये। मेंहदी के अनुयायी नगर में घुस पड़े। गार्डन मार डाला गया और अंगरेज़ी सेना किसी को बचाती क्या, उलटे पांवों भागी।

८।—तीसरा सुधार का क़ानून—गार्डन को बचाने में कृतकार्य न होने से इंग्लिस्तान की तात्कालिक गवर्मेण्ट लोक-विद्विष्ट हो गई। परन्तु अपने टूटने से पहिले इसने कन्सर्वेटिव दल से मिलकर एक तीसरा सुधार का क़ानून पास कराया। इसके अनुसार देश से ज़िलों में बांट दिया गया और प्रत्येक ज़िले को एक सदस्य चुनने का अधिकार रहा। कौण्टियां और बरोओं के हक़ बराबर कर दिये गये। इस युक्ति से किसानी के काम के मज़दूरों और कारीगरों को भी वोट मिल गये। ई० १८८५ में यह मंत्रित्व निकल गया और इसके स्थान पर लार्ड सैलिस्बरी के नेतृत्व में कन्सर्वेटिव गवर्मेण्ट स्थापित हो गया।

९।—सैलिस्बरी का पहिला मन्त्रित्व—नई गवर्मेण्ट को यह विचार करना पड़ा कि एरलैण्ड के लिये क्या करना चाहिये। ग्लैड्स्टोन की मंत्रिमण्डली ने ऐरलैण्ड में अपराधों के दमन करने

के जितने समय के लिये क़ानून पास किया था वह समय बीत रहा था और नये मन्त्रियों ने यह निश्चय कर लिया कि पार्लमेण्ट से इस क़ानून की मीयाद बढ़ाने का प्रस्ताव न किया जायगा क्योंकि इसके बिना ही ऐरलैण्ड के शासन की आशा है। ऐरलैण्ड के होम रूलर जिनका मुखिया मिस्टर पार्नेल था इससे बहुत प्रसन्न हुये और उन्हें यह आशा हुई कि गवर्मेण्ट ने उनके मांगे अधिकार पूरे पूरे न दिये तोभी कोई युक्ति स्वीकृत कर लेगी जिससे ऐरलैण्ड के मामिले ऐरलैण्ड ही में इतने निपटा दिये जायंगे जितने अब तक न निपटते थे। जब यह स्थिति हो गई तो पार्लमेण्ट भी टूट गई और उसके पीछे जो चुनाव हुआ उसमें बहुतेरे ऐरिश लोगों ने जो इंग्लिस्तान में रहते थे, कन्सर्वेटिव उम्मेदवारों को वोट दिये।

१० ।—सैलिसबरी-मन्त्रित्व का पतन—चुनाव का परिणाम यह हुआ कि नई पार्लमेण्ट में लिबरल दलवाले आधे आ गये और आधे कन्सर्वेटिव और ऐरिश होमरूलर रहे। ई० १८८१ में पार्लमेण्ट की पहिली बैठक हुई तो गवर्मेण्ट ने ऐरलैण्डवालों से मेल करने का विचार छोड़ दिया और ऐरलैण्ड में अपराधों के दमन के लिये दूसरा मसौदा पेश करने का प्रस्ताव किया। परन्तु इसके लिये उनको समय न मिला और एक दूसरे मामले में हार खाकर मन्त्रियों को अपना अपना पद त्याग देना पड़ा।

## ॥ अध्याय ५२ ॥

### * होमरूल के लिये झगड़ा *

१ ।—तीसरा ग्लैड्स्टोन-मंत्रित्वकाल और होमरूल का मसौदा—मिस्टर ग्लैड्स्टोन ने तीसरी वार मंत्रिमंडली बनाई

और तुरन्त ही पार्लामेण्ट में होमरूल का मसौदा पेश कर दिया। इसके अनुसार ऐरलैण्ड के लिये सारे विषयों पर ऐसे क़ानून बनाने को जिनकी विशेष रूप से मनाही न की गई हो, डबलिन में एक पार्लामेण्ट बैठा करती। मनाहीवाले विषयों पर अंगरेज़ी पार्लामेण्टही विचार करती। उसमें कोई ऐरलैण्डवाला न बैठ सकता। इसके थोड़े ही दिन पीछे मिस्टर ग्लैड्स्टोन ने एक धरती का मसौदा बनाया जिसमें ऐरलैण्ड के उन ज़िमींदारों की जायदाद मोल लेने की युक्ति थी जो समझें कि ऐरलैण्ड की पार्लामेण्ट उसके लिये क़ानून बनायेगी तो उनकी हानि होगी। इस काम के लिये अंगरेज़ी राज्य को पांच करोड़ पौण्ड (आज कल के हिसाब से सत्तर करोड़ रुपये के बराबर) उधार लेना पड़ता और इस क़र्ज़े को धीरे धीरे ऐरलैण्ड के किसान चुकाते जिनके हाथ जायदादें बेची जातीं।

२।—होमरूल का मसौदा नामंजूर हुआ—धरती के मसौदे का सबने विरोध किया क्योंकि बहुतेरों ने यह समझा कि उधार कभी न चुकेगा। परन्तु होमरूल मसौदे के विरोधियों के विचार कुछ और थे। कुछ लोग समझे कि ऐरलैण्डवाले अपना शासन आप नहीं कर सकते। कुछ ने समझा कि वहां रोमन कैथोलिकों की संख्या अधिक है और प्रोटेस्टैण्ट सताये जायंगे। कुछ के मन में यह आया कि अंगरेज़ी पार्लामेण्ट की प्रभुता जोखम में पड़ जायगी। कुछ लोगों ने यह विचार किया कि ऐरलैण्डवाले अंगरेज़ी पार्लामेण्ट में न बैठने पायंगे और सब के हानि लाभ की बातों में अपना मत प्रकट न करैंगे जैसे पर-राष्ट्रों के मामले, स्थल सेना और जल सेना का विषय, तो ब्रिटिश गवर्मेण्ट कैसे कहेगा कि हम तीनों जातियों की ओर से कह रहे हैं। अन्त में चौरानवे लिबरल कन्सर्वेटिव लोगों से मिल गये

और मसौदे के प्रतिकूल वोट दे दिया, जिससे मसौदा नामंज़ूर हो गया। पार्लमेण्ट टूट गई और नई पार्लमेण्ट में होमरूल मसौदे के विरोधी बहुत से आ गये जिससे मिस्टर ग्लैड्स्टोन को इस्तीफ़ा देना पड़ा।

३।—सालिस्बरी-मंत्रित्व-काल—इस पर लार्ड सालिस्बरी फिर प्रधानमंत्री हुआ। उसके पक्ष में कुछ कन्सर्वेटिव थे और कुछ ऐसे लिबरल थे जिन्हों ने होमरूल मसौदे का विरोध किया था। ऐसे लिबरल प्रतिवादी-लिबरल या संयुक्त-लिबरल कहलाते थे परन्तु इनमें से कोई भी मंत्रिमण्डली में न आया।

४।—सालिस्बरी-शासन की नीति—कुछ दिनों तक लोगों को इस बात में सन्देह ही रहा कि सालिस्बरी-शासन की नीति क्या होगी। एक बड़ा उत्साही परन्तु कुछ सनकी मनुष्य लार्ड रैण्डलफ़ चर्चिल (Randolph Churchill) ख़ज़ाने का हाकिम और कामन सभा का नायक बनाया गया। उसने होमरूल का तो विरोध किया परन्तु ऐरलैण्ड को उतना ही स्वराज्य देने के पक्ष में था जितना इंग्लिस्तान में है और ऐरलैण्ड और ग्रेटब्रिटेन दोनों में बहुतेरे सुधार पसन्द करता था। परन्तु जब तक ऐरलैण्ड में शान्ति न रहती कोई युक्ति न चल सकती थी। दुर्भाग्य वश, जब से मिस्टर ग्लाड्स्टोन के क़ानून ने ई० १८८१ में पन्द्रह बरस के लिये लगान मुक़र्रर कर दिया था तब से खेतों की पैदावार के दाम बहुत घट गये थे। परिणाम यह हुआ कि ई० १८८६ में जो लगान पांच बरस पहिले उचित समझा जाता था उसी का देना कठिन हो गया। मिस्टर पार्नेल ने एक युक्ति ऐसी बनाई जिससे ग़रीब किसानों के लगान में 'तख़फ़ीफ़' हो जाय। अंगरेज़ी गवर्मेण्ट ने कामन सभा से पार्नेल की तजवीज़ नामंज़ूर करादी परन्तु गवर्मेण्ट आप यह निश्चय न कर पाई कि क्या करना

चाहिये और लार्ड रैण्डल्फ़ चर्चिल ने जलसेना और स्थलसेना के भारी ख़र्चे से और गवर्मेण्ट की उस समय की चालों से असन्तुष्ट होकर इस्तीफ़ा दे दिया।

५।—लड़ने की युक्ति और जुरमों का क़ानून—ऐरलैण्ड में भी बखेड़ा शुरू हो गया। बहुत से ज़िमींदारों ने अपने काश्तकारों का लगान घटा दिया परन्तु कितने ऐसे भी थे जिन्हों ने घटाने से इनकार किया और पूरा लगान देने के लिये काश्तकारों को दबाया। तब ऐरलैण्डवालों के दल के मुखियों ने इन काश्तकारों से कहा, "तुमलोग लड़ने की युक्ति (Plan of Campaign) करो अर्थात् अपने ज़िमींदारों को कुछ घटाकर लगान दो और न लें, तो कुछ लोग मुक़र्रर कर लिये जायं, उनको बेदख़ल किये काश्तकारों की मदद के लिये दे दो।" गवर्मेण्ट ने देखा कि इस युक्ति से तो क्या लगान देना चाहिये इसका निश्चय करना काश्तकारों और उनके मित्रों के हाथ में चला गया और चटपट एक जुर्मों का क़ानून (Crimes Act) पास करा दिया जिसमें मुख्य बात यह थी कि जो किसान उस अराज़ी पर क़ब्ज़ा रखने की कोशिश करे जिसका लगान नहीं दिया गया या जो किसानों को ऐसा करने की उत्तेजना दें उसके अपराधों की जांच बिना जूरी की सहायता के दो मैजिस्ट्रेट करें। इसी क़ानून के साथ साथ अराज़ी का भी क़ानून पास किया गया जिससे काश्तकार अदालती कार्रवाई से अपना लगान घटवा सकें परन्तु ऐरलैण्ड के मेम्बरों ने कहा कि इस क़ानून से कोई लाभ न होगा।

६।—ऐरलैण्ड में जब्र—कुछ दिनों तक जुरमों के क़ानून से ऐरलैण्डवालों को बड़ा दुख दिया गया। काश्तकारों ने जब तक उनपर जब्र न किया गया अपनी अराज़ी न छोड़ी। काश्तकारों की सहायता के लिये सभा करने की मनाही की गई और

जिन लोगों ने उनको विरोध करने या संघट्टन करने की शिक्षा दी वह लोग क़ैद कर लिये गये। इनमें कुछ ऐरलैण्डवाले पार्लामेण्ट के मेम्बर भी थे।

७।—पिगट-जाल—पार्लामेण्ट में इन कारवाइयों से दोनों दलों में बड़ी अनबन हो गई और इसके बढ़ने का एक कारण यह हुआ कि कन्सर्वेटिव-दलवालों और उनके सहयोगियों को यह विश्वास था कि मिस्टर पार्नल ने ई० १८८२ में लार्ड फ्रेडरिक कवेण्डिश और मिस्टर वर्क के वध का अनुमोदन किया था और लिबरल-दलवाले जो 'जुर्मों के क़ानून' को बुरा कहते थे उन लोगों के पृष्ठपोषक थे जिन्होंने कुप्रबन्ध का समर्थन किया था। इस दोष का प्रमाण एक पत्र था जो मिस्टर पार्नल का लिखा कहा जाता था और टाइम्स पत्र में छपा था। यह पत्र मिस्टर पार्नल का लिखा होता तो उसके अपराध में कोई सन्देह न रह जाता परन्तु भेद खुल गया कि यह पत्र पिगट नाम के एक पाजी का लिखा हुआ था और मिस्टर पार्नल का कोई दोष न था।

८।—स्थानीय-शासन और शिक्षा—ग्रेट ब्रिटेन के भीतर गवर्मेण्ट ने दो अच्छे काम किये। कौन्टी (ज़िलों) की कौंसिलें स्थापित की गईं और इब्तिदाई मदरसों में शिक्षा कर दी गई।

९।—मंत्रित्व का अन्त—परन्तु नीतिज्ञों की दृष्टि ऐरलैण्ड पर थी। पिगट का जाल खुल जाने से ऐरलैण्डवालों के विरुद्ध और भी जो बातें कही गईं उनपर लोग विश्वास न करते थे। परन्तु ऐरलैण्डवाले मेम्बर आपस की फूट के मारे निर्बल हो रहे थे। मिस्टर पार्नल का आचरण बुरा था इससे जिस पक्ष का वह नायक था उसके लिये ग्रेट ब्रिटेन में उत्साह घट गया और ऐरलैण्ड के दल में भी कुछ थोड़े से लोग मिस्टर पार्नल की

सहायता करते रहे और बहुतों ने उन्हें नायक के पद से गिरा दिया । इस दशा में ई० १८९२ में फिर चुनाव हुआ । गवर्मेण्ट हार गई और मिस्टर ग्लैड्स्टोन चौथी बार प्रधान मंत्री हो गया ।

१० ।—ग्लैड्स्टोन और रोज़बरी का मन्त्रित्व—नई मंत्रि-मंडली ने ई० १८९३ में दूसरा होमरूल का मसौदा पेश किया । यह मसौदा कामन सभा में पास हो गया परन्तु लार्ड सभा ने इसे ना-मंजूर कर दिया । इस पर मंत्रिदल ने पार्लामेण्ट तोड़ने के बदले ऐसे काम उठाये इंग्लिस्तान में जिनके लोकप्रिय होने की आशा थी । इसका अभिप्राय यह था कि मंत्रिमंडली के सहायक बढ़ जायं क्योंकि शुरू में उनके पक्षपाती बहुत न थे । परन्तु उनका काम पूरा न हुआ था कि मिस्टर ग्लैड्स्टोन ने बुढ़ापे के कारण इस्तीफ़ा दे दिया और अर्ल रोज़बरी उसके पद पर नियुक्त हुआ । परन्तु ई० १८९५ की कामन सभा में मंत्रिदल की हार हो गई और दूसरे चुनाव में उनके विरोधियों की संख्या उनके पक्षपातियों की संख्या से १५० अधिक हो गई इससे यहां भी मंत्रिमंडली हार गई । इस पर तीसरी बार सालिस्बरी मंत्रित्व स्थापित हुआ जिसके स्थापन करने में कुछ प्रतिवादी लिबरल लोगों ने उसका साथ दिया ।

## ॥ अध्याय ५३ ॥

### * अन्य राष्ट्रीय *

१ ।—आर्मिनियावालों का वध—सालिस्बरी का तीसरा मंत्रिकाल ई० १८९५ में शुरू हुआ । यह समय देश के भीतर नये नये क़ानून बनाने के लिये इतना प्रसिद्ध न था जितना अन्य राष्ट्रीय और उपनिवेशसम्बन्धी राजनैतिक व्यवस्थाओं में कठिनाइयों

के लिये जिनमें देश को फंस जाना पड़ा था। पहिली कठिनाई ई० १८९४ में इस मंत्रित्व के अधिकार के पहिले आर्मिनिया में पड़ी जहां के रहनेवालों को तुर्कों ने बड़ी निष्ठुरता से मारडाला था। अंगरेज़ी जनता और गवर्मेण्ट दोनों चाहते थे कि सुल्तान अपनी ईसाई प्रजा के वध से या तो रोका जाय या उसको और उसके कर्मचारियों को उनके दुष्कर्म के लिये दण्ड दिया जाय। परन्तु यूरप में ६ महाशक्तियां हैं फ्रांन्स, जर्मनी, आस्ट्रिया, रूस, इटली और इंग्लिस्तान और यद्यपि इंग्लिस्तान न चाहता था, इन शक्तियों में बड़ी बड़ी इस बात पर तुली बैठी थीं कि आर्मीनियां के मामले में न कोई हस्तक्षेप करै न किसी को करने दें। लार्ड सालिस्बरी अकेले अन्याय कैसे रोक सकता था और तुर्कों से किसी ने छेड़ छाड़ न की।

२।—क्रीट—यह परिणाम बुरा था परन्तु इससे इस विचार की पुष्टि हो गई कि जिन मामलों का सारे यूरप से सम्बन्ध है उसमें एक अकेली महाशक्ति कुछ नहीं कर सकती और जब छओ महाशक्तियों में एकमत हो तभी कुछ कारवाई की जा सकती है। यूरप के एक मत होने की आवश्यकता के कारण कितने काम जो करने के हैं नहीं किये जाते और वाद-विवाद में बहुत सा समय नष्ट हो जाता है तब वही सब महाशक्तियां विशेष रीति से काम करने के लिये सहमत होती हैं। परन्तु पुरानी चाल के लड़बैठने से तो यह रीति अच्छी ही है, और अब यह निश्चय सा हो गया है कि कठिन समस्याओं को सुलझाने को आगम में यूरपी शक्तियों का मेल प्रबल हो जायगा। ऐसी ही एक समस्या क्रीट में ई० १८९४ में तुर्कों के अत्याचार से प्रकट हुई। ई० १८९७ में यूनान-राज ने बलवाइयों की मदद को कुछ सेना भेजी। यूनान को यह आशा थी कि क्रीट यूनान में मिला लिया जायगा।

लार्ड सालिस्बरी ने यह प्रस्ताव किया कि क्रीट यूनान को न मिलै परन्तु नाममात्र को सुल्तान के आधीन रहकर अपना प्रबन्ध आप किया करै। और महाशक्तियों ने इसे मंजूर किया परन्तु यूनानियों ने अपनी सेना न हटाई और महाद्वीप में तुर्कों से लड़ाई छेड़ दी। यूनानियों पर बड़ी मार पड़ी यद्यपि शक्तियों ने तुर्कों को इस विजय से कोई विशेषलाभ होने न दिया। यूनानियों ने क्रीट से अपनी सेना हटा ली और तब शक्तियों ने मामला अपने हाथ में ले लिया। ई० १८९८ में यह निश्चय हुआ कि क्रीट का शासन यूनान के राजा के छोटे भाई जार्ज को सौंपा जाय और सुल्तान के आधीन समझे जाने पर भी स्वतंत्र राज रहै। तब से कोई झगड़ा बखेड़ा नहीं हुआ और सुख शान्ति रही है। जब तक सुल्तान का शासन रहा क्रीट के मुसलमान ईसाइयों को सताया करते थे। जार्ज के शासन में ईसाइयों ने कभी मुसलमानों को सताने का नाम न लिया।

३।—सूदान का फिर से जीता जाना—गार्डन के मरने पर सूदान में मारकाट मची रही और भांति भांति के अत्याचार होते रहे। मेंहदी जो अपने को पैग़म्बर कहता था मर गया और उसकी जगह अब्दुल्लाह ने ख़लीफ़ा की पदवी धारण की। सारे देश के रहनेवाले मार डाले गये और बोई जोती धरती उजाड़ दी गई। ख़लीफ़ा ने यह भी कहा कि मिस्र पर धावा करना, अंगरेज़ी सेना का संहार करना और मिस्रवालों का बध करना ख़ुदा का हुकुम और उसकी इबादत है क्योंकि मिस्रवाले मुसलमान होने पर मेंहदी को रसूल ख़ुदा नहीं मानते थे। इधर खदेव मिस्र की मिस्री सेना को अंगरेज़ी अफ़सरों ने युद्ध की शिक्षा दी थी और सिपाहियों को अच्छी तनख़ाहें मिलती थीं, उनके साथ अच्छा बरताव किया जाता था और सब लड़ने को तैयार थे।

यही सिपाही पहिले अपनी इच्छा के प्रतिकूल पकड़े जाते और उनके अफ़सर उनको मारते और धोखा देते थे ; इससे लड़ाई में भाग जाया करते थे । यह दशा तब थी जब देश में केवल मिस्र-वालों का शासन था । खलीफ़ा की तैयारी देख कर यह निश्चय किया गया कि मिस्री सेना धीरे धीरे दक्षिण की ओर बढ़े । यह काम ई० १८९८ में शुरू हुआ परन्तु ई० १८९९ में पूरा हुआ जब कि अंगरेज़ी और मिस्री पल्टनों की एक सेना किचनर (Kitchener) की कमान में उमदुर्मान (Omdurman) में खलीफ़ा से भिड़ गई और उसको परास्त करके खदेव ने अब्बास द्वितीय के नाम से नील नदी के दोनों तटों के देश पर क़ब्ज़ा कर लिया । इसके थोड़े ही दिन पीछे खलीफ़ा रगेद कर मार डाला गया और तब से सूदान देश की धीरे धीरे उन्नति हो रही है ।

४ ।—विनिज़ुला—इधर तो यह हो रहा था उधर दूसरी जगह भी झगड़ा उठ खड़ा हुआ । बरसों से अंगरेज़ी ग्वायना (British Guiana) की सीमा का झगड़ा दक्षिण अमरीका में विनिज़ुला प्रजातन्त्र राज्य से चल रहा था । ई० १८९५ के अन्त में अमरीका की गवर्मेण्ट ने अंगरेज़ी गवर्मेण्ट से धमकी देकर कहा कि मामला पंचायत में दे दिया जाय और उसका कारण यह बताया कि संयुक्त राज्यों को अमरीका महाद्वीप के झगड़ों में हस्तक्षेप करने का अधिकार है और अंगरेज़ी गवर्मेण्ट विनिज़ुला का एक अंश दबा कर अमरीका में अपनी अमलदारी बढ़ाना चाहती है । अंगरेज़ी गवर्मेण्ट ने यह सारी बातें न मानीं परन्तु अन्त को पंचायती फ़ैसला मंज़ूर किया और परिणाम यह हुआ कि जिन जिन प्रान्तों का दावा था, लगभग सब के सब ग्रेट ब्रिटेन को मिल गये ।

५।—चीन—ई० १८९४—९५ में चीन को जापान ने परास्त कर दिया और जब लड़ाई बन्द हो गई तो यूरपी शक्तियोंने समझा कि चीन निर्बल है और हम लोग जितना चाहैं उतना देश दबालें। रूस ने पोर्ट आर्थर ले लिया जो बरफ़ से बचे हुये बन्दरगाह का काम दे और जिसमें रूस के जंगी जहाज़ रह सकैं और यह घोषणा कर दी कि मंचूरिया में कोई और राज हस्तक्षेप न करै। जर्मनी ने कियाउचाङ पर क़ब्ज़ा किया। ग्रेट ब्रिटेन ने वी. हाई. वी. पर अपना अधिकार जमाया और हांगकांग के सामने महाद्वीप पर अपना राज बढ़ाया। चीनवालों को यह बहुत बुरा लगा और उन्हों ने अपने क्रोध को बड़ी निष्ठुरता से प्रकट किया। चीनियों का एक समाज बना जिसके सदस्य बाक्सर (Boxer) कहलाते थे और परदेशियों या उनके सहायकों के प्रतिकूल थे। हज़ारों चीनी ईसाई निठुराई से मारे गये और कितने यूरपी पादरियों का बध किया गया। यूरपी राजप्रतिनिधियों पर पिकिन में आक्रमण किया गया और जर्मन राजदूत सड़क पर मार डाला गया। इसके अनन्तर अंगरेज़ी राजदूत के मन्दिर पर आक्रमण किया गया, जिसमें और शक्तियों के दूतों ने अपने स्त्री बच्चों समेत शरण ली थी। यूरप की शक्तियां फिर मिल गईं और अमरीका और जापान ने उनका साथ दिया। कई जाति के सिपाहियों की एक सेना चीन को भेजी गई और ई० १९०० बीतने न पाया था कि पीकिन नगर ले लिया गया और राजदूत जिन्हों ने बड़ी दृढ़ता से अपनी बहुत दिनों तक रक्षा की थी मुक्त हुये। ई० १९०१ में सन्धि की शर्तें भी निश्चित हुईं परन्तु अब तक यह डर लगा हुआ है कि चीन का मामला नहीं निपटा।

## ॥ अध्याय ५४ ॥

### * कैनाडा, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड *

१।—विचार-परिवर्त्तन—लार्ड सालिस्बरी का शासन अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों में फंसा तो था ही उपनिवेशों की व्यवस्थायें भी उसके आगे आ गई थीं। लार्ड सैलिस्बरी और उसके अनुयायियों के शासनाधिकार पाने से पहिले ही इंग्लिस्तान में उपनिवेशों के प्रति विचारों में परिवर्त्तन हो रहे थे। उन्नीसवीं शताब्दी के आदि में उपनिवेश का आदर दो गुणों से होता था, एक काम की वस्तु उपजाने के लिये जैसे वेस्ट इंडिया द्वीप समूह जिनमें ईख की खेती होती थी और जहां से शक्कर आती थी और दूसरा अच्छे बन्दरगाह का होना जैसा गुडहोप अन्तरीप में है जहां अंगरेज़ी जहाज़ लड़ाई के समय में सुरक्षित रह सकते हैं। तब से सैकड़ों ब्रिटेनवासी समुद्रपार करके वहीं अपना घर बनाने के लिये पहुंच गये और तेज़ चलनेवाले स्टीमरों (भाप से चलनेवाले जहाज़ों) के प्रचार होने से आना जाना, चिट्ठी पत्री भेजना सुगम हो गया है और जो लोग अपना घर छोड़कर बाहर जाकर बसे हैं उनमें और उनके सजातियों में जो उनकी मातृभूमि में रहते हैं दृढ़ सम्बन्ध हो गया है जैसा पहिले न था। बहुत दिनों तक देश के नीतिज्ञों ने इस परिवर्त्तन पर ध्यान न दिया। कितने यही बकते रहे कि कोई कोई उपनिवेश स्वतन्त्र राज बन जायंगे और किसी किसी ने यह कहा कि इनके अलग हो जाने से मातृ-भूमि के सिर का बोझा हलका हो जायगा। यह भविष्यद्वाणियां पूरी न हुईं। इसका कारण यह था कि अंगरेज़ों को अट्ठारहवीं सदी में अमरीकावालों के बलवे से शिक्षा मिल चुकी थी और उसने उन्नीसवीं शताब्दी में अपने उपनिवेशों को अधिकार दे

दिया था कि अपना काम आप करें, कर देने को बाध्य न किये जायं या इंग्लिस्तान ही का बना हुआ माल मोल लें और कहीं का बना नहीं। जिस बन्धन में दबाव कम रहता है वही बहुत दिनों तक चलता है।

२।—उपनिवेशों का संघट्टन—ग्रेट ब्रिटेन के बड़े उपनिवेशों के तीन समुदाय हैं,

[ १ ] उत्तर अमरीका के उपनिवेश।

[ २ ] आस्ट्रेलिया के उपनिवेश।

[ ३ ] दक्षिण अफ्रीका के उपनिवेश।

प्रत्येक समुदाय में पहिले अनेक उपनिवेश एक दूसरे से अलग थे, उनके हाकिम भिन्न थे और उनके क़ानून जुदे जुदे थे। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में इन तीन समुदायों में दो अर्थात् उत्तर अमरीका और आस्ट्रेलियावाले मिल गये और ऐसा जान पड़ता है कि बीसवीं शताब्दी में दक्षिण अफ्रीका भी उनका अनुकरण करेगा। यह मेल जिस रूप से परिणत हुआ है उसे फ़ेडरेशन (Federation) कहते हैं और यही प्रथा स्विट्ज़रलैण्ड और संयुक्त राज्यों में प्रचलित है परन्तु वहां की प्रथाओं की हर बात में नक़ल नहीं की गई। फ़ेडरेशन का अर्थ है, राज्यों या उपनिवेशों का इस रीति से मिल जाना कि अपना प्रबन्ध अपनी ही रीति से करने का हक़ बना रहै। कोई घर मोल लेना चाहै या वसीयत करना चाहै तो अपने उपनिवेश के क़ानून के अनुसार कार्रवाई करे। ऐसे मामलों के लिये जिनसे सब का लगाव है जैसे डाक और तार, एक पार्लमिण्ट या समाज क़ानून बनाती है जिसमें सारे समुदाय के प्रतिनिधि रहते हैं। ऐसे मिले हुये उपनिवेश संयुक्त कहलाते हैं।

३।—कैनाडा—जिस कैनाडा को उल्फ़ ने ई० १७५९ में जीता था वहां फ्रान्सीसी जाति के वंशज रहते थे। धीरे धीरे उस प्रान्त में कुछ अंगरेज़ भी आ गये। यह लोग अधिकांश सेण्ट लारेन्स नदी के ऊपर के तट पर और बड़ी झीलों के उत्तर जाकर बसे। दोनों जाति के लोग धर्म ही में दूसरे से भिन्न न थे उनका चलावा भी भिन्न था। फ्रान्सीसियों के वंशज अपनी पुरानी चाल के चलने वाले थे और अपने पुराने घरों में जमा रहना पसन्द करते थे और अंगरेज़ीजाति के लोग आगे बढ़ना चाहते थे। व्यापार से या सुनसान स्थानों में नये नये घर बनाकर अपनी उन्नति करने पर तुले हुये थे। इस कारण दोनों जातियों में प्रीति न हुई। एक बात में दोनों सहमत थीं कि अंगरेज़ी गवर्मेण्ट उनके प्रतिनिधियों के द्वारा उनकी इच्छाओं की परवाह न करके उनके ऊपर दबाव न डाले। ई० १८३७ में फ्रान्सीसी कैनाडावाले बिगड़ गये। यह विद्रोह बहुत जल्दी दबा दिया गया परन्तु इससे उस शासन के दोष प्रकट हो गये जिससे लोग बिगड़ बैठे थे। इस कठिनाई को दूर करने के लिये दो उपनिवेश बनाये गये एक लोअर कैनाडा, जिसमें अधिकांश फ्रान्सवासी रहते थे। दूसरा अपर कैनाडा जिसके वासी अंगरेज़ीजाति के लोग थे, दोनों उपनिवेशों को अपने अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार है और दोनों के शासन करनेवाले मन्त्रिदल प्रजा के चुने हुये सदस्यों की एक सभा के आधीन हैं।

४।—कैनाडा की डोमिनियन (Dominion)—नई प्रथा में दोनों उपनिवेशों की उन्नति हुई और कुछ दिनों में इंग्लिस्तान के भक्त हो गये और अपना वैरभाव भूलकर विशेष मेलजोल की इच्छा करने लगे परन्तु ऐसा मेल अपेक्षित न था कि कम आबाद प्रान्त बहुत आबाद प्रान्त की आज्ञा में रहें। परिणाम यह हुआ

कि ई० १८६७ में दोनों कैनाडाओं के अतिरिक्त किवेक और अन्टेरियों के सूबे नोवा स्कोशिया और न्यू ब्रअविक मिल गये और एक संयुक्त-राज्य बन गया जिसका नाम कैनाडा डोमिनियन रक्खा गया। इसमें पीछे से मनीटोबा, ब्रिटिश कोलम्बिया, प्रिंस एडवर्ड पेलैण्ड और बहुत बड़े पश्चिमोत्तर प्रान्त मिले जिसका अधिकांश उत्तर ध्रुव के समीप है और जो सदा उजाड़ ही रहेगा क्योंकि वह बड़ी बस्ती के भरण पोषण के योग्य नहीं है। इसके दक्षिण खण्ड में कुछ बसने योग्य स्थान हैं जिनके कभी सूबे बन जायंगे। अपने अपने विशेष कामों के प्रबन्ध के लिये प्रत्येक सूबे में अपनी अपनी पार्लामेण्ट है और कैनाडा डोमिनियन में एक पार्लामेण्ट और गवर्मेण्ट है जिसकी बैठक ओटावा में होती है और समुदाय के मामलों पर विचार करती और अपने विचारों को कार्यरूप में परिणत करती है। इस प्रकार से न्यू फ़ौण्डलैण्ड और लैब्रडार को छोड़कर सबके लिये संयुक्त (Federal) गवर्मेण्ट बन गया है। डोमिनियन की आबादी १८४१ में पन्द्रह लाख थी। अब बढ़ते बढ़ते १९०१ में पचास लाख हो गई है।

५।—आस्ट्रेलिया का भूगोल—भौगोलिक विचार से आस्ट्रेलिया और कैनाडा डोमिनियन में यह भेद है कि अंगरेज़ी उत्तर अमरीका में मनुष्य के बसने योग्य स्थान एटलैण्टिक महासागर से पैसफ़िक महासागर तक फैले हुये हैं और प्रत्येक स्थान में रेल जाती है। आस्ट्रेलिया महाद्वीप के मध्य में बहुत बड़ी मरुस्थली है जो कहीं कहीं समुद्र तक फैली है। आस्ट्रेलिया के उपनिवेश समुद्र के किनारे किनारे महाद्वीप की एक चिट पर बसे हैं और यहां के रहनेवाले अपनी मातृभूमि को जलयात्रा करके, बिना किसी दूसरे उपनिवेश में घुसे, पहुंच सकते हैं।

कदाचित यही कारण है जो आस्ट्रेलिया के उपनिवेश उत्तर अमरीका के उपनिवेशों की अपेक्षा बहुत पीछे संयुक्त हुये ।

६ ।—<u>आस्ट्रेलिया का बसाया जाना</u>—आस्ट्रेलिया में पहिले उपनिवेश की नेव ई० १७८८ में पड़ी जब न्यू सौथ वेल्स बना और उसमें ग्रेटब्रिटेन के देश-निकाले अपराधी बसाये जाते थे । थोड़े ही दिनों में यहां बड़े बड़े मैदान देख पड़े जिनमें भेड़ों के बच्चे पाले जा सकते थे जिनका ऊन यूरप में बहुत महंगे दामों पर बिकता । ई० १८०० में सात हज़ार से भी कम भेड़ यहां थीं ई० १८५६ में सत्तरह लाख हो गई । उपनिवेश की उन्नति होने पर बहुत से स्वतन्त्र लोग उसमें जा बसे । यह लोग देशनिकाले अपराधियों से अच्छे ही थे । इधर और भी उपनिवेश बन गये । पश्चिम आस्ट्रेलिया में बरसों तक बड़ी दरिद्र बस्ती थी जो सबसे पहिले ई० १८२९ में बसाई गई । दक्षिण आस्ट्रेलिया १८३६ में, विक्टोरिया १८५१ में और क्वीन्स लैण्ड ई० १८५९ में बसा । आस्ट्रेलिया के दक्षिण एक टापू था जिसे पहिले वैनडीमेन्स लैण्ड कहते थे और जो अब टसमैनिया कहलाता है । ई० १८२५ में वह भी उपनिवेश बना । इन सारे उपनिवेशों के स्वतन्त्र रहनेवालों को हज़ारों अपराधियों का हर साल अपने देश में उतरना बहुत बुरा लगा और उन्हों ने इसके विरुद्ध आन्दोलन किया । न्यू सौथ वेल्स में यह रीति ई० १८४० में उठा दी गई । और उपनिवेशों के निवासियों ने भी आग्रह किया कि यह प्रथा सब जगह से उठ जाय और ई० १८५३ में केवल पश्चिम आस्ट्रेलिया में अपराधी भेजने की प्रथा रह गई । यहां आबादी इतनी कम थी कि निवासियों ने अपना हाथ बंटाने के लिये अपराधियों का भी स्वागत किया । कुछ दिन पीछे यहां भी देशनिकालों का आना बन्द हो गया । आस्ट्रेलिया में ऊन के व्यापार में लाभ

देख कर जैसे स्वतन्त्र लोग यूथ के यूथ आकर बसे थे वैसे ही जब ई० १८५१ में विक्टोरिया में और ई० १८६५ में पश्चिम आस्ट्रेलिया में सोने की खानें निकलीं तो लाखों वहां पहुंच गये ।

७ ।—आस्ट्रेलिया का कामनवेल्थ (Common Wealth)—उत्तर अमरीका के उपनिवेशों की भांति आस्ट्रेलिया और टस्मैनिया के पांच उपनिवेश भी राष्ट्रीय सयोग के उत्सुक हुये और एक युक्ति बनी जो प्रत्येक उपनिवेश में वोट ले कर स्वीकृत हुई और उसे ई० १६०० में इंग्लिस्तान की पार्लामेण्ट ने भी पुष्ट कर दिया । जनवरी १६०१ से नये राज्य प्रबन्ध का आरम्भ हुआ । उपनिवेशों में पार्लामेण्टों के अतिरिक्त जो अपने अपने विशेष कार्य करती थी एक संयुक्त पार्लामेण्ट बन गई जिसमें दो सभायें रहीं जो ऐसे साधारण विषयों पर विचार करैं जिनमें सब का हानि लाभ है और क़ानून बनाये । इस संयोजन का नाम आस्ट्रेलिया की कामनवेल्थ है । जो छ उपनिवेश इस रीति से मिल गये उनके नाम यह हैं, न्यू साउथवेल्स, विक्टोरिया, क्वीन्स-लैण्ड, दक्षिण आस्ट्रेलिया, पश्चिम आस्ट्रेलिया और टसमैनिया ।

८ ।—न्यूज़ीलैण्ड—न्यूज़ीलैण्ड में ई० १८४० में अंगरेज़ी अमलदारी हुई । पहिले यह न्यू सौथ वेल्स के आश्रित था परन्तु ई० १८४१ में स्वतन्त्र उपनिवेश बन गया । ई० १८५२ के क़ानून के अनुसार इसके छ सूबे बना दिये गये जिनका शासन चुने हुये मेम्बरों की सभायें करें और छवों सभायें एक केन्द्र सभा की आधीन रहैं । कुछ दिन पीछे छ सूबों के नौ सूबे हो गये । परन्तु ई० १८७५ में सूबे सूबे का शासन तोड़ दिया गया और सारे उपनिवेश का शासन अब केन्द्र-सभा करती है । न्यूज़ीलैण्ड की राजधानी वेलिंग्टन है । ई० १६०१ में इसमें ७७२०००

यूरपवासियों के वंशज और ४३०० मावरी (Maori) रहते थे। मावरी वहां के मूल निवासियों के नष्टावशेष हैं। यहां की प्रतिनिधि सभा हमारी कामन सभा से मिलती जुलती है। इसमें चौहत्तर सदस्य हैं जिनमें चार के चुनने का अधिकार मावरियों को है। न्यूज़ीलैंण्ड की गवर्मेण्ट में विशेषता यह है कि वहां पुरुषों के साथ स्त्रियां भी मेम्बरी के चुनाव में वोट दे सकती हैं परन्तु पार्लामेण्ट में बैठने नहीं पातीं।

## ॥ अध्याय ५५ ॥

### दक्षिण अफ्रिका और महारानी विक्टोरिया के शासन का अन्त।

१।—दक्षिण अफ्रीका—दक्षिण अफ्रीका के उपनिवेश कई बड़ी बड़ी बातों में कैनाडा के डोमिनियन से मिलते जुलते हैं, आस्ट्रेलिया के कामनवेल्थ से नहीं। आस्ट्रेलिया की आबादी पूरी पूरी अंगरेज़ी है क्योंकि जब यहां बसने के लिये अंगरेज़ पहिले पहिल आये तो कोई दूसरी यूरपी जाति के लोग न रहते थे। कैनाडा के नीचे का भाग और गुडहोप अन्तरीप जिसके आस पास और भी अंगरेज़ी बस्तियां बसीं अन्य जातियों से जीते गये थे, कैनाडा फ्रान्सीसियों से और गुडहोप अन्तरीप हालैण्डवालों से। हम देख चुके कि कैनाडा में बसे फ्रान्सीसी पहिले हमारे आधीन हो जाने से सन्तुष्ट न थे परन्तु उचित बर्ताव से और सब से बढ़कर बात स्वराज्य पाने से इंग्लिस्तान के भक्त अनुरक्त बन गये। कैनाडा और अन्तरीप में भेद इतना ही था कि कैनाडा में फ्रान्सीसी एक ही प्रान्त में रहते थे और उस प्रान्त के भीतर से सुगमता से स्वराज करते थे परन्तु अन्तरीप

उपनिवेश के अंगरेज़ और डच एक ही स्थान में एक दूसरे के पड़ोसी थे और जहां अलग अलग ज़िलों में रहते भी थे वहां ज़िले इतने छोटे थे कि उनका अलग शासन न हो सकता था, न कोई मान सकता था। अंगरेज़ी सरकार का यह उद्देश था कि अन्तरीप उपनिवेश के अंगरेज़ और डच दोनों एक लकड़ी से हांके जायं और दोनों एक ही क़ानून मानैं और दोनों के हक़ बराबर हों। डच निवासी अधिकांश इसको मान गये परन्तु बहुत से ऐसे भी थे जिन्हों ने कुछ दिन तक यह न देखा कि इस युक्ति से क्या हानि लाभ है और बिगड़ गये।

२।—बोरों का आकर बसना—कैनाडा, आस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका में एक भेद यह है कि दक्षिण अफ़्रीका में एक देसी और लड़ाकी बड़ी संख्या की काफ़िर जाति रहती है जो बरसों की लड़ाई लड़कर अब अंगरेज़ी शासन में आ गई है। जबतक इसका दमन न हुआ था अन्तरीप उपनिवेश के पूर्व प्रान्त के रहनेवाले डच काफ़िरों के मारे बड़े संकट में रहते थे। उनका धन जीवन बचाना कठिन था और जब उनको अवसर मिलता तो काफ़िरों से बदला भी लेते थे। डच भाषा में बोर का अर्थ किसान है। इन डच बोरों और अंगरेज़ी सरकार में केपटाउन नगर में झगड़ा हो गया। अंगरेज़ी सरकार ने निर्णय किया कि बोरों ने काफ़िरों के साथ निठुराई की है और उनको दण्ड दिया। इसपर बोरों ने कहा कि अंगरेज़ हमे काफ़िर डाकुओं और घातकों से अपनी रक्षा करने में बाधा डाल रहे हैं और अंगरेज़ी राज छोड़ कर निकल जाने की ठान ली और देश की बड़ी बड़ी बैल गाड़ियों पर अपने बाल बच्चों को सवार करा के नये घर की खोज में जहां अंगरेज़ उन्हें न सता सकें उत्तर की ओर चले। कई सौ मील चल कर निष्ठुर काफ़िरों से लड़ते भिड़ते पहिले उस स्थान में

जाकर बसे जो अब नटाल उपनिवेश का उत्तर भाग है, पीछे १८४० में ट्रैन्सवेल बसाया जिसका नाम इसलिये पड़ा कि वेल नदी के पार है।

३।—दक्षिण अफ़्रीका में अंगरेज़ी बस्तियों का फैलना—बोर यह समझे कि हम ऐसे देश में पहुंच गये कि जहां अंगरेज़ों से भेंट न होगी। परन्तु जिनसे बोर भागते थे उनके आगे बढ़ने और घुस बैठने के स्वभाव को भूल गये थे। अंगरेज़ नये नये घरों की खोज में अफ़्रीका में भर गये। ई० १८४३ में नटाल में अंगरेज़ी अमलदारी मानी गई और ई० १८५६ में एक अलग उपनिवेश बन गया। ई० १८५४ में एक और प्रान्त जिसमें बोरों की दूसरी छावनी जाकर बसी थी स्वतन्त्र मान ली गई और उसका नाम आरेञ्ज फ़्री स्टेट रक्खा गया।

४।—ट्रैन्सवेल का पहिला संयोजन—ई० १८७७ में एक देसी सरदार ने ट्रैन्सवेल के बोरों को हरा दिया। बोर लोग कर देना न चाहते थे और अपने ही शासकों को कर न देते थे। इसलिये अंगरेज़ी सरकार ने काफ़िरों से उनकी रक्षा करना निश्चय कर लिया और उनके प्रान्त को अपने राज्य में मिला लिया। दुर्भाग्य वश जो अंगरेज़ी अफ़सर देश का शासन अपने हाथ में लेने को भेज दिये गये थे उन्होंने न बोरों की शिकायतें सुनी और न उनकी आकाङ्क्षाओं पर ध्यान दिया और इसका परिणाम यह हुआ कि ई० १८८० में बोर बिगड़ गये और बन्दूक़ का निशाना लगाने में चतुर होने के कारण उन्हों ने मजूवा की पहाड़ी पर एक अंगरेज़ी सेना को परास्त कर दिया। इसपर इंग्लिस्तान की गवर्मेण्ट ने एक सन्धि की जिसमें ई० १८८४ में लन्दन की सन्धि से कुछ घट बढ़ किया गया और जिसकी मुख्य बातें यह थीं कि ट्रैन्सवेल प्रजातंत्र राज स्वतंत्र कर दिया गया परन्तु अपने घर ही

के प्रबन्ध में, और किसी परदेसी शक्ति के साथ कोई सन्धि न कर सके जब तक अंगरेज़ी सरकार अनुमति न दे ।

५ ।—जोहानसबर्ग (Johannesberg) और सोने की खानें—ट्रैन्सवेल के साथ जब यह सन्धि की गई थी, उस समय लोग यहां भेड़ बकरी पालते थे । यहां यही काम रहता तो इस सन्धि का परिणाम अच्छा ही होता परन्तु ट्रैन्सवेल के जिस भाग की राजधानी जोहानसबर्ग थी उसके रैण्ड नामक स्थान में सोने की खान निकल आने से हज़ारों गोरी जातिवाले वहां पहुंच गये जिनमें पांच हिस्सों में चार अंगरेज़ थे और इस से बोरों के विचार बदल गये । डचवंश वालों को यह डर लगा कि कहीं यह परदेसी उनके मालिक न बन जायं । यही विचार उनके सभापति पाल क्रूगर (Paul Kruger) के भी हो गये विशेष कर के जब नये नये परदेसी और घुस पड़े और उनकी संख्या बोरों से बढ़ गई । क्रूगर (Kruger) और उसके सहायकों ने बहुत थोड़े परदेसियों को वोट देने का अधिकार दिया । उन्हें यह शंका थी कि प्रजातंत्र राज के लिये जो सभायें क़ानून बनाती थीं उनमें परदेसी बहुत हो जायंगे तो बोरों के साथ वैसाही बर्ताव किया जायगा जो पहिले संयोजन में हुआ था । परदेसियों को वोटों ही की हानि होती तो कदाचित झगड़ा न बढ़ता । प्रभुत्व और अधिकार पाने से उसके अनुचित प्रयोग का प्रलोभन होता है और बोरों ने अपने बल का अनुचित प्रयोग किया । बोर समझे थे कि परदेसी बड़े धनी हैं और उनपर कड़े कर लगा दिये और उनके कामधन्धो में भांति भांति के अड़चन डालने लगे । बोर कर्मचारियों के अत्याचार से धन कमाने लगे । परिणाम यह हुआ कि परदेसियों में असन्तोष फैल गया और अत्याचार से छुटकारा पाने के लिये अपने भरसक उपाय करने लगे ।

६।—जेमीसन (Jameson) का धावा—परदेसियों ने देखा कि सभापति क्रूगर उनकी शिकायतों की परवाह नहीं करता तो उसका शासन न मानने की ठान ली। ट्रैन्सवेल सीमा के बाहर कुछ अंगरेज़ बसे थे उन्होंने उनके साथ सहानुभूति की और डाक्टर जेमीसन एक छोटी सी सेना लेकर चढ़ गया। अंगरेज़ी गवर्मेण्ट ने उसे कड़ा हुकुम दिया कि लौट जाओ परन्तु उसने न माना और उसे बोरों ने बड़ी सुगमता से हरा कर क़ैद कर लिया। इसके अनन्तर क्रूगर और अधिकांश बोरों को निश्चय हो गया कि अंगरेज़ी सरकार उनका देश अपने राज में मिलाना चाहती है। यह बात तो पुष्ट हो गई कि पार्लमेण्ट ने जेमीसन के धावे की कोई संतोषजनक जांच न की। इस पर क्रूगर ने परदेसियों पर भारी कर लगाये और जो धन इस रीति से आया, उससे यूरप में तोपें और लड़ाई के सामान मोल लिये और छिपा छिपा कर अपने देश में लाया।

७।—दक्षिण अफ्रीका की लड़ाई—थोड़े ही दिन पीछे अंगरेज़ी गवर्मेण्ट ने परदेसियों का पक्ष ले लिया और सभापति क्रूगर से कहा कि राष्ट्र की पार्लमेण्ट में एक निर्दिष्ट संख्या के सदस्य चुनने का अधिकार परदेसियों को मिले। क्रूगर को यह डर था कि परदेसियों को अधिक संख्या में वोट देने का अधिकार मिल गया तो यह लोग बोरों के स्वामी बन जायंगे और उसे यह भी धुन लगी थी कि अन्य राष्ट्रों के साथ सन्धि करने की मनाही की शर्त्त जो लंदन की सन्धि (London Convention) में है वह निकाल दी जाय। उसमें जो बातें उससे मांगी गई थीं उनके मानने से उसने स्पष्ट रूप से इनकार न किया परन्तु उसने ऐसी अड़चनें लगा दीं जिनसे यह विदित होता था कि वह दोनों जाति के लोगों को बराबर अधिकार देना नहीं चाहता।

क्रूगर परदेसियों का शासन में हाथ लगाना तो चाहता ही न था ; उसकी यह भी इच्छा न थी कि उनके साथ न्याय का बर्ताव न किया जाय । ऐसी दशा में शान्ति के उपायों से झगड़ा निपटने की आशा न थी । अंगरेज़ी सरकार ने दक्षिण अफ्रीका में सेना भेजने की आज्ञा दें दी और अक्तूबर १८९९ में क्रूगर ने यह समझ कर कि जबतक अंगरेज़ों की बड़ी बड़ी सेनायें न आजायं लड़ाई-छेड़ देनी चाहिये यह घोषणा दे दी कि अंगरेज़ी सेना हटा ली जाय, और सेना न भेजी जाय नहीं तो हम युद्ध करेंगे । इसपर लड़ाई शुरू हो गई । आरेञ्ज फ्री स्टेट दक्षिण अफ्रीका के प्रजातंत्र-राज्य से मिल गया । पहिले यह दोनो बोर प्रजातंत्र-राज्य संख्या में अधिक होने और अच्छे अच्छे अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित होने के कारण अंगरेज़ी उपनिवेशों पर चढ़ दौड़े और अंगरेज़ी सेना उनसे दब गई । ई० १८०० में अंगरेज़ी सेना की कमान को लार्ड राबर्टस (Lord Roberts) भेज दिये गये और बहुत सी सेना भी पहुंच गई । लार्ड राबर्टस ने बोरों को हरा कर ब्लोमफ़नटैन और प्रिटोरिया पर दख़ल कर लिया । ब्लोम-फ़ानटैन आरेञ्ज फ्री स्टेट की राजधानी है और प्रिटोरिया दक्षिण अफ्रीका के प्रजातंत्र राज्य की । किम्बरली जहां हीरे की खानें हैं और मेफ़किंग एक दूर का नाका जो बेडेन पावैल की कमान में था दोनों को बोर घेरे बैठे थे । दोनों का उद्धार हुआ और लेडी स्मिथ में भी सहायता पहुंच गई जहां बहुत दिनों से एक अंगरेज़ी सेना घिरी पड़ी थी । दोनों प्रजातंत्र राज आरेञ्ज-रिवर-उपनिवेश और नटाल उपनिवेश के नाम से अंगरेज़ी राज्य में घोषणा दे कर मिला लिये गये । लार्ड राबर्टस इंग्लिस्तान को लौट गया और लार्ड किचनर ने कमान ली । ई० १९०१ में लार्ड किचनर बोरों से लड़ता रहा परन्तु ई० १९०२ लगते ही बोर सन्धि करने को और अपने प्रान्त को अंगरेज़ी साम्राज्य में मिल जाने को वाध्य किये गये ।

८।—साम्राज्य का संघट्टन—दक्षिण अफ़्रीका की लड़ाई का सबसे अच्छा परिणाम यह हुआ कि जो अपना शासन आप करनेवाले बड़े राष्ट्र पहिले अंगरेज़ी उपनिवेशों के रूप में बने थे आज सब बड़े उत्साह के साथ अंगरेज़ी सेना से मिलकर युद्ध के संकट उठाने को प्रवृत्त हो गये हैं। कैनाडावाले चाहे अंगरेज़ी वंश के हों, चाहे फ़ान्सीसी हों, आस्ट्रेलियावाले, न्यूज़ीलैण्ड-बासी, सब इंग्लिस्तान, स्काटलैण्ड और ऐरलैण्ड के रहनेवाले सिपाहियों से कंधे से कंधा मिलाये लड़े और मरे हैं। और इसमें भी सन्देह नहीं है कि यह लोग जो जीने मरने में हमारे टापू का साथ देते हैं तो इसका कारण यह नहीं है कि ये इंग्लिस्तान के बसाये उपनिवेशों में रहते हैं। बात यह है कि ग्रेटब्रिटेन ने बड़ी बुद्धिमानी से उनके कल्याण के आगे अपने सच्चे या कल्पित लाभों का विचार नहीं किया और यह जानता है कि जो लोग शासन करने की योग्यता रखते हैं वह लोग अपना शासन आप करें। हम यह नहीं कह सकते कि कभी ऐसा भी दिन होगा जब एक ऐसी पार्लामेण्ट बन जायगी, जिसमें जो लोग आज अंगरेज़ों के पूरे शासन में हैं, सब मिलकर सब के हित की बातों पर विचार करेंगे जैसे कि अंगरेज़ी-अमरीकावाले कैनाडा के डोमि-नियन में करते या आस्ट्रेलियाबासी वहां की कामनवेल्थ (प्रजा-तन्त्र समाज) में करते हैं। परन्तु इतना हमें जानना चाहिये कि लोगों में मेल जोल है और इससे कभी न कभी सम्बन्ध और भी दृढ़ हो जायगा। और हमें यह भी न भूलना चाहिये कि जब हम गर्व से अंगरेज़ी साम्राज्य का ध्यान करते हैं तो यह न समझें कि हमने इस शताब्दी के आरम्भ में अपने टापू के शासन में करोड़ों वर्गमील धरती जोड़ दी है, बरन उसमें जो लोग रहते हैं वह स्वराज्य करने के योग्य न हुए तो उनपर न्याय से शासन किया जाता है और जहां उनमें योग्यता है वहां उनको आप अपना

शासन करने का अधिकार दिया जाता है। साम्राज्य का पुराना अर्थ लिया जाय तो सच पूछिये तो साम्राज्य है ही नहीं क्योंकि साम्राज्य एक स्वामी के शासन को कहते हैं और न अब कोई उपनिवेश है क्योंकि उपनिवेश अपनी मातृभूमि के आश्रित रहते हैं। सच पूछो तो आज कल भगिनीभाव रखनेवाली रियासतों का एक समाज है जिसको अपनी अपनी स्वतन्त्रता का अभिमान है और समष्टि की रक्षा के लिये जहां तक उनसे हो सकता है उद्योग करने को उत्सुक हैं।

९।—महाराणी विक्टोरिया की मृत्यु—तिरसठ बरस से कुछ अधिक राज करके जनवरी २१, ई० १९०१ को महाराणी विक्टोरिया की मृत्यु हो गई। अपने शासनकाल के आदि से अन्त तक उसकी प्रजा उसकी अनुरक्त रही, वह उनके सुख में अपना सुख मानती और उनके दुःख में दुखी रहती। उसका प्रेम अपने पति के साथ अपूर्व था और वह बड़े प्रेम और चतुराई से अपने परिवार की देखभाल करती थी। राज करने में जो कुछ उसने किया वह बहुत थोड़े लोगों को विदित था। क़ानून बनाना पार्लमेिण्ट का काम है और शासन की कार्रवाई करना मन्त्रिदल का—यह सब मानते हैं और ठीक भी है परन्तु एक काम और है जो इनसे घटकर उपयोगी नहीं है। वह विरोधी समस्याओं को मिला देना और जब कभी देखा कि मूढ़ता का काम हो रहा है तो चतुराई की बात कह देना और हठ न करके समझा बुझा कर बता देना कि जो भूल चूक हो चुकी है उसको सुधार देना चाहिये। यही काम महाराणी विक्टोरिया ने किया और किसी की प्रशंसा की परवाह न की। इस काम के करने में उसने कभी विराम या विश्राम न किया और इसी के लिये उसकी प्रजा उसका गुन मानती रही और उसे कभी न भूलेगी।

जो काम उसने ऐसा अच्छा किया वह अपने बड़े बेटे राजा एडवर्ड सप्तम को सौंप गई ।

## ॥ अध्याय ५६ ॥

### * एडवर्ड सप्तम का राज *

१ ।—शान्तिकारक—एडवर्ड सप्तम के शासनकाल में और राज्यों के साथ हमारा मेल जोल बहुत बढ़ गया । एडवर्ड को शान्ति से बड़ा प्रेम था और उनके मन्त्रियों ने मेलजोल बढ़ाने के लिये जो उद्योग किये उनकी सफलता का मुख्य कारण यही था कि राजा परदेसी शासकों और प्रधान कर्मचारियों से जो इंग्लिस्तान में आते, आप मिला करता था या बार बार बाहर की यात्रा करके उनसे मिलता था । इन उद्योगों का पहिला पूर्ण परिणाम फ्रान्स के साथ एक अभिसन्धि (Convention) थी जिसपर ४ अप्रैल १९०४ को हस्ताक्षर हुए और जिसके अनुसार मिश्र, मराको, मडागास्कर आदि स्थानों में अपने स्वार्थों में विरोध का निपटारा बड़ी चतुराई के साथ हो गया । यह अभिसन्धि परस्पर मित्रभाव का प्रमाण और परिणाम दोनों था, और लिखे सन्धिपत्र के बराबर लाभकारी और बाध्य हो गया । ई० १९०७ में रूस के साथ एशियाई व्यवस्थाओं के विषय में भी सन्धि हुई जिसमें भी वैसे ही समझौते थे और जहां उस देश के साथ कोई स्पष्ट समझौता न हुआ था, बहुत सा मनोमालिन्य मिट गया ।

२ ।—१९०२ का शिक्षा का क़ानून—बाहरी झगड़ों से छुटकारा पाकर राजा के कर्मचारी अपने घर के मामलों पर ध्यान देने लगे । १९०२ में मार्किस सैलिसबरी के पीछे मिस्टर बालफ़ोर प्रधान मंत्री हुआ । उसने एक क़ानून पास कराया

जिससे हमारी शिक्षाप्रणाली में बड़े उपयोगी परिवर्त्तन हो गये ई० १८७० से दो तरह के इब्तिदाई मदरसे थे; एक तरह का ख़र्चा करों से दिया जाता था और स्कूलों के बोर्ड उनका प्रबन्ध करते थे। दूसरी तरह के मदरसे दानियों के दान से चलते थे और उन्हीं की कमेटियां उनकी देखभाल करती थीं। दोनों तरह के स्कूलों को कुछ कुछ पार्लामेण्ट से ग्रैण्ट (Grant) मिला करते थे। मिस्टर बालफ़ोर के क़ानून ने सारे स्कूलों को सरकारी करों से बराबर इमदाद दिलवाई; स्कूल बोर्ड तोड़ दिये, ज़िलों की सभाओं और नगरों की कौंसिलों को स्थानिक प्रबन्ध करनेवाली बनाकर उनको अधिकार दिया कि प्रारम्भिक शिक्षा के अतिरिक्त शिक्षा देने का प्रबन्ध करें और सारे प्रकार की शिक्षाओं का एक दूसरे से लगाव बढ़ाने का प्रयत्न करें।

३।—शासनप्रणाली में परिवर्त्तन—कुछ दिनों तक विशेष चुनाव कन्सरवेटिव दल के प्रतिकूल रहे। दिसम्बर १९०५ में मिस्टर बालफ़ोर ने इस्तीफ़ा दे दिया और शासन का भार सर हेनरी कैम्बेल-बैनरमैन के सिर पड़ा। पार्लामेण्ट तोड़ दी गई और लिबरल दलवालों की बहुत बड़ी संख्या पार्लामेण्ट में आई। अप्रैल १९०८ में उनका लीडर (नायक) मर गया और मिस्टर ऐस्क्विथ को प्रधानमन्त्री का पद मिला।

४।—"टेरिटोरियल सेना"—हमारी फ़ौजी जमाअत में दो तरह के लोग थे, एक सरकारी स्थायी फ़ौज और दूसरी इमदादी पल्टन जिसमें मिलिशिया (Militia) और वलुण्टेर होते थे। इन दिनों इसमें कुछ सुधार हुये थे तौभी इस रीति में ख़र्चा बहुत पड़ता था और बेढंगी थी। ई० १९०७ में "टेरिटोरियल" और कोतल सेना का क़ानून पास किया गया और सेना का रूप बदल दिया गया। सरकारी फ़ौज की बनावट और जगह

जगह पर बांटने की प्रथा में परिवर्त्तन किया गया, कच्ची पल्टन कोतल कर दी गई और वलुमटेर और इयोमैनरी (Yeomanry) क़वायद सिखाकर टेरिटोरियल सेना वना दी गई ।

५ ।—बूढ़ापे की पेन्शन—ई० १६०८ से पहिले जो बुड्ढे और भले मानस अपनी रोटी आप नहीं कमा सकते और जिन्होंने अपने बुढ़ापे के लिये धन नहीं वचा रक्खा था पहिले मुहताजख़ानों में भेज दिये जाते थे । ई० १६०८ में उनको मुहताजख़ानों से वचाने के लिये बुढ़ापे की पेन्शन का क़ानून पास किया गया । इस क़ानून से ऐसे मनुष्य सत्तर वरस के होने पर राज्य से हफ़्ते में पांच शिलिंग पाते हैं जो उनकी सालाना आमदनी इक्कीस पौंड से कम हो । इससे अधिक आमदनी पर पेन्शन घट जाती है । सव से वड़ी आमदनी ३१ पौंड १० शिलिंग सालाना की होती है और सव से छोटी पेनशन हफ़्ते में एक शिलिंग की ।

६ ।—वच्चों की सनद—वच्चों के हानि-लाभ की देखभाल, उनके प्रयोजनों की रक्षा करना और उनके स्वास्थ्य वढ़ाने के क़ानून वहुत थे जिनसे कभी कभी वड़ा गड़वड़ मच जाता था । परन्तु अनुभव से यह जाना गया कि क़ानून सारी आवश्यकताओं के पूरा करने और सारे जोखिमों से वचाने के लिये काफ़ी न थे । इस विचार से ई० १६०८ में एक क़ानून वना जिससे पुराने क़ानून सव रद्द कर दिये गये और उनमें जो वातें रखने योग्य थीं सव इकट्ठी कर के एक क़ानून वना । जो नियम दुर्वल थे वह पुष्ट कर दिये गये और जिनकी कमी थी वह जोड़ दिये गये । दूध वढ़ाने के पीछे वच्चों की तन्दुरुस्ती और उनके सुख का प्रवन्ध किया गया, निठुराई और चूक करनेवाले को दण्ड दिया गया, सोलह वरस से कम उम्र के वच्चे के हाथ तमाखू या सिगरेट वेचने की मनाही करदी गई और पुलीस के सिपाहियों और वाग़ के

रखवारों को अधिकार दिया गया कि बच्चों को तमाखू पीने न दें। अपराधी बच्चों की जांच के लिये विशेष अदालतें बनीं। जांच के समय उनको बन्द रखने के लिये विशेष स्थान (हवालात) बनाये गये और दण्ड-योग्य सिद्ध होने पर उनके साथ विशेष बर्त्ताव का प्रबन्ध किया गया। शराब के दूकानदारों को मनाही की गई कि बच्चों को अपनी गद्दियों पर न आने दें। और भी अनेक उपाय किये गये, जिससे लड़के, लड़कियां हृष्टपुष्ट, काम करनेवाले और क़ानून की मर्यादा पर चलनेवाले स्त्री पुरुष बन जायं।

७।—मज़दूरों के दफ्तर—काम चाहनेवाले स्त्री पुरुष और काम कराना चाहनेवाले मालिक एक दूसरे की आवश्यकता नहीं समझते तो जो संकट पड़ता है और लोगों को काम नहीं मिलता, उसके रोकने के लिये ई० १९०९ में एक क़ानून बनाया गया। देश के बारह भाग किये गये और प्रत्येक भाग में एक निकासीमण्डप बनाया गया जो लण्डन के जातीय निकासी-मण्डप के आधीन था। मज़दूरों के दफ्तर बनाये गये जहां मालिक और मज़दूर अपनी अपनी आवश्यकतायें बतायें और उनका प्रबन्ध किया जाय। जो काम करनेवाले घर से दूर नौकरी और मज़दूरी करने जाते थे उनको सफ़र खरच के लिये उधार दिया जाता था।

८।—ई० १९०९ का आय-व्य का चिट्ठा (बजट)—मज़दूरों के दफ्तर, बुढ्ढों की पेनशन और अनेक सुधारों के लिये और जलयान और जलसेना बढ़ाने को धन की आवश्यकता थी। इस धन के उपार्जित करने का उपाय, खज़ाने के अधिकारी मिस्टर लायड जार्ज ने यह सोचा कि पुरानी रीतियों से और धन लिया जाय और नये कर लगाये जायं। शराब और तमाख का

महसूल बढ़ा दिया गया और पेट्रोल और मोटर कारों पर महसूल लगा दिया गया। शराब की दुकानों के लैसन्स बढ़े। तीन हज़ार पौंड सालाना आमदनी के उपर इंकम-टैक्स का निर्ख़ बढ़ा दिया गया और पांच हज़ार पौंड से ऊपर सालाना आमदनी पर सुपर-टैक्स (Super-Tax) लग गया और धरती के दाम की वृद्धि जो मालिक के उद्योग से न हुई हो वरन जो नगर के समीप रहने या और कोई कल कारख़ाना खुल जाने से हुई जिसे अनुपार्जित-वृद्धि कहते हैं उसपर नया टैक्स लगा। देनेवालों को नये कर बहुत अखरते हैं। इस बजट का असर जिन लोगों पर पड़ा वह लोग बहुत चिल्लाये और पार्लमेण्ट में उनके प्रतिनिधियों ने बहुत दिनों तक कठोर प्रतिवाद किया। परन्तु कामन सभा में उनकी सुनाई न हुई तब उन्हों ने लार्ड सभा की सरन ली। कामन सभा के पास किये हुये धन-संबंधी मसौदे लार्ड सभा में साधारण रीति से पास हो जाते थे परन्तु इस बार उन्होंने कहा कि जब तक देश आयव्यय के चिट्ठे के उपर अपनी सम्मति न देगा, यह मंज़ूर न किया जायगा। परन्तु फिर जो मेम्बरों का चुनाव हुआ उसमें इसी के पक्षपाती मेम्बर आये और कामन सभा ने जब दूसरी बार इसे पास कर दिया तो लार्ड सभा ने भी अपनी मंज़ूरी दे दी।

६।—लार्ड सभा और कामन सभा—१ दिसम्बर ई० १६०८ को, बजट के नामंज़ूर हो जाने पर कामन सभा ने यह प्रस्ताव किया, "लार्ड सभा का साल के काम के लिये इस सभा की आर्थिक युक्ति को क़ानून के रूप में पास न करना नियम के विरुद्ध है और कामन सभा के अधिकारों पर हस्तक्षेप है"। यह प्रस्ताव एक सिद्धान्त का प्रमाणीकरण ही था और मन्त्रियों का निश्चय कर लेना कि यह क़ानून के रूप में परिणत हो जाय, दोनों सभाओं में बहुत दिनों तक झगड़े की जड़ हो गया।

१० ।—राजा की मौत—यह झगड़ा उठा ही था कि राजा जिसकी प्रबन्ध-चातुरी से यह दब जाता, अकस्मात् बीमार हो गये । जिस दिन उनकी बीमारी का समाचार सुना गया उसके दूसरे ही दिन (६ मई १९१०) उनकी मृत्यु हो गई ।

## ॥ अध्याय ५७ ॥

### * पार्लमिण्ट में सुधार *

१ ।—पार्लमिण्ट का क़ानून—एडवर्ड के उत्तराधिकारी जार्ज पञ्चम के शासनकाल के आरम्भ में ही गवर्मेण्ट के मुख्य अधिकारी और विरोधियों (Oppositionists) के मुखियों ने कामन सभा और लार्ड सभा में झगड़ा मिटाने का उपाय सोचने का काम एक छोटी सी कमेटी को सौंप दिया । इस कमेटी की बैठक इक्कीस बार हुई परन्तु इसे कोई ऐसा उपाय न सूझा जो दोनों सभाओं और दोनों दलों को अभिमत होता । मिस्टर ऐसक्विथ (Asquith) ने अपनी एक तरकीब निकाली और जनता की मंजूरी का यत्न करने लगा । जो पार्लमिण्ट जनवरी १९१० में चुनी गई थी, दस ही महीने पीछे तोड़ दी गई । ऐसक्विथ ने वोट देनेवालों को जो लेकचर दिये उसमें उसने कहा कि जब टोरियों का अधिकार रहता है तो लार्ड सभा सदा कामन सभा के पास किये हुए मसौदों को मंजूर कर लेती है और लिबरल शासन के अधिकारी रहते हैं तो कितना ही मताधिक्य क्यों न हो जो इसका समर्थन करता है, लार्ड सभा बहुधा नामंजूर कर देती है । उनके विचार जनता को अच्छे लगे और ६७० में से ३९८ सदस्य इसके समर्थन करनेवाले चुन लिये गये । इस नई कामन सभा में ११ फ़र्वरी १९११ में पार्लमिण्ट के क़ानून का

मसौदा पेश किया गया और १० मई को इसकी अन्तिम बैठक हुई। लार्ड सभा ने इसको नामंजूर न किया परन्तु कुछ तरमीमें कीं। कामन सभा ने तरमीमें मंजूर न कीं और मसौदा जैसा सब लोग समझे थे असली रूप में लौटा दिया। सब लोग यह भी जानते थे कि राजा ने इस क़ानून का पास कराना निश्चित करने के लिये बहुत से लिबरल लार्ड बनाना मंजूर कर लिया था। लार्डों ने जब यह देखा कि हमारी सभा में हमारे दबाने वाले मेम्बर भर जायंगे तो कितनों ने जो इसके विरोधी थे इसके लिये अपना वोट दे दिया और कितनों ने इसके प्रतिकूल वोट दिया ही नहीं और १८ अगस्त १९११ को यह क़ानून पास हो गया।

इसके अनुसार इतने परिवर्त्तन हुये,

[ १ ] रुपयेपैसे के विषय में कोई मसौदा जिसे कामन सभा ने पास कर दिया है लार्ड सभा में भेजा जाय और एक महीने के अन्दर बिना तर्मीम उसे लार्डसभा न पास करे तो राजा की अनुमति हो जाने पर यह ऐक्ट (क़ानून) बन जायगा।

[ २ ] यही हाल उस जनता-सम्बन्धी मसौदे का भी होगा जिसे कामन सभा तीन लगातार बैठकों में पास कर दे और लार्ड-सभा नामंजूर करै।

[ ३ ] १७१५ के सप्तवर्षीय क़ानून (Septennial Act) के अनुसार पार्लमेण्ट सात बरस से अधिक न बैठ सकती थी अब सात बरस के पांच बरस कर दिये गये।

२।—प्रजा के प्रतिनिधि का क़ानून (Representation of Peoples' Act)—पार्लमेण्ट के क़ानून ने कामन सभा के संकल्पों को नष्ट कर देने का अधिकार लार्डसभा से ले लिया

परन्तु जनता यह भी समझने लगी थी कि कामन सभा ही सारी जनता की इच्छा को प्रकट करने वाली कभी कभी नहीं भी होती। अंगरेज़ी जनता में स्त्रियां आधी हैं परन्तु इनका वोट नहीं, धनियों को कई जगह वोट मिल जाते हैं, कभी कभी हट जाने से सबके वोट निकल जाते हैं और ज़िलोंके मेम्बरों की संख्या में बड़ी असमता थी जैसे कि कार्डिफ़ का मेम्बर डरहम के मेम्बर की अपेक्षा ग्यारह गुने वोट देनेवालों का अधिकारी था। १८६९ में कुछ स्त्रियों को जिनका विवाह न हुआ था या जो बिधवा थीं और जिनके पास मकान थे नगर-सभा के मेम्बरों को चुनने के लिये वोट देने का अधिकार मिल चुका था और स्थानिक प्रबन्ध-कारिणी-सभाओं में भी धीरे धीरे उनको वोट देने का अधिकार मिला परन्तु बड़े कड़े आन्दोलन पर भी जो कभी कभी प्रचण्ड भी हो गया था पार्लामेण्ट की मेम्बरी के वोट देने का अधिकार उनको कभी न मिला। अन्त को मिला भी तो आन्दोलन का परिणाम न था बरन युद्ध के दिनों में स्त्रियों ने जो काम किये थे उसके बदले में दिया गया, क्योंकि जब उन्होंने देश को बचाने के लिये काम किया तो देश के शासन में उनके हाथ लगाने का हक़ कौन न मानता। जनता के प्रतिनिधि चुनने का क़ानून (Representation of Peoples' Act) ६ फ़र्वरी १९१८ को क़ानून बन गया। इसके अनुसार प्रत्येक पुरुष को जिसकी उम्र इक्कीस बरस से अधिक हो और जो किसी कन्सटिटुयन्सी (Constituency)* में छ महीने तक रहा हो या दूकान रक्खी हो और प्रत्येक स्त्री को जो तीस बरस से ऊपर की हो, जिसके पास निज का मकान हो या जो किसी मकानवाले की स्त्री हो एक वोट मिल गया, साधारण चुनाव के दिन सारे पोल एक ही दिन लिये जायं

* Constituency उस समाज, गांव, नगर आदि को कहते हैं जिसे सदस्य चुनने का हक है।

और एक मनुष्य को एक ही कंस्टिटुयन्सी में वोट देना चाहिये। एक मेम्बर जितने इलेक्टरों (वोट देकर चुननेवालों) का प्रतिनिधि होता है उनकी संख्या बराबर करने के लिये सीटों* का फिर से बांट हुआ और देश ऐसे भागों में बांट दिया गया जिनकी जनसंख्या बराबर हो। इस रीति से कामन सभा के मेम्बरों की संख्या ६७० से ७०७ हो गई।

## ॥ अध्याय ५८ ॥

### ऐरलैण्ड का होमरूल (आत्मशासन) और वेलस का धर्म-विभेद।

१।—होमरूल—पार्लमेण्ट ऐक्ट की उपयोगिता ई० १९१४ में देखी गई जब कि लार्डसभा के तीन बार नामंजूर किये हुये दो अच्छे क़ानून उनकी विना अनुमति के पास किये गये; एक ऐरलैण्ड के होमरूल का और दूसरा वेलस के धर्म-विभेद का। पहिले क़ानून के अनुसार ऐरलैण्ड पार्लमेण्ट में एक नियत संख्या के सदस्य तो भेजा करता, उसे अपनी एक पार्लमेण्ट रखने का अधिकार मिल गया जिसमें चालीस सदस्यों की एक सिनेट (सभा) और एक सौ चौंसठ की एक कामन सभा हो। इस पार्लमेण्ट को सारे ऐसे क़ानून बनाने के अधिकार थे जिनका समस्त संयुक्त राज्य से सम्बन्ध न हो जैसे और देशों के साथ व्यवहार, सन्धि-विग्रह, सेना और सिक्के। इस क़ानून पर १७ सितम्बर को राज-स्वीकृति हो गई और आठ महीने पीछे से इसका चलन होने को था।

* Seat, मेम्बरी।

ऐरलैण्ड के तीन सूबों ने इसे स्वीकार किया परन्तु अलस्टर ने इसका प्रतिवाद किया और खुल्लम खुल्ला लड़ाई की तैयारी करने लगा। मिस्टर ऐसक्विथ का यह अभीप्राय था कि ऐरलैण्ड-वालों को वैसी ही शासनपद्धति दी जाय जैसी वह चाहते थे। उसने उनके किसी प्रान्त पर ज़बरदस्ती से ऐसा शासन चलाना न चाहा जिसको वहां के रहनेवाले न चाहते थे। इसलिये उसने एक "तरमीमी" क़ानून बनाने का प्रस्ताव किया जिसमें अलस्टर के ज़िले ज़िले को ६ बरस के भीतर इस बात के निश्चय करने का अधिकार मिला कि यह क़ानून उसपर लगाया जाय या न लगाया जाय। यह रीति नैशनलिस्टों को बहुत अच्छी न लगी और यूनियनिस्टों ने इसका विरोध किया। इसलिये मन्त्री ने जुलाई मास के अन्त में दोनों को सन्तुष्ट करने की आशा से यह घोषणा कर दी कि तरमीमी मसौदे पर विचार कुछ दिन के लिये टाल दिया जाय। इसके आठ दिन के भीतर ही युद्ध छिड़ गया और सम्राजों के झगड़े पट जाने के साथ साथ होमरूल के क़ानून का चलन व्यवहार तब तक के लिये रोक दिया गया जब तक शान्ति न हो जाय।

२।—<u>वेल्स का धर्म-विभेद</u>—वेल्स वासी अधिकांश नन्कन्फ़ार्मिस्ट (Nonconformist) हैं और उनको अपने देश में अंगरेज़ी धर्म-संघ का स्थापित होना बहुत बुरा लगा। बरसों उद्योग करने पर वह लोग लिबरल शासनाधिकारियों को अपने विचार की समीचीनता समझाने में सफल हुये और कामन सभा ने लगातार तीन बरस तक धर्म-विभेद का एक क़ानून पास कर दिया। लार्ड सभा ने इसे नामंज़ूर कर दिया परन्तु पार्लामेण्ट ऐक्ट के अनुसार यह क़ानून बन ही गया। इस क़ानून के अनुसार धर्मसंघ और राज-शासन में कोई सम्बंध न रहा।

राजा धर्म-सम्बन्धी कोई उहदा किसी को नहीं दे सकता। बिशपलोग लार्ड-सभा में नहीं बैठ सकते और धर्म-संघ एक अपनी सभा बना कर अपने कामों की देखभाल आप करता है। गिरजे छोटे बड़े सब का प्रबन्ध इसी सभा को सौंप दिया गया। ई० १६६२ से पहिले की जो वृत्तियां धर्मसंघ के नाम थीं सब धर्मसंघ ही के पास रहीं परन्तु उसके पीछेवाली सब ज़िले की या नगर की कौंसिलों को दे दी गई और कुछ पुरानी जायदादें विश्वविद्यालय में लगा दी गई। इस क़ानून की राज-स्वीकृति १७ सितम्बर को हुई और साल के भीतर इसका चलन होने को था परन्तु होमरूल के क़ानून की भांति यह भी युद्ध के पीछे शान्ति का आसरा देखता रहा।

## ॥ अध्याय ५९ ॥

### * महायुद्ध *

१।—महायुद्ध के कारण—जर्मन-सम्राट् विलियम द्वितीय के हित मित्र न मानें कि उसी की प्रचण्ड तृष्णा महायुद्ध का मूल कारण रहा है परन्तु यह तो उनको मानना ही पड़ेगा कि सम्राट् चाहता तो युद्ध न होता। वह उसे रोकना चाहता ही न था। वह बहुत दिनों से लड़ाई का मंसूबा बांध रहा था, तैयारी भी पूरी कर चुका था, अवसर अच्छा देख पड़ा और बहाना मिल गया।

ई० १८७१ में फ़्रान्स के परास्त होने पर जर्मन साम्राज्य बना। पहिले छोटे छोटे अनेक राज्य थे, वे सब सदा के लिए मिल गये और यह ठहरा कि प्रत्येक छोटा राज्य अपने अपने राजा, ड्यूक (राय) या और किसी की आधीनता में अपना

शासन करै परन्तु जिन विषयों से सबका सम्बन्ध हो उनमें मिलकर काम करै और प्रशिया का राजा सबका सम्राट् माना जाय। यह साम्राज्य बनते ही महाद्वीप की जातियों के नायकों में माना गया और धीरे धीरे उसका यह पद बढ़ता गया। इसकी सेना ऐसी सजाई गई कि संख्या में, शिक्षा में और सामान में संसार में सब से प्रबल हो गई। इस पर भी सन्तोष न करके विलियम ने इंग्लिस्तान के बराबर जलसेना रखना निश्चय किया। जर्मनी को बाहर की किसी वस्तु की आवश्यकता न थी, इसके काम का सब कुछ देश ही में होता है, परन्तु इंग्लिस्तान के जीवन का आधार बाहर की रसद है। परन्तु सम्राट् की युक्ति में प्रबल जलसेना और स्थलसेना के अतिरिक्त और भी उपयोगी और लाभकारी बातें थीं। उसकी प्रजा शिक्षित, परिश्रमी और आज्ञाकारी थी और प्रजा के उद्योग खेती करने और कारखानों की उन्नति में लगे हुए थे। देसावर से भी अच्छा व्यापार होता था। जर्मनलोग समृद्ध हो रहे थे और इसके योग्य भी थे और योग्यता के कारण उनकी दिन दूनी रात चौगुनी वढ़ती होती परन्तु सम्राट् और शासन के अधिकारी इस समृद्धि से सन्तुष्ट न थे। वह लोग उत्तर फ्रान्स के कोयले की खानों, वेलजियम के वन्दरगाहों और इंग्लिस्तान के उपनिवेशों का लालच करने लगे; और उन्होंने यह समझ लिया कि जो वस्तु हम चाहें उसे लेने का हमको हक़ भी है। केवल लेने के लिये शक्ति वढ़ानी चाहिये और इसी शक्ति के वढ़ाने में लग गये।

फ्रान्स को एक वार जर्मनी ने हरा कर नष्ट कर दिया था। वह उसकी वढ़ती शक्ति देख कर चौंका। इन दोनों देशों में लड़ाई की सम्भावना सदा वनी रहती थी। रूस और आस्ट्रिया

भी सदा लड़ने को तैयार रहते थे। चारों देशों में सबको सहायता की आवश्यकता थी। इसलिये आपस में दो दो राज्य मिल गये, जर्मनी आस्ट्रिया से और फ़ान्स रूस से।

२।—लड़ाई का बहाना—जब लड़ाई का सामान ठीक हो गया तो लड़ाई छेड़ने के लिये एक बहाने का काम था; और बहाना यों मिला कि २८ जून १९१४ को बोस्निया की राजधानी सेराजेवो में आस्ट्रिया के युवराज का बध कर दिया गया। यह बात किसी की समझ में न आयेगी कि आस्ट्रिया का राजकुमार आस्ट्रिया राज्य के भीतर एक आस्ट्रियावाले के हाथ से मारा जाय, परन्तु सारा संसार इस जंजाल में फंस गया। ई० १९०८ में बोस्निया को आस्ट्रिया ने अपने राज्य में मिला लिया था। आस्ट्रिया के और प्रान्तों के रहनेवाले जर्मन और मगयार (Magyar) थे परन्तु बोस्नियावाले स्लाव (Slav) थे और उनकी यह इच्छा थी कि हमारा देश पड़ोस के स्लाव राज्यों में मिल जाय। इस संयोग की इच्छा सर्बिया के स्लाव राज्य में बहुत प्रबल थी। इससे आस्ट्रिया की गवर्मेण्ट ने यह व्यर्थ ही मान लिया कि राजकुमार के बध की युक्ति वहीं की गई थी और न भी की गई हो तो वहीं की उत्तेजना थी। यह बहाना धरके आस्ट्रिया ने सर्बिया के पास प्रार्थनाओं की एक सूची भेज दी और स्पष्ट रूप से कह दिया कि दो दिन के भीतर सन्तोष-जनक उत्तर न मिला तो लड़ाई हो जायगी।

रूस सदा से स्लाव वंश का पक्षपाती रहा है। इससे यह निश्चय था कि आस्ट्रिया ने सर्बिया पर चढ़ाई की तो रूस आस्ट्रिया पर चढ़ाई कर देगा। इस पर आस्ट्रिया का मित्र जर्मनी रूस पर आक्रमण करेगा और रूस का मित्र फ़ान्स जर्मनी पर चढ़ दौड़ेगा। इस उपद्रव को रोकने के लिये सर्बिया के हित

सजी हुई सेना औरों को लिये हुये उनके मुक़ाबले को आई तो उन्हें भी लाखों सिपाही भरती करने पड़े। सेनापति लार्ड किच्नर में प्रबन्ध करने की बड़ी योग्यता थी। उन्हीं को जंगी महकमे का अफ़सर बना दिया गया और साम्राज्य में जो कुछ सामग्री थी सब युद्ध के कामों में लगा दी गई। वलन्टेरों के भरती करने की घोषणा होने पर हमारे नवयुवक बड़े चाव से उठ खड़े हुये। प्रत्येक उपनिवेश और समाश्रित देश ने बड़ी बड़ी सहायता भेजी और थोड़े ही दिनों में एक बहुत बड़ी सेना युद्ध की शिक्षा पाने लगी। शान्ति के समय के जितने व्यापार थे सब फ़ौजी सामान गोला बारूद बनाने लगे। वायुयान, पनडुब्बी नावें, नये ढंग की और एक से एक बढ़कर, हज़ारों बन गई और नये नये घातक और रक्षक यंत्रों का आविष्कार हुआ। और यह भी न भूलना चाहिये कि स्त्रियों ने भी बड़े काम किये। रोगियों और घायलों की सेवा के अतिरिक्त बंकों, दफ़्तरों, कारख़ानों और खेतों में स्त्रियों ने मर्दों के काम किये और कई प्रकार के उद्यमों में हाथ लगाया जिसके लिये पहिले योग्य न समझी जाती थीं।

६।—पश्चिम में लड़ाई—जर्मनी की युक्ति यह थी कि फ़ान्सवालों को परास्त करके रूसी परास्त किये जायं। रूसी धीरे धीरे आगे बढ़ रहे थे। उनको रोकने के लिये छोटी सी सेना की आवश्यकता थी; और बहुत बड़ी सेना बेलजियम होकर झटपट आगे बढ़के फ़ान्स पर उधर से आक्रमण करदे जिधर फ़ान्स का बल कम है। यह युक्ति चल जाती परन्तु दो बातों से सफल न हुई—एक बेलजियमवालों की रोक टोक, दूसरी अंगरेज़ों का बीच में पड़ जाना। पहली के कारण दस दिन तक सेना आगे न बढ़ सकी और दूसरी ने फ़ान्स का पल्ला भारी

कर दिया जिससे कि पहली बड़ी लड़ाई में जीत अनिश्चित रही। इसको मार्न का युद्ध कहते हैं। फ्रान्स के रक्षक धीरे धीरे पछाड़ दिये गये और पेरिस पच्चीस ही मील रह गया। परन्तु जर्मन लोग सीधे राजधानी पहुंचने के बदले एकाएक दक्षिण-पूर्व को लौट गये। कदाचित् उनका विचार यह था कि अपने बैरी के दहिने पक्ष को घेर लें। परन्तु जर्मन आप घिर गये। फ्रान्सीसी सेनापति ने चटपट एक नई सेना इकट्ठी कर के आगे बढ़ा दी और जर्मन उलटे पावों भागे। जब ऐन (Aisne) नदी के तटपर पहुंचे तो पीछा करनेवालों का वेग घट गया और जर्मन सेना को मोरचेबन्दी करने का समय मिल गया। पश्चिमी युद्ध को एक हल्ले में निपटा देने की आशा टूट गई और जर्मनी ने बेलजियम के उन प्रान्तों के जीतने का उद्योग किया जो अब तक जीते न गये थे।

७।—खातियों में—बेलजियम की सेना छोटी थी। इस लिये जर्मन सेना का सामना चतुराई से बचा कर आस्टेण्ड (Ostend) और इप्रस (Ypres) के बीच के प्रान्त में आ गई और यहां उसे अंगरेज़ी सेना मिल गई। यहीं खातियों की लड़ाई शुरु हुई। नार्थ सी (उत्तर सागर) से स्विट्ज़रलैण्ड तक एक रेखा सी खींच कर जर्मन लोगों ने खातियां खोदीं और उनमें बैठ गये। आस्टेण्ड (Ostend) से वर्डन (Verdun) तक यह रेखा लेन्स (Lens), अरस (Arras), काम्ब्रे (Cambrai), सेण्टक्विण्टिन (St. Quentin) और रांइस (Rheims) होकर जाती थी। इस रेखा पर चार बरस तक युद्ध होता रहा। कभी जर्मन दो चार मील पश्चिम बढ़ जाते और कभी मित्र-मंडल दो चार मील पूर्व बढ़ आते।

जब पैरिस न पहुंच सके तो जर्मन लोगों ने अक्टूबर और नवम्बर १९१४ में कैले पहुंचने के लिये बड़ा ज़ोर मारा। परन्तु

हम लोगों के सौभाग्य से इसमें भी उनकी हार हो गई । जर्मन सफल हो जाते तो डोवर-जल-डमरुमध्य पर अंगरेज़ी अधिकार न रह जाता और फ्रान्स में आना जाना जोखम में पड़ जाता । फ़र्वरी १९१६ में जर्मन सेना ने बरदून हो कर घुस जाने का इससे बढ़ कर प्रयत्न किया । जीवन प्राण की परवाह न करके भीड़ की भीड़ बार बार लाते रहे । फ्रान्सवालों ने बड़ी बीरता से उनके वार बचाये । कुछ बाहर के कोट मोरचे निकल गये परन्तु नगर न टूटा । जब आक्रमणकारी थक गये तो फ्रान्सीसी उन पर चढ़ दौड़े और नवम्बर लगते ही जो कुछ खो बैठे थे सब फेर लिया ।

घेरे के अन्तिम दिनों में अरस के दक्षिण और अमीन्स के पूर्व सोम (Somme) नदी के तट पर बड़ा युद्ध हो रहा था । फ्रान्सीसी और अंगरेज़ जर्मनदल भेद कर आगे बढ़ना चाहते थे । उनको पूरी सफलता नहीं हुई परन्तु निपट घाटे में भी न रहे । हां यह कहा जा सकता है कि लाभ के विचार से हानि बहुत हुई ।

जाड़ भर तैयारी होती रही जिससे यह अनुमान किया जाता था कि वसन्त ऋतु में युद्ध होगा परन्तु मार्च के मध्य में जर्मन लोगों ने कई मील देश छोड़ दिया जिसे उन्हों ने उजाड़ दिया था और एक छोटी परन्तु सुदृढ़ हिण्डेनबर्ग (Hindenburg) रेखा पर आकर जम गये जो उन्होंने तैयार कर रक्खी थी । मित्रमण्डल ने उनका पीछा किया और अरस (Arras) के निकट वैमी पहाड़ी (Vimy Ridge) पर, इप्रस (मेसीन पहाड़ी) और कैम्बरे पर उनको परास्त कर दिया ।

८ ।—रूस—फ्रान्स को जीतने के उद्योग में रूस को दबा रखने की युक्ति से योजना करनेवालों ही की हानि हुई । लोग

समझते थे कि रूसी सेना के तैयार होने में बड़ी देर होगी परन्तु यह उनका भ्रम था। रूसी सेना चटपट बन गई और जर्मनी और आस्ट्रिया के बड़े बड़े प्रान्तों पर चढ़ दौड़ी। यह सेना निकाल दी गई परन्तु नष्ट न हुई। मध्य की शक्तियों (जर्मनी, आस्ट्रिया) को पूर्व की सीमा पर बड़ी बड़ी सेना रखनी पड़ी जो पश्चिम में होतीं तो उनकी जीत हो जाती। इस सेना को तीन बरस पीछे छुटकारा मिला।

इस लड़ाई से जनता को इतना दुःख हुआ कि लोग राज-विप्लव करने को तैयार हो गये। यह बात रूस में विशेष रूप से प्रकट हुई क्योंकि वहां का शासन अच्छा न था। १४ मई १९१७ को रूस के सम्राट् ने सिंहासन छोड़ दिया और अनेक परिवर्त्तन होने पर शासन का अधिकार ऐसों के हाथ आया जो सर्वस्व खो कर शान्ति चाहते थे। इन लोगों ने कुछ दिनों के लिये युद्ध बन्द करने की प्रार्थना की। यह प्रार्थना १७ दिसम्बर को स्वीकृत हुई। फिर ३ मार्च १९१८ को ब्रेस्ट लिटोवस्क (Brest-Litovsk) की सन्धि से रूस का भला बुरा जर्मनी के आधीन हो गया।

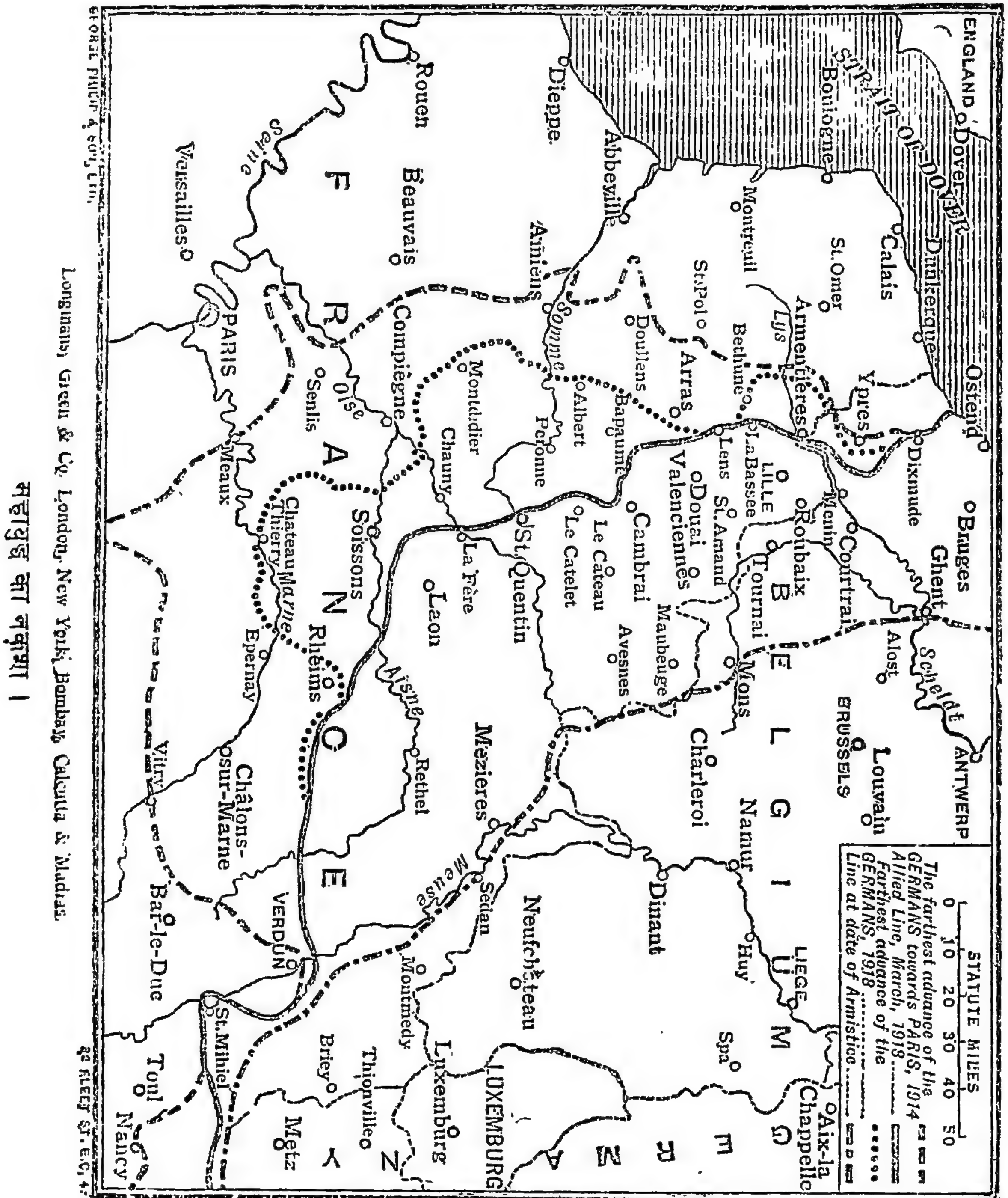
६।—<u>समुद्र में युद्ध</u>—सारे युद्ध भर में अंगरेज़ी जहाज़ों और अंगरेज़ी जलसेना ने बड़ा काम किया। इन्हीं से अंगरेज़ों ने जहां चाहा सिपाही भेजे और इन्हीं के कारण जर्मन अपने उप-निवेशों को सहायता न भेज सके और उनके सारे उपनिवेश छिन गये। इन्हीं के द्वारा अंगरेज़ों को और देशों से अन्न और आव-श्यक वस्तु मिलीं और जर्मन जहाज़ थोड़े ही दिनों में समुद्र से हटा दिये गये। सारी लड़ाई भर में बड़ा जर्मन बेड़ा एल्ब (Elbe) नदी के मुहाने पर खड़ा रहा। कभी कभी दो-चार जंगी जहाज़ निकल आते और इंग्लिस्तान के पूर्व समुद्र

तट के किसी अरक्षित नगर पर गोले बरसाते या छोटे जहाज़ों को जो उनकी राह में पड़ते डुबा देते परन्तु बड़े जहाज़ों के एक ही बेड़े ने युद्ध का साहस किया। यह युद्ध जटलैण्ड के पास ३१ मई १९१६ को हुआ। दोनों पक्ष की बड़ी हानि हुई परन्तु जीत अंगरेज़ों ही की रही और अंधेरे का सहारा पाकर बचे बचाये जर्मन जहाज़ बन्दरगाह में जा छिपे और वहां से जब निकले तो आत्मसमर्पण ही के लिये निकले।

जर्मन लोगों को अपनी पनडुब्बी नावों का बल था। अंगरेज़ी सेना से भरे जहाज़ों या अंगरेज़ी सौदागरों के जहाज़ों को डुबा देना उनके लिये उचित था परन्तु अस्पताल के जहाज़ों या मुसाफ़िरों से भरे जलयानों का डुबाना अनुचित के अतिरिक्त नृशंस भी था। यह बड़ी मूर्खता का काम था और इसी से अमरीका के संयुक्त राज्य भी अंगरेज़ों के पक्षपाती हो गये।

१०।—<u>युद्ध में अमरीका</u>—अमरीका में बहुत से लोगों को आरम्भ ही से इंग्लिस्तान और फ्रान्स के साथ सहानुभूति थी परन्तु अमरीका बहुत बचता रहा और उसने किसी का पक्ष न लिया। परन्तु जर्मनी के पाप देखकर बचे बचाये लोग भी इंग्लिस्तान और फ्रान्स के पक्षपाती हो गये। यह पाप क्या थे? प्रतिज्ञा भंग करके बेलजियम पर आक्रमण करना, लुवेन (Louvain) नगर और रांइस के गिरिजाघर को दुष्टता से नष्ट करना, अरक्षित स्थानों पर बम के गोले बरसाना, और उदासीन देशों के जहाज़, अस्पताली जहाज़ और मुसाफ़िरों के जहाज़ डुबाना। मुसाफ़िरों के जहाज़ डुबाने का सबसे बुरा उदाहरण लूसिटेनिया का विनाश था जिसमें बारह सौ मुसाफ़िर जिनमें सौ से ऊपर अमरीकावासी थे, डूब गये। सभापति विलसन ने कई बार उलाहना दिया परन्तु जर्मन न संभले और समझे कि इनके उलाहने से क्या होता है। १ फ़र्वरी १९१७ से जर्मनलोगों

ने नियमहीन पनडुब्बियों का युद्ध शुरू कर दिया और दो दिन पीछे सभापति ने जर्मन राजदूत को बिदा कर दिया। इसका भी कुछ असर न हुआ और ६ अप्रैल को युद्ध की घोषणा दे दी गई।




Longmans, Green & Co. London, New York, Bombay, Calcutta & Madras.

महायुद्ध का नक्शा।

११।—अन्तिम गति—अंगरेज़ों की भांति अमरीकावाले भी लड़ाई झगड़े से दूर भागते हैं और जब उन्होंने लड़ाई की घोषणा दे दी तो उन्हें सेना भरती करनी पड़ी। इसमें समय लगता; इसलिये जर्मनलोगों ने यह निश्चय किया कि जब तक मित्रमण्डल अटलाण्टिक के उस पार से सहायता पा सके उसको परास्त कर देना चाहिये; और उन्होंने तीन बड़े धावे मारे। पहिला धावा २१ मार्च १९१८ को हुआ। इसका उद्देश यह था कि हमारी दक्षिण पंक्ति तोड़ दी जाय और अंगरेज़ फ़ान्सीसियों से अलग हो जायं। इसमें उनको कुछ सफलता हुई। पहिले बरसों में जो स्थान हम लोगों ने बड़ी कठिनाई से जीते थे सब निकल गये और हम लोग अमीन्स तक हट आये। यहां हमारी सहायता को फ़्रान्सीसी पहुंच गये और धावा रुक गया।

दूसरा धावा ९ अप्रैल को शुरू हुआ। इसका उद्देश यह था कि इप्रस की पंक्ति तोड़ कर समुद्र तट पहुंच जायं। इस में सफलता हुई। १२ अप्रैल को सर डगलस हैग (Sir Douglas Haig) ने अपने सिपाहियों से कहा—"अब और कोई उपाय नहीं है अब लड़ने मरने की ठान लो जब तक एक भी बचे अपने मोरचे पर से न हटो; पीछे हटने का नाम न लो। अपने पक्ष की धार्मिकता पर पूरा विश्वास करके, दीवार की ओर पीठ करके लड़ते लड़ते मर जाओ। ऐसे संकट के समय हमारे घरों की कुशल और मनुष्यजाति की स्वतन्त्रता हमारी सेना में एक एक सिपाही के आचरण पर निर्भर है।"

तीसरा धावा २७मई को शुरू हुआ और फ़्रान्सीसी पंक्ति को तोड़ कर पैरिस पहुंचने के लिये किया गया था। पहिले दो धावों की भांति इसमें भी सफलता हुई। सुअसों और शेटा थियरी ले लिये गये और बैरी राजधानी से ४० मील की दूरी पर पहुंच गया।

अब संहार का समय आ गया। मित्रमण्डल का सेनापति मार्शल फ़ाश जिस प्रतिघात की तैयारी कर रहा था वह चारों ओर जहां जहां बैरी की सेना थी खुल, गया। अंगरेज़ों ने हिण्डनबर्गपंक्ति तोड़ दी। अंगरेज़ों ने सुअसों (Soissons) और शेटो थियरी (Chateau Thierry) छीन लिये और अमरीका की सेना ने सां मिहये (St. Mihiel) के चारों ओर का प्रान्त दबा लिया। और दो तीन महीने में सारी जर्मन सेना घिरजाती या नष्ट हो जाती। अब बचने का उपाय एक यही रह गया कि सन्धि कर ली जाय; और ६ अक्तुबर को जर्मन चैंसिलर (प्रधान मन्त्री) ने सभापति विलसन को लिखा कि सन्धि करा दीजिये। ११ नवम्बर को कुछ दिन के लिये लड़ाई बन्द करने के प्रस्तावपत्र पर हस्ताक्षर किये गये। इससे एक दिन पहिले जर्मन सम्राट् सिंहासन से उतर गया था और वहां की जो प्रजा आंख बन्द करके उसकी भक्ति में मरी जाती थी वही उससे घृणा करने लगी और उसको मुंह में कालख लगाकर हालैण्ड में सरन लेनी पड़ी।

१२।—सन्धि और शान्ति—सन्धि में इतने भिन्न मतों पर विचार करना पड़ा और इतनी हानिलाभ की बातें सोचनी पड़ीं कि जर्मनी के साथ क्या क्या शर्तें की जायं कि उन के निर्णय करने में कई महीने लग गये। २८ जून १९१९ को वरसेल्स (Versailles) नगर में सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर किये गये। इसी स्थान पर अड़तालीस बरस पहिले जर्मनी के विजय का डंका बजा था और यहीं उस दिन जर्मनी की नाक कट गई।

इस सन्धि पत्र में पहिले एक जातीय समिति (League of Nations) स्थापित की गई है जिससे यह आशा की जाती है कि आगामी झगड़े बिना लड़ाई के तै किये जायंगे। जर्मनी ने १८७१

में फ्रान्स से अलसेस और लोरेन दो सूबे लिये थे, दोनों फ्रान्स को लौटा दिये गये। सारे उपनिवेश उसके हाथ से निकल गये। राइन नदी के पूर्व पचास किलोमिटर की भीतर कोई क़िला न बन सकेगा। बरजोरी से पकड़ पकड़ सिपाही भरती करने की प्रथा उठा दी जायगी। जर्मन स्थलसेना में केवल एक लाख सैनिक से अधिक न रहेंगे। जलसेना में पन्द्रह हज़ार ही सैनिक रक्खे जायंगे। जर्मनी के पास न कोई पनडुब्बी नाव रहेगी न हवाई जहाज़। नागरिकों की जो कुछ हानि हुई है सब जर्मनी को भर देनी पड़ैगी। इस हानि के धन का निर्णय एक सभा करै परन्तु दो बरस के भीतर जर्मनी बीस अरब मार्क दे। जर्मनी ने जितने व्यापारी जहाज़ या मछली मारनेवाली नावें नष्ट की हैं उतने ही और वैसे ही जहाज़ बनवा दे और अपने भी बहुतेरे जहाज़ मित्रमण्डल को दे डाले।

उदार बैरी को जर्मनी की इस हेठी पर दया आयेगी परन्तु यह हमको न भूलना चाहिये कि जो कुछ उसको भुगतना पड़ा है वही औरों को भुगताना चाहती थी, उसने जो बोया वही काट रही है, उसे अपनी करनी का फल भोगना पड़ा है।

## ॥ अध्याय ६० ॥

### * शिक्षा *

१।—दोष—महायुद्ध के संकटों के कारण हम लोगों को अपनी दशा की जो जांच करनी पड़ी उससे बहुतेरे क़ानून और बहुतेरी व्यवस्थाओं में परिवर्त्तन की आवश्यकता निकल आई। इनमें सब से उपयोगी शिक्षा की परिपाटी थी, यद्यपि इसे सब से बढ़कर दूषित नहीं कह सकते। इसमें सन्देह नहीं कि हम लोगों

ने पिछले पचास बरस में शिक्षा में जितनी उन्नति की थी उतनी उससे पहिले पांच सौ बरसों में न हुई थी; फिर भी बहुत कुछ और करने की आवश्यकता प्रतीत हुई। हम लोगों ने सब के लिये इब्तिदाई मदरसे खोल दिये थे परन्तु लड़के बिना अपने काम भर को सीखे ही, मदरसे छोड़ देते थे और उनको अधिक पढ़ाने का कोई प्रबन्ध न था। वेल्स को छोड़कर देश भर में मध्यम-श्रेणी (Secondary) के मदरसों की समुचित श्रेणी न थी और किसी सरकारी महकमे का यह काम न था कि भिन्न भिन्न श्रेणी के मदरसों के उद्योगों को क्रमबद्ध कर दे। अंगरेज़ी जाति ने इन त्रुटियों का निवारण आवश्यक जाना और ई० १९१६ में मिस्टर हर्बर्ट फ़िशर (Herbert Fisher) को इस बड़े काम के योग्य जानकर शिक्षाबोर्ड का सभापति बनाया गया।

२।—उपाय—फ़िशर ने ई० १९१७ में एक मसौदा पेश किया जो दूसरे साल क़ानून बन गया। इससे पहिले बारह बरस की उमर तक शिक्षा अनिवार्य रहती थी और कभी कभी चौदह बरस की उमर तक अनिवार्य मानी जाती थी। फ़िशर के क़ानून ने बारह को चौदह कर दिया और चौदह से अट्ठारह बरसवालों को इब्तिदाई के सानुबन्ध दैनिक मदरसों में साल में तीन सौ बीस घंटे पढ़ना अनिवार्य हो गया। शिक्षा की एक जातीय प्रथा का प्रबन्ध करने के लिये जिससे सब लोगों को लाभ हो सकै, स्थानिक प्रबन्धकारिणी समितियां शिक्षा बोर्ड से सलाह ले सकतीं और पद्धति बना कर भेज सकती हैं। जब इनको कोई बोर्ड मंज़ूर कर ले तो स्थानिक समितियों का कर्त्तव्य हो जाता है कि उनको कार्यरूप में परिणत कर दें।

३।—शिक्षकों को पेन्शन—युद्ध से पहिले शिक्षक कम मिलते थे। युद्ध के समय में पुरुषों के सारे ट्रेनिङ्ग कालेज जिनमें

शिक्षकों को शिक्षा दी जाती थी बन्द कर दिये गये। इससे शिक्षा का और भी काल पड़ गया और जो मदरसे पहिले से थे उनके लिये भी शिक्षक पूरे न मिले। जब नये सानुबन्ध मदरसे खोले जायंगे तो उनके लिये शिक्षक न मिलेंगे। जवान स्त्री पुरुषों को शिक्षा के काम में खींचने के लिये उनको आगम में उन्नति की आशा होनी चाहिये। शिक्षकों का मासिक वेतन स्थानिक कमेटियां नियत करती थीं। उनका बढ़ाना मिस्टर फ़िशर के बस की बात न थी परन्तु उनका आगम सुधारने के लिये नियत समय तक काम कर के बुढ़ापे में सुख से अपना जीवन बिताने को पेन्शन दिला सकता था। इसलिये उसने पार्लमेण्ट से ई० १९१८ में शिक्षकों की पेन्शन का क़ानून पास करा दिया।

४।—उपसंहार—किसी जाति की उन्नति में जितने नये काम किये जायंगे उतने ही लोगों के कर्त्तव्य बढ़ैंगे। यूरप के बड़े राज्यों के प्रति हमारा कर्त्तव्य हो गया है कि जब हमलोग आपस में सलाह करके कोई बात निकालैं तो वह सब के हित के लिये कही जाय न कि अपने ही हित के लिये। मिले हुये राज्यों और साम्राज्य के भीतर रक्षित राज्यों के प्रति, अपनी तरह साम्राज्य की और प्रजा के प्रति जो ऐरलैण्ड में बहुतों की और दक्षिण अफ्रीका के नये उपनिवेशों की भांति विरुद्ध हो रहे हैं, हमारे कर्त्तव्य बहुत बढ़ गये हैं और इन कर्त्तव्यों का पालन नहीं हो सकता जबतक हम यह समझैंगे कि सब के विचार ठीक ठीक वे ही होने चाहियें जैसे हमारे हैं। अपने विचार स्पष्ट रूप से प्रकट कर देना हमैं सीखना चाहिये और जिसे हम उचित समझते हैं उसे दृढ़ता से कर डालना चाहिये। परन्तु जिन लोगों के हमारे ऐसे विचार नहीं हैं उनका भी आदर करना उचित है जो उनके विचार

शुद्ध अन्तःकरण से हों। हम लोगों को इंग्लिस्तान में अपनी स्वतन्त्रता का घमंड है और यह अच्छी बात है। परन्तु हम को सब की भलाई के लिये इस स्वतन्त्रता के प्रयोग करने का संकल्प करना चाहिये। मनुष्य का जीवन अपने ही लिये नहीं होता। उसका धर्म है कि अपनी शारीरिक और मानसिक शक्तियों का प्रयोग मनुष्य जाति के लिये करे क्योंकि हम सब एक जगतपिता के पुत्र भाई भाई हैं। स्वतन्त्रता बहुत अच्छा गुण तभी है जब दूसरों के हित के लिये काम करने को हमारे बन्धन खोल दे। स्वतन्त्र इंग्लिस्तान सदा चतुराई से काम करता रहा। इसने अपने घर में लड़ाई दंगा न होने दिया क्योंकि यहां कठिन समस्यायें तर्क वितर्क से निर्णीत होती थीं; लड़ाई से नहीं। हम लोग जंगली असभ्य नहीं हैं तो इसका कारण यही है कि हमारे पूर्व पुरुषों ने हमें अच्छे जीवन और अच्छे आचरण विरासत में दिये हैं। हमारा प्रत्येक अन्वय किसी न किसी बात में पहले से अच्छा होता रहा है और हम लोगों को उचित है कि हम अपने बच्चों के लिये अपने अन्वय को भी पिछले अन्वय से अच्छा बना दें। प्रत्येक बच्चा बढ़ते बढ़ते कुछ न कुछ कर सकता है। हज़ारों छोटे छोटे अच्छे काम मिलकर बहुत हो जाते हैं। जब हम बुढ़ों के चरित पढ़ते हैं और विचारते हैं कि उन्हों ने हमारे लिये क्या क्या काम किये, तो हमारे विचार वही होने चाहियें जो कविवर ब्रौनिङ्ग के थे जब वह स्पेन के समुद्र तट पर जहाज़ पर जा रहा था। उसका ध्यान उस समय नेलसन और पुराने वीरों पर था जो अपने देश के लिये वहीं लड़कर वीरगति को प्राप्त हुये थे। ट्राफ़लगर उसके सामने था और सेण्ट विन्सेण्ट उसके पीछे। फिर उसे अपनी सुध हुई और उसने कहा;

(अनुवाद):—

इंग्लिस्तान देश ने मेरा,
इसी ठांव था साथ दिया
जग में मेरी कीरत थापी,
यूरप में सरनाम किया ॥
अब मैं इंग्लिस्तान देश के,
हित का कौन उपाय करूं।
उसका काम करूं मैं कैसे,
उसकी कौन सहाय करूं ॥
मेरे से विचार जिसके हों,
उसका उचित यही है काम।
धन्यवाद दे दे ईश्वर को,
करै सो बारंबार प्रणाम ॥

Printed by Shadi Ram Monga at Lal Chand & Sons.
76, Lower Circular Road, Calcutta
and published by Longmans, Green and Co., Ltd., Calcutta.